चौखम्बा-साहित्य

१९६१

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

Phone No. 3145] Estd. 1892. [फोन नं० ३१४५

Catalogue No. 70

The CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE

POST BOX 8. VARANASI-1 (INDIA)

चौखम्बा-साहित्य

चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस

भारतीय संस्कृति के प्रकाशक-विक्रेता

के. ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
पो० बा० नं० ८, वाराणसी-१

१९६१] [1961

आर्डर देते समय इस सूचीपत्र की संख्या ७० का उल्लेख अवश्य करें

❁ हमारे विभिन्न सूचीपत्र ❁

(१) **'चौखम्बा साहित्य'**

[हमारे द्वारा प्रकाशित १००० तथा कुछ अन्य पुस्तकों का भी विवरण]

(२) **'भारतीय संस्कृति और साहित्य'**

[देश-विदेश में छपी संस्कृत, हिन्दी, अँगरेज़ी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं की लगभग १०००० पुस्तकों का विवरण]

(३) **'हिन्दी साहित्य और वाङ्मय'**

[७००० उत्कृष्टतम हिन्दी पुस्तकों का विवरण]

(४) **'चिकित्सा साहित्य'**

[आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक, होमियोपैथिक आदि की लगभग २००० पुस्तकों का विवरण]

निःशुल्क मँगवाकर अवलोकन करें।

प्राचीन ग्रन्थों की रक्षा भारतीय संस्कृति की रक्षा है

इस कार्यालय की ख्याति अपने कार्यों से भारत ही में नहीं अपितु चीन—जापान-इङ्गलैण्ड-रूस-अमेरिका-जर्मनी प्रभृति संपूर्ण विश्व के देशों में भी है। इस कार्यालय ने भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करते हुए संस्कृत वाङ्मय का जो सेवारूपी प्रकाशन कार्य किया है उससे प्रसन्न होकर देश विदेश के महामान्य—

म. म. श्रीगंगाधरशास्त्रीजी सी. आई. ई.
» श्रीबापूदेवशास्त्रीजी, सी. आई. ई.
» श्रीशिवकुमारशास्त्रीजी
» श्रीलक्ष्मणशास्त्रीजी द्रविड
» श्रीनित्यानन्दपन्तजी पर्वतीय
» श्रीवामाचरणजी भट्टाचार्य
» श्रीसुधाकरजी द्विवेदी
» श्रीहरिहरकृपालुजी द्विवेदी
» श्रीहरप्रसादजी शास्त्री सी. आई. ई.
» श्रीगंगानाथजी झा
» श्रीगोपीनाथजी कविराज
» श्रीगिरिधरशर्माजी चतुर्वेदी
» श्रीनारायणशास्त्रीजी खिस्ते
आचार्यप्रवर गोस्वामी दामोदरशास्त्रीजी
पण्डितराज श्रीराजेश्वरशास्त्रीजी द्रविड़

श्री कन्हैयालाल माणिकलालजी मुंशी
» श्रीप्रकाशजी
» आदित्यनाथ झा जी
» संपूर्णानन्दजी
» कमलापतिजी त्रिपाठी
» आनन्द शंकरजी ध्रुव
» रायबहादुर के. वी. रंगस्वामी अयंगर
» बाबा राघवदासजी
» ईश्वरीदत्त दौर्गादत्ती शास्त्रीजी
» सुरेन्द्रनाथ दासजी गुप्त
» ब्रजविहारीजी चौबे
» डा० हरमन जेकोबी (जर्मनी)
» डा० यफ० के० ली० (चीन)
» डा० टुची (जापान)

प्रभृति अनेक उद्भट विद्वानों ने पूर्ण सहयोग एवं प्रशंसापत्र दिये हैं।

यह कार्यालय अपने उन सभी देशी एवं विदेशी शिक्षाविशारदों, विश्वविद्यालयों, शिक्षणसंस्थाओं, सार्वजनिक तथा राजकीय पुस्तकालयों, धर्माचार्यों, धनी-मानी गृहस्थों, अध्यापकों एवं छात्रगणों तथा व्यापारी वर्ग का—जिन्होंने इस कार्यालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को अपनाकर हमें सम्मानित तथा साहित्यसेवा के लिए प्रेरित किया है—चिरऋणी है, तथा भविष्य में भी ऐसी ही कृपाकांक्षा के लिये आशान्वित है।

संस्कृत-साहित्य-संसार के सेवक—
जयकृष्णदास हरिदासगुप्तः

स्थानाभाव से अनेक सम्मतियों में से केवल एक सम्मति दिग्दर्शन मात्र के लिये प्रकाशित की जा रही है।

'चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला कार्यालय' के संस्थापक स्वर्गीय **बाबू हरिदासजी गुप्त** तथा वर्तमान संचालक **बा० जयकृष्णदासजी गुप्त** एक साधारण पारिवारिक गृहस्थ होते हुए भी आज पचासों वर्ष से प्राचीन से प्राचीन दुष्प्राप्य संस्कृत ग्रन्थों का उद्धारकार्यरूपी प्रकाशन करते चले आ रहे हैं यह सभी विद्यानुरागी सज्जनों को विदित है और इसके लिये इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

यों तो स्कूली पुस्तक व्यवसायियों की सभी जगह भरमार है परन्तु प्राचीन से प्राचीन ग्रन्थ जो किसी भी परीक्षा आदि में निर्धारित न हों और न जिनके प्रकाशन से अधिक लाभ की कोई संभावना ही हो उन ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य इनके ही द्वारा अथवा भारतवर्ष की इनी-गिनी राजसंस्थाओं तथा गवर्नमेंट द्वारा होता है। मगर इनमें भी **'गुप्त'** महोदय की जैसी सच्ची लगन के साथ अनेक प्रकार की आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुये प्रकाशन कार्य को निरन्तर चलानेवाला किसी को नहीं पाया। काशी की **'पंडित'** तथा **'विजयनगर'** ग्रन्थमाला इन्हीं कारणों से अल्प समय में स्थगित हो गई।

गुप्त महोदय के निस्वार्थ प्रेम तथा अटूट परिश्रम के फलस्वरूप ही हम लोगों को संस्कृत साहित्य, दर्शन आदि विविध विषयों के सैकड़ों ग्रन्थ जो लुप्तप्राय थे, देखने को मिल रहे हैं। इनके कार्य की प्रशंसा के लिये इनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ ही पर्याप्त प्रमाण हैं।

मगर इतनी बात तो माननी ही होगी कि इस संस्था को जिस प्रकार की सहानुभूति मिलनी चाहिये, नहीं मिली, यह अत्यन्त खेद का विषय है। अस्तु, संस्कृतानुरागी सभी आचार्यों, साधु-महन्तों, विद्वानों तथा राजा-महाराजा एवं धनीमानी दानी सज्जनों, अध्यापकों तथा सभी गवर्नमेंट व सार्वजनिक संस्थाओं का पूर्ण कर्तव्य है कि वे अब भी इनके द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को अधिकाधिक मात्रा में खरीद कर तथा अन्य प्रकार से भी इनकी सहायता करें जिससे ये और भी उत्साह तथा प्रेम के साथ अधिक से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर सुरभारती की सेवा करते रहें।

म० म० पण्डित गोपीनाथ कविराज,
एम० ए० डी० लिट्०,
सुपरिंटेण्डेण्ट आफ संस्कृत स्टडीज़, उत्तरप्रदेश।

THE CHOWKHAMBA SANSKRIT STUDIES

(Started in 1935)

Vol. I. ABHINAVA GUPTA : An Historical and Philosophical Study by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., D. Litt., M. O. L., Shastri. With a Foreword by Dr. Ganganath Jha.
Revised Edition. 30-00

Vol. II. COMPARATIVE ÆSTHETICS :
Vol. I. INDIAN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., D. Litt., M. O. L., Shastri. With a Foreword by Prof. S. Radha Krishnan.
Revised Edition. 25-00

Vol. IV. COMPARATIVE ÆSTHETICS :
Vol. II. WESTERN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., D. Litt., M. O. L., Shastri. 25-00

Vol. III. YUGANADDHA : By Dr. Herbert V. Guenther Ph. D. 8-00

Vol. V. VEDANTA DEŚIKA : A Study of His Life, Works and Philosophy by Dr. Satya Vrata Sinha. M. A., Ph. D., D. Litt., 20-00

Vol. VI. LIGHTS ON VEDANTA : A comparative study of various views of Post-Sankarities, with special emphasis on Sureśvaras doctrines by Dr. Veeramani Prasad Upadhyaya. With a Foreword by Dr. B. N. Jha. 15-00

Vol. VII. THE FALL OF THE MOGUL EMPIRE : By Sidney J. Owen. M. A. Second edition. 8-00

Vol. VIII. HISTORY OF INDIAN LITERATURE : By Albercht Weber. Translated from the Second German Edition by John Mann, M. A., and Theodor Zachariale, Ph. D. 25-00

Vol. IX. MEGHA DŪTA OR CLOUD MESSENGER : A Poem in the Sanskrit Language, by Kālidāsa. Translated into English Verse, with Notes and Illustrations, by H. H. Wilson, M. A., F. R. S., etc., Boden Professor of Sanskrit in the University of Oxford. Third Edition. 7–50

Vol. X. SARVA-DARŚANA-SAṂGRAHA Or Review of the different systems of Hindu Philosophy by Madhava Ācharya. Translated by E. B. COWELL, M. A., and A. E. Gough. M. A. Sixth Edition. 15–00

Vol. XI. AN INTRODUCTION TO THE GRAMMAR OF THE SANSKRIT LANGUAGE. For the use of Early Students by H. H. Wilson, M. A. F. R. S. etc., Boden Professor of Sanskrit in the University of Oxford. Third Edition. 20–00

Vol. XII. ŚAKUNTALĀ : A Sanskrit Drama in Seven Acts, by Kālidāsa. The Devanagari Recension of the Text Edition with literal translations of all the metrical passages, schemes of the metres, and Notes, Critical and Explanatory, by Monier Williams, M. A., D. C. L. Third Edition. 15–00

Vol. XIII. ENGLISH SANSKRIT DICTIONARY : By Sir M. Monier Williams. Rs. 45–00

Library Edition Rs. 75–00

(Chowkhamba Sanskrit Studies XIII)

ENGLISH–SANSKRIT DICTIONARY

By

Sir Monier-Williams, M. A., K. C. I. E.

This famous work of Sir Monier-Williams occupies the most prominent place among all the English–Sanskrit Dictionaries so for published. It is a treasure-house of information on etymological study of Sanskrit words, and their derivative forms. Therefore it is an indispensable reference work for the Indologists and English speaking Sanskrit Scholars.

Also it is a work of immense importance for those who are concerned with the coining not only of Hindi equivalents for English words, but equivalents in other Indian Languages because Sanskrit is the most fertile source from which our languages can draw for the enlargement of their Vocabularies. In this direction too, therefore this work will be of invaluable and inevitable help.

Our edition has been reprinted from the original formats of 1851 edition, on fine quality paper.

Sturdy & Cloth-bound-Big size, Double Demy octavo edition pp. 851. Rs. 45–00

Library Edition. Rs. 75–00

DRAMAS

or

A COMPLETE ACCOUNT OF THE DRAMATIC LETERATURE OF THE HINDUS

By **H. H. Wilson.**

Rs. 4–00

HISTORICAL AND LETERARY INSCRIPTIONS

By

Dr. Rajbali Pandeya M. A., D. Litt.

LAWS AND PRACTICE OF SANSKRIT DRAMA

By

Siddhānta Vāgīsha

Professor, S. N. Shastri, M. A. D. Phil., LL. B.

The book presents a complete and comprehensive study of the canons of Sanskrit Dramaturgy in all the a spects as laid down by different school of Sanskrit pœtics. It treats with rules and conventions of the mimetic art of the Hindus from Bharata Muni to the latest modern school including the Gaurāṅga school of Sanskrit Pœtics. In the second book of this work the application of the dramatic canons as available in the practice of the master playwrights in the Sanskrit language is thoroughly studied. The plays of Kālidāsa, in the first place are critically examined in all aspects with a full chapter on the mind and the dramatic art of the great pœt. At the end of the book various charts denoting the classification of the dramaturgical laws are appended which present a panoramic view of the development of dramatic criticism in Sanskrit and serve as a handy manual for a close study of the subject on mnemonic lines. A complete lexicon of the dramaturgical terms used in different context with relevent references is a distinguished feature of this work. Subject-index and the author-index appended to the work fruitfully serve as easy reference and a complete bibliography affords facility for a detailed study of the subject elsewhere, if neccessary.

The book is a work of its own kind. It is indispensable for a close student of Sanskrit dramas and dramaturgy. It is a neatly got up epitome well worthy of study and constant reference.

Vol. I. Rs. 16-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. XI)

SANSKRIT GRAMMAR

By

H. H. WILSON

Prof. Wilson is among those few early western Orienlatists who did pioneering work in propagating Sanskrit Language in the west. His translations of many Sanskrit classics have now become classics in themselves. In addition to these translations and numerous other original works, he also wrote the present Sanskrit Grammar, which is useful not only for European readers but for everyone interested in the study of Sanskrit language, because its design is based on the long experience of the author in teaching the language.

The great utility and importance of this Grammar by Wilson, is in itself amply proved by the fact that even after about 115 years of its original publication, it is still in greater demand than any other Sanskrit Grammer written in English. Since it has been long out-of-print Scholars & students had been experiencing great inconvinience in getting it.

Therefore in like of our other similar efforts in making available important & rare works we have published this work. The entire work has been reprinted on best quality paper. Readers are requested to place orders for their copies early to avoid disappointment. Rs. 20–00

STUDIES IN VEDIC INTERPRETATION

Along Sri Aurobindo's lines,

A. B. PURANI

A CLOSE DISCIPLE OF SRI AUROBINDO.

This book carries forward the psychological and symbolic interpretation of Sri Aurobindo, the famous Indian philosopher and mystic. It includes studies of Yaska's Nirukta, comparison between Yaska, Śayana & Sri Aurobindo, interpretation of Ritam, Gau, Rivers etc., Study of certain rare but important words is a special feature of the book. All conclusions depend upon the internal evidence. **Shortly.**

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. I)

ABHINAVAGUPTA

AN HISTORICAL AND PHILOSOPHICAL STUDY

Dr. K. C. PANDEY

REVISED SECOND EDITION.

Abhinavagupta was an encyclopaedic thinker of Kashmir in the 10th century A. D. He is recognised authority on Śaiva philosophy and Indian Æsthetics. The book gives an account of his life, his Forty-four works in print or MSS; historical background of his Tantric, philosophic, dramaturgic, poetic and æsthetic ideas; and his influence on successors in different fields. It presents three monistic systems of the Kashmir Śaiva Philosophy in historical perspective; deals with the "Realistic Idealism," which is common to all the three, and discusses the categories and epistemic, psychological and other views of each separately. It throws light on the metaphysics of the Indian Philosophy of language. An authoritative multicoloured picture of Abhinavagupta is an interesting feature of this Edition. Rs. 30-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. X)

One and the only English Translation

By

E. B. Cowell and A. E. Gough

of Madhava Acharya's famous

SARVA-DARSHANA-SAMGRAHA

(Review of the different systems of Hindu Philosophy)

Being a review of the different systems of Hindu Philosophy, this singular work, the Sarva–Darshana–Samgraha of Madhava Acharya is so well known that it needs no Introduction. Prof. Cowell & Prof. Gough, conjointly translated this valuable work into English, which since then had been its only first-rate translation. However, inspite of the importance of the translation & its great demand, it had been long out of print.

Only Limited number of copies have been reprinted from the original formation on high grade paper. Please order your copies immediately. Rs. 15-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. II)

COMPARATIVE ÆSTHETICS. VOL. I

INDIAN ÆSTHETICS

Dr. K. C. PANDEY

FOREWORD BY

Dr. S. RADHAKRISHNAN

Revised Edition

It deals with history and philosophy of three arts, poetry, music and architecture, which alone are recognised to be 'fine' in Indian tradition: presents history of Indian Æsthetics; Abhinavagupta's theory of Æsthetics on the basis of Kashmir Śaiva philosophy; theory of meaning; technique and types of Sanskrit drama; essentials of dramatic presentation; and æsthetic currents in poetics: and discusses why tragic form of drama did not develop in Sanskrit; and what is the difference between the two experiences, Karuṇa and tragic. Rs. 25-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. IV)

COMPARATIVE ÆSTHETICS. VOL. II

WESTERN ÆSTHETICS

Dr. K. C. PANDEY

It presents the æsthetic theories of the Western thinkers from Sophist Gorgias to Croce such as have marked similarity with the Indian. Each chapter states the points of similarity of the æsthetic thought of a Western thinker with that of an Indian; discusses the metaphysical, epistemic, psychological and ethical views, and shows their influence on the theory of art. A detailed comparison is the subject-matter of the third volume "Indian and Western Æsthetics. Rs. 25-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. XII)

Text with English Translation, critical & Explanatory notes of

Kalidasa's immortal Drama

S'AKUNTALA

By

MONIER WILLIAMS

This edition is the result of the learned author's endeavour to furnish English Students of Sanskrit, with a correct edition of the most celebrated drama of India's greatest dramatist. The text presented in it is the most authentic and based on various manuscripts of the original. Not a passage in it is printed without a careful collation of all of them, and three commentaries have been consulted from beginning to the end.

This translation of the Text has also been acclaimed as best so far, with profuse annotations added to its usefulness. For these reasons, this edition has been always in great demand, but being out of print for a long time it was not available. We have therefore reprinted a limited number of its copies so that intesrested scholars and students may get it without any inconvinience. Rs. 15-00

AGNI PŪRANA : A STUDY

Dr. S. D. Gyani.

The author examines the *Agni-purāṇa* as a source-book of different branches of Knowledge as known to the post-Guptā era in ancient India, such as poetics, dramaturgy, prosody, phonetics, grammar, lexico-graphy, mythology, religion, philosophy, cosmogony, politics, arts (architecture, sculpture etc.) and sciences (medical, military etc.). This monograph explains how the people in general reacted to the literary and cultural traditions set up for them by their philosophers and eminent literary figures. It is indispensable for a thorough grasp of the development of Purānic literature in its later phase. **Shortly.**

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. IX)

H. H. WILSON'S

MEGHA-DUT

(The Cloud Messenger)

Although there are several other translations of this famous work available in the market, yet this edition of H. H. Wilson has its own importance, because its text is most accurate, the Sanskrit words in it are detached wherever their separation is consistent with an observance of the law that regulate euphonic combinations. Besides the Sanskrit text and its superb English rendering, it contains exhaustive annotations which are not paralleled by anyother edition of Meghadut. In the end it contains a Sanskrit & English vocabulary, intended to serve atonce as a lexicon and a grammar to the text.

Due to all these virtues of the edition, even its rare copies available here and there were in great demand. Therefore to make this classic work easily available, we have reprinted it and the edition is fast selling out. In order to avoid disappointment, readers are therefore requested to order for their copies very early. Rs. 7–50

Reprint of A. BARTH'S

RELIGIONS OF INDLA

Authorised English Translation

By

Rev. J. WOOD

This valuable and comprehensive treatise on Religions of India, was originally composed by its author in 1879. His aims in writing it had been to present to the Readers a study of historical theology of India. His presentation is very faithful and realistic, covering the latest results of inquiry in all provinces of the vast domains of Hindu Religion. Subject-matter discussed in the work includes Vedic Religion, Brahmanism, Buddhism, Jainism and Hinduism, with elaborate references to original Sources. **Shortly**

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. VII)

THE FALL OF THE MOGUL EMPIRE

By

SIDNEY J. OWEN

This book is not a regular history of the period over which it extends, but the substance of a course of lectures intended to trace the operation of the causes which, in the course of a century, reduced the mighty and far-famed Empire of the Great Mogul to a political shadow. Throughout the book its author has attempted not to tax the memory of the reader with too many bold facts, but to bring out the salient features of the story, so as to enlist the imagination by suggesting a series of historical pictures.

There is no need to dwell upon the great popularity of the work of its utility to the students & scholars of Indian History. However it was long out of print and rare. We have now reprinted it to make it easily available to the readers of history. Every effort has been made to keep the standard of publication intact. Rs. 8-00

MANUAL OF CLASSICAL SANSKRIT PROSODY

By

Prof. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B.

It is a handbook treating with the principles of Sanskrit metrics in a simple and lucid style. It gives a variety of patterns and copious illustrations. It is an indispensable book for the students of Classical Sanskrit literature and covers all forms of metres that are usually come across by a reader of Sanskrit dramas and well-known epic poems. It also adds a chapter in this edition on lyric measures and another on the suitablity of different pœtical measures. The book is equally useful for the beginners who want to try their Muse and train themselves in versification in Sanskrit. At the end there is an index to definitions, to various meters and also to illustrative verses. The book commends itself to all Sanskrit students and libraries, or it is the first book of its kind that deals with intricacies of Sanskrit prosody. (SECOND EDITION) Shortly

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. VI.)

LIGHTS ON VEDANTA

By

Dr. Veermani Prasad Upadhyaya,

WITH A FOREWORD BY

Dr. B. N. JHA

Vice Chancellor, Gorakhpur University.

This book is the product of several years strenuous and untiring labour devoted to investigating the mass of hidden literary lore of Sureśvara and other Advaitins in various Indic Texts and Mss.

Śaṅkara is a definite landmark in the development of the system of philosophy, familiar to all as the Advaita Vedanta. But what is the shape of Advaita Vedanta after Śaṅkar ! Was there a period of full in this branch after this giant architect ! Was there any superstructure of Indian Philosophy after him ! These are the questions, which are answered in this book.

The most attractive feature of this book is the author's clearness of perception and strength of conviction in dealing with some of the problems of Post-Śaṅkarite Philosophy. The object of this book is to appraise critically the dimly-lit epoch of the development of the Vedanta in the post Śaṅkarite period of intellectual regeneration.

This book is a compendium containing the important views of all those, who strove after ¿Śaṅkar to perfect the Advaitic system and whose contributions to the system are definitely of supreme value to Indian Philosophical thought.

Every lover of Philosophy must have a copy of the book, which is not only comparative but comprehensive and authoritative also. Its bibliogarphy is full and reliable. Its value is unique, for it is the first book to deal with the Ābhāsa theory in its real significance and give an elaborate treatment to all the topics of the Advaita Vedanta with copious references to almost all the post-Śaṅkarite views thereon.

Rs. 15-00

(The Chowkhamba Sanskrit Studies V.)

VEDANTADESIKA

A Study of His Life, Works and Philosophy

By

Dr. Satyavrat Singh. M. A., Ph. D.

Head of the Department of Sanskrit, Lucknow University.

This voluminous work on the life, works and philosophy of Vedānta Deśika, the greatest of the Viśiṣṭādvaitic philosophers after Rāmānuja is the result of years of our author's study and research in the field of the philosophy of Viśiṣṭādvaitic and Śrīvaiṣṇavism. The work contains four sections. Section I of the work is devoted to the discussion of the historical settings of Vedānta Deśika's thoughts. Many unpublished and almost forgotten works of the Viśiṣṭādvaitic school are used, for the first time, to throw new light on the subject of the study. The II Section is a convincing analysis of the 'Rāmānuja Darśana' becoming the 'Deśika Darśana' under the influence of Vedānta Deśika. In Section III is discussed the role of Vedānta Deśika as a religious teacher and reformer of India of the 13th–14th Centuries A. D. Section IV of this study deals with the contributions of Vedānta Deśika to Sanskrit Pœtry.

In short, this book is an original contribution to the study of Viśiṣṭādvaitism and Śri Vaiṣṇavism. **Rs. 20–00**

HISTORY OF ANCIENT SANSKRIT LITERATURE

by

F. MAX MULLER

This is a book long in quest by the Sanskrit literatures. It has been out of print and stock for several years past. It is one of the early books on Ancient Sanskrit literature treating in every details the contents of the early writing of Hindus of the Vaidika period. It is neatly presented and for the benefit of the present day readers all quotations are usefully incorporated and passages in foreign languages other than the English are translated into English and added in the Appendix. Sanskrit equivalents are given in parantheses to aid the transliterated portions in the text.

The volume is indispensable for Research scholars, teachers and libraries and students of Sanskrit, and Indian History.

Third Edition. **Rs. 25–00**

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. VI.)

LIGHTS ON VEDANTA

By

Dr. Veermani Prasad Upadhyaya,

WITH A FOREWORD BY

Dr. B. N. JHA

Vice Chancellor, Gorakhpur University.

This book is the product of several years strenuous and untiring labour devoted to investigating the mass of hidden literary lore of Sureśvara and other Advaitins in various Indic Texts and Mss.

Śaṅkara is a definite landmark in the development of the system of philosophy, familiar to all as the Advaita Vedanta. But what is the shape of Advaita Vedanta after Śaṅkar ! Was there a period of full in this branch after this giant architect ! Was there any superstructure of Indian Philosophy after him ! These are the questions, which are answered in this book.

The most attractive feature of this book is the author's clearness of perception and strength of conviction in dealing with some of the problems of Post-Śaṅkarite Philosophy. The object of this book is to appraise critically the dimly-lit epoch of the development of the Vedanta in the post Śaṅkarite period of intellectual regeneration.

This book is a compendium containing the important views of all those, who strove after ¿Śaṅkar to perfect the Advaitic system and whose contributions to the system are definitely of supreme value to Indian Philosophical thought.

Every lover of Philosophy must have a copy of the book, which is not only comparative but comprehensive and authoritative also. Its bibliogarphy is full and reliable. Its value is unique, for it is the first book to deal with the Ābhāsa theory in its real significance and give an elaborate treatment to all the topics of the Advaita Vedanta with copious references to almost all the post-Śaṅkarite views thereon.

Rs. 15-00

२

(The Chowkhamba Sanskrit Studies Vol. III.)

YUGANADDHA

By

Dr. Herbert V. Guenther, Ph. D.,
Lucknow University, Lucknow.

'Yuganaddha' is the central problem in the Buddhist Tantra. It is essentially a psychological problem, while the philosophical implication is more or less accidental. This book is based exclusively on the original texts and their symbolism is revealed with all its remifications into the world of matter and mind. For the first time the Buddhist Tantras have found a psychological interpetation, not merely from a theoritical point of view but, what is more, from their practical aspect also, for, as the author points out, the Tantras are based on experience and are the record of what is going on psychologically during the process of SĀDHANA, and what this entails. It is this process of SĀDHANA, or leading up to the highest integration, that has found its lucid and vivid expression in this book. **Rs. 8–00**

PANINI

HIS PLACE IN SANSKRIT LITERATURE

Theodore Goldstucker

Theodore—Goldstucker was an eminent orientalist and aeuridite scholar of Sanskrit Grammar. As an introduction to his classical edition of Manava-Kalpa-Sutra, he has given a scholarly treatment to the contribution of Pāṇini in the field of grammar and has endeavoured to determine Pāṇini's position in Sanskrit literature. This work has not been so far printed in India and his edition of Manava-Kalpa-Sutra published in the early seventioth of the last century has long gone out of print and out of stock. This valuable work, indespensable for Sanskrit students and libraries will shortly be available again. Since only limited copies are being brought out, orders for reserving the copies of the said book given immediately would spare disappointment.

Prof. KIRFEL'S

PURĀṆA PAÑCALAKṢAṆA

Revised and rendered into English

BY

Prof. **Dr. Surya Kanta.** M. A. D. Phil. (Oxon). D. Litt. (Pb.),
Officier d' Academie (Francaise) Mayurbhanj Professor
and Head of the Department of Sanskrit and Pali,
Principal, College of Indology,
Banaras Hindu University.

Tradition lays down that a Purāṇa must expound the five topics, viz. the creation of the Universe, its destruction, the genealogies of the gods, the ages of Manus, and the history of the solar and lunar races. This is what Prof. Kirfel (of Bonn) made the subject of his eminently erudite study of the Purāṇas in his monumental work entitled 'Das Purāna Pañcalạkṣaṇa', published in German in 1927. In this work Prof. Kirfel brought out the very essence of the Purāṇas, adopting the chief Purāṇic recension as his text and adding in footnotes the correspondences to be found in the rest of the Purāṇas. The success of the work was immediate and astounding, when it appeared, and its value has increased with the passage of time– for, Kirfel's 'Purāṇa Pañcalaksaṇa' still stands unsurpassed in the field of Purāṇic studies.

At our request Prof. Surya Kanta has rendered the text into Devanagara script and has revised and corrected it where necessary. He has added an illuminating introduction in English, embodying therein the results of all the researches till now made in the Purāṇic fiield.

Tho book is reasonably priced and is presented in an attractive format. Please registered your copies immediately.

EPISTEMOLOGY OF THE BHATTA SCHOOL OF PŪRVA MĪMĀṆSĀ

Dr. G. P. BHATTA

This is a critical, comparative and comprehensive study of the epistemology of Kumārila Bhaṭṭa based on the Sanskrit texts which have not been utilized by any other oriental scholar so far. It is divided into thirteen chapters viz. nature of knowledge, valid and invalid knowledge, tests of truth and error, perception, syllogistic inference, verbal testimony, comparison, presumption, negation, substance, self, universal, and Bhāṭṭa realism versus idealism. Kumārila's major doctrines, particularly his celebrated doctrine of self-validity have been given an entirely original interpretation. The work fills up a longfelt gap in the English literature on Indian epistemoloy. **Shortly**

SOCIO RELIGIOUS CONDITION OF NORTH INDIA

Dr. Basudeva Upadhyaya

The book is a synthetic study of the archaeological sources bearing on the socio-Religious condition of north India during the centuries after Harsha and pre-muslim period. It deals in scientific manner the various factors responsible for the shaping of early mediæval society particularly the remification of the castes, the organisation of higher study and economic condition for the migration of Brahmanas to distant lands.

The book gives a vivid picture of Hinduism, Jainism and Buddhism counteracting one another as well as their influence in the field of Indian art. It also describes the various types of religious donation, the occasions for the gifts and in the last we find a detailed study of toleration among contemporary sects.

Thus the book is a scholarly study of all archæological materials connected with the socio-religious history of early mediæval India (700–1200 A. D.) **Shortly.**

PSYCHOLOGICAL STUDIES IN RASA

By

Dr. RAKESAGUPTA, M. A. D. Phil.

Professor, Banaras Hindu University.

This is an epoch-making contribution to the subject of Literary Criticism. The work has been devided into two sections.

The first section deals with the theories of literary relish. It has been maintained that it is not *Brahmānanda*, or even pleasure of any description, that we seek in Poetry. The theory of *Sādhāraṇīkaraṇa* or Generalization has been strongly refuted. A new theory of Poetic relish has been evolved and its details have been worked out.

The second section deals with the constituents of *Rasa*, which have been compared with the constituents of Emotion. A number of *Sañcārībhāvas* have been eliminated, and the *Sāttvikabhāvas* have been renamed as *Sāttvikānubhāvas*. It has been shown that there is no real point of difference between a *Sthāyībhāva* and a *Sañcārībhāva*, and that most of the so called *Rasa-doṣas* cannot at all be regarded as literary defects.

In short, the whole of this book is full of original thoughts based on irrefutable arguments. Price Rs. 10-00

SAMAVEDASAMHITA

(ENGLISH TRANSLATION)

By **Rev. J. Stevenson D. D.**

Rs. 12-00.

ABANINDRANATH TAGORE

HIS LIFE AND ARTS

By

Dr. Rai Govind Chanda

Rs. 18-00.

STUDIES IN DEVELOPMENT OF ORNAMENTS AND JEWELLERY IN PROTOHISTORIC INDIA

By

Dr. Rai Govind Chanda

वैदिक इण्डेक्स

वैदिक नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुसूची)

मूल लेखक : मैकडॉनल और कीथ

अनुवादक : प्रो० रामकुमार राय

संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त जर्मन और फ्रेंच भाषाओं के भी श्रेष्ठ ज्ञाता विद्वान् अनुवादक ने कई वर्षों के अनवरत परिश्रम से इस अत्यन्त उत्कृष्ट और उपयोगी ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया है। अनुवाद की भाषा इतनी प्रौढ और प्राञ्जल है कि उसे पढ़ने से ग्रन्थ बिल्कुल मूल जैसा ही प्रतीत होता है।

अनुवाद की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसमें सन्दर्भ-संकेत, संख्याओं तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है। इस व्यवस्था के कारण, जो निस्सन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव-सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है। प्रथम भाग, मूल्य २०–००

[द्वितीय भाग भी शीघ्र प्रकाशित होगा।]

हिन्दी-निरुक्त

(१–४, ७ अध्याय)

व्याख्याकार—प्रो० उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'

प्रस्तुत ग्रन्थ में आपको मूल का स्पष्टतम पाठ मिलेगा जिसमें सभी वाक्य पृथक्-पृथक् तथा सन्धिविच्छेद के साथ दिये गये हैं, अतः केवल मूल से ही बहुत से अर्थ स्पष्ट हो जायेंगे। अनुवाद शब्दशः किया गया है तथा वैदिक मन्त्रों के अन्वय और शब्दार्थ के साथ अर्थ दिये गये हैं। जहाँ-तहाँ आवश्यक टिप्पणियों के द्वारा अनुसन्धान के संकेत किये गये हैं।

अन्त में वैदिक-मन्त्रों का हिन्दी-पद्यानुवाद तथा आरम्भ में प्रायः १२५ पृष्ठों की सर्वाङ्गपूर्ण भूमिका भी है जिसमें निरुक्त से सम्बन्धित सारी सामग्रियाँ विश्लेषणात्मक ढंग पर मिलेंगी। इसमें वैदिक-साहित्य और निरुक्त पर पूरा प्रकाश दिया गया है। भूमिका के दस परिच्छेदों में कुछ तो बड़े महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे—निरुक्त और भाषाविज्ञान, निर्वचन-शास्त्र का इतिहास, आदि। इनमें पूर्व और पश्चिम दोनों अध्ययन-विधियों का अपूर्व समावेश है। मूल्य ६–२५

ए. ए. मैकडोनेल रचित

वैदिक माइथोलौजी

का

हिन्दी अनुवाद

(वैदिक पुराकथाशास्त्र)

अनुवादक—प्रोफेसर रामकुमार राय

(मनोविज्ञान विभाग: काशी हिन्दूविश्वविद्यालय)

वेदविषयक इस अख्यात दुर्लभ ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है। इसमें मूल लेखक के विचारों एवं भावों को सुरक्षित रखने का ही प्रयास किया गया है। प्रमुख विशेषता यह है कि मूलग्रन्थ के सभी सन्दर्भ-संकेतों को अनुवाद में भी उसी क्रम में सुरक्षित रखा गया है।

ग्रन्थ वेद की आत्मा का भासमान प्रदीप है। पाश्चात्य विद्वानों के अध्ययन के अनुसार वैदिक देवताओं के स्वरूप एवं उनका रहस्य जानने के लिये इसका अध्ययन अनिवार्य है।

अनुवाद जिस योग्यता तथा सतर्कता से किया गया है उसका मूल्यांकन विज्ञ पाठकगण ग्रन्थ देखकर ही कर सकेंगे। अनुवाद की उपयोगिता और श्रेष्ठतावश ही विद्वानों ने इसका बड़ा आदर किया है। मूल्य १५-००

हिन्दी-ऋग्वेदभाष्य-भूमिका

व्याख्याकार—श्री जगन्नाथ पाठक

सायणाचार्य के 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' की यह हिन्दी व्याख्या बहुत ही उपयोगी और ग्राह्य शैली में प्रस्तुत की गई है, जिससे विद्यार्थी और इस विषय के जिज्ञासु लाभान्वित होंगे। एम. ए. के विद्यार्थियों के लिये तो यह संस्करण विशेष उपयोगी है। पहले मूल ग्रन्थ को छाप कर बाद में उसके सारे तथ्यों को पूर्णरूप से हिन्दी में विवेचन करके समझाया गया है और साथ ही सायणाचार्य के जीवन तथा साहित्य पर विचार किया गया है। मूल्य ३-००

आयुर्वेदशास्त्र के अवतार, भारतराष्ट्रपति-चिकित्सक,
पण्डित-सार्वभौम, वैद्यसम्राट्, पद्मभूषण

श्री सत्यनारायण जी शास्त्री महोदय
का
अभिनन्दन-ग्रन्थ

बहुत दिनों से समाज में जिसकी चर्चा चल रही थी, बड़ी प्रतीक्षा के बाद वह अभिनन्दन-ग्रन्थ बड़ी धूम-धाम से छप कर सन्नद्ध है। देश के कोने-कोने से अपने विषय के माने हुए बड़े-बड़े विद्वानों ने प्रायः सभी विषयों पर प्रामाणिक लेख भेज कर इस ग्रंथ की उपयोगिता बढ़ाने में योगदान दिया है। आयुर्वेद के निदान-चिकित्सादि विषयों एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धतियों के दोष या उनसे प्राचीन का समन्वय आदि विषयों पर एक से एक बढ़कर विचार देखने को मिलते हैं। न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास आदि प्रत्येक विषय पर मर्मस्पर्शी विचार-सामग्री से यह ग्रन्थ भरा हुआ है। आयुर्वेद की सेवा में सम्पूर्ण जीवन को विलीन कर देने वाले शास्त्री जी जैसे परम तपस्वी के जीवन से आयुर्वेद की महत्ता, उपयोगिता, प्राचीनता एवं अनिवार्यता का जो ज्ञान हमें हो सकता है वह दूसरे प्रयत्नों से इतना सुखसाध्य नहीं हो सकता। मानवमात्र के लिये अनुकरणीय शास्त्री जी के जीवनचरित की कतिपय प्रमुख घटनाओं को स्मरण कर भावी पीढ़ी के सदस्यों को कर्मक्षेत्र में कुशलता प्राप्त कराने वाली अनेक रसवती प्रेरणाएँ दी गई हैं।

सचित्र एवं सुन्दर छपाई, मनोहर पक्की जिल्द आदि से सम्पन्न बड़े साईज के लगभग साढ़े तीन सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ का लागतमात्र मूल्य १५-००

भैषज्यरत्नावली
'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या
(आमूल संशोधित परिवर्धित नवीन संस्करण)

इस ग्रंथ के प्रमुख संपादक आयुर्वेदबृहस्पति पं० राजेश्वरदत्तजी शास्त्री ने अपने अध्यापनानुभव तथा चिकित्सानुभव के अनुरूप इस संस्करण की सविमर्श व्याख्या में आमूल संशोधन-परिवर्धन करके अन्त के परिशिष्ट में आज तक के स्वानुभूत सिद्ध योगों का समावेश करके इसे सर्वांगपूर्ण तथा चिकित्सोपयोगी बना दिया है।

मूल्य १६-००

चरकसंहिता

सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या, परिशिष्ट सहित

सम्पादकमण्डल—

पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय, डा० गंगासहाय पाण्डेय प्रभृति

भूमिकालेखक—

कविराज पं० सत्यनारायण शास्त्री पद्मभूषण

इस संस्करण की विशेषता—

इसमें विशुद्ध मूलपाठ का निर्णय करके टिप्पणी में पाठान्तर दे दिए गए हैं। छात्रों की सुविधा के लिये विषयानुसार यत्र-तत्र मूल को विभाजित कर उसका अनुवाद किया गया है। अनुवाद में संस्कृत की प्रकृति का ही विशेष ध्यान रखा गया है। तदनन्तर 'विमर्श' नामक विशद व्याख्या की गई है जिसमें चक्रपाणि की सर्वमान्य प्रामाणिक संस्कृत टीका 'आयुर्वेददीपिका' के अधिकांश भाग एवं आधुनिक चिकित्सा-सिद्धान्तों का समावेश तथा समन्वय किया गया है।

आयुर्वेद के मुख्य सिद्धान्तों तथा प्रष्टव्य अंशों का विभाजन स्पष्ट करने के लिये मूल के प्रसिद्ध अंशों को पुष्पांकित कर दिया गया है।

किस अध्याय में कौन-कौन से मुख्य विषयों का वर्णन है इस बात को सरलतया स्मरण रखने के लिये अध्यायों को उपप्रकरणों में विभक्त कर दिया गया है।

कतिपय अध्यायों में पहले निश्चित प्रश्न हैं तदनन्तर उनके उत्तर-रूप में पूरा अध्याय है। ऐसे स्थलों पर किस प्रश्न का उत्तर कहाँ से कहाँ तक है, यह उल्लेखपूर्वक स्पष्ट कर दिया गया है।

स्पष्टीकरण के लिये यत्र-तत्र सारणियाँ दे दी गई हैं तथा आयुर्वेदीय शब्दों के यथासम्भव अंगरेजी पर्याय भी दिए गए हैं।

इस प्रकार छात्रों, अध्यापकों तथा चिकित्सकों की प्रायः सभी सम्बद्ध आवश्यताओं की पूर्ति इस संस्करण से हो जायगी ऐसा विश्वास है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सभी प्रधान आयुर्वेद-महारथियों के सम्पादकत्व में इसका प्रकाशन हुआ है तथा चरक-चतुरानन कविराज श्री सत्यनारायण शास्त्री जी ने तो अपनी भूमिका देकर मानो इसे सप्राण बना दिया है।

आयुर्वेदप्रेमी यथाशीघ्र इस संस्करण का संग्रह करें। कागज, छपाई, जिल्द, आकार आदि सभी दृष्टियों से सर्वोत्तम। मूल्य इन्द्रियस्थान पर्यन्त पूर्वार्द्ध १६—००

उत्तरार्द्ध शीघ्र प्राप्त होगा

प्राकृत साहित्य का इतिहास

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रमुख विषय तो नाम से ही स्पष्ट है किन्तु सन्दर्भ रूप में विश्वभर की सम्पूर्ण भाषाओं की जानकारी इससे संक्षिप्त रूप में प्राप्त हो जाती है। तदनन्तर वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि तथा इस विषय पर खद्योत-प्रकाश डालने वाले आधुनिक ग्रन्थों के अध्ययन आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचन के साथ अपने विषय का यह प्रथम ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में अवतरित हुआ है। ऐसा विश्वास है कि प्राकृत के उद्गम, स्थिति और प्रचार आदि के विषय में जो भ्रामक और सन्दिग्ध दुर्निर्णीत मत-मतान्तर प्रचलित हैं उन सबका एक साथ निर्णय हो जायगा और प्राकृत के वास्तविक एवं प्रामाणिक इतिहास से लोग परिचित हो सकेंगे।

हिन्दी साहित्य को लेखक की यह अनुपम देन है। प्रत्येक संस्कृत-साहित्य के अनुसन्धित्सु छात्र, अध्यापक एवं अनुरागी व्यक्ति को इस ग्रन्थ का अवलोकन एवं अध्ययन अवश्य करना चाहिए। मूल्य २०-००

प्राकृत-पुष्करिणी

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

प्राकृत भाषाओं के विद्वान् डॉक्टर जगदीशचन्द्र जैन की 'प्राकृत साहित्य का इतिहास' नामक महत्त्वपूर्ण अनमोल रचना के प्रकाशन के पश्चात् हम उनकी 'प्राकृत-पुष्करिणी' पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इसमें संस्कृत के अलंकार-ग्रंथों में उद्धृत प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ चुनी हुई ५०० गाथाओं का संकलन है। संस्कृत के उद्भट आचार्यों ने इन गाथाओं को अपने ग्रंथों में उदाहरणस्वरूप महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। वस्तुतः ये गाथायें प्राकृत के उत्कृष्ट काव्यों से ली गई हैं। विद्वान् लेखक ने गाथाओं के संकलन के साथ-साथ उनका संपादन भी किया है और प्राकृत न जानने वालों के लिये प्रत्येक गाथा के नीचे हिन्दी अनुवाद भी दिया है। पुस्तक के आरंभ में विद्वत्तापूर्ण भूमिका है। प्राकृत के विद्यार्थियों के लिये यह अनुपम ग्रंथ अत्यंत उपयोगी है। मूल्य २-००

संस्कृत साहित्य का इतिहास

श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला

इस ग्रन्थ को लिखने का उद्देश्य यह है कि संस्कृत-साहित्य के अध्येता को अपनी अभीष्ट सामग्री का चयन करने के लिए अनावश्यक श्रम न करना पड़े तथा पाठक परम्परा और पूर्वाग्रह के मोह में न पड़कर प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न का समाधान स्वयं कर सकें। पाठक पर अपने विचार लादने की अपेक्षा उपयुक्त यह समझा गया है कि विभिन्न मतवादों की परीक्षा करके वह स्वयं ही विषय के सही ध्येय को ग्रहण कर सके। भारतीयता या विदेशीपन का पक्षपात त्याग कर किसी भी विद्वान् के स्वस्थ और सही विचारों को उधार लेने में संकोच नहीं किया गया है। पुस्तक की विषय-सामग्री और उसकी रूप-रेखा का गठन भी ऐसे ढंग से किया गया है, जिससे संस्कृत भाषा की आधारभूत भावभूमि का परिचय प्राप्त होने के साथ-साथ सम-सामयिक परिस्थितियों का भी अध्ययन हो सके। आर्यों के आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सह-स्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार-वीथियों का निर्माण हुआ और भारत के प्राचीन राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली, उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृत के छात्रों को संस्कृत-साहित्य के इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन कराया जाय, जिससे उनकी स्वतन्त्र मेधा-शक्ति एवं भाव-विचारों को विकसित होने के लिए दिशाएँ मिलें। प्रस्तुत उद्देश्य को भी दृष्टि में रखा गया है। मूल्य २०-००

संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

श्री वाचस्पति गैरोला

(अनेक विश्वविद्यालयों में पाठ्य-स्वीकृत)

इस छात्रोपयोगी संस्करण में विभिन्न संस्कृत-हिन्दी विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहासविषयक ज्ञान के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से संक्षिप्त रूप में इतिहास लिखा गया है और साथ ही संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का ऐतिहासिक संक्षिप्त अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है; जो अन्य किसी भी संस्करण में प्राप्त नहीं हो सकेगा। यही इस संस्करण की विशेषता है। मूल्य ८-००

मराठी का भक्तिसाहित्य

प्रो. भी. गो. देशपांडे

मराठी भक्ति-साहित्य के उद्गम और विकास का सर्वांग-परिपूर्ण विवेचन करनेवाले इस ग्रन्थ में आप संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम और समर्थ रामदास आदि संत कवियों की जीवनियों एवं साहित्य का साङ्गोपाङ्ग गम्भीर अध्ययन करके उनके भक्तिविषयक दृष्टिकोण का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करते हुए अति प्राचीन मराठी कवियों द्वारा रचित हिन्दी रचनाओं का आस्वादन करेंगे। इस ग्रन्थ में महाराष्ट्र के नाथ-पंथ, महानुभाव-पंथ, वारकरी या भागवत सम्प्रदाय, दत्त-पंथ और समर्थ सम्प्रदाय के विशिष्टतायुक्त भक्ति-साहित्य तथा महाराष्ट्र में भक्ति की सगुण और निर्गुण धाराओं में, प्रेमाश्रयी और ज्ञानाश्रयी धाराओं में स्वर्णसमन्वय कैसे प्रस्थापित हुआ और उससे मराठी का भक्तिसाहित्य अनूठा कैसे बना, यह सरल और रोचक शैली में वर्णन किया गया है। मराठी के भक्तिसाहित्य के विभिन्न काव्यरूपों के मूलस्रोत और विकास का मनोवैज्ञानिक वर्णन तथा प्राचीन मराठी साहित्य की दोनों धाराओं (पद्य और गद्य) में भक्ति की भावना कैसे पल्लवित हुई, यह सब हिन्दी में प्रथम ही बार प्रकाशित हुआ है। साधारण संस्करण मूल्य ८-०० राजसंस्करण १०-००

हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त-काव्य

डॉ० प्रभाकर माचवे

इस ग्रन्थ में दक्षिण और उत्तर की भाषाओं के आरम्भिक भक्ति-साहित्य के साम्य और विभेद पर तत्कालीन सामाजिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यशास्त्र-विषयक मान्यताओं के परिपार्श्व में सम्यक् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। तत्कालीन रहस्यवाद का आधुनिक, वैज्ञानिक, बुद्धिवादी दृष्टिकोण से विचार इस ग्रन्थ की विशेषता है। इस ग्रन्थ द्वारा बारहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के भारतीय वाङ्मय का एक रेखाचित्र, तत्कालीन दार्शनिक मान्यताओं की पृष्ठभूमि के साथ पढ़ने को मिल सकेगा। मूल तिब्बती, तमिल, रूसी, कन्नड आदि ग्रन्थों के सन्दर्भों सहित यह संग्रहणीय ग्रन्थ है। इसमें लेखक के दस वर्षों से अधिक के परिश्रम का निचोड़ है।

मूल्य १२-००

प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन

डा० राय गोविन्दचन्द

मनुष्य का शरीर ही मिट्टी से नहीं बना है बल्कि उसके समस्त कार्यकलापों का आधार भी मिट्टी ही है। मानव के समान मानव-सभ्यताएँ भी मिट्टी से उठ कर मिट्टी में ही मिली हैं। उन मानव-सभ्यताओं और संस्कृतियों का इतिहास मिट्टी की विभिन्न परतों को उधेड़ने के बाद ही जाना जा सकता है क्योंकि वह पाषाणखण्डों, हड्डियों, सिक्कों और बरतनों के रूप में मिट्टी में ही दबा पड़ा है। इस प्रकार मिट्टी में दबे पड़े मिट्टी के टूटे-फूटे बरतन भी किसी भी जाति या देश की सभ्यता, संस्कृति और कला का समूचा इतिहास प्रस्तुत कर देते हैं। उन्हीं टूटे-फूटे बरतनों से प्रमाणित हुआ है कि आज के मिट्टी के बरतनों की अपेक्षा पुराने भारतीय मिट्टी के बरतन कहीं अधिक सुन्दर, कलात्मक, ठोस और अधिक टिकाऊ होते थे। डाक्टर राय गोविन्दचन्द जी ने पहली बार इस विषय पर यह अलभ्य सामग्री प्रस्तुत की है और भारत के विभिन्न स्थलों पर खोदाई में जो मिट्टी के बरतन प्राप्त हुए हैं उनके कलात्मक आकार के आधार पर भारतीय सभ्यता के विकास का आरम्भ से लेकर गुप्तकाल तक का सचित्र विशद इतिहास इस पुस्तक में प्रस्तुत कर दिया है। मूल्य १२-००

यूरोप और वहाँ के संग्रहालय

डॉ. सतीशचन्द्र काला

यूरोप के संग्रहालयों की विविधता, योजना, प्रदर्शन-व्यवस्था, संगठन, संग्रहालयों की स्थापना का दृष्टिकोण आदि का प्रामाणिक एवं हृदयग्राही वर्णन इस पुस्तक में हुआ है। भारत से जो दुष्प्राप्य वस्तुएँ यूरोप ले जाई गई हैं उनका भी यथाशक्य विवेचन इसमें प्राप्त होता है। अन्त में आर्ट पेपर पर छपे लगभग ५० दुष्प्राप्य चित्र भी हैं। अनुसंधानप्रेमियों के लिए पुस्तक उपयोगी है। मूल्य ५-००

भारतीय इतिहास परिचय

डॉ० राजबली पाण्डेय

भारत की स्थूल भौगोलिक स्थिति पर सूक्ष्म विचार के अनन्तर भारत की आदिम सभ्यता से लेकर आजतक का प्रामाणिक इतिहास अत्यन्त सरल एवं सरस भाषा में लिखा गया है। आवश्यक स्थलों पर चित्र भी दिये गये हैं। परिचयात्मक इतिहास की जानकारी के लिए यह सर्वश्रेष्ठ तथा प्रामाणिक पुस्तक है।

सब धर्मों की बुनियादी एकता

भारतरत्न डॉ० भगवानदास जी

सचमुच दुनिया भर के तमाम मज़हबों की बुनियाद एक ही है। लेकिन इस बात को समझने और समझाने वाले बहुत कम लोग दुनिया में हैं। आज दुनिया की लगभग ५० फी सदी उलझनें ऐसी हैं जो केवल इसी एक बात को सही समझ लेने मात्र से दूर हो सकती हैं।

इसी ख़याल से यह अपने नमूने की बिल्कुल नई किताब लिखी गई है जिसमें दुनिया भर के मज़हबों और उनके सर्वश्रेष्ठ धर्मग्रन्थों (जैसे वेद, बाइबिल, कुरानशरीफ़ आदि) की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाने का सफल प्रयास किया गया है कि सब धर्मों-मज़हबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है। लेखक ने जिन वैज्ञानिक, व्यावहारिक, तर्कसंगत एवं युक्तिसंगत तरीकों से इस बात को समझाया है, और इस भावना के प्रसार के उपाय बताए हैं उससे बात हृदय में एकदम बैठ जाती है।

इसकी ज्यादा तारीफ़ बेकार है। हिन्दुस्तान के हर घर में इस किताब का रहना बहुत जरूरी है। आप एक बार पढ़कर ही इसकी उपयोगिता समझ जाएंगे।

मूल्य १२-००

अमृतमन्थन

(जीवन का दिव्य पक्ष)

डॉ. मङ्गलदेव शास्त्री

जीवन में उदात्त भावनाओं के दिव्य सन्देश को नवीन स्फूर्ति, नवीन जागरण, नवाभ्युत्थान का लाना ही इस रचना का मुख्य उद्देश्य है। पुस्तक लक्ष्यानुसन्धान, जीवनपाथेय तथा प्रज्ञा-प्रसाद नामक तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग का विषय है—भारतीय राष्ट्र की शिक्षा-विषयक महती समस्या का समाधान, द्वितीय भाग का विषय है—मनुष्य-जीवन के विकास के लिये परमावश्यक आदर्श चिन्तन, चारित्र्य-सम्पत्ति, सत्याचरण, भाव-संशुद्धि, इन्द्रिय-संयम तथा धैर्य जैसे विषयों का प्रतिपादन, और तृतीय भाग का विषय है—आध्यात्मिक विकास की उत्कृष्टतर अवस्था के साथ-साथ जीवन में सच्ची आनन्दानुभूति का वर्णन। सरल सुबोध राष्ट्रभाषा हिन्दी अनुवाद के साथ प्रेरणाप्रद हृदयंगम संस्कृत पद्यों में लिखी गयी यह पुस्तक छात्रों, अध्यापकों गृहस्थों तथा साधु-संन्यासियों के लिये भी उपयोगी सिद्ध होगी। मूल्य ४-५०

महाकवि कालिदास

आचार्य रमाशंकर तिवारी

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने महाकवि कालिदास की रचनाओं का सर्वथा नवीन और सूक्ष्मग्राही अनुशीलन प्रस्तुत किया है। अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का विवेकपूर्ण उपयोग कर, अपनी प्रवीण भावयित्री प्रतिभा तथा प्रखर आलोचक-बुद्धि के प्रकाश में लेखक द्वारा कवि के काव्यों का समग्र सौंदर्य उद्घाटित करने का सफल प्रयास किया गया है। प्रत्येक रचना के अतिरिक्त कालिदास की सौंदर्य-भावना, प्रेम-भावना, काव्यादर्श, लोकादर्श इत्यादि विषयों की अठारह अध्यायों में प्रामाणिक विवेचना की गई है और स्वतंत्र एवं मौलिक भाव से, कवि के मानवीय मर्म का उन्मीलन किया गया है। लेखक ने दीर्घ काल तक कालिदास का अध्ययन किया है और अंग्रेजी-साहित्याध्यापक होने के कारण, भारतीय एवं यूरोपीय दोनों समीक्षादर्शों से ओत-प्रोत होकर, महाकवि की उपलब्धियों का आधिकारिक मूल्यांकन प्रस्तुत किया है।

लेखक की अपनी स्वतंत्र दृष्टि-भंगी तथा वैयक्तिक शैली की छाप पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर स्पष्टरूपेण अंकित मिलेगी और कालिदास आदि के अध्येताओं को भारतीय साहित्य की सनातन प्राण-धारा को हृदयंगम करने में प्रचुर सहायता मिलेगी। साहित्य की व्यापक दृष्टि से महाकवि की विविध छवियों एवं भावभूमियों का जैसा सुन्दर तथा सर्वांगीण विश्लेषण इस पुस्तक में किया गया है और जितनी सामग्री इसमें एकत्र समाविष्ट की गई है, वह अब तक प्रकाशित किसी एक पुस्तक में उपलब्ध नहीं होगी। मूल्य ८-००

रघुवंशमहाकाव्यम्

'सुधा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित

प्रत्येक श्लोक में क्रमशः अवतरण, श्लोक, मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी टीका, अन्वय, 'सुधा' व्याख्या कोश, समास, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, तात्पर्यार्थ, हिन्दीभाषार्थ आदि विविध उपयुक्त विषयों से अलंकृत परीक्षोपयोगी टीका के साथ रघुवंश का यह सर्वश्रेष्ठ संस्करण है।

प्र० सर्ग ०-७५, द्वि० सर्ग ०-७५, १ व ५ सर्ग १-५०, २-३ सर्ग १-५० १-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-००, मूल्य पृथक् पृथक् प्रत्येक सर्ग ०-७५

रसराज

व्याख्याकार–रामजी मिश्र

काशी हिन्दूविश्वविद्यालय

प्रस्तुत पुस्तक में कविवर मतिराम के प्रसिद्ध रीतिशास्त्रीय ग्रन्थ 'रसराज' की सुन्दर व्याख्या की गई है। भानुदत्त की रसमञ्जरी तथा रसतरङ्गिणी, संस्कृत के इन दो ग्रंथों का निर्देश करते हुए मतिराम के लक्षणों के मूल स्रोतों का भी संकेत कर दिया गया है। मतिराम की भाव-व्यञ्जना एवं कल्पना-चित्रों की इसी तरह के अन्य कवियों के स्थलों से तुलना करके व्याख्या और अधिक उपयोगी तथा विवेचनापूर्ण बना दी गई है।

व्याख्या के आरम्भ में जो विशद भूमिका संलग्न है उसमें रीतिकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए रीतिकालीन कवियों एवं आचार्यों में मतिराम का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है और उनके महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रीतिकालीन साहित्यशास्त्र को क्या देन रही है, इसका समुचित संकेत किया गया है। भूमिका में व्याख्याकार ने अब तक की समस्त नवीन गवेषणाओं और उपलब्धियों का समाहार करते हुए पाठकों के लिये प्रस्तुत संस्करण को सब दृष्टियों से सुन्दर एवं उपयोगी बना दिया है। मूल्य ७–५०

साहित्य और सिद्धान्त

प्रो० श्यामलाकान्त वर्मा

(वाराणसी की उत्तरमध्यमा परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

हिन्दी साहित्य एवं काव्यशास्त्र के सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का सारसङ्कलन स्वरूप यह ग्रन्थ छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए परम उपयोगी है। ३–००

काव्याङ्गनिर्णय

प्रो० जंगबहादुर मिश्र

सन् १९५७ ई० से हाई स्कूल तथा इण्टरमीडियेट परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में अलंकार और छन्द भी स्वीकृत कर लिए गये हैं। छात्रों को इन विषयों के ज्ञान की प्राप्ति में सहायता देकर सुलभता प्रदान करना ही इस पुस्तिका का लक्ष्य है। इस पुस्तिका से हाईस्कूल तथा विश्वविद्यालयों एवं सम्मेलन-परीक्षाओं के छात्रों को समान रूप से लाभ होगा। मूल्य १–००

पाणिनिकालीन भारतवर्ष

(पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन)

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

इस ग्रंथ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। ऐसे लगभग ३००० शब्दों की अकारादि-क्रम-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है। लेखक की मान्यता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति-विषयक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पाणिनीय सामग्री का अध्ययन आवश्यक है। मूल्य १५-००

हिन्दी प्राकृत व्याकरण

आचार्य मधुसूदनप्रसाद मिश्र

हिन्दी में प्राकृत-व्याकरण का पूर्ण ज्ञान कराने के लिये तथा प्राकृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से विद्वान् लेखक ने इसमें महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, पैशाची, अपभ्रंश आदि प्राकृत के सभी अवान्तर भेदों का अत्यन्त सुबोध रूप से प्रतिपादन करके एक बहुत बड़ी कमी को पूर्ण किया है। पाद टिप्पणियाँ, तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री एवं ग्रन्थान्त में परिशिष्ट दे देने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है। मूल्य ५-००

हिन्दी-वैदिक-व्याकरण

आचार्य उमेशचन्द्र पाण्डेय

इस पुस्तक में वेद के व्याकरण को सरल एवं सुबोध रूप में लिखा गया है। विश्वविद्यालयों की बी. ए. एवं एम. ए. कक्षाओं में अनिवार्य रूप से वेद पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये विशेष रूप से लिखी गई इस पुस्तक में नवीन एवं प्राचीन अध्ययन-पद्धति का समन्वय किया गया है। स्वर-चिह्न, पदपाठ आदि के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की प्रत्येक कठिनाई दूर की गई है और अन्त में क्रिया-रूपों का एक लघुकोश भी दे दिया गया है। वेद के मन्त्रों को समझने के लिये एवं वेद के व्याकरण के लिये यह पुस्तक निश्चित रूप से सहायक एवं महत्त्वपूर्ण है। बी. ए. तथा एम. ए. में वेद एवं ऋग्वेद प्रातिशाख्य पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक परीक्षोपयोगी होने के साथ-साथ वेद में रुचि दिलाने वाली एवं उनके मार्ग को प्रशस्त करने वाली है। मूल्य २-००

असामान्य मनोविज्ञान
(ABNORMAL PSYCHOLOGY)

प्रो० रामकुमार राय
मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

२३ अध्यायों की इस अद्वितीय पुस्तक में प्रायः सभी भारतीय विश्वविद्यालयों के बी. ए. तथा एम. ए. के असामान्य मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित विषयों का समावेश है। अतः यह पुस्तक विद्यार्थियों की एक बहुप्रतीक्षित माँग की पूर्ति करती है।

प्रस्तुत पुस्तक के अवलोकन द्वारा सामान्य व्यक्तियों को भी अपनी भावना-ग्रन्थियों को समझने, उनका समाधान करने तथा पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अपना अत्यन्त सफल अभियोजन करने में विशेष सहायता मिलेगी।

विद्वान् लेखक को प्राध्यापक पद से शिक्षण तथा कलकत्ते में मनोवैज्ञानिक के पद पर रहकर विद्यार्थियों को मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक निर्देशन देने का दीर्घकालीन अनुभव होने के कारण पुस्तक में विषय-प्रतिपादन अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण और विशद तो है ही, साथ ही साथ साहित्यिक और प्रांजल भाषा-शैली ने इसे और भी बोधगम्य बना दिया है।

सम्पूर्ण पुस्तक प्रसंगानुसार असामान्यताओं के उदाहरणों से युक्त और उपयुक्त रेखाचित्रों से सुसज्जित है जिससे इसकी सुबोधता, उपयोगिता और आकर्षण बहुत बढ़ गया है। अन्त में अंग्रेजी-हिन्दी, हिन्दी-अंग्रेजी पर्याय सहित पारिभाषिक शब्दानुक्रमणिका एवं एक विस्तृत सहायक-ग्रन्थ-सूची भी दे दी गई है। छपाई, कागज, गेटअप आधुनिकतम मूल्य १०-००

श्रीविष्णुस्मृतिः
'वैजयन्ती' टीका तथा टिप्पणी सहित

सम्पादक—**श्री जे० जॉली**

इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में सुरक्षित श्री कोलब्रुक आदि विद्वानों द्वारा अन्विष्ट पाण्डुलिपियों के आधार पर संशुद्ध, नन्दपण्डित कृत 'वैजयन्ती' टीका तथा सम्पादकीय टिप्पणियों सहित यह दुर्लभ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। पूरे ग्रन्थ में आए वैदिक मंत्रों के प्रतीकों तथा स्मार्त पारिभाषिक शब्दों की अनुक्रमणिकाएँ भी ग्रन्थान्त में संलग्न हैं। शीघ्र प्रकाशित होगी

कौटिल्य-अर्थशास्त्रम्

(हिन्दी व्याख्या सहित)

व्याख्याकार-श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला

प्रस्तुत अनुवाद में इस वात का पूरी तरह ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो। अर्थशास्त्र के अध्ययन की दिशा में एक बड़ी कमी यह दिखाई देती है कि सारे ग्रन्थ को समाप्त कर लेने के वाद भी छात्र प्रस्तुत विषय की गहनता एवं व्यापकता से अछूता ही रह जाता है; और आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र का क्या महत्त्व है, इस सम्वन्ध में तो उसको तनिक भी ज्ञान नहीं होता। इन कमियों को दूर करने के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्य संघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों और उनके वाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त का समीक्षण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन जैसे राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धांतों की समीक्षा भी विस्तार से की गई है इन वातों के अतिरिक्त ग्रन्थ के परिशिष्ट में अर्थसहित एक पारिभाषिक शव्दावली भी संलग्न की गई है जिससे कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में प्रयुक्त पारिभाषिक शव्दावली का घनिष्ठ सम्वन्ध है। मूल्य १६-००

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

(शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर)

रूपान्तरकार-श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला

आलोचनात्मक मनोवैज्ञानिक विमर्श, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शव्दकोश ऐतिहासिक प्रस्तावनादि अनेक विषयों से विभूषित। मूल्य १०-००

कथासंवर्तिका

(वालोपयोगी मनोरम कथानक संग्रह)

सन्धिविरहित अतिसरल तथा सारगर्भित संस्कृत में लिखी कथाओं की यह पहली पुस्तक है, जो आपके मन को अनायास खींचे विना न रहेगी। कहानियाँ अपने ढंग की निराली होती हुई भी नीति और शिक्षापूर्ण हैं। प्रत्येक कथा के आदि में नीतिवाक्य अथवा शिक्षावाक्य उद्धृत होने से पुस्तक और भी उपादेय वन गई है।

मूल्य ०-७५

गोस्वामी तुलसीदास

आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

गोस्वामी तुलसीदासजीके ग्रन्थ प्रायः विश्वविद्यालयों के विभिन्न पाठ्यक्रमोंमें निर्धारित हैं। उन ग्रन्थों के सम्बन्ध में जिज्ञासु छात्र निरन्तर व्याख्यात्मक समीक्षा और विवेचन माँगते रहते हैं। आजकल जिस रीति से काव्य की समीक्षा और अन्तर्दृष्टि अपेक्षित होती है उसके लिये गोस्वामी तुलसीदास जैसे महाकवि पर व्याख्यानात्मक तथा विवेचनात्मक समीक्षा से युक्त सुलभ ग्रन्थ की अत्यन्त आवश्यकता थी। उसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये गोस्वामीजी के जीवनचरित, उनकी रचनाओं और उनमें निहित दार्शनिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक और भावात्मक तत्त्वों की मधुर, सरल और विस्तृत मीमांसा एक ही स्थान पर, एक ही ग्रन्थ में देने का प्रयास किया गया है। तुलसी का अध्ययन करने वाले छात्रों के अतिरिक्त तुलसी के काव्य मानस का रस पान करने वाले भक्तों और रसिकों के लिये भी इसमें अनल्प सामग्री भरी मिलेगी। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि तुलसी पर इतना प्रामाणिक, व्यापक और सरल ग्रन्थ इतने सस्ते मूल्य में दूसरा कोई प्राप्य नहीं है।

तुलसीदासजी के जन्मस्थान, जीवन की अनेक घटनाओं और उनकी रचना के विषय में जो अनेक प्रकार के भ्रामक मत-मतान्तर प्रचलित हैं उन सबका युक्तियुक्त समन्वयात्मक निराकरण और तुलसी-साहित्य की उन प्रमुख विशेषताओं से परिचित होने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है जिनकी ओर सामान्य समीक्षकों का ध्यान अब तक नहीं पहुँच पाया था। मूल्य ३-००

काव्यवल्लरी

श्री व्यथितहृदय

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन एवं अर्वाचीन हिन्दी कवियों के अलंकारयुक्त, उपदेशात्मक पद्य-रचनांशों का सुन्दर संकलन है। आदि में लगभग सौ पृष्ठों की विस्तृत समालोचनात्मक भूमिका है जिसमें हिन्दी-साहित्य के इतिहास पर भी उत्तम प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक कवि की रचना का अंश देने से पूर्व उस कवि के जन्म, जन्मस्थान, शिक्षा-दीक्षा, जीवनवृत्त, रचनाएँ, भाषा-शैली आदि के विवेचन से युक्त समालोचनात्मक परिचय भी दिया गया है। छात्रों को हिन्दी पद्य-साहित्य का ज्ञान कराने की दृष्टि से यह पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है। मूल्य ४-००

कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ० श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

प्राध्यापक—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तुत ग्रन्थ में कादम्बरी का सम्पूर्ण कथासूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है। हिन्दी भाषा का प्रवाह एवं उसकी प्रकृति ऐसी है कि पाठक बाण की उत्कृष्ट संस्कृत शैली का रसमय लालित्य ग्रहण कर सकते हैं। गुप्तयुग की सांस्कृतिक सामग्री के सुरक्षित भण्डार की साहित्य, कला और इतिहास के आधार पर तुलनात्मक व्याख्या, प्रत्येक स्थल और कठिन शब्दों की सुस्पष्ट व्याख्या तथा कादम्बरी की रचना में कवि का मूल प्रयोजन क्या था, आरम्भ में राजा का नाम शूद्रक क्यों रखा गया, अच्छोद सरोवर क्या है, महाश्वेता और कादम्बरी किस-किस के प्रतीक हैं, आदि अनेक प्रश्नों का समाधान उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। अपने युग की जिस समस्या का समाधान बाण महोदय कादम्बरी-द्वारा करना चाहते थे उसका भी लेखक ने सप्रयोजन स्पष्टीकरण कर दिया है। ग्रन्थ के आरंभ में ३५२ अनुच्छेदों की विस्तृत विषय-सूची और अन्त में कुछ विशिष्ट शब्दों की अनुक्रमणिका भी दी गई है।

विद्यार्थी, अध्यापक एवं साहित्य-प्रेमियों को अविलम्ब इस महत्त्वपूर्ण उपादेय ग्रन्थरत्न का संग्रह करना चाहिए। मूल्य १३–७५

हिन्दी कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त

श्री प्रद्युम्न पाण्डेय

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस पुस्तक में कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त भाग की अत्यन्त स्पष्ट, सरस एवं सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। अनुवाद करने में यह ध्यान रखा गया है कि छात्र उससे मूल के भावों तक पहुँच सकें, साथ ही कथा की धारा भी न टूटने पाए। पुस्तक के आदि में महाकवि बाण और 'कादम्बरी' के एक विशिष्ट पार्श्वचरित महाश्वेता की विशेषताओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है जिसमें आधुनिक आलोचना के मापदण्डों का प्रयोग हुआ है। अन्त में क्लिष्ट शब्दों और वाक्यों की संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या तथा दो परिशिष्टों में बाण की अन्य विशेषताओं का उल्लेख भी कर दिया गया है। मूल्य २–००

हिन्दी कादम्बरी : शुकनासोपदेश

व्याख्याकार–झा वन्धु

इसमें समस्त शब्दों का विग्रह भी दे दिया गया है जो अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक होगा। मूल ग्रन्थ के वास्तविक अभिप्राय को समझने के लिये अत्यन्त सरल संस्कृत में उसकी व्याख्या की गयी है जिससे छात्रों में भी स्वयं सरल संस्कृत व्याख्या करने की शक्ति और प्रवृत्ति उत्पन्न हो। प्राञ्जल तथा मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद किया गया है जिससे प्रवाह वना रहे और अनुवाद पढ़ते समय मूल ग्रन्थ का रसास्वादन भी होता रहे। इन सवके अतिरिक्त इसकी टिप्पणी में ग्रन्थ में आये पारिभाषिक शब्दों की प्रामाणिक व्याख्या और उसका इतिहास भी लिखा गया है जो छात्रों के ज्ञान-विस्तार में सहायक होगा। अलङ्कारों का भी यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। विस्तृत भूमिका में वाण-सम्वन्धी समस्त आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर वहुत ही प्रामाणिक रूप से दिये गये हैं।

मूल्य ३–००

कादम्बरी

'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या

कथामुख भाग मूल्य ३–७५] [पूर्वार्द्ध मूल्य १३–५०

इस संस्करण की सरल सुवोध संस्कृत टीका में प्रत्येक शब्द के पर्याय, समास, विग्रह, कोश, अलंकार आदि से मूल के पद-पद की ग्रन्थियाँ खोल दी गई हैं। इसकी हिन्दी व्याख्या मूल के अनुरूप ही पदविच्छेदपूर्वक सरल शब्दों में संशोधित करके की गयी है जिससे हिन्दी-अंगरेजी के छात्र भी कादम्बरी का अध्ययन विना गुरु के स्वयं ही कर सकेंगे। इस संस्करण की आधुनिकता पर मुग्ध होकर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय तथा विहार–संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों ने जो उद्गार प्रकट किए हैं, वे पुस्तक में प्रकाशित कर दिए गए हैं। कादम्वरी–समीक्षा, कथासार आदि से सुसज्जित शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण।

हिन्दी काव्यप्रकाश

व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह

१–३ उल्लास मूल्य ३–००] **[संपूर्ण मूल्य १०–००**

अनेक विश्वविद्यालयों के अधिकारी वर्ग ने आधुनिक पद्धति की विशालकाय इस हिन्दी व्याख्या पर मुग्ध होकर इसी संस्करण को अपने पाठ्यक्रमों में निर्धारित कर लिया है। संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी में समानरूप से इस ग्रन्थ की व्यापकता को देखकर तदनुकूल ही इसकी व्याख्या की गयी है। व्याख्या के साथ-साथ टिप्पणी (नोट्स) में वे सभी विषय दिये गये हैं जो वामनी, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक-लोचन आदि में बिखरे पड़े हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार का सर्वांगपूर्ण सुसज्जित संस्करण प्रथम वार ही छपा है। परिष्कृत द्वितीय संस्करण।

हिन्दी काव्यप्रकाश : दशम उल्लास

डॉ० सत्यव्रत सिंह

विश्वविद्यालयों की एम. ए. परीक्षा में पाठ्य-ग्रन्थ रूप में स्वीकृत 'काव्यप्रकाश' का दशम उल्लास अति क्लिष्ट माना जाता है। इसका विषय है अर्थालङ्कारों का विवेचन। प्राचीन पद्धति से लिखे हुए इस ग्रन्थ का आशय नयी पीढ़ी के छात्रों को समझना कठिन जानकर विज्ञ टीकाकार ने व्यवस्थित भाषा में मूल के नीचे भाषानुवाद अङ्कित करके अपनी टिप्पणी (विमर्श) द्वारा ग्रन्थियों का सम्यक् समुन्मोचन कर दिया है। आलोचनात्मक विषयों का विशद ज्ञान सुविस्तृत भूमिका द्वारा ही हो जाता है। मूल्य ५–००

वाक्यपदीयम् : ब्रह्मकाण्डम्

'भावप्रदीप' संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद सहित

प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ न्याय-व्याकरण-साहित्याचार्य श्री पण्डित सूर्यनारायण शुक्ल द्वारा प्रस्तुत 'भावप्रदीप' संस्कृत टीका तथा उन्हीं के आत्मज न्याय-व्याकरण-साहित्याचार्य श्री पं० रामगोविन्द शुक्ल कृत हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया गया है। 'आचार्य भर्तृहरि और उनका वाक्यपदीय' शीर्षक विस्तृत भूमिका में भर्तृहरि का समय, उनका वैदिक होना, वाणी के भेद, नागेश पर शैव दर्शन का प्रभाव, प्रतिभावाद आदि विषयों पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। भूमिका मात्र के अध्ययन से वाक्यपदीय का बहुत-कुछ सारांश अधिगत हो जाता है। मूल्य ४–५०

हिन्दी-साहित्यदर्पण

'शशिकला' हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह

मूल्य संपूर्ण १२-५०] [केवल षष्ठ परिच्छेद मात्र ४-५०

इस संस्करण की विशेषता—इस संस्करण में पहले सर्वबोध्य सुगम भाषा में मूल का व्यवस्थित अनुवाद अंकित किया गया है तत्पश्चात् विमर्शाख्य विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है जिसके द्वारा विषय की दुरूह ग्रन्थियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। इसमें कहीं भी मूल की उपेक्षा हुई प्रतीत नहीं होती। छोटे-छोटे वाक्योंवाली सरस, सरल एवं विषय के अनुरूप ललित भाषा का प्रयोग करके नाट्यशास्त्रकार, अभिनवभारतीकार, भावप्रकाशनकार तथा रसार्णवसुधाकर के रचयिता आदि अनेक साहित्यमर्मज्ञों के मतों की सहायता से भ्रामक मत-मतान्तरों के निरासपूर्वक इस कौशल से विषय का यथार्थ स्वरूप प्रतिपादित किया गया है कि एक बार पढ़ लेने मात्र से हृदयपटल पर विषय अंकित-सा हो जाता है। आरम्भ में १०० पृष्ठों की विस्तृत भूमिका है जिसमें कुछ अलङ्कारों पर वैज्ञानिक शोधसम्बन्धी दृष्टिकोण, स्वरूप तथा परस्पर वैषम्य सङ्केतित हैं।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अङ्क)

व्याख्याकार—श्री देवदत्त शास्त्री

विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्यस्वीकृत इस चतुर्थ अङ्क की ऐसी अनुशीलनान्वयार्थ संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है कि परीक्षार्थी स्वयं इस ग्रन्थ का अनुशीलन कर सकेंगे। लगभग ४० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में महाकवि कालिदास और शाकुन्तल का समीक्षात्मक विवेचन किया गया है। मूल्य १-००

कृषकाणां नागपाशः (रूपकम्)

यदि आप मस्तिष्क पर बिना जोर दिये धारावाहिक तथा फड़कती शैली में संस्कृत पढ़ना चाहते हों तो इस लघु पुस्तक को अपना साथी बनाइये। लेखक ने ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधृत रूपक के पात्रों में जान डाल दी है। सर्जन होते ही यह रूपक इलाहाबाद रेडियोस्टेशन के रंगमंच से पुरस्कृत हो चुका है। मूल्य ०-५०

कलाविलासिनी वासवदत्ता

श्री देवदत्त शास्त्री

* कला ही जीवन है और जीवन ही कला है। जो जीवन और कला की उपासना संयुक्तरूप में करता है वही कलाकार है, वही जीने की कला जानता है। इसी सिद्धान्त का व्यावहारिक विवेचन इस पुस्तक की कलामयी रोचक कहानियों में है।

* प्राचीन भारत के नागरक की दिनचर्या, उसकी कलाप्रियता और उसका मुस्कराता हुआ जीवन-दर्शन गवाक्ष बनी हुई इन कहानियों से झाँकता है।

* अपने समय की बेजोड़ रमणी महारानी वासवदत्ता के मोहक कलाविलास का परिचय कौमुदीमहोत्सव, मदनमहोत्सव जैसे उत्सवों, सरस्वती पूजन, काव्य-संगीत-गोष्ठियों और रंगरूप के कलात्मक आयोजनों से प्राप्त करेंगे।

* दाम्पत्य जीवन, सपत्नी जीवन, निराश, पराजित जीवन को सुखद, प्राणद और प्रेरक बनाने की कला मधुर, मोहक कथाओं द्वारा सिखाती है कला-विलासिनी वासवदत्ता।

* कलाविलासिनी वासवदत्ता से हमें कभी न झुकने वाला, कभी न कुंठित होने वाला कलात्मक स्वाभिमान मिलता है और मिलती है देश के प्रति, देव के प्रति तथा देह के प्रति एक आस्था, एक निष्ठा और कभी न सूखने वाली आनन्द की निर्झरिणी।

इस युग के भारतीय नागरक की दिनचर्या और रात्रिचर्या तक में कलाओं का प्रभाव और प्राधान्य था। इतिहास द्वारा उपेक्षित उदयन और वासवदत्ता इस युग के ऐसे दो ध्रुव हैं जहाँ पर चौसठ कलाओं का अस्तित्व और विकास निहित रहा है।

कलाविलासिनी महारानी वासवदत्ता की कलाविलासिता में भोग और योग का पूर्ण समन्वय था। उनकी मुस्कराती हुई जिन्दगी ने कला को नई मुस्कान, नई प्रेरणा देकर भारतीय नागरिक जीवन को ऐसा कलाविलास दिया जिससे हमारी संस्कृति, हमारा साहित्य अनुप्राणित हुआ। मूल्य २-५०

चिन्तन के नये चरण

श्री देवदत्त शास्त्री

चिन्तन के नये चरण में भारतीय संस्कृति, साहित्य और इतिहास की चिरन्तन आस्थाएं, नई दृष्टि और नई स्थापनाएँ हैं। भाषा-विज्ञान प्रकरण में लिपिविज्ञान और अक्षर-विज्ञान संबंधी जो मान्यताएँ प्रस्तुत की गई हैं वे आर्ष सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल और प्रामाणिक हैं। इस विषय के विवेचन में शब्दसंयम-पद्धति का परिचय आधुनिक भाषा-विज्ञान के लिए सर्वथा नई खोज है। मनोविज्ञान प्रकरण में मरणोत्तर जीवन का रहस्य, परलोकगत आत्माओं से साक्षात्कार, मणि, मंत्र, यंत्र, तंत्र आदि उन सापेक्ष्य विषयों पर, जिनकी उपेक्षा की जा रही है, मनोवैज्ञानिक ढंग से चिन्तन किया गया है। रत्नों और मणियों तथा यंत्र, मंत्र का हमारे जीवन और विचारों पर कैसा प्रच्छन्न प्रभाव पड़ता है—इसका व्यावहारिक ढंग से विवेचन किया गया है।

सतयुग से पूर्व देवयुग में साध्य, महाराजिक, आभास्वर आदि वर्ग जातियों) के लोग कितने वैज्ञानिक थे। भारतीय सभ्यता कितनी समुन्नत थी। भारतवर्ष की सीमा कितनी विशाल थी तथा रावणपालित लंका वर्तमान श्रीलंका थी या लक्कदिव मालदिव—इन ऐतिहासिक समस्याओं पर इतिहास, भूगोल के धरातल पर खोजपूर्ण संशोधन इतिहास प्रकरण में प्रस्तुत किये गए हैं।

उपनिषत्काल में भारत में विभिन्न संस्कृतियों का संगम कैसे हुआ, उसका प्रभाव हमारी दार्शनिक विचारधारा एवं साहित्य और समाज पर क्या पड़ा तथा उपनिषद् साहित्य का अन्तरंग क्या है, पुराणों के प्रतीकों का रहस्य क्या है-इत्यादि विषयों पर गंभीर चिन्तन पुराण-उपनिषद् प्रकरण में किया गया है।

नृत्य, नाटक, अभिनय और रंगमंच की सहस्रों वर्ष प्राचीन परम्परा तथा रंगमंच के उद्देश्य और विधान का गवेषणात्मक विवेचन नृत्य-नाटक-रंगमंच प्रकरण में किया गया है।

उपर्युक्त विषय सामान्य, सर्वजनीन और लोकोपयोगी हैं। इन पर लेखकने जो दृष्टिकोण व्यक्त किये हैं वे सर्वथा मौलिक, प्रामाणिक और विद्यार्थियों तथा साहित्यकारों के लिये कल्याण मित्र बनकर उनका श्रेय-सम्पादन करते हैं। मूल्य ६—००

हिन्दी के पौराणिक नाटक

डॉ० देवर्षि सनाढ्य, शास्त्री

भारतीय पुराणों ने किस प्रकार भारतीय जन-मन को प्रभावित किया है और किस प्रकार पुराण की दिव्य कथाओं ने भारतीय मनीषा को प्रेरित किया है, इन सबका प्रामाणिक विवरण इस शोध-ग्रन्थ में उपस्थित किया गया है। संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, तेलगु, तमिल, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परम्परा का इतिवृत्त उपस्थित करते हुए लेखक ने हिन्दी के पौराणिक नाटकों का आलोचनात्मक इतिहास भी इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है और इस प्रकार यह सिद्ध कर दिया है कि भारतीय जनरुचि, संस्कृति तथा सभ्यता के मूल में एक ही प्रेरणा काम कर रही है।

मूल्य १०—००

जीवन-दर्शन

डॉ० मुंशीराम शर्मा

जीवन क्या है ? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है ? जीवनपथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं ? जीवन के भौतिक तथा आध्यात्मिक उपादान क्या हैं ? पाश्चात्य तथा पौरस्त्य मनीषियों ने उसके सम्बन्ध में अपने क्या विचार अभिव्यक्त किये हैं ? आगे बढ़ने तथा ऊंचा चढ़ने में क्या अन्तर है ? जीवन-पथ का गन्तव्य कहाँ समवसित होता है ? त्याग और बलिदान, ज्ञान और कर्म, आनन्द और प्रकाश जीवन के किन स्तरों को आलोकित करते हैं। यदि आप इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहते हैं तो 'जीवन-दर्शन' पढ़िये। लेखक के वैज्ञानिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा साहित्यिक अध्ययन का सार इस ग्रन्थ में सुरक्षित है। 'जीवन-दर्शन' पढ़ कर ही आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे।

मूल्य २—५०

भक्ति-तरंगिणी

डॉ० मुंशीराम शर्मा

भक्ति-भाव से ओत-प्रोत वेद-मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद, परम सत्ता के प्रति ऋषियों के मार्मिक हृदयस्पर्शी उद्गार, प्रभु का गुण कीर्तन, भक्त के अन्तस्तल को चीरकर निकली हुई शरण-याचना की पुकार, विरह व्याकुलता, साधन और सिद्धि के उद्बोधनकारी, तृप्तिविधायक उदात्त भाव—सबका एक साथ अनुभव कराने वाली भक्तितरंगिणी अध्यात्मपथ के यात्रियों के लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी।

मूल्य ३—००

भक्ति का विकास

डॉ० मुंशीराम शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डी. ए. वी. कालेज, कानपुर

ईश्वरतत्त्व की वैदिक दृष्टिकोण से की हुई व्याख्या, साहस एवं पाण्डित्य चिन्तन, वेदों के अनेक-देवपरक स्तुतिमन्त्रों का एक में समन्वय तथा विभिन्न वे शास्त्रों के प्रतिपाद्य के एकत्व का प्रमाणसिद्ध, तर्कसंगत एवं युक्तिपूर्ण दार्शनि विवेचन प्रथम वार ही हिन्दी में इतनी स्पष्टतापूर्वक आपको इस ग्रन्थ में प्र होगा। ग्रन्थ के दो भाग विवेच्य विषय के विभाग के अनुसार अनेक उपभा में विभाजित हैं।

सहस्राब्दियों पूर्व से आज तक प्रकाश में आए समस्त संप्रदायों, उ शाखाओं तथा रामानुज, वल्लभ, चैतन्य, तुलसी, सूर आदि महान् सन्त भक्तों साहित्य का साङ्गोपाङ्ग गम्भीर अध्ययन करके लिखे गए उनके भक्तिविषयक दृ कोण का अत्यन्त प्रामाणिक विवेचन पढ़कर आप यह सरलता से जान जा कि भगवत्प्राप्ति के एकमात्र उपाय 'भक्ति' का किस समय कहाँ क्या रूप र किन लोगों ने कैसे उसे किस रूप में समझा और समझाया, उसके वेद-शास्त्र-स सम्मत स्वरूप का किस क्रम से विकास हुआ और किस रूप में आज हम हृदयङ्गम करके आत्मकल्याण के भागी बन सकते हैं।

अत्यन्त संक्षेप में हम कह सकते हैं कि परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भग और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि हिन्दी जाननेवाले प्रत्येक वर्ग, वर्ण स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे, उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत अनायास सुलभ होगा तथा इस विषय के चिन्तकों को भविष्य में चिन्तन, म एवं अध्ययन के लिए नई दिशा, नया दृष्टिकोण प्राप्त होगा। मूल्य २०

श्रीमद्भगवद्गीता

सानुवाद मधुसूदनीव्याख्या सहित

अनुवादक—स्वामी श्री सनातनदेव जी महाराज

गीता की सर्वमान्य सुप्रसिद्ध 'मधुसूदनी' व्याख्या कठिन होने के कारण पण्डितजनों के लिए ही बोधगम्य थी अतः साधारण संस्कृत अथवा हिन्दी भाषा जानने वाले को भी गीतामृत सुलभ कराने की दृष्टि से मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या के साथ उसकी अक्षरशः हिन्दी व्याख्या भी प्रकाशित की गई है। हिन्दी व्याख्या अत्यन्त सरल, प्रवाहमय तथा मूल का प्रतिपद अनुवर्तन करने वाली है। सर्वत्र ही गूढ़ स्थलों को सुस्पष्ट करने के लिए मत-मतान्तर-निरासपूर्वक विषयवस्तु का यथार्थ बोध कराया गया है। वयोवृद्ध मुमुक्षुजनों के लाभार्थ बड़े टाइप में सुस्पष्ट मुद्रण किया गया है। पुरुषार्थचतुष्टय के साधन-पथ का सम्बल यह संस्करण जिज्ञासु व्यक्तिमात्र के लिए परम उपादेय है। कागज, मुद्रण, आकार, सज्जा आदि सभी मनोरम हैं। मूल्य १६—५०

पौराणिक कथाएँ

श्री पं० हृदयराम शर्मा

कथाओं के माध्यम से मानव को सब प्रकार का ज्ञान देना पुराणों का लक्ष्य है। किन्तु संस्कृत भाषा में होने के कारण सर्वसाधारण उससे लाभ नहीं उठा पाते। अतः विज्ञ लेखक ने उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकूल रूप देकर सम्पादित किया है। आबालवृद्ध नर-नारी सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण उपदेशप्रद सामग्री मिलेगी। इन कहानियों से सबको सब प्रकार का अलौकिक ज्ञान प्राप्त होगा, अनायास ही पुराणों का मर्म समझ में आवेगा तथा कथा-कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होते हुए उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा। छात्र-छात्राओं के लिये तो अत्यंत उपयोगी पुस्तक है। २—५०

युगपरिवर्तन

[कब, क्यों और कैसे ?]

सन् १९६२ में आठ ग्रहों के एकराशिगत होने की विश्व पर होने वाली भयंकर प्रतिक्रियाएँ, युगान्तरकारी अनर्थों द्वारा कलियुग का अन्त एवं सतयुग के आगमन द्वारा विश्व-कल्याण की संभावना; शास्त्रसम्मत कालविभाग, तात्कालिकी कर्तव्यता आदि पर लोकोत्तर महापुरुषों की भविष्यवाणियोंसहित विवेचन। १—५०

हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ

मूल लेखक—थि. गोल्डस्टूकर

अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री

वैदिक काल में आर्यों की संस्कृति और सभ्यता एवं उनके आचार-विचा कितने समुन्नत थे तथा किन उत्कृष्टतम ग्रन्थों से इसका प्रामाणिक विवरण प्रा होता है इसका विशद विवेचन प्राप्त करने के लिये राष्ट्रभाषा हिन्दी में पहल बार प्रकाशित प्रस्तुत पुस्तक अवश्य पढ़ें। एकबार देखकर ही आप इसर विशेषताओं से परिचित हो सकते हैं। विज्ञ लेखक ने इस ग्रन्थरत्न की रचना जो श्रम किया है वह लेखनी का विषय नहीं। मूल्य ४-०

संस्कृत साहित्य का इतिहास

आर्थर मैक्डॉनल (हिन्दी संस्करण) अनुवादक—श्रीचारुचन्द्र शास्त्री

मैक्डॉनल-प्रणीत 'हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर' अपने विषय का सर्वमान तथा सर्वत्र पाठ्यस्वीकृत ग्रन्थ है। प्रस्तुत ग्रन्थ उसी का सरस अनुवाद है छात्रों तथा अध्यापकों के लिये नितान्त उपयोगी है। प्रथम भाग मूल्य ७-५

संस्कृतवाङ्मयपरिचयः

(शास्त्री परीक्षोपयोगी संस्कृत ऐतिहासिक ग्रन्थ)

पण्डित मधुसूदन प्रसाद मिश्र

वेद से लेकर बीसवीं सदी तक के संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों का उद्गमकाल इतिहास तथा रचयिताओं के संक्षिप्त परिचय इस ग्रन्थ में दिए गये हैं। संस्कृत साहित्य में इस ढङ्ग का यह सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। मूल्य १-५

संस्कृतसाहित्येतिहासः (संस्कृत)

आचार्य रामचन्द्रमिश्र

(वाराणसी तथा विहार की शास्त्री परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

इसमें वेद-वेदाङ्ग आदि से लेकर यथाक्रम काव्यकाल तथा वैशिष्ट्य-विवेचन आदि विषय हैं। अतिविस्तृत विषय को संक्षिप्त करना साधारण छात्रों के लिये कष्टकर होता है अतः संक्षेपमें ही विषय का यथार्थ ज्ञान कराया गया है। ४-००

विक्रमादित्य [संवत्-प्रवर्तक]

डॉ॰ राजवली पाण्डेय

भारतीय परम्परा में विक्रमादित्य का स्थान जितना ऊंचा और सुरक्षित है, उतना ही आधुनिक इतिहास के शोधकों और लेखकों ने या तो उनकी ऐतिहासिकता असिद्ध करने का प्रयत्न किया है अथवा कतिपय अन्य राजाओं से अभिन्नता प्रदर्शित करने की चेष्टा की है। इस प्रकार विक्रमादित्य भारतीय इतिहास की एक विकट समस्या बन गये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इतिहास की इसी ग्रन्थि को सुलझाने का प्रयत्न किया गया है। अनेक मत-मतान्तरों की समीक्षा करके यह दृढ़तापूर्वक स्पष्ट किया गया है कि ५७ ई० पूर्व में विक्रमादित्य द्वारा बर्बर शकों का पराजय और मालवगण की पुनःस्थापना करके एक नवीन संवत् का प्रवर्तन असंदिग्ध ऐतिहासिक घटना है। इस घटना का बहुत बड़ा राष्ट्रीय महत्त्व है। इसके अतिरिक्त विक्रमादित्य के जीवन तथा तत्कालीन भारतीय इतिहास पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। यह बहुत ही गवेषणापूर्ण और विचारोत्तेजक रचना है। भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों और पाठकों के लिये अत्यन्त उपादेय है। छपाई-गेटअप आधुनिकतम। मूल्य १०-००

मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन

आचार्य बदरीनाथ शुक्ल

प्राध्यापक-वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय

इस ग्रंथ में पहले तो पुराण-सामान्य का परिचय आदि है तदन्तर मार्कण्डेयपुराण के ऋषि, काल, कर्त्ता आदि के विवेचन के अनन्तर प्रति अध्याय क्रम से कथा उपन्यस्त है। कथा-सूत्र में कहीं भी त्रुटि नहीं आने पाई है। प्रत्येक कथा मौलिक सी प्रतीत होती है। लेखक की पाण्डित्य तथा अनुसन्धान से पूर्ण भूमिका तथा 'अध्ययन' का अध्ययन कर लेने पर पुराण-साहित्य की मर्मज्ञता सहज सुलभ हो जाती है। हिन्दी साहित्य में पुराण-साहित्य के अध्ययन का यह सर्वथा नवीन प्रयास है। ग्रन्थ कथावाचकों, पुराणानुरागियों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिये परमोपयोगी है। मूल्य ४-५०

हिन्दी गाथासप्तशती

व्याख्याकार-श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

जो विद्वान् प्राचीन भारतीय समाज का चित्रण शास्त्रीय साहित्य में ही खोजते हैं, उनका ध्यान ऐसे साहित्य की ओर भी जाना चाहिये। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को लेकर इसमें नाना भावों के निदर्शन पाये जाते हैं। पारिवारिक जीवन की तीव्र अनुभूतियों की झाँकी के साथ-साथ नायक-नायकादि की चेष्टाओं एवं मनोभावों की जानकारी प्राप्त करना भी इस पुस्तक द्वारा बहुत कुछ सुलभ हो जाता है। दक्षिण भारत के ग्रामीण जीवन का तो इसमें सजीव चित्रण है ही, भारतीय संस्कृति के अध्ययन की भी यह एक महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती है। इसमें अनुवाद के साथ-साथ विस्तृत भूमिका एवं उपयोगी परिशिष्ट भी सुलभ है। मूल्य ५-००

चन्द्रप्रभाचरितम्

म. म. श्री शङ्करलाल विरचित

यह अत्यन्त सरस हृदयग्राहिणी गद्यकथा है। इसका कथानक सविशेष रोचक है। इसकी शैली दण्डी एवं बाणभट्ट की ही भाँति उत्कृष्ट है। अनेक परीक्षाओं में पाठ्यस्वीकृत हो जाने के कारण सर्वबोध्य सुगम छात्रोपयोगी नोट्स भी प्रस्तुत कर दिये गए हैं जिससे यह संस्करण छात्रों, अध्यापकों तथा संस्कृत-प्रेमी जनों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है। शीघ्र प्रकाशित होगा

किरातार्जुनीयम्

(तृतीय सर्ग) 'घण्टापथ' सुधा व्याख्या

आगरा विश्वविद्यालय में पाठ्यस्वीकृत इस तृतीय सर्ग की संस्कृत व्याख्या में अन्वय, समास-विग्रह, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, भावार्थ आदि परीक्षोपयोगी विषय देकर हिन्दी व्याख्या तथा भूमिका में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का तुलनात्मक विवेचन दिया गया है। मूल्य १-००

आचार्य किशोरीदास जी वाजपेयी की नवीन रचना—

भारतीय भाषाविज्ञान

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भूमिका में लिखा है:—

'आचार्य वाजपेयी हिन्दी-व्याकरण और भाषाविज्ञान पर असाधारण अधिकार रखते हैं। वे मानो इन्हीं दोनों विद्याओं के लिए ही पैदा हुए हैं।

वाजपेयीजी लीक पर चलने वाले पुरुष नहीं हैं। आधुनिक भाषाविज्ञानियों को यहाँ कुछ बातें खटकनेवाली मिलेंगी (क्योंकि यह एक एकदम मौलिक चीज है)। वाजपेयीजी ने इतने अधिक परिमाण में ठोस सामग्री यहाँ दी है, जिसके लिए हमें कृतज्ञ होना ही पड़ेगा। यह ग्रन्थ बहुत ही विचारोत्तेजक है; इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं। ग्रन्थ-कर्ता ने अपने भाषा-संबन्धी विशेष ज्ञान एवं सूक्ष्म वैज्ञानिक दृष्टि से काम लेते हुए बहुत से ऐसे निष्कर्ष निकाले हैं, जिनसे आधुनिक भाषाविज्ञान भी असहमत नहीं हो सकता। वर्तमान भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक विवेचन में वाजपेयी जी ने अपने कौशल का अच्छा परिचय दिया है। भाषाओं के ऐतिहासिक विकास पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। वाजपेयीजी भारतीय भाषाविज्ञान के (इस रूप में) प्रथम मुनि हैं।

संक्षेप में यह समझिए कि भारतीय भाषाओं का मौलिक पद्धति पर विवेचन-विश्लेषण और वर्गीकरण इस ग्रन्थ में है। भाषा टकसाली, सुबोध और प्रवाहमयी है। विषय समझाने की शैली हृदयग्राही और रसमयी है।

प्रारंभ में वाजपेयी जी ने 'प्रासङ्गिक' जो कुछ कहा है और अन्त में जो परिशिष्ट है, उससे ग्रन्थ और अधिक खिल उठा है। अपने विषय की, अपने ढङ्ग की पहली चीज है।' बड़ा आकार, पृष्ठसंख्या ३४०; कागज, मुद्रण तथा आवरण सभी उत्कृष्टतम। मूल्य ६–२५

हितोपदेश-मित्रलाभः

सान्वय-किरणावली टीकासहित अश्लीलांशवर्जित यही ग्रन्थ प्रथम परीक्षा में पाठ्यरूप में स्वीकृत है। कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्य-परिवर्तन, किरणावली व्याख्या, सरल भावार्थ तथा हिन्दीभाषार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं। प्रस्तुत संस्करण में अश्लीलांश का सर्वथा बहिष्कार करके इसे बालोपयोगी बना दिया गया है। मूल्य १–००

समन्वय

भारतरत्न डॉ० भगवानदास जी

अर्वाचीन भारत के प्रज्ञाशील ऋषि डा० भगवानदास जी अपने राष्ट्रनिर्माण-कारी विचारों की अमूल्य निधि इस 'समन्वय' पुस्तक के रूप में छोड़ गए हैं। भारतीय वाङ्मय में सर्वत्र भारतीय प्रतिभा ने 'समन्वय' पर बल दिया है। उस मूल दृष्टिकोण की व्याख्या करने के लिए ही श्री भगवानदास जी ने 'सर्वमतसमन्वय' शीर्षक महान् लेख लगभग पौने दो सौ पृष्ठों में लिखा था जो इस ग्रन्थ में मुद्रित है। इसमें सरल शैली में समन्वय के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है। सर्वत्र ऋषियों और मनीषियों के सुचिन्तित विचारों के मूल श्लोक प्रमाण रूप में उद्धृत किए गए हैं। इस ग्रन्थ का पारायण शिक्षा और आनन्द का साधक होगा। समन्वय की व्याख्या के अतिरिक्त गणपतितत्त्व और प्रणववाद के विवेचन पर भी तीन महत्त्वपूर्ण लेख इस ग्रन्थ में हैं। सब के अन्त में 'महासमन्वय' शीर्षक ७० पृष्ठों का एक अति विलक्षण निवन्ध मुद्रित किया गया है जिसमें 'सर्वं सर्वत्र सर्वदा' इस भारतीय सूत्र की व्याख्या की गई है, जिसे अर्वाचीन और प्राचीन विश्व-मानवविज्ञान का आधार और नियामक सिद्धान्त कहा जा सकता है। यह ग्रन्थ भारतीय संस्कृति का मथा हुआ मक्खन है। मूल्य ५-०

विविधार्थ

भारतरत्न डॉ० भगवानदास जी

डा० भगवानदासजी ने अपने दीर्घ जीवन में भारतीय संस्कृति, धर्म और दर्शन का जो सार मथकर प्राप्त किया, उसे अति सरल और स्पष्ट शब्दों द्वारा उन लेखों में उँडेल दिया है जो उन्होंने समय-समय पर लिखे। इस प्रकार के १२ लेखों का संग्रह 'विविधार्थ' नाम से उन्होंने अपने जीवन काल में ही प्रकाशित कर दिया था। इन लेखों में 'बुद्धि प्रवल वा शास्त्र' लेख लगभग १०० पृष्ठों में, 'भगवद्गीता का आशय और उद्देश्य' १२५ पृष्ठों में, एवं संस्कृत सम्मेलन का अभिभाषण भी १०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इनमें स्वतन्त्र ग्रन्थों जैसी प्रामाणिकता और गम्भीर विवेचनात्मक शैली है। ये लेख भारतीय संस्कृति के ज्ञान के लिए ऐसे दीप्तिपट के समान हैं जिनके द्वारा नवीन प्रकाश और वायु में प्राचीन तत्त्वों का परिचय प्राप्त होता है। संस्कृत के विद्वान्, अंग्रेजी कालेजों के अध्यापक और बुद्धिजीवी छात्र, एवं विद्वत्समाज सभी के लिए इस उत्तम ग्रन्थ का पारायण उपयोगी सिद्ध होगा। मूल्य ५-०

हिन्दूसंस्कार

(सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)

डॉ० राजबली पाण्डेय

वाराणसी की शास्त्री परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत

यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है। गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिये यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है। हिन्दू जीवन के आदर्श, महत्त्वाकांक्षा, आशा और आशंका आदि सभी मानसिक प्रक्रियाओं पर यह पर्याप्त प्रकाश डालता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अंगों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते हैं। मानव-जीवन बराबर रहस्यपूर्ण रहा है। उसका प्रादुर्भाव, विकास और तिरोभाव मानव-मन को बराबर आन्दोलित करते हैं। संस्कारों ने इस रहस्य की गम्भीरता को थहाने और प्रवहमान रखने में बराबर योग दिया है। हिन्दू जीवन को, एक प्रकार के मार्ग और पद्धति के रूप में, अक्षुण्ण रखने में संस्कारों का बड़ा हाथ है। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के भी अध्ययन के परिणाम इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं। मूल्य १५–००

अवन्तिकुमारियाँ

श्री देवदत्त शास्त्री

इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुंदरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। यद्यपि तीनों कहानियाँ पृथक्-पृथक् हैं किन्तु ऐसा प्रतीत होता है मानों वे किसी उपन्यास के तीन परिच्छेद हों। भाषा की प्राञ्जलता, सरसता और शब्दचयन की मधुरता से कहानियाँ अत्यन्त रसमयी एवं मुखर हो उठी हैं। मूल्य २–००

भारतस्य सांस्कृतिकनिधिः

डा० रामजी उपाध्याय

इस ग्रन्थ का प्रणयन आदिकाल से लेकर १२वीं शताब्दी ईसवी तक की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का दिग्दर्शन कराने के उद्देश्य से किया गया है। इसमें सरलतम संस्कृत भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति का स्वरूप, संस्कार, आश्रम,—प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय और महर्षियों के जीवन की झाँकी, सामाजिक-संस्थान, वर्ण-व्यवस्था, रहन-सहन, व्यवसाय, मनोविनोद, राजनीतिक जीवन, धार्मिक और दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, शिल्पकला, विज्ञान, काव्य-साधना, भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार—आदि विषयों का वैज्ञानिक और विस्तृत विवेचन १५ अध्यायों में किया गया है।

लेखक की भारतीय-संस्कृतिसंबंधी विवेचना अनेक दृष्टियों से अद्वितीय है। देश-विदेश के विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से इसकी भाषा और विषय-विवेचन की प्रशंसा की है। यदि आप भारतीय संस्कृत के विशुद्ध स्वरूप का सर्वाङ्गीण परिचय पाना चाहते हैं तो इस पुस्तक का संग्रह करें।

यह पुस्तक बी. ए., एम. ए., शास्त्री आदि परीक्षाओं के लिए अनेक विश्वविद्यालयों में निर्धारित भी है। पृष्ठसंख्या ५१२, सजिल्द १२-००

संस्कृत सूक्तिरत्नाकरः

डा० रामजी उपाध्याय

संस्कृत सूक्तिरत्नाकर में वैदिक काल से लेकर आज तक के प्रमुख काव्य ग्रन्थों से उन अमर सूक्तियों का संचय किया गया है, जो मनुष्य की वाणी और वर्णना को चमत्कारपूर्ण बनाती रही हैं।

संस्कृत की इन सूक्तियों में नीति, आचार-शास्त्र, कर्त्तव्याकर्त्तव्य तथा निरापद कार्यपद्धति की भरपूर शिक्षा मिलती है। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी सूक्तियों का संग्रह विशेष रूप से किया गया है।

प्रत्येक युग की आवश्यकताओं और समस्याओं की अपनी निजी विशेषताएँ होती हैं और उन्हीं को दृष्टिपथ में रखकर सूक्तियों का संचय करना समीचीन होता है। राष्ट्र के अभ्युत्थान के लिए चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सूक्तिरत्नाकर पाठकों का पथ-प्रदर्शन करके उनमें उदात्त भावनायें भर दे—इसी उद्देश्य से यह उपक्रम है। मूल्य ३-००

अक्षर अमर रहें

श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला

भूमिकालेखक—पद्मभूषण आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी.

ज्ञान का क्षेत्र जितना विस्तृत है उतना ही पुरातन भी। ज्ञान की इस व्यापक एवं पुरातन थाती को आज हम तक पहुँचाने वाले इतिहास और पुरातत्त्व के जितने भी साधन जीवित हैं, उनमें हस्तलिखित ग्रन्थों का विशेष महत्त्व है। भारत की ज्ञान-सम्पदा के अवशेष इन ग्रन्थों का क्या इतिहास रहा है और हमारे साहित्य के लिए उनकी कितनी उपयोगिता है, इस अछूते विषय पर मौलिक सामग्री उक्त निबन्ध-संग्रह में प्रस्तुत की गई है। दूसरे वर्ग के निबन्धों में पाणिनि, कालिदास, भवभूति, कल्हण आदि के कृतित्व एवं उनकी जीवनी पर प्रकाश डालने के साथ-साथ संस्कृत के नाटकों, महाकाव्यों तथा गद्यकाव्यों की परम्परा का विकास किस ढङ्ग से हुआ और उनकी मूल प्रवृत्तियाँ क्या थीं इसका समावेश है। इसी संग्रह के तीसरी कोटि के निबन्धों में संस्कृत पर अपूर्व कार्य करने वाले मैक्समूलर, कोलब्रुक, बूलर, वेबर, मेक्डानल और कीथ आदि उन विदेशी विद्वानों की जीवनियाँ सङ्कलित हैं, जिनका नाम भारतीय साहित्य में अमर हो चुका है। इन विषयों के अतिरिक्त कला के क्षेत्र में भारत की जिस अनुपम देन से आज संसार भर के संग्रहालय एवं ग्रन्थालय द्योतित हो रहे हैं, उसकी रूपरेखा प्रस्तुत करनेवाले निबन्धों का इस संग्रह में चौथा वर्ग है।

इस दृष्टि से यह निबन्ध-संग्रह संस्कृत के सामान्य विद्यार्थियों और शोधकार्य में लगे हुए स्नातकों के लिए पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, और कला की दृष्टि से विशेष उपयोगी है। मूल्य ५-००

भोज-प्रबन्धः

'राज्यश्री' हिन्दी व्याख्यासहित

उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित डॉ० भोलाशंकर व्यास सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका तथा पं० केदारनाथशास्त्रिकृत भावगर्भित 'राज्यश्री' नामक हिन्दी टीका से सुसज्जित यह अभिनव संस्करण वाक्पटुता तथा सभा-चातुर्य की दृष्टि से अद्वितीय है। मूल्य १-५०

कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी

प्रो० रामशरण शास्त्री

इस ग्रंथ में व्याकरण और साहित्य का अपूर्व समन्वय है। सरल, सरस, सुबोध, एवं रोचक गद्य-कथानकों में सिद्धान्त-कौमुदी के 'इको यणचि' सूत्र से लेकर उत्तर कृदन्त के अन्तिम सूत्र तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की एक नवीन विधि का यह अनूठा प्रयोग है। इसकी भाषा इतनी ललित और मधुर है कि पाठक कथा के रस में भींगे हुए शास्त्रज्ञान को सरलतापूर्वक ग्रहण करता हुआ कल्लोलिनी की भावतरंगों में मग्न हो जाता है। इसकी कथा का आधार कथासरित्सागर में आए हुए नरवाहनदत्त की कथा है। इसके पढ़ लेने पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न कथाशैलियों एवं उनमें अनुप्राणित आर्यावर्त की सांस्कृतिक परम्परा तथा सामन्तयुगीन शक्ति का एक चित्रण उपस्थित हो जाता है। ग्रंथ के अन्त में छपा हुआ संस्कृतहिन्दी-अभिधान इसे और भी उपयोगी बना देता है। मूल्य ८-७५

प्राकृतप्रकाशः

भामहकृत 'मनोरमा' तथा म. म. मथुराप्रसाद दीक्षितकृत 'चन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहित

प्रस्तुत संस्करण की विशेषता यह है कि अनेक ग्रन्थों पर व्याख्या करने में ख्याति प्राप्त किये हुए विज्ञ व्याख्याकार म० म० मथुरानाथ दीक्षित द्वारा जो संस्कृत हिन्दी व्याख्या इस ग्रन्थ पर की गई है उससे ग्रन्थ का आशय इतना सुस्पष्ट हो गया है कि हिन्दी मात्र ही एक बार पढ़ लेने पर आप ग्रन्थ के किसी भी मुख्यामुख्य विषय से अनभिज्ञ नहीं रह जायेंगे। प्राकृतप्रकाश की सांगोपांग यह हिन्दी व्याख्या सर्वप्रथम लिखी गई है। भाषा, भाव आदि सभी दृष्टि से हिन्दी का प्रवाह ग्रन्थाशय के पूर्ण अनुकूल एवं सहृदयाह्लादक है। इसकी भूमिका में सम्पूर्ण ग्रंथ की आलोचना एवं वररुचि का प्रामाणिक इतिवृत्त भी वर्णित है। अन्त में अपभ्रंश-शब्द-विचार, शब्दकोश आदि से भी ग्रन्थ के दुरूहांशों को आधुनिक ढंग से खुलासा कर दिया गया है। मूल्य ५-००

मानक हिन्दी व्याकरण

आचार्य रामचन्द्र वर्मा

'मानक हिन्दी व्याकरण' विद्यार्थियों की अनेक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया है। आजकल सभी पुराने विषयों का विवेचन बहुत कुछ नये ढंग से होने लगा है और नये ढंग विषयों को सरल तथा सुबोध बनाने के उद्देश्य से ही अपनाये जाते हैं। इस व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को बहुत सहज में और नये मनोरंजक ढङ्ग से व्याकरण की जटिल तथा शुष्क बातों से परिचित कराना है। इसमें अनेक शब्दभेदों की बिलकुल नई प्रकार की व्याख्या दी गई है; और विषय-विभाजन भी बहुत कुछ नये ढङ्ग से किया गया है। यही इस व्याकरण की मुख्य विशेषता है। मेरा विश्वास है कि अध्यापक तथा विद्यार्थी इसे अन्यान्य अनेक व्याकरणों की तुलना में अधिक महत्त्व की दृष्टि से देखेंगे और इससे अधिक लाभ उठावेंगे। मूल्य २-००

अनुवाद-चन्द्रिका (नवम संस्करण)

लोकमणि जोशी

यह पुस्तक संस्कृत तथा अंग्रेजी छात्रों को संस्कृत-हिन्दी-अनुवाद सिखाने के लिए बहुत ही सरल पद्धति से लिखी गई है। अत्यधिक छात्रोपयोगी होने के कारण ही अल्प समय में इसके अनेक संस्करण बिक चुके हैं। मूल्य १-२५

अनुवादप्रभा (अष्टम संस्करण)

पं० गौरीशंकर शास्त्री

आज तक जितनी भी इस विषय की पुस्तकें निकली हैं उन सबमें यह उत्तम है। इससे साधारण छात्र भी अल्प समय में ही सरलता से संस्कृत में सुन्दर अनुवाद करना सीख सकते हैं। मूल्य सुलभ सं० १-२५, उत्तम संस्करण १-५०

संस्कृत-स्वयं-शिक्षकप्रभा

(बालकोपयोगी अभिनव ग्रन्थ)

प्रारम्भिक हिन्दी स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की कठिनाई को दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। मूल्य ०-७०

संस्कृतपाठमाला

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

सुगमतापूर्वक संस्कृत भाषा को अधिकृत करने के लिये विद्वान् लेखक ने बालक-बालिकाओं के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए पाँच भागों में इस पुस्तक की रचना की है। इन्हें पढ़कर आप निश्चय ही संस्कृत भाषा और साहित्य का रस ले सकेंगे। कागज, टाइप, आवरण आदि सभी मनोरम।

प्रथम भाग ०–५० द्वितीय भाग ०–७५ तृतीय भाग ०–७५
चतुर्थ भाग ०–७५ पंचम भाग ०–९० मूल्य १–५ भाग ३–६५

संस्कृत-व्याकरण की उपक्रमणिका

पं० गोपालचन्द्र शास्त्री

मातृभाषा के द्वारा सहज ही संस्कृत की शिक्षा देने के लिए संस्कृत के महान् विद्वान् स्व० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने यह 'संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका' बंगला में लिखी थी। उसी का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें सन्धि, शब्दरूप, धातुरूप, समास आदि विषयों के संक्षिप्त नियम हिन्दी में लिख दिये गये हैं। उच्च विद्यालयों की कक्षा ७, ८ के छात्र इस छोटी पुस्तक से संस्कृत व्याकरण के प्राथमिक नियमादि अल्प समय में ही सीख लेवेंगे। मूल्य १–२५

संस्कृत-व्याकरणम्

पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य

('कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय' की प्रथमा परीक्षा में अनिवार्य द्वितीय पत्र के लिए परीक्षा-पाठ्य-स्वीकृत ग्रंथ)—इसमें (१) स्वरसन्धि (इको यणचि, आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः, एचोऽयवायावः सूत्रों के आधार पर), (२) व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धि (स्तोः श्चुना श्चुः, ष्टुना ष्टुः, झलां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा, शश्छोऽटि, खरि च, मोऽनुस्वारः, नश्चापदान्तस्य झलि, तोर्लि, झयो होऽन्यतरस्याम्, अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च, इन सूत्रों के आधार पर) तथा (३) शब्दरूप, धातुरूप एवं कृदन्त, स्त्रीप्रत्यय, समास, कारक का कारिकाबद्ध विवेचन तथा परीक्षोपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्न भी संस्कृत हिन्दी दोनों में दिए गए हैं। मूल्य १–५०

संस्कृत-प्रकाश

आचार्य कुवेरनाथ द्विवेदी

प्रस्तुत पुस्तक इलाहावाद बोर्ड द्वारा हाईस्कूल एवं इंटर परीक्षा में निर्धारित संस्कृत व्याकरण का अत्यन्त सरल, सुवोध एवं परीक्षोपयोगी पाठ्य ग्रंथ है। इसकी समझाने की शैली अत्यन्त सुलझी हुई और आधुनिक पाठ्यप्रणाली के अनुकूल है। परीक्षार्थियों के लिए तो यह अत्यन्त लाभप्रद है ही, अध्यापक वर्ग भी इससे वहुत लाभ उठा सकते हैं। मूल्य २–५०

संस्कृत-व्याकरणकौमुदी

पं० गोपालचन्द्र शास्त्री

स्व० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा रचित संस्कृत के वृहद् व्याकरण का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें ४ भाग हैं। प्रथम भाग में वर्ण, सन्धि, णत्व, षत्व, लिंग, वचन, शव्दरूप, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, उपसर्ग, आदि हैं। द्वितीय भाग में धातु, क्रिया, विभक्ति, काल, रूप आदि हैं। तृतीय भाग में सनन्त, यङन्त, नामधातु, परस्मैपद, आत्मनेपद, वाच्य, लकारार्थनिर्णय, कृत् प्रत्यय आदि हैं। चतुर्थ भाग में कारक, तद्धित, स्त्रीप्रत्यय, समास, आदि हैं। इस पुस्तक से छात्र संस्कृत के सूक्ष्म से भी सूक्ष्म नियम जान जायेंगे। उच्च विद्यालय की कक्षा ९ में प्रथम दो भाग तथा १० में अन्तिम दो भाग पढ़ाये जायं तो छात्र संस्कृत व्याकरण पूर्णतया सीख सकेंगे। १–४ भाग।

संस्कृत-रचना-प्रकाश

प्रो० रमाकान्त द्विवेदी

संस्कृत मध्यमा एवं अंग्रेजी हाईस्कूल की परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत यह ग्रन्थ संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत अनुवाद के लिये आधुनिक, सरल तथा बहुत ही सुन्दर पद्धति में प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक पाठ के अन्त में दिये गये 'अभ्यास' इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है। नवीन संस्कृत-शिक्षापद्धति की योजनानुसार अनेक शिक्षा-संस्थाओं के विद्वानों द्वारा अनुमोदित कराकर ही यह ग्रन्थ परीक्षा में स्वीकृत किया गया है। मूल्य १–९५

संस्कृतव्याकरणोदयः

प्रो० श्रीजयमन्त मिश्र

इस पुस्तक में लघुकौमुदी के प्रमुख सूत्रों के निर्देशपूर्वक हिन्दी में नियम बताते हुए संस्कृत शब्दों-वाक्यों की रचना समझाई गई है। रचना इस कौशल से की गई है कि सूत्रों का ध्यान न रहे तो भी सिद्धान्त समझ में आ जाते हैं। पाणिनीय व्याकरण का कोई प्रकरण ऐसा नहीं छूटा है जिस पर विवेचन न किया गया हो। पाणिनीय व्याकरण न पढ़ सकने वाले जिज्ञासु इस पुस्तक के द्वारा भली भाँति संस्कृत भाषा पर अधिकार कर सकते हैं। मूल्य ४-५०

सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्

हिन्दी व्याख्या सहित

आचार्य उमेशचन्द्र पाण्डेय

एम० ए० कक्षाओं में निर्धारित सिद्धान्तकौमुदी के कारकप्रकरण का हिन्दी माध्यम से सम्यक् बोध कराने का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। सूत्रों की पर्याप्त सरल व्याख्या करके व्याकरण के जटिल नियम अत्यन्त सरलतापूर्वक समझाए गए हैं। अन्त में विस्तृत परिशिष्ट देकर विशिष्ट टिप्पणियों द्वारा कठिन स्थलों को सुबोध बना दिया गया है। छात्र-सामान्य के लिये भी बड़ी उपयोगी पुस्तक है। मूल्य १-५०

सिद्धान्तकौमुदी-वैदिकप्रक्रिया

हिन्दी व्याख्या सहित

प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

व्याख्या में समास-विग्रह, व्युत्पत्ति, प्रयोगों की साधनिका तथा परीक्षोपयोगी विवरण भी दिये गए हैं। यन्त्रस्थ

संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः

(संस्कृत से हिन्दी, हिन्दी से संस्कृत अनुवाद-रचना की श्रेष्ठ पुस्तक)

उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, पंजाब आदि की संस्कृत तथा हाईस्कूल की परीक्षाओं में पाठ्यस्वीकृत अनुवाद की सर्वश्रेष्ठ इस पुस्तक में छात्रों को अनुवाद करने के नियम अत्यन्त सरल रूप में समझाए गये हैं और तदनुसार अनुवादार्थ अभ्यास भी दिए गये हैं। अभ्यासार्थ वाक्यों में आए हुए प्रत्येक कठिन शब्द के संस्कृत से हिन्दी तथा हिन्दी से संस्कृत पर्याय भी पुस्तक के अन्त में ९० प्रकरणों में दे दिये गए हैं और संधि आदि का ज्ञान कराने का सुगम पथ भी प्रदर्शित कर दिया गया है। मूल्य २-००

लघुसिद्धान्तकौमुदी

'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित

इस अभिनव संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस टीका के आधार पर छात्रों को पढ़ाया जाय तो व्यर्थ में उनका अधिक समय नष्ट न होगा। बालकों को परीक्षा के लिये लेख रटाने या लिखाने-पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। ग्रंथ के भावों का दिग्दर्शन मात्र कराने पर ही विद्यार्थी 'इन्दुमती' टीका के आलोक में सभी बातें संक्षेप में समझ जायँगे। ई० २० से आज तक के प्रश्नोत्तर भी इस टीका में यथास्थान दिये गये हैं तथा हिन्दी नोट्स में सन्धि, कारक, समास, तद्धित, तिङन्त, लकारार्थ, कृदन्त आदि की सरल समीक्षा भी इस तरह की गई है कि विद्यार्थी को तत्क्षण ही उस विषय का पूरा ज्ञान हो जायगा। अनुवादोपयोगी सभी विषय प्रायः परिशिष्ट में दिये गये हैं। मूल्य २-००

मध्यसिद्धान्तकौमुदी

'सुधा' 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स, प्रश्नोत्तरलेखनप्रकारादि परिशिष्ट सहित

इसकी 'सुधा' संस्कृत टीका में प्रत्येक प्रयोग तथा धातुरूप की परीक्षोपयोगी साधनिका तथा सूत्रार्थों की अति सरल व्याख्या की गई है। इस संस्करण का अध्ययन करने से परीक्षार्थियों को 'प्रश्नोत्तरी' की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सभी प्रयोगों की व्याख्या प्रश्नोत्तर-लेखन के रूप में ही की गयी है। इसकी 'इन्दुमती' नामक हिन्दी टीका में टीका के साथ 'नोट्स' देकर संस्कृत व्याकरण का भी सरल रूप से ज्ञान कराया गया है जो आज तक के किसी भी संस्करण में नहीं है। मूल्य ५-००

मनुस्मृतिः

'मणिप्रभा' हिन्दी टीका 'विमर्श' सहित

कुल्लूकभट्ट की टीका के अनुरूप यह हिन्दी टीका है तथा दुरूह स्थलों में भावार्थ और भी स्पष्ट करने के उद्देश्य से 'विमर्श' नामक टिप्पणी भी की गई है। इसकी उपादेयता पर प्रसन्न होकर बिहारप्रांत के माननीय शिक्षामंत्री महोदय ने अपनी अमूल्य प्रस्तावना भी लिखने की कृपा की है। मूल्य ५-००

श्रीभर्तृहरिविरचित–

१. नीतिशतकम् २. शृङ्गारशतकम् ३. वैराग्यशतकम्

सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या–पद्यानुवाद सहित

साहित्याचार्य श्री जगन्नाथ शास्त्री होशिंग–श्री राधेलाल त्रिवेदी

महायोगी महाराज भर्तृहरि-रचित इन ग्रन्थरत्नों के श्लोकों का मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, तथा साथ में हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है। हिन्दी पद्यों का मूल श्लोकों से भावसाम्य देखते ही बनता है। संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं। गद्य एवं पद्य दोनों अनुवादों की भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा भावों के सर्वथा अनुकूल है। मूल्य प्रति शतक १–००

हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ

श्री व्यथित हृदय

(वाराणसी की शास्त्री परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

इसमें सरल और सुबोध ढङ्ग से हिन्दी के उन सर्वमान्य कवियों और उनकी कविताओं की आलोचना की गई है, जो उच्च कक्षाओं में अध्ययन के लिये सर्वत्र स्वीकृत हैं। समीक्षा और विषय-विवेचन में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ही प्रमुख रूप से महत्त्व दिया गया है। मूल्य ३–५०

सावित्री-सत्यवान्

श्री राजनारायण शुक्ल

(वाराणसी तथा बिहार की मध्यमा परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

इस पुस्तक में औपन्यासिक रूप से भावुकतापूर्ण कथा का सृजन करके विद्वान् लेखक ने महाभारतीय सावित्री उपाख्यान को सर्वथा नवीन एवं परमोपादेय रूप दिया है जो प्रत्येक बालक-बालिका तथा वयस्क के लिये भी अनिवार्य रूप से पठनीय है। मूल्य २–००

काशी-दर्शन

इसके पढ़ने से समस्त काशी के नवीन एवं प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों एवं घाट, मन्दिर, भवन, कलाभवन तथा शिक्षालयों आदि का संपूर्ण परिचय सहज ही प्राप्त हो जाता है। मूल्य ०–३५

प्रबन्ध-पारिजातः

प्रो० रामचन्द्र मिश्र

काशी, विहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में निर्धारित संस्कृत-प्रबन्ध-रचना करने के नियम इस पुस्तक में अत्यन्त सरल रूप से समझाये गये हैं और तदनुसार परीक्षोपयोगी 'प्रबन्धलेखनप्रकार' (परीक्षा में आने योग्य निबन्धों के उत्तर) इस तरह सरल और संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं कि अभ्यास कर लेने पर विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इस परिवर्धित संस्करण में १. 'पत्र-लेखन-प्रकार' (चिट्ठी-पत्री-आवेदन-पत्र आदि का उल्लेख) तथा २. प्रसङ्गोपयुक्त 'सुभाषित-गद्यावली' ३. 'सुभाषितपद्यांशावली' और ४. 'लौकिक न्यायमाला' आदि विषयों के साथ-साथ नवीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार परीक्षाओं में पूछे जाने वाले अनेक निबन्ध लेखों का समावेश करके आधुनिक चतुरस्र विद्वान् बनने का सुगम मार्ग दर्शाया गया है। मूल्य १-५०

प्रस्तावतरङ्गिणी (निबन्ध ग्रन्थ)

प्रो० श्री चारुदेव शास्त्री

सर्वोपरि निबन्ध ग्रन्थ होने से इसकी विशेषता पर मुग्ध होकर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय ने शास्त्री द्वितीय खण्ड के साधारण पत्र में तथा पंजाब यूनिवर्सिटी ने शास्त्री परीक्षा में इसे पाठ्यग्रन्थ स्वीकार कर लिया है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्राचीन आचार-विचार के निरूपण के साथ-साथ आधुनिक विचारधाराओं के सारगर्भित विषयस्वरूप, प्रबन्ध-रचना-चातुरी तथा विचार-वैशारदी सहज ही प्राप्त हो जाती है। मूल्य २-००

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण

(प्रथमा परीक्षा एवं जूनियर हाईस्कूल के लिए नयी पुस्तक)

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो जाने से शुद्ध हिन्दी में बोलना और लिखना छात्रों के लिये दुरूह हो गया था क्योंकि प्राचीन हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में ५० प्रतिशत उर्दू शब्दों का ही संमिश्रण है। अतएव यह पुस्तक राष्ट्रभाषा के प्रतीक तथा 'आज' पत्र के प्रधान सम्पादक बाबूराव विष्णुपराड़कर, बाबू सम्पूर्णानन्दजी आदि धुरन्धर हिन्दी-वेत्ताओं के मतों से अलंकृत तथा हिन्दी के महारथी पं० रामनारायण मिश्र, विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि विद्वानों की सम्मतियों से सुसज्जित होकर नवीन रूप में प्रकाशित हुई है। मूल्य १-२५

कुमारसंभवः

'पुंसवनी' नामक संस्कृत-हिन्दी टीका तथा नोट्स सहित ।

प्रथम और पंचम सर्ग मूल्य १-५०] **[केवल पंचम सर्ग १-०**

बिहार की मध्यमा परीक्षा तथा अंग्रेजी की आई. ए. और बी. ए. परीक्षा निर्धारित होने के कारण इस संस्करण में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेस तैलंग एम. ए. विरचित नोट्स तथा विस्तृत प्रस्तावना भी दी गयी है । 'नोट्स मात्र के अध्ययन से भी विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं ।

विश्रुतचरितम्

बालविबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित

आधुनिक नवीन पद्धति से संस्कृत तथा अंग्रेजी पढ़ने वाले छात्रों के लि समालोचनात्मक भूमिका और हिन्दी व्याख्या ही पर्याप्त है । व्याख्या समास-विग्रह, कोश, व्याकरण आदि से ग्रन्थ के दुरूहांशों को विशेष स्प कर दिया गया है । छात्र इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे । मूल्य १-०

भरत-नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप

डॉ० रायगोविन्दचन्द्

पुस्तक का विषय उसके नामसे ही पूर्णतः स्पष्ट है । गवेषणापूर्ण उपोद्घात अनन्तर नाट्यमण्डप का माप, भूमि-परीक्षा, रेखाङ्कन, नींव, भित्ति, स्तम्भ, छ प्रेक्षागृह, रंगमण्डप, मत्तवारणी, द्वार तथा खिड़कियाँ, यवनिका नाट्यमण्डप सजावट, रँगाई, छुआई, रंगमंचों पर संगीतज्ञों का स्थान, आलोक, नाटक समय इत्यादि विषयों पर प्राच्य-पाश्चात्य विचारकों की शोधों का समन्वय कर हुए प्रामाणिक विचार प्रस्तुत किए गए हैं । आवश्यकतावश यत्र-तत्र चित्र तत्कालीन माप आदि भी दिये गए हैं । नाट्यशास्त्रके छात्रों तथा अध्यापकों लिये प्रस्तुत ग्रन्थ अवश्य संग्रहणीय है । मूल्य ५-०

जन्माङ्गपत्रावली (जन्मकुण्डली फार्म)

जन्मकुण्डली बनाने के इन पत्रों में नवग्रहों के शास्त्रीय स्वरूपों को अत्य स्पष्ट रूप में चित्रित किया गया है । बहुरंगी कलात्मक छपाई से ये और सुन्दर लगते हैं । कागज ऐसा दिया गया है जो अधिक समय तक जन्मकुण्ड के विवरण को सुरक्षित रख सके । मूल्य प्रति पत्र ०-०६, प्रति सैकड़ा ६-

भारतीय व्रतोत्सव

आचार्य पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी

(वाराणसी तथा विहार की मध्यमा परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

भारतीय व्रतों व त्योहारों के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनसे इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें सभी व्रतोत्सवों का काल-विज्ञान एवं विधि-विज्ञान बुद्धिगम्य रूप में दिया गया है। लेखक ने अपने चालीस वर्ष के धर्मोपदेश के अनुभवों का इसमें पूर्ण रूप से समावेश किया है। जो कुछ लिखा गया है वह सप्रमाण और सयुक्तिक लिखा गया है। शास्त्र व लोक दोनों के अनुसार विधियों की युक्तियुक्तता सिद्ध की गई है। संक्षेप में उत्सवों का निर्णय भी आरम्भ में दे दिया गया है। थोड़े में कहा जा सकता है कि अभी तक किसी भी पुस्तक में ये बातें नहीं प्रकाशित हुई हैं जिनका इसमें निरूपण हुआ है। पुस्तक देखने पर ही आपको इसके महत्त्व का बोध हो सकेगा। मूल्य ३-००

हमारे त्योहार

डॉ० ब्रजमोहन

इसमें हिन्दू त्योहारों पर वैज्ञानिक दृष्टि से विस्तृत विवेचन किया गया है। जिस प्रकार भारतीय दर्शन और हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की डा० राधाकृष्णन् ने आधुनिक लोगों के लिये नवीन व्याख्या की है वैसा ही कार्य इस पुस्तक में त्योहारों की व्यावहारिक व्याख्या कर डा० ब्रजमोहन ने किया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के पढ़ने योग्य है। मूल्य १-५०

श्रीकोश

(बालकोपयोगी : हिन्दी से संस्कृत जेबी कोष)

इसमें लिङ्ग, क्रियाविशेषण, संज्ञा, भाववाचक संज्ञा आदि का निर्देश समुचित रूप से दिया गया है। एक्सरे, कुर्सी, टेबुल, आलमारी, बेंच, म्युनिसिपैलिटी, कचहरी, जज, कोतवाल, थानेदार आदि वर्तमान चलते-फिरते शब्दों के प्रामाणिक संस्कृत शब्द (जिनके अनुवाद के समय संस्कृत बनाने में आप लोगों को कठिनाई पड़ती थी) अनेक संस्कृत कोश के सहारे सप्रमाण उद्धृत किए गये हैं। इस संस्करण में एक नवीन परिशिष्ट भी जोड़ा गया है। मूल्य १-२५

नृसिंहचम्पूः

विमर्शाख्य संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार, डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री

सरल एवं सरस संस्कृत-हिन्दी में पहली बार अनूदित इसकी विस्तृत भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विशद आलोचना तथा कवि का प्रामाणिक इतिवृत्त वर्णित है। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिये अधिक उपादेय है। मूल्य २-५०

मन्दाकिनी

डॉ० देवर्षि सनाढ्य

(वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की मध्यमा परीक्षा-पाठ्यस्वीकृत)

'मन्दाकिनी' अपने नाम के अनुसार ही गुण रखने वाली पुस्तक है। इसमें संस्कृत-साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली वार्ताओं का संग्रह है। वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, श्रीहर्ष, मयूर, जयदेव आदि संस्कृत-साहित्य के महान् मनीषियों की रचनाओं का हिन्दी-व्याख्यात्मक परिचय संस्कृत में रुचि रखने वाले पाठकों के न केवल मनोविनोद का कारण होगा, प्रत्युत भारतीय साहित्य के प्रति उनमें निष्ठा की भावना भी उत्पन्न करेगा। मूल्य १-२५

चन्द्रालोकः

'पौर्णमासी' हिन्दी व्याख्या सहित

मूल्य संपूर्ण ३-००] **[केवल पंचम मयूख १-५०**

इस परिवर्धित तृतीय संस्करण में बहुत से परीक्षोपयोगी विषयों को सरल शब्दों में परिष्कृत कर दिया गया है। इस संस्करण की यह भी विशेषता है कि मूल ग्रन्थ की हिन्दी टीका के साथ-साथ संस्कृत टीका की भी हिन्दी टीका कर दी गयी है।

नवसाहसांकचरितम्

(आचार्य परिमल पद्मगुप्त कृत)

हिन्दी व्याख्या तथा विस्तृत अध्ययन सहित

इसकी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या में ग्रंथ के भाव, भाषा, छन्द, शैली रस, अलंकार आदि का विशद विवेचन किया गया है। आगरा विश्वविद्यालय की परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत प्रथम सर्ग मात्र। मूल्य ०-७५

[सम्पूर्ण ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित होगा]

संस्कृत-कवि-दर्शन

डॉ. भोलाशंकर व्यास

समाज-शास्त्र को वैज्ञानिक आधारभित्ति को लेकर कवियों पर निजी मौलिक उद्भावनाएं उपन्यस्त कर विद्वान् लेखक ने व्यावहारिक समीक्षा को दार्शनिक रूप दिया है। ग्रन्थ का नामकरण भी इसका संकेत करता है। कई कवियों के विषय में ऐसे मौलिक सङ्केत किये गये हैं, जो अनुसन्धानकर्ताओं को मार्ग-दिशा दे सकते हैं। साहित्यिक समाज को बहुत दिनों से संस्कृत कवियों पर हिन्दी में सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और समाजशास्त्रीय आलोचना का अभाव खटकता था। डॉ. व्यास ने इस अभाव की पूर्ति कर दी है। शास्त्री, आचार्य तथा बी. ए., एम. ए. और साहित्यरत्न की परीक्षाओं में निबन्ध और इतिहास के लिये यह पुस्तक अत्यधिक उपादेय है।

द्वितीय संस्करण ६-००

मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद

डॉ० कपिलदेव पाण्डेय

सात वर्षों के लगातार परिश्रम से हिन्दी में लिखा गया यह विशाल ग्रंथ अपने ढंग का अकेला एवं अद्वितीय है। इस विषय पर अंग्रेजी, हिन्दी या अन्य किसी भी भाषा में अब तक कोई पुस्तक नहीं थी। लेखक ने इस ग्रंथ में बड़े परिश्रम से वैदिक साहित्य से लेकर उत्तर-मध्यकालीन साहित्य तक के अवतारवादी रूपों और प्रवृत्तियों का विशद विवेचन किया है। एकत्र ही वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, महाकाव्य, पुराण, गीता, आगम तथा बौद्ध, जैन, नाथ, शैव, शाक्त, संत, सूफी, भागवत, पांचरात्र आदि साम्प्रदायिक साहित्यों के विभिन्न अवतारवादी तत्त्वों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। साथ ही दशावतार, चौबीस अवतार, राम, कृष्ण, अर्चा, आचार्य, भक्त आदि विविध अवतारों का भी मौलिक विवेचन हुआ है। अंत में अवतारवाद के मानवशास्त्रीय (एन्थ्रोपोलौजिकल), ऐतिहासिक, दार्शनिक, साहित्यिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचारधाराओं पर भी यथेष्ट विचार किया गया है। समस्त ग्रन्थ में अवतारवाद और भक्ति से सम्बद्ध सैकड़ों पारिभाषिक शब्दों पर स्वतंत्र शोधपूर्ण विस्तृत निबंध लिखे गए हैं, जिससे यह ग्रन्थ अवतारवाद और भक्ति का विश्वकोश बन गया है। प्राचीन एवं मध्यकालीन शोधकों के लिए यह संदर्भ-ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपादेय है।

मूल्य २०-००

आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोशः

डॉ० रामसरूप शास्त्री

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हिन्दीज्ञाता और संस्कृतज्ञान के इच्छुक लोगों के लिए यह ऐसा प्रामाणिक कोश तैयार हुआ है जिसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति सहज ही संस्कृत सीख सकेगा। इस कोश में लगभग चालीस सहस्र हिन्दी-हिन्दुस्तानी शब्दों तथा मुहावरों के विश्वसनीय संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक शब्द का लिंगनिर्देश भी किया गया है। हिन्दी क्रियापदों की संस्कृत धातुओं के गण, पद, सेट्, अनिट्, वेट्, णिजन्त आदि के रूप भी दिये गये हैं। कोश की उपयोगिता पर डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री, श्रीविश्वबन्धु शास्त्री, महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्द शास्त्री, आदि-आदि विद्वानों ने अपनी-अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं। मूल्य १२-५०

विश्वगुणादर्शचम्पूः

'पदार्थचन्द्रिका' संस्कृतटीका एवं सान्वय हिन्दीव्याख्या विभूषित

इस दुर्लभ ग्रन्थ में नाटकीय शैली में भूलोक-वर्णनपूर्वक भारतान्तर्गत समस्त प्रमुख नगर-नगरियों, नदियों, आश्रमों, अरण्यों, तथा विविध विषयों के अध्येताओं का अत्यन्त ललित तथा सरस वर्णन संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध है। प्रत्येक रस पर अनोखी कल्पनाओं, युक्तिसंगत तर्क-वितर्क आदि से व्यवहार एवं आचार आदि की उत्तम शिक्षा तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति की दिव्य एवं सुस्पष्ट झाँकी प्राप्त होती है। उक्ति-चमत्कार इसकी प्रधान विशेषता है।

सुविस्तृत प्राचीन संस्कृत टीका के साथ पुनः दण्डान्वय, तथा काव्य के ललित एवं अनोखी भाषा और कल्पनाओं के अनुकूल ही हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। छात्र, अध्यापक तथा संस्कृत न जाननेवाले लोग भी प्रस्तुत संस्करण से विशेष उपकृत होंगे।

काव्यदीपिका—अष्टमशिखा

डॉ० भोला शंकर व्यास

आगरा यूनिवर्सिटी की बी. ए. कक्षा में निर्धारित डा० व्यासलिखित समालोचना के साथ आचार्य रामगोविन्द शुक्ल रचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या से जाने से यह संस्करण अधिक उपादेय हो गया है। मूल्य १-२

पथचिह्न

श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी

(बिहार तथा वाराणसी की मध्यमा और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की इण्टर परीक्षा में पाठ्यस्वीकृत)

संस्कृति और कला के पक्ष में यथेष्ट प्रकाश डालने वाली आत्मचरितात्मक शैली में लिखी प्रस्तुत पुस्तक में भावुक मन और तत्पर-बुद्धि के समागम का मधुर परिपाक है। इसका रचनाप्रकार नवीन और रुचिर है। कृतिकार के निर्माण-संकल्प का क्रमिक विकास और उसका रूप-विन्यास अत्यन्त मनोहर है। इसकी शैली सम्पन्न, अनुरूप, भावप्रवण तथा व्यञ्जक है। प्रतिपृष्ठ पर ये विशेषताएँ लक्षित होती हैं। मूल्य १-५०

महाकवियों की अमर रचनायें

श्री चक्रधर शर्मा

वाराणसी की पूर्व मध्यमा परीक्षा में पाठ्य-स्वीकृत इस पुस्तक में संस्कृत के विख्यात महाकवियों (बाणभट्ट, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ आदि) के जीवनवृत्त एवं उनकी प्रमुख उत्कृष्ट रचनाओं का हिन्दी में सुसम्बद्ध, संक्षिप्त कथानक औपन्यासिक, सरस एवं आकर्षक ढङ्ग से विन्यस्त किया गया है। इसे एक बार पढ़ लेने से ही उन महाकवियों एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषय भली प्रकार ज्ञात हो जायेंगे। मूल्य २-००

ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य

श्री वी. एम. चिन्तामणि

भूमिकालेखक—पद्मभूषण आचार्य डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

हिन्दी के उपन्यासों का, विशेषकर ऐतिहासिक उपन्यासों का, अभी तक समुचित अध्ययन नहीं हुआ था। लेखक की इस नवीन कृति ने हिन्दी उपन्यासों के इस वर्ग की बहुत सुन्दर समीक्षा प्रस्तुत की है। नयी सूझ-बूझ और गंभीर मंथन की परिचायक यह रचना हिन्दी के आलोचना-क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण देन है। यह ग्रन्थ उच्च कक्षा के विद्यार्थियों, शोध-छात्रों एवं अध्यापकों के लिये अत्यन्त लाभप्रद है। मूल्य ३-००

चउपन्नमहापुरिसचरियं

सम्पादक—अमृतलाल मोहनलाल भोजक

शीलांक कवि का 'चउपन्नमहापुरिसचरियं' जैन महाराष्ट्री प्राकृत का प्रसिद्ध ग्रन्थ है, जिसमें जैन परंपरा के अनुसार ५४ शलाकापुरुषों का चरित्र वर्णित है। प्रस्तुत ग्रन्थ का केवल धार्मिक महत्त्व ही न होकर साहित्यिक तथा भाषाशास्त्रीय महत्त्व भी है। जैन महाराष्ट्री गद्य का उत्कृष्ट निदर्शन यहाँ मिलता है। इसका विद्वत्तापूर्ण संपादन किया गया है तथा आरम्भ में जर्मन विद्वान् क्लाउस ब्रून की विद्वत्तापूर्ण अंगरेजी भूमिका भी प्रकाशित है। ग्रन्थ का प्रकाशन जैन साहित्य तथा प्राकृत भाषाशास्त्र के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योग देगा। २१-००

यशस्तिलकचम्पूमहाकाव्यम्

(श्रीमत्सोमदेवसूरिविरचितम्)

प्रथमखण्डम्

'यशस्तिलकदीपिका' भाषाटीकासहितम्

अनुवादक-सम्पादक-प्रकाशक-

पं० सुन्दरलाल शास्त्री जैनन्याय-प्राचीनन्याय-काव्य-तीर्थ

प्राक्कथन-लेखक—

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

भारतीय मध्यकालीन सांस्कृतिक इतिहास के उमड़ते हुए स्रोत इस महाकाव्य में महाराज यशोधर की कथा के आधार पर व्यवहार, राजनीति, धर्म, दर्शन तथा मोक्ष से संवन्धित अनेक विषयों की सामग्री प्रस्तुत है। जैनधर्मावलम्बियों के लिये तो यह कल्पवृक्ष है ही; अन्य पाठकों को भी भारतीय संस्कृति के विविध अंगों का सविशेष परिचय इससे प्राप्त होगा।

पं० सुन्दरलाल जी ने पहले प्राचीन शास्त्रभण्डारों में छानवीन कर मूलपाठ को शुद्ध किया, तदनन्तर उसका अनुवाद कर अपने आठ वर्षों के घोर श्रम का सुफल यह प्रामाणिक संस्करण आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है। व्याख्या-कार्य वस्तुतः स्तुत्य है।

एक से तीन आश्वासों के अप्रयुक्त क्लिष्ट शब्दों की अनुक्रमणिका भी दी गई है।

प्रथम खण्ड (१ से ३ आश्वास) मूल्य १६-

महाकवि भास-विरचित चार एकाङ्की नाटक

१. कर्णभारम्   २. दूतघटोत्कचम्

३. दूतवाक्यम्   ४. मध्यमव्यायोगः

'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या-सहित

महाभारतीय आख्यानों पर आधारित इन एकाङ्की नाटकों में विभिन्न कथा-वस्तुएं अत्यन्त मार्मिक ढंग से उपनिबद्ध हैं। इन नाटकों का इस दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्व है कि लौकिक नाट्यसाहित्य का आरम्भ महाकवि भास से ही होता है।

विद्वान् व्याख्याकार की 'प्रकाश' संस्कृत व्याख्या के अन्तर्गत विशद रूप से प्रतिपद के अत्यन्त सरल संस्कृत पर्याय तथा श्लोकों में विस्तृत-व्याख्यानपूर्वक छन्दोऽलङ्कार-परिचयादि भी दिया गया है।

भावानुकूल सरल एवं सरस हिन्दी अनुवाद से तो विषय सर्वथा स्पष्ट हो उठता है। संस्कृत न जानने वाले भी इसे पढ़ कर नाटक का पूरा आनन्द ले सकते हैं।

प्रत्येक नाटक में प्राक्कथन के अनन्तर सुविस्तृत भूमिका दी गई है जिसमें महाकवि के सन्दिग्ध काल, जन्मस्थान, कृतित्व, विशेषताओं आदि के विषय में युक्तिसंगत तर्कपूर्ण विवेचन कर भ्रामक मत-मतान्तरों का उल्लेख करते हुए उनका निराकरण करके सुस्पष्ट निर्णय प्रस्तुत किया गया है। तदनन्तर नाटक की कथा-वस्तु, शास्त्रीय कसौटी पर विस्तृत पात्रालोचन, पात्र-परिचयादि तथा ग्रन्थान्त में नाटकगत श्लोकों की अनुक्रमणिका भी दी गई है।

छात्रों, अध्यापकों तथा नाट्यानुरागियों के लिये भी ये संस्करण अत्यन्त उपादेय तथा संग्रहणीय हैं। कागज, मुद्रण, जिल्द आदि सभी परमोत्तम हैं।

मूल्य प्रति एकाङ्की १-२५

वेदान्तसारः

'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित

श्री रामशरण शास्त्री संपादित इस अभिनव संस्करण में व्याख्या के अं सर्वत्र टिप्पणी के रूप में ग्रन्थ के गूढ भावों का विवेचन करके तदनुकूल हि व्याख्या में उसका भी भाष्य कर दिया गया है तथा अज्ञान (माया), अध्यारो तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि स्थल इतने विस्तार से एवं सरलतापूर्वक लि गये हैं कि साधारण से साधारण छात्र के लिये भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुबो हृदयंगम करने योग्य हो गया है। इसकी समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका अध्ययन करने योग्य है। ग्रन्थ के अन्त में अनेक विश्वविद्यालयों के प्रश्न भी दिये गये हैं। मूल्य २-०

वाग्भटालङ्कारः

सिंहदेवगणिविरचित संस्कृत-टीका

डॉ० सत्यव्रतसिंह कृत 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या सहित

इस ग्रंथ में काव्य के प्रत्येक आवश्यक अंग पर यथेष्ट विचार किया ग है। यह केवल अलंकारों का ही नहीं, अपितु काव्यशास्त्र का भी ए पूर्ण ग्रन्थ है। संस्कृत टीका के साथ विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या हो जाने अब साहित्य शास्त्र के जिज्ञासुओं की साहित्यविषयक जिज्ञासा इस एक लघुकाय ग्रन्थ से पूर्ण हो जायगी। मूल्य २-०

संस्कृत-गद्य-काव्यकैरवी

प्रो० चारुदेव शास्त्री

विश्वविद्यालय के छात्रों को संस्कृत गद्य का परिचय सुलभ कराने के उद्दे से प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है जिसमें सुबन्धु, दण्डी, बाणभट्ट आदि आदर्शों के साथ कतिपय आधुनिक यशस्वी लेखकों की रचनाओं के अंश उपन्यस्त हैं। प्रारंभ में संस्कृत-कथासाहित्य का परिचय तथा अन्त में विि शब्दार्थ-संग्रह भी छात्रों की जानकारी के लिये दिया गया है। मूल्य १-०

संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः

(हिन्दी-व्याख्योपेत नवीन संस्करण)

संपादक—श्री बृहस्पति शास्त्री

नीति-ग्रन्थों के सारभूत समयोचित सुभाषितों के इस संग्रह की उपादे पर मुग्ध होकर विहार संस्कृत विश्वविद्यालय ने इसको मध्यमा परीक्षा में पा स्वीकृत कर लिया है। मूल्य २-

हिन्दी तर्कभाषा

'तर्करहस्यदीपिका' हिन्दी व्याख्यासहित

व्याख्याकार : विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि

केशवमिश्र प्रणीत यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बड़ा सारगर्भित और दुरूह है। इसलिए इसके रहस्य को हृदयंगम कराने के लिए आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ने २६४ पृष्ठों में इसकी व्याख्या पूरी की है। इसके साथ ही ४६ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका है जिसमें न्यायशास्त्र की, प्राचीन न्याय; मध्य न्याय, बौद्ध न्याय, जैन न्याय और नव्यन्याय आदि सभी शाखाओं का सुन्दर ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। सरकार द्वारा पुरस्कृत होकर यह संस्करण अधिक लोकप्रिय हो चुका है। मूल्य ४–५०

हिन्दी न्यायकुसुमाञ्जलि

हरिदासी टीका सहित

व्याख्याकार : आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि

उदयनाचार्य की न्यायकुसुमांजलि और उसकी टीका जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पर यह हिन्दी व्याख्या अपनी निजी विशेषताएँ रखती है। विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श में इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या हिन्दी में एक स्वतन्त्र मौलिक रचना बन गई है।

चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः

(सायणाचार्यविरचितानां स्ववेदभाष्यभूमिकानां संग्रहः)

सम्पादक—पं० बलदेव उपाध्याय

सायणाचार्यजी ने तैत्तिरीयसंहिता, ऋग्वेदसंहिता, सामवेदसंहिता, काण्व-संहिता तथा अथर्ववेद के स्वरचित भाष्यों पर जो पृथक्-पृथक् भूमिकाएँ लिखी थीं यह उन सबका एकत्र संग्रह है। ग्रन्थारम्भ में सम्पादक की शोधपूर्ण विशद भूमिका, सम्पादकीय टिप्पणियाँ तथा ग्रन्थान्त में चतुर्धा-विभक्त विस्तृत परिशिष्ट आदि से यह विशेष उपयोगी हो गया है।

द्वितीय संस्करण बहुत छानबीन तथा शोध आदि के उपरान्त प्रकाशित किया गया है। मूल्य ५–००

बौद्धदर्शन मीमांसा

आचार्य बलदेव उपाध्याय

इस में पांच खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक संप्रदायों के गूढ तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पंचम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है। इस ग्रन्थ की उपादेयता पर प्रसन्न होकर उत्तरप्रदेश की सरकार ने विद्वान् लेखक को १०००) तथा डालमिया पुरस्कार २१००) से पुरस्कृत कर सम्मानित किया है। अभिनव द्वितीय संस्करण, मूल्य ६-००

सौगतसिद्धान्तसारसङ्ग्रह

डॉ. चन्द्रधर शर्मा

इस ग्रन्थ में भगवान् बुद्ध के उपदेशों से लेकर जब तक भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा तब तक के आचार्यों के उपलब्ध दार्शनिक ग्रन्थों में से बौद्धदर्शन के सारभूत तत्त्वों का संग्रह किया गया है। ग्रन्थ के पाँच परिच्छेद हैं—(१) पालिवाङ्मय, (२) महायानसूत्र, (३) शून्यवाद, (४) विज्ञानवाद और (५) स्वतन्त्रविज्ञानवाद। साथ में हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है जिसमें पारिभाषिक शब्दों और भावार्थ को भी स्पष्ट किया गया है। मूल्य ५-००

न्यायबिन्दुः

संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित

इसमें तीन परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद में प्रत्यक्ष, द्वितीय में स्वार्थानुमान और तृतीय में परार्थानुमान का वर्णन है। इसकी हिन्दी टीका में मूल के साथ धर्मोत्तराचार्यकृत संस्कृत टीका का भी सांगोपांग अनुवाद तथा भूमिका में गौतमन्याय, जैनन्याय तथा बौद्धन्यायों के क्रमिक उपचयापचय तथा विकास की समालोचना करते हुए बौद्धदर्शन का संपूर्ण संक्षिप्त इतिहास भी लिख दिया गया है। बौद्धदर्शनप्रेमी विद्वानों के लिये यह द्वितीय संस्करण अवश्य ही अवलोकन तथा संग्रह करने योग्य है। मूल्य ५-००

गणितीय कोष

(उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा पुरस्कृत)

गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली

(The technical language of Mathematics & Mathematical Terminology)

डॉ० व्रजमोहन

प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

···कोष के प्रारम्भ में, हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली की आवश्यकता, विभिन्न संस्थाओं द्वारा चल रहे पारिभाषिक शब्दावलियों के कार्य और प्रस्तुत कार्य आदि पर विवेचन है। साथ ही भास्कर और लीलावती की शब्दावली पर, गणितीय शब्दावली की समस्याओं पर तथा गणितीय संकेतों पर भी प्रकाश डाला गया है। इस प्रारम्भिक विवेचन से लेखक की अपने विषय में कितनी गति है और किस प्रकार सुलझे ढंग से वह अपने कार्य में प्रवृत्त हुआ है, यह स्पष्ट हो जाता है। लेखक क्योंकि स्वयं गणितशास्त्र के विद्वान् और प्राध्यापक हैं इसलिये वे शब्दों के अभिप्राय जानते हैं और इसी कारण उन्हें हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत करने में सुविधा रही है। इस परिश्रमसाध्य कार्य का हमारा शिक्षा-मन्त्रालय कितना स्वागत करता है, यह देखने की बात है। 'दैनिक हिन्दुस्तान' मूल्य ९-००

लीलावती

सोपपत्तिक सोदाहरण-'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता

परीक्षोपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्नपत्रादि सहित

व्याख्याकार-ज्यो० आ० श्री लषणलाल झा

परीक्षार्थियों के हित की दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में सरल संस्कृत व्याख्या के साथ सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, उदाहरण आदि यथेष्ट सामग्री दी गई है। मूल पाठ का भी यथासंभव परिष्कार करके प्रत्येक प्रकरण के अन्त में परिशिष्ट देकर नवीन गणित का भी तुलनात्मक विवेचन किया गया है तथा परीक्षा में आनेवाले प्रष्टव्य विषयों को तोड़-मरोड़ कर प्रश्नोत्तर के रूप में 'अभ्यासार्थ प्रश्न' के नाम से लिख दिया गया है। छात्रों के आधुनिक अध्ययन तथा अध्यापकों के अध्यापन-सौकर्य की दृष्टि से यह अभिनव संस्करण सर्वोत्तम है। मूल्य ४-००

भारतीय साहित्य की रूपरेखा

डॉ. भोलाशंकर व्यास

देश के प्रति शिक्षित नागरिक को भारतीय साहित्यिक, सांस्कृतिक परंपरा और प्रगति की आवश्यक जानकारी कराने के उद्देश्य से डा. व्यास ने वेदों से लेकर अब तक के समस्त भारतीय साहित्य की रूपरेखा प्रस्तुत की है। हजारों वर्षों के दायरे में फैले इस विशाल ज्ञान-समुद्र को सीमित रूपरेखा में बाँधना बड़ा कठिन है, पर डा. व्यास ने सचमुच 'गागर में सागर' भरते हुए भारत की सारी साहित्यिक परंपरा और प्रगति का सुशृंखलाबद्ध लेखा प्रस्तुत किया है। वैदिक, संस्कृत, पालि-प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य के अलावा भारत की सभी आधुनिक भाषाओं–हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगू आदि–के प्राचीन तथा अद्यतन साहित्य की गतिविधि का सुन्दर परिचय इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है।

डा. व्यास संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, भाषाविज्ञान, तथा साहित्यशास्त्र के अधिकारी विद्वान् हैं। विद्वत्तापूर्ण विषयप्रतिपादन के साथ ही प्रवाहपूर्ण, प्राञ्जल, सरस भाषा-शैली के वे सफल प्रयोक्ता हैं। पुस्तक की ये दोनों विशेषतायें आकर्षण का प्रधान केन्द्र हैं।

प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति

डॉ० राजबली पाण्डेय

एक अधिकारी विद्वान् द्वारा प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का सर्वाङ्गीण वर्णन और विवेचन इस ग्रन्थ के सीमित आकार में हुआ है। इसके विविध खण्ड हैं—(१) भौगोलिक और जातीय आधार (२) राजनीतिक इतिहास (३) राजनीतिक विचार और संस्थायें (४) आर्थिक जीवन (५) सामाजिक चिंतन और संस्थायें (६) धार्मिक जीवन (७) दार्शनिक सिद्धान्त (८) भाषा और साहित्य (९) कला तथा (१०) उपसंहार। भारतीय जीवन और मान्यताओं का एक संतुलित चित्र इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया गया है। तथ्य और विचार की प्रधानता होते हुये भी सरल शैली में इस ग्रन्थ का प्रणयन हुआ है। विद्वान, छात्र एवं सामान्य पाठक के लिये भी यह ग्रन्थ समान रूप से उपयोगी है।

वात्स्यायनमुनिविरचितं

कामसूत्रम्

जयमंगला टीका सहित हिन्दी में अनुचिन्तन

पं० देवदत्त शास्त्री

भारत की अपेक्षा यूरोप में कामशास्त्र एवं कामसूत्र पर लगभग एक शती से लगातार अत्यधिक चिन्तन तथा अनुशीलन किया गया है। भारत में कामसूत्र पर अब तक संस्कृत की सर्वमान्य जयमंगला टीका ही अपना स्थान बनाए हुए है, हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में कामसूत्र पर अभी तक व्यवस्थित, वैज्ञानिक ढंग से कोई व्याख्या, कोई चिन्तन प्रस्तुत नहीं किया जा सका। इस अभाव की पूर्ति की आशा कामसूत्र के इस अनुचिन्तन से हम कर रहे हैं। प्राच्य-पाश्चात्त्य यौनविज्ञान, मनोविज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए यह अनुशीलन धर्म, अर्थ, काम—इस त्रिवर्ग की विशद व्याख्या पर आधारित है। यह अनुशीलन उन आलोचकों के लिए चुनौती है जो कामसूत्र जैसे शास्त्र को अश्लील, अनुपयोगी कह कर उसकी उपेक्षा और निन्दा करते हैं।

डबल डिमाई आकार के लगभग १५०० पृष्ठों का यह महान् ग्रन्थ सुप्रसिद्ध जयमंगला टीका के साथ गहन, गंभीर अनुचिन्तन, समाजविज्ञान तथा मनोविज्ञान पर आधारित है।

महाकवि क्षेमेन्द्रकृत

चारुचर्य्या

(भारतीय सदाचार, शिष्टाचार)

केवल सौ अनुष्टुप् श्लोकों की यह छोटी-सी पुस्तक भारतीय सदाचार, एवं शिष्टाचार का कोष है। समाज में रहते हुए व्यक्ति जिन आचरणों और व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है—उनका एकत्र समुच्चय इस पुस्तक में है।

मूल श्लोकों की हिन्दी टीका के साथ जो हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है, वह युग-धर्म के अनुकूल और लोकोपयोगी है। प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को सदाचार एवं शिष्टाचार-सम्बन्धी शिक्षा प्रदान करने के लिए यह पुस्तक नितान्त उपयोगी है। सरल भाषा और मोहक शैली इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है।

कालिदास : एक अनुशीलन

पं० देवदत्त शास्त्री

कालजयी, रससिद्ध कवि कालिदास पर देश-विदेश के विद्वानों ने जितना लिखा है, उतना अन्य भारतीय कवियों और साहित्य पर बहुत कम लिखा जा सका है। कालिदास का जीवन और कृतित्व खाँड की रोटी की भाँति है जिधर से खाइए उधर से ही मिठास मिलती है। सैकड़ों-सहस्रों कालिदास-संबंधी ग्रंथ लिखे जाने के बावजूद यह अनुशीलन-ग्रंथ अपनी कुछ नवीनता और विशेषता लेकर प्रकट हो रहा है। कालिदास के जीवन, जन्मभूमि और उनकी स्थिति पर अभी तक अनेक मतवाद प्रचलित हैं, कोई सर्वसम्मत निर्णय नहीं हो सका है। आप इस अनुशीलन-ग्रंथ में कालिदास के जीवन और जन्मभूमि के संबंध में ठोस प्रमाणों सहित ऐसी नई मान्यताएँ, नई स्थापनाएँ पायेंगे, जिन पर आपको विचार करने, अपने मत प्रकट करने की उत्सुकता अवश्य उत्पन्न होगी।

कालिदास की रचनाओं का अध्ययन सर्वथा नया दृष्टिकोण रखकर किया गया है। संस्कृत-साहित्य और कालिदास-साहित्य पर रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं, विद्यार्थियों एवं अनुशीलनकर्त्ताओं के लिए यह ग्रंथ सुहृद् की भाँति उपादेय सिद्ध होगा।

स्मृति के हस्ताक्षर

अतिशय रोचक और प्रेरक संस्मरण

देवदत्त शास्त्री

प्रत्येक देश के साहित्य में संस्मरण-साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी में अभी संस्मरण-साहित्य उतना प्रकाशित नहीं हो सका जितना हिन्दी का प्रभाव और विकास है।

'स्मृति के हस्ताक्षर' निःसन्देह हिन्दी के संस्मरण-साहित्य के लिए नई देन साबित होगा। हर संस्मरण एक नया शिल्प, निखरा सौष्ठव लेकर इस पुस्तक के माध्यम से अवतरित हुआ है। कोई संस्मरण ऐसा नहीं है जो पाठक के हृदय को तरल और सरल न बनाता हो। रोमांचकारी यात्राएँ, व्यक्तिगत जीवन में घटी मधुर-अम्ल-लवण-कटु-कषाय-तिक्त घटनाएँ पाठक में प्रेरणा, स्फूर्ति एवं संघर्षों से जूझने की अदम्य भावना उत्पन्न करने में पूर्ण सक्षम हैं। इन संस्मरणों के माध्यम से अज्ञात भारतीय भूगोल का रोचक अध्ययन हो जाता है।

संस्कृत भाषा

(मूल लेखक : टी. बरो, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय)

रूपान्तरकार : डॉ. भोलाशंकर व्यास

भारतीय भाषाशास्त्र के अध्ययन में संस्कृत भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में यूरोपीय विद्वानों ने आर्य-परिवार की भाषावैज्ञानिक अध्ययन-दिशा में काफी गवेषणायें की हैं, जिनसे संस्कृत तथा तज्जन्य भारतीय भाषाओं के वैज्ञानिक अनुशीलन में कई समस्याओं पर नया प्रकाश पड़ा है। प्रो० बरो की प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृत लैंग्वेज' इस विषय पर सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है, जिसमें अद्यतन गवेषणाओं को आत्मसात् करते हुए प्राचीन भारतयूरोपीय भाषा, संस्कृत तथा तत्संबद्ध भाषाओं का आधिकारिक तुलनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। डा० व्यास संस्कृत तथा हिन्दी के अधिकारी विद्वान् हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत प्रो० बरो के इस विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ का हिंदी रूपांतर भी तदनुरूप ही है। लेखक तथा रूपांतरकार दोनों के आधिकारिक ज्ञान से पुस्तक की प्रामाणिकता और भी बढ़ गई है।

भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार

डॉ. भोलाशंकर व्यास

अलंकार भारतीय साहित्यशास्त्र का कठिनतम तथा जटिलतम अंग है पर अभी तक अलंकारों पर शास्त्रीय, वैज्ञानिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत कोई विवेचना नहीं मिलती। प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा यह कमी पूरी हो जाती है। पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के गंभीर अध्ययन के साथ ही भारतीय साहित्यशास्त्र के मूल ग्रन्थों का ठोस परिज्ञान इस ग्रन्थ में प्रतिपद लक्षित होता है। नवीन दृष्टि से भारतीय साहित्यशास्त्र की प्राचीन स्थापनाओं की ऐसी प्रामाणिक तथा आधिकारिक विवेचना हिंदी क्षेत्र में कम ही मिलेगी। भरत से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक तथा अरस्तू से इलियट तक सभी भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य-शास्त्रियों के प्रासंगिक मतों को कुशलतापूर्वक आत्मसात् कर प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ की अन्य मूल्यवत्ता यह भी है कि अलंकारों के संबंध में प्रचलित शास्त्रार्थों और प्रसिद्ध उदाहरण-पद्यों को विवेचना में खास तौर पर लिया गया है और साथ में मध्ययुगीन तथा अर्वाचीन हिन्दी कविता से भी यत्र-तत्र अलंकारों के उदाहरण दिये गये हैं। हिन्दी में यह अपने विषय का एक प्रामाणिक ग्रंथ होगा।

(१) भारत का भूगोल (सचित्र)

इस पुस्तक से सभी छात्रगण परिचित हो चुके हैं। प्रस्तुत परिवर्द्धित संस्करण में भारत के भूगोल के साथ विश्व भूगोल भी सम्मिलित है। इत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न तथा आवश्यक स्थलों पर चित्र भी दिए गए हैं। प्रथमा पाठ्य-निर्धारित सभी विषय छात्रों की ग्रहण-योग्यतानुसार ही संग्रथित किए गए हैं तथा भूगोलसंबन्धी नवीनतम सूचनाओं को भी स्थान दिया गया है। मूल्य १-००

(२) नागरिक शास्त्र (सचित्र)

इस पुस्तक का विषयक्रम इस प्रकार है—

१. जनपदीय निकाय, स्थानीय निकाय तथा उसके द्वारा संचालित संस्थाएं और स्थानीय संस्थाओं की निर्वाचन-योग्यता-विधि। २. शासन, शासन का विभाग, जनपदाधिकारी, उनके कर्तव्य, व्यवसाय, रक्षा विभाग, शिक्षा विभाग, कृषि विभाग, सिंचाई विभाग, सहकारी विभाग, आरोग्य शास्त्र और जनस्वास्थ्य, लोकसेवी संस्थाएँ, प्रादेशिक और केन्द्रीय शासनों का साधारण परिचय, राष्ट्रिय उत्सव और जयन्ती-समारोह। ३. संयुक्त राष्ट्रसंघ। ४. नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य। ५. आधुनिक भारतीय जीवन की समस्याएँ, समाज-संस्कार और अस्पृश्यता की समस्याएँ, आधुनिक भारत में स्त्रियों का स्थान, भारत में निर्धनता की समस्या, ग्रामीण औद्योगिक कार्यों का पुनरुज्जीवन। भाषा एवं विषय-प्रतिपादनशैली अत्यन्त सरल हैं। मूल्य ०-७५

(३) भारतीय इतिहास (सचित्र)

२९ अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक में वैदिक सभ्यता से लेकर अब तक का विशद इतिहास इस कौशल से उपनिबद्ध है कि कोई विषय छूटने नहीं पाया है। परिवर्तित पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्तन-परिवर्द्धन भी किया गया है तथा नवीनतम सूचनाओं का ध्यानपूर्वक समावेश किया गया है। स्थान-स्थान पर अनेक चित्र तथा अध्याय के अन्त में अभ्यासार्थ प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इतिहास में भारत की आत्मा साकार हो उठी है। आवरण अत्यन्त मनोरम छपा है।

मूल्य १-५०

चौखम्बा साहित्य एवं प्रचारित पुस्तकों की

विषयानुक्रमणिका

विषयाः — पृष्ठाः

पुस्तकें मंगवाने के नियम—

१ हमारे यहाँ पुस्तकों की बिक्री नगद होती है। उधार का नियम नहीं है।

२ बाहरी ग्राहकों को सब पुस्तकें अच्छी तरह देख कर सुरक्षित रूप में पोस्ट अथवा रेल्वे पार्सल द्वारा भेजी जाती हैं।

३ डाकखाने से वी० पी० नियमानुसार ५ दिन के अन्दर छुड़ा लेनी चाहिये अन्यथा वापस हो जायगी। वी० पी० वापस आने से उसकी सारी क्षति तथा खर्च ग्राहकों को देना होगा।

४ जो ग्राहक पुस्तकें अधिक वजन की होने से रेल्वे पार्सल से मँगवाना चाहें उनको अपने समीप के रेल्वे स्टेशन तथा रेल्वे लाईन का नाम भी अवश्य लिखना चाहिये और कम से कम चौथाई मूल्य आर्डर के साथ पेशगी अवश्य भेजना चाहिये जो वी० पी० के मूल्य में कम कर दिया जाता है।

५ बाहरी देशों में जहाँ वी० पी० नहीं जाती वहाँ के ग्राहकों को पुस्तकों का मूल्य तथा डाकखर्च आर्डर के साथ पूर्व ही भेज देने से पुस्तकें भेजी जायँगी।

६ सब पुस्तकें ग्राहकों की जिम्मेदारी पर भेजी जाती हैं। हमारे यहाँ से पुस्तकें भेजने के बाद रास्ते की जोखिम का जिम्मेदार कार्यालय नहीं है।

७ प्रकाशकों के मूल्य-परिवर्तन के अनुसार पुस्तकों के मूल्य जो घटे-बढ़े होते हैं ग्राहकों को विना सूचना दिये ही माल भेजते समय चार्ज किये जाते हैं। पुस्तकें भेजने का कुल खर्च—पेकिङ्ग, डाकखर्च, रेलभाड़ा आदि ग्राहकों के जिम्मे होगा।

८ बिक्री की गई पुस्तकें वापस नहीं ली जातीं। किसी पुस्तक में पत्र कम होने पर प्रमाणसहित पत्र आने पर वे पूर्ण कर दिये जाते हैं।

९ दस रु० से अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहकों से चतुर्थांश मूल्य पेशगी मिलने पर ही पुस्तकें भेजी जायँगी।

१० नोट, टिकट, चेक, पोस्टल आर्डर आदि सब रजिस्ट्री से भेजना चाहिये।

११ वी० पी० भेजने में यदि किसी पुस्तक के भाव इत्यादि में अथवा और किसी प्रकार की भूल हुई हो तो भी कृपया वी० पी० छुड़ा लेवें और बीजक संख्या तथा दिनांक लिख कर भेजने की कृपा करें। भूल-सुधार कर दिया जायगा। वी० पी० वापस न करें अन्यथा हानि होगी।

१२ पत्र व्यवहार अंग्रेजी—हिन्दी—संस्कृत में सुवाच्य अक्षरों में करें तथा अपना पूरा पता—नाम, ग्राम, पोस्ट, समीपी रेल्वे स्टेशन, जिला आदि स्पष्ट लिखें। बैरंग पत्र नहीं लिये जाते इसलिये उचित टिकट लगाकर पत्र भेजें।

१३ पुस्तक-विक्रेताओं को स्वप्रकाशित पुस्तकों की अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष कमीशन दिया जायगा। इस विषय के लिए पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

१४ वैधानिक कार्यों के लिए वाराणसी का कोर्ट मान्य होगा।

स्थापित संवत् १९४८] ॥ श्रीः ॥ [स्थापित सन् १८९२

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

द्वारा

प्रकाशित तथा प्रचारित ग्रन्थों का सूचीपत्र

व्याकरण-ग्रन्थाः

१ **अनुवाद-चन्द्रिका** (नवम संस्करण) लोकमणि जोशी।
यह पुस्तक संस्कृत तथा अंग्रेजी छात्रों को संस्कृत-हिन्दी-अनुवाद सिखलाने के लिए बहुत ही सरल पद्धति से लिखी गई है। अत्यधिक छात्रोपयोगी होने के कारण ही अल्प समय में इसके अनेक संस्करण बिक चुके हैं। १–२५

२ **अनुवादप्रभा** (अष्टम संस्करण) पं० गौरीशंकर शास्त्री।
आज तक जितनी भी इस विषय की पुस्तकें निकली हैं उन सबमें यह उत्तम है। इससे साधारण छात्र भी अल्प समय में ही सरलता से संस्कृत में सुन्दर अनुवाद करना सीख सकते हैं। सुलभ सं० १–२५ उत्तम संस्करण १–५०

३ **अष्टाध्यायीसूत्रपाठः**। श्रीमत्पाणिनिमुनिविरचितः [ह. ६३] ०–६५

*४ **आगरा यूनिवर्सिटी बी० ए० प्रश्नोत्तरी**। ५–००

5 **Introduction to the Grammar of the Sanskrit Language** by H. H. Wilson 20–00

६ **उत्तरपक्षावली**। सपरिष्कृता [ह. १६] ०–२५

७ **उपसर्गवृत्तिः**। [चौ. पु.] ०–१०

८ **धातुपाठः**। 'धात्वर्थप्रकाशिका' टिप्पणी सहितः [चौ. पु.] समाप्त

९ **धातुरूपावली**। पं० गोपालशास्त्री नेने परिष्कृता [चौ. पु.] ०–५०

१० **न्यासकल्पलता अर्थात् पाणिनिसूत्रन्यासशास्त्रार्थः**।
श्रीशिवकुमारशास्त्री आदि विद्वानों के न्यास-शास्त्रार्थ भी इसमें हैं १–००

११ **काशिकावृत्तिः** । विद्वद्वर श्रीवामनजयादित्य विनिर्मिता ।
प्रस्तावना-लेखक—श्री ब्रह्मदत्त जिज्ञासु । विषमस्थल टिप्पणी से अलङ्कृत विशुद्ध तृतीय संस्करण । १२-००

१२ **कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी** । प्रो० रामशरण शास्त्री ।
इस ग्रंथ में व्याकरण और साहित्य का अपूर्व समन्वय है । सरल, सरस, सुबोध एवं रोचक गद्य-कथानकों में सिद्धान्त-कौमुदी के 'इको यणचि' सूत्र से लेकर उत्तर कृदन्त के अन्तिम सूत्र तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की एक नवीन विधि का यह अनूठा प्रयोग है । इसकी भाषा इतनी ललित और मधुर है कि पाठक कथा के रस में भींगे हुए शास्त्रज्ञान को सरलता से ग्रहण करता हुआ कल्लोलिनी की भावतरंगों में मग्न हो जाता है । इसकी कथा का आधार कथासरित्सागर में आए हुए नरवाहनदत्त की कथा है । इसके पढ़ लेने पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न कथाशैलियों एवं उनमें अनुप्राणित आर्यावर्त की सांस्कृतिक परम्परा तथा सामन्त युगीन शक्ति का एक चित्रण उपस्थित हो जाता है । ग्रंथ के अन्त में छपा हुआ संस्कृत-हिंदी अभिधान इसे और भी उपयोगी बना देता है । ८-७५

१३ **पदार्थदीपिका** । म० म० कौण्डभट्ट विरचिता [चौ. पु.] ०-५०

१४ **परमलघुमञ्जूषा** । 'अर्थदीपिका' टीका टिप्पणी सहिता
म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीय संपादित परीक्षोपयोगी संस्करण १-२५

१५ **परमलघुकला** (परमलघुमञ्जूषा-प्रश्नोत्तरी) [ह. १७६] १-००

१६ **परिभाषावृत्तिः** । श्री क्षीरदेवकृता [ब. ९] समाप्त

१७ **परिभाषेन्दुशेखरः** । 'भैरवी' 'तत्त्वप्रकाशिका' टीकाद्वयोपेतः समाप्त

१८ **परिभाषेन्दुशेखरः** । 'बृहच्छास्त्रार्थकला' टीकासहित ।
परीक्षोपयुक्त 'प्रश्नोत्तरी' समेतः [का. १३७] ३-००

१९ **परिभाषेन्दु-प्रश्नपञ्जिका** (परिभाषेन्दुशेखरप्रश्नोत्तरी) २५ वर्षों से अधिक परीक्षोपयोगी प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे गये हैं [का. १३८] ०-६५

7

२० **परिष्कारदर्पणम्** । 'शास्त्रार्थकला' सहितम् ।

परिष्कार वनाने की नवीन शैलियां एवं सैकड़ों पाणिनीय सूत्रों के शाव्दवोध अति सरल रीति से लिखे गये हैं। सव से वड़ी विचित्रता यह है कि रचयिता ने अपनी सुन्दर युक्तियों द्वारा परिभाषेन्दुशेखर का खण्डन भी कर डाला है। [ह. ३५] २–००

२१ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष।** (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल।

इस ग्रंथ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शव्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। ऐसे लगभग ३००० शव्दों की अकारादि-क्रम-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है। लेखक की मान्यता है प्राचीन भारतीय संस्कृति-विषयक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पाणिनीय सामग्री का अध्ययन आवश्यक है। १५–००

२२ **पाणिनीयमिताक्षरा** । अन्नंभट्ट प्रणीता। [व. २०] दुष्प्राप्य

२३ **पाणिनीयशिक्षा**–'प्रदीप' व्याख्या सहिता ।

पाणिनीय शिक्षा के साथ-साथ स्वरवैदिकप्रक्रिया के फक्किकाविवरण जो किसी संस्करण में नहीं हैं, इसमें आपको प्राप्त होंगे [ह. सी. ५९.] ०–४०

२४ **पाणिनीयशिक्षा** । पञ्जिकाभाष्य सहिता [ह. १०] ०–२०

२५ **पाणिनीयव्याकरणे वादरत्नम्** । श्रीसूर्यनारायणशुक्लविरचितम् ।

प्रथमभाग में न्यास प्रकरण और द्वितीय भाग में परिष्कार प्रकरण है। न्यास-परिष्कार का इससे उत्तम ग्रन्थ आज तक नहीं छपा [का. सी. ८०]

प्रथम भाग २–५० द्वितीय भाग २–५०, १–२ भाग ५–००

*२६ **पाणिनीयसिद्धान्तकौमुदी** । मथुराप्रसाद दीक्षितकृता ३–५०

27 **PANINI : His Place in Sanskrit Literature.** An Investigation, Literary and Chronological Questions which may be settled by A Study of His Works by Theodor Goldstucker. Shortly

*२८ पालिनिसेनी । भिक्षु जगदीश काश्यप । १-२ भाग २-००

*२९ पालिप्राकृतव्याकरणम् । मथुराप्रसाद दीक्षितकृतम् १-५०

३० पूर्वपक्षावली । सपरिष्कृता ०-२५

३१ **प्रबन्ध-पारिजातः** (परिवर्धित संस्करण) प्रो० रामचन्द्र मिश्र ।

काशी, बिहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में निर्धारित संस्कृत-प्रबन्ध-रचना करने के नियम इस पुस्तक में अत्यन्त सरल रूप से समझाये गये हैं और तदनुसार परीक्षोपयोगी 'प्रबन्धलेखनप्रकार' (परीक्षा में आने योग्य निबन्धों के उत्तर) इस तरह सरल और संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं कि अभ्यास कर लेने पर विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं । इस परिवर्धित संस्करण में (१) 'पत्र-लेखन प्रकार' (चिट्ठी-पत्री, आवेदन-पत्र आदि का उल्लेख) तथा (२) प्रसङ्गोपयुक्त 'सुभाषित गद्यावली' (३) 'सुभाषित-पद्यांशावली' और (४) 'लौकिक न्यायमाला' आदि विषयों के साथ-साथ नवीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार परीक्षाओं में पूछे जाने वाले अनेक निबन्ध लेखों का समावेश करके आधुनिक चतुरस्र विद्वान् बनने का सुगम मार्ग दर्शाया गया है । १-५०

३२ **प्रबन्धामृतम्** । [ह. १५७] यन्त्रस्थ

३३ **प्रस्तावतरङ्गिणी** (निबन्ध ग्रन्थ) प्रो० श्री चारुदेव शास्त्री ।

काशी, बिहार, पंजाब आदि की परीक्षाओं में निर्धारित अपने ढङ्ग का यह सर्वोच्च निबन्ध ग्रन्थ है । इसकी विशेषता पर मुग्ध होकर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय ने शास्त्री द्वितीय खण्ड के साधारण पत्र में तथा पंजाब यूनिवर्सिटी ने शास्त्री परीक्षा में इसे पाठ्य ग्रन्थ स्वीकार कर लिया है । इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्राचीन आचार-विचार के निरूपण के साथ-साथ आधुनिक विचारधाराओं के सारगर्भित विषयस्वरूप, प्रबन्ध-रचना-चातुरी तथा विचार-वैशारदी सहज ही प्राप्त हो जाती है । ३-००

३४ **प्रयोगशास्त्रार्थकला** । [ह. ७०] ०-२५

३५ **प्राकृतव्याकरणवृत्तिः** (ससूत्रा) श्री त्रिविक्रमदेवनिर्मिता ।

भूमिका, सूची आदि से अलंकृत सजिल्द अभिनव संस्करण ७-५०

३६ **प्राकृतप्रकाशः ।** भामहकृत 'मनोरमा' तथा म.म. मथुराप्रसाद दीक्षितकृत 'चन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहितः

प्रस्तुत संस्करण की विशेषता यह है कि अनेक ग्रन्थों पर व्याख्या करने की ख्याति प्राप्त किये हुए विज्ञ व्याख्याकार म० म० मथुरानाथ दीक्षित द्वारा जो संस्कृत हिन्दी व्याख्या इस ग्रन्थ पर की गई है उससे ग्रन्थ का आशय इतना सुस्पष्ट हो गया है कि हिन्दी मात्र ही एक बार पढ़ लेने पर आप ग्रन्थ के किसी भी मुख्यामुख्य विषय से अनभिज्ञ नहीं रह जायेंगे। प्राकृतप्रकाश की सांगोपांग यह हिन्दी व्याख्या सर्व प्रथम लिखी गई है। भाषा, भाव आदि सभी दृष्टि से हिन्दी का प्रवाह ग्रन्थाशय के पूर्ण अनुकूल एवं सहृदयाह्लादक है इसकी भूमिका में सम्पूर्ण ग्रंथ की आलोचना एवं वररुचि का प्रामाणिक इतिवृत्त भी वर्णित है। अन्त में अपभ्रंश शब्द विचार शब्दकोश आदि से भी ग्रन्थ के दुरूहांशों को आधुनिक ढंग से खुलासा कर दिया गया है। ५-००

३७ **प्राकृत व्याकरण** (हिन्दी) श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र।

हिंदी में प्राकृत-व्याकरण का पूर्ण ज्ञान कराने के लिए तथा प्राकृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के हित की दृष्टि से विद्वान् लेखक ने इसमें महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, पैशाची, अपभ्रंश आदि प्राकृत के सभी अवान्तर भेदों का अत्यंत सुबोध रूप से प्रतिपादन करके एक बहुत बड़ी कमी को पूर्ण किया है। पाद टिप्पणी द्वारा विवादास्पद विषयों को तथा तुलनात्मक अध्ययन की सामग्री प्रस्तुत करने एवं ग्रंथान्त में परिशिष्ट के दे देने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गयी है। ५-००

३८ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न—भैरवी—भावप्रकाश—सरलाटीकोपेता।

पं० बालंभट्ट पायगुण्डेकृत भावप्रकाश टीका के साथ काशी के उद्भट विद्वान् व्या० आ० गोपालशास्त्री नेने कृत सरला टीका भी प्रकाशित हो जाने से यह संस्करण विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय तथा परीक्षोपयोगी सिद्ध हो गया है। [का. सी. १२५] अव्ययीभावान्त १२-००

३९ **प्रौढमनोरमा**—शब्दरत्न-ज्योत्स्ना-कुचमर्दिनी-प्रभा-विभोपेता।
द्वितीयभाग अजन्तपुंल्लिङ्गादि स्त्रीप्रत्ययान्त २-०० अव्ययीभावान्त
तृतीय भाग २-०० [हृ. सी. २३] १-३ भाग अव्ययीभावपर्यन्त ६-००

४० **प्रौढमनोरमा**। शब्दरत्न-भैरवी व्याख्या म. म. पं. श्री माधव शास्त्री भाण्डारी कृत प्रभा-टिप्पणी सहित। अव्ययीभावान्त २०-००

४१ **प्रौढमनोरमा**। 'शब्दरत्न' सहित तत्पुरुषादि सन्नन्तप्रक्रियान्त १०-००

+४२ **प्रौढमनोरमा**। 'शब्दरत्न' सहिता। उत्तरार्ध। प्राचीन जीर्ण संस्करण २५-००

+४३ **प्रौढमनोरमाखण्डनम्**। श्री चक्रपाणिदत्त विरचितम् १-७५

*४४ **प्रौढमनोरमाव्याख्याकल्पलता**। श्रीकृष्णमित्रकृता। अव्ययीभावान्त ३-००

४५ **प्रौढमनोरमाशब्दरत्नप्रश्नोत्तरावली** तथा **व्याकरणशास्त्रिप्रश्नावली**
[हृ. ५४] १-३ खण्ड १-५०

*४६ **प्रौढरचनानुवादकौमुदी**। कपिलदेव द्विवेदी। नेट ७-५०

४७ **फक्किकाप्रकाशः**। (पङ्क्तिव्याख्यानम्) बृहद् टिप्पणीसहितः १-५०

४८ **फक्किकारत्नमञ्जूषा** (") प्र. भाग २-०० द्वि. भाग २-५०

४९ **फक्किका-प्रश्नोत्तरी** (परीक्षोपयुक्तपंक्तिव्याख्यानरूपो ग्रन्थः)
[हृ. १४०] १-५०

५० **फक्किकासरलार्थः** (तृतीय संस्करण)।
यह पुस्तक मध्यमा परीक्षा की रीति से ऐसी उत्तम लिखी गई है जिससे विद्यार्थियों की सभी कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं। [हृ. सी. २१] १-००

५१ **बनारस-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली**।
इस संस्करण में आज तक के नवीन निर्धारित साधारण प्रश्नपत्रों के साथ पिछले ३२ वर्षों के लघुकौमुदी में आये हुए प्रश्नों के उत्तर भी प्रकरण के अनुसार अत्यन्त ही सरल और संक्षेप में लिखे गये हैं जिससे अल्पवयस्क बालकों को पढ़ने में कोई असुविधा नहीं होगी। २-५०

५२ **बिहार-सोत्तरा-प्रथमाप्रश्नावली**।
सन् १९२० से आज तक के प्रश्नों के उत्तर लघुकौमुदी के प्रकरणानुसार इस अभिनव संस्करण में आधुनिकढंग से संक्षिप्त रूप में लिखे गये हैं २-००

५३ बालसंस्कृतप्रभा (बालोपयोगी) नेट ०-५०

५४ वृहत् संस्कृतशिक्षा-वाटिका। प्रथम द्वितीय भाग यन्त्रस्थ
तृतीय भाग ०-६५ चतुर्थ भाग ०-७५ [इ. ४९] ३-४ भाग १-४०

५५ **मध्यसिद्धान्तकौमुदी**–'सुधा' 'इन्दुमती' संस्कृत–हिन्दी टीका, नोट्स, प्रश्नोत्तरलेखनप्रकारादि परिशिष्ट सहित।

इसकी 'सुधा' संस्कृत टीका में प्रत्येक प्रयोग तथा धातुरूप की परीक्षोपयोगी साधनिका तथा सूत्रार्थों की अति सरल व्याख्या की गई है। इस संस्करण का अध्ययन करने से परीक्षार्थियों को 'प्रश्नोत्तरी' की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सभी प्रयोगों की व्याख्या प्रश्नोत्तर-लेखन के रूप में ही की गयी है। इसकी 'इन्दुमती' नामक हिन्दी टीका में टीका के साथ 'नोट्स' देकर संस्कृत व्याकरण का भी सरल रूप से ज्ञान कराया गया है जो आज तक के किसी भी संस्करण में नहीं है। ५-००

५६ **मध्यकौमुदीरहस्यम्** (प्रश्नोत्तरी)।
इस मध्यकौमुदी-प्रश्नोत्तरी में आजतक परीक्षा में आए हुए सभी प्रश्नों के उत्तर अति सरल, सुबोध तथा फक्किकांश रहित लिखे गए हैं। २-००

५७ **मानक हिन्दी व्याकरण**। आचार्य रामचन्द्र वर्मा

'मानक हिन्दी व्याकरण' विद्यार्थियों की अनेक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रस्तुत किया गया है। आज-कल सभी पुराने विषयों का विवेचन बहुत कुछ नये ढंग से होने लगा है; और नये ढंग विषयों को सरल तथा सुबोध बनाने के उद्देश्य से ही अपनाये जाते हैं। इस व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को बहुत सहज में और नये मनोरंजक ढंग से व्याकरण की जटिल तथा शुष्क बातों से परिचित कराना है। इसमें अनेक शब्दभेदों की बिलकुल नई प्रकार की व्याख्या दी गई है; और विषय-विभाजन भी बहुत कुछ नये ढंग से किया गया है। यही इस व्याकरण की मुख्य विशेषता है जिससे इसके अधिक उपयोगी तथा उपादेय सिद्ध होने की आशा है। मेरा विश्वास है कि अध्यापक तथा विद्यार्थी इसे अन्यान्य अनेक व्याकरणों की तुलना में अधिक महत्त्व की दृष्टि से देखेंगे और इससे अधिक लाभ उठावेंगे। २-००

५८ **मध्यमा-व्याकरण-सोत्तरा-प्रश्नावली ।**

पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य संपादित । नवीन नियमावली के पाठ्यक्रमानुकूल संशोधित परिवर्द्धित परीक्षोपयुक्त इस संस्करण में सिद्धान्तकौमुदी के प्रकरणानुसार फक्किकांशपर्जित आधुनिक प्रश्नोत्तर लिखे गये हैं । अब यह प्रश्नोत्तरी सि० कौमुदी की परीक्षोपयोगी संक्षिप्त टीका ही हो गयी है । आज तक के सभी प्रश्नों के उत्तर इसमें आपको मिलेंगे । प्रथम खण्ड १-५० द्वि० खण्ड १-७५ तृ० खण्ड २-२५ चतुर्थ खण्ड २-५०, १-४ खंड ८-००

५९ **माधवीयधातुवृत्तिः ।** सायणाचार्य विरचिता (का १०३) यन्त्रस्थ

*६० **रचनानुवादकौमुदी ।** कपिलदेव द्विवेदी नेट ३-२५

६१ **राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण ।**

(काशी-विहार-पंजाब-मध्यप्रान्त-राजस्थान-विंध्यप्रदेश आदि की प्रथमा परीक्षा एवं जूनियर हाई स्कूल के लिए नयी पुस्तक)

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो जाने से शुद्ध हिन्दी में बोलना और लिखना छात्रों के लिये दुरूह हो गया था क्योंकि प्राचीन हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में ५० प्रतिशत उर्दू शब्दों का ही संमिश्रण है । अतएव यह पुस्तक राष्ट्रभाषा के प्रतीक तथा 'आज' पत्र के प्रधान सम्पादक बाबूराव विष्णुपराड़कर, बाबू सम्पूर्णानन्दजी आदि धुरन्धर हिन्दी वेत्ताओं के मतों से अलंकृत तथा हिन्दी के महारथी पं० रामनारायण मिश्र, विश्वनाथप्रसाद मिश्र आदि विद्वानों की सम्मतियों से सुसज्जित होकर नवीन रूप में प्रकाशित हुई है १-२५

६२ **रूपचन्द्रिका** (परिवर्धित नवीन संस्करण) ।

(लघुकौमुदी में आये हुए तथा उनके समान और भी शब्दों तथा धातुओं के अर्थ सहित रूपावली ।) इस संस्करण में दशगणी धातुरूपों को सुपरिष्कृत करके ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, आत्मनेपद, परस्मैपद, भावकर्म, कर्मकर्तृ आदि सभी प्रकरणों के सुविस्तृत सम्पूर्ण धातुरूप—जो आज तक की प्रकाशित किसी भी धातुरूपावलीमें प्राप्त नहीं होते—संमिलित कर दिये गये हैं तथा ग्रन्थ के अन्तमें अनुवादोपयोगी विविध परिशिष्ट भी दिये गये हैं । २-५०

६३ **लघुजूटिका** अर्थात् अभिनवपरिभाषेन्दुशेखरपरिष्कृतिनिर्मितिः (शास्त्रीपरीक्षोपयोगी) [का. १९] ०-५०

६४ **लघुशब्देन्दुकला** (लघुशब्देन्दुशेखर-प्रश्नोत्तरी)। 'प्रबन्धलेख' परिशिष्ट सहिता [ह. १७२] १-२५

६५ **लघुशब्देन्दुशेखरः** । म. म. श्रीनित्यानन्दपन्त पर्वतीयकृत— 'शेखरदीपक'टीका सहित । अव्ययीभावान्तः १०-००

६६ **लघुशब्देन्दुशेखरः** । भैरवी (चन्द्रकला) टीकासहितः [का. ५] यन्त्रस्थ

६७ **लघुशब्देन्दुशेखरः** । नागेशोक्तिप्रकाशटीकासहितः [का. १२८] २-५०

*६८ **लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या शाङ्करी** १-२५

*६९ " " श्रीधरी १-५०

*७० " " सदाशिवभट्टी ३-००

*७१ " " विषमपदवाक्यवृत्तिः २-५०

७२ **लघुसिद्धान्तकौमुदी** । 'सुधा' टीका, प्रश्नोत्तरलेखन सहित । इसकी सुधा टीका में सूत्रों का सरलार्थ, प्रत्येक शब्द तथा धातुरूप की ससूत्र साधनिका, सरलार्थ, स्थल-स्थल पर शब्दरूपावली, समासचक्र आदि विषय दिये गये हैं। ग्रन्थ के आरम्भ में प्रत्याहार-साधनचक्र, उदात्तादि-भेदचक्र और ग्रन्थ के अन्त में उदाहरणों एवं धातुओं के हिन्दी अर्थ तथा प्रयोगलेखनप्रकार आदि बहुत से परीक्षोपयोगी विषय दिये गये हैं। [ह. ११९] अजिल्द ३-०० सजिल्द ३-७५

७३ **लघुसिद्धान्तकौमुदी** । 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। इस अभिनव संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस टीका के आधार पर विद्यार्थी को पढ़ाया जाय तो व्यर्थ में उनका अधिक समय नष्ट न होगा। बालकों को परीक्षा के लिये लेख रटाने या लिखाने-पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। ग्रंथ के भावों का दिग्दर्शन मात्र कराने पर ही विद्यार्थी 'इन्दुमती' टीका के आलोक में सभी बातें संक्षेप में समझ जायेंगे। ई० २० से आज तक के प्रश्नोत्तर भी इस टीका में यथास्थान दिये गये हैं तथा सर्वत्र हिन्दी नोट्स में-सन्धि, कारक, समास, तद्धित, तिङन्त, लकारार्थ, कृदन्त आदि की सरल समीक्षा भी इस तरह की गई है कि विद्यार्थी को तत्क्षण ही उस विषय का पूरा ज्ञान हो जायगा। अनुवादोपयोगी सभी विषय प्रायः परिशिष्ट में दिये गये हैं। २-००

७४ **लघुसिद्धान्तकौमुदी** । 'बालबोधिनी' टीका सहित ।
इस टीका में मूल की छोटी छोटी पङ्क्तियों व कठिन सूत्रार्थों को अल्पमति बालकों के लिए मधुर शब्दों में लिखा गया है जिससे मूल पाठ करते समय भी उसका अर्थ तुरन्त समझ में आ जाता है। इसकी उपयोगिता के कारण ही अल्प समय में इसके पांच संस्करण हो चुके हैं। ०-७५

७५ **लघुकौमुदी-सोत्तरा-प्रयोगसूची** । प्रयोगार्थ सहित-
परीक्षोपयोगी 'इन्दुमती' टिप्पणी विभूषित: [हृ. ४८] ०-६५

७६ **लघुकौमुदी-प्रयोगसूची** । अमृता टिप्पणी विभूषिता ०-३५

७७ **लघुकौमुदी-सोत्तरा प्रश्नावली** । २-००

*७८ **लिङ्गवचनविचारः** । दीनबन्धुकृतः १२-००

७९ **लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला** तथा **कूटशास्त्रार्थकला** [हृ. १००] ०-७५

८० **वाक्यपदीयम्** । 'भावप्रदीप' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।
आचार्य सूर्यनारायण जी शुक्ल विरचित 'भावप्रदीप' नामक संस्कृत व्याख्या तथा शुक्ल जी के सुपुत्र श्री रामगोविन्द शुक्ल कृत हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित हुई है। शुक्ल जी की प्रकाण्ड विद्वत्ता के अनुरूप ही उनकी संस्कृत व्याख्या सर्वांग पूर्ण है। फिर भी इस द्वितीय संस्करण में संस्कृत व्याख्या का भी सारगर्भित हिन्दी अनुवाद होने से छात्रों तथा अध्यापकों के लिए भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुगम हो गया है। ब्रह्मकाण्ड शीघ्र प्रकाशित होगा ४-५०

८१ **वाक्यपदीयम्** । द्वितीय काण्ड के श्लोक ७४ से द्वितीय काण्ड समाप्ति पर्यन्त पुण्यराज टीका सहित २०-००

+८२ **वाक्यपदीयम्** । तृतीयकाण्ड हेलाराजटीकासहित ४-८ खण्ड ।
कालसमुद्देशः आरम्य वृत्तिसमुद्देशः ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्तः [व. ७.] ६-२५

८३ **विभक्त्यर्थनिर्णयः** । म० म० गिरिधरोपाध्याय विरचितः १०-००

८४ **वै० भूषणनिबन्धसंग्रहनाम तिङर्थवादसार** तथा **भूषणव्याख्या** ०-२५

८५ **वैयाकरणभूषणसारः।** 'सरला'-'सुबोधिनी' व्याख्याद्वयोपेतः
श्री पं० गोपालशास्त्री नेने संपादित परीक्षोपयोगी 'सुबोधिनी' टीका से परिवर्धित यह अभिनव सुलभ संस्करण नवीन शिक्षार्थियों के लिए सरल और उपादेय हैं। २-००

८६ **वैयाकरणभूषणसारः।** परीक्षोपयोगी दर्पण-भैरवी-
(परीक्षा) टीकाद्वय सहितः [का. १३३] १२-००

८७ **वैयाकरणभूषणसारः।** 'प्रभा' 'दर्पण' व्याख्याद्वयोपेतः।
महामनीषी श्रीसभापतिशर्मोपाध्यायजी ने अपनी 'प्रभा' नाम्नी टीका का योग देकर इस ग्रंथ के विवेच्य विषय को स्पष्ट परिलक्षित कर दिया है। शब्दशास्त्र की ठोस विद्वत्ता चाहनेवाले इस संस्करण से अवश्य लाभान्वित होवें। १२-००

८८ **वैयाकरणभूषणसारः।** 'दर्पणटीका'-भूषणव्याख्या-तिङर्थवादसार आदि परीक्षोपयोगी विविधपरिशिष्ट सहितः [का. २३] यन्त्रस्थ

८९ **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा।** श्रीदुर्बलाचार्य विरचित 'कुञ्जिका'-बालंभट्टविरचित 'कला' टीकाद्वयसहिता। [चौ. ४४] संपूर्ण यन्त्रस्थ

९० **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा।** न्याय-व्याकरणाचार्य श्रीसूर्यनारायण शुक्लकृत परीक्षोपयोगी विस्तृतटिप्पणी तथा 'कुञ्जिका' 'कला' टीकाद्वयसहिता [चौ. ४४] तात्पर्यनिरूपणान्तो भागः ७-५०

९१ **वै. सि. लघुमञ्जूषा-रहस्यम्** (वै. सि. लघुमञ्जूषा-प्रश्नोत्तरी)।
इसमें वैयाकरण सिद्धान्तलघुमञ्जूषा के दुरूहांशों को ऐसे सरल शब्दों में लिखा गया है कि विद्यार्थियों को ग्रंथ का आशय शीघ्र ही सरल रूपेण समझ में आ जायगा और वे परीक्षा के प्रश्नोत्तर भी संक्षेप में लिख सकेंगे १-००

९२ **हिन्दी वैदिकव्याकरण।** श्री उमेश चन्द्र पाण्डेय।
बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नव निर्मित इस ग्रंथ में वेद के सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रिया रूपों के एक लघु कोश भी प्रकाशित किया गया है। २-००
नेट ०-६२

*९३ **व्यवहार्यशब्दसरोवर।** प्रथम परीक्षोपयोगी

९४ **व्याकरणमहाभाष्यम्।** (नवाह्निकम्) प्रदीप-उद्योत-तत्त्वालोक टीकात्रयोपेतम् महामहोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा संपादित भूमिकादि विभूषित प्रदीप-उद्द्योत तथा 'तत्त्वालोक' नाम की टीकात्रय से विभूषित महाभाष्य का यह अभिनव संस्करण प्रथम ही प्रकाशित हुआ है। इस 'तत्त्वालोक' के आलोक में 'छायादि' सभी टीकायें गतार्थ हो गयी हैं। इसको देखते ही आप मुग्ध हो जायेंगे। प्रतिष्ठित मनीषियों के प्रशंसापत्र ग्रन्थ में पढ़िए। सजिल्द संस्करण १५-००

*९५ **व्याकरण-महाभाष्य।** (आह्निक १-४, हिन्दी अनुवाद) मूल, हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी टिप्पणी सहित। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि इसके भाषानुवाद की गति मूल का शब्दशः अनुकरण करती है, भाषा अत्यन्त प्राञ्जल, सुस्पष्ट एवं विषयानुकूल है। अनुवाद की उत्तमता तथा परम रम्य व्यवस्थित मुद्रण से आप अवश्य प्रसन्न हो उठेंगे। ८-००

९६ **व्याकरणमहाभाष्य।** कैयटकृत प्रदीप, अन्नंभट्टकृत प्रदीपोद्योतन व्याख्या सहित (१-२ भाग नवाह्निक) २०-७५

९७ **व्याकरणमहाभाष्यम्।** विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित प्रेस में

९८ **व्या० महाभाष्यप्रकाशः**—(महाभाष्य—प्रश्नोत्तरी) आज तक के परीक्षा में आये हुये सभी प्रश्नपत्र इसमें गतार्थ हो गये हैं। ऐसी सुविस्तृत सरल प्रश्नोत्तरी प्रथम ही प्रकाशित हुई है ०-७५

९९ **व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः।** विश्वेश्वरसूरिविरचिता। पाणिनीय अष्टाध्याय्या भाष्यव्याख्यानरूपा [चौ. ४५] २२-५०

१०० **शब्दकौस्तुभः।** श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितप्रणीतः। महाभाष्यस्थानामंशानां युक्तिप्रयुक्तिभिः साधनाय प्रणीतोऽपि विस्तृतोऽयं ग्रन्थः [चौ० २] २४-००

१०१ **शब्दकौस्तुभः।** नवाह्निकमात्रम् [चौ. २] ८-००

१०२ **व्युत्पत्तिप्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम्** (तृतीय संस्करण) नवीन मध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत 'व्युत्पत्ति-प्रदर्शन' का यह तृतीय संस्करण इस बार नये आकार-प्रकार से परिष्कृत होकर प्रकाशित हुआ है।

इस संस्करण के परिशिष्ट में गूढाशुद्धिप्रदर्शन भी दिया गया है जो परीक्षार्थियों के लिये महत्त्व का विषय है। अब परीक्षार्थियों को दोनों विषय एक ही साथ मिलने से परीक्षा में सरलता से सफलता मिलेगी। ०–५०

१०३ **शब्दरूपावली।** (विद्याविलासीय) एकाक्षरीकोश सहित [हृ. ३] ०–३५

*१०४ **शिक्षासूत्राणि।** आपिशलि-पाणिनि-चन्द्रगोमि विरचितानि। नेट ०–३५

*१०५ **संस्कृत हाईस्कूल प्रश्नोत्तर।** ०–८७

*१०६ **संस्कृत इण्टर प्रश्नोत्तर।** २–२५

*१०७ **संस्कृत एम. ए. प्रश्नपत्र।** ३–००

*१०८ **संस्कृत बालादर्श।** ०–६९

*१०९ **संस्कृत प्रथमादर्शः।** ०–८७ द्वितीयादर्शः १–०० तृतीयादर्शः १–२५

११० **संस्कृतपाठमाला।** महापण्डित राहुल सांकृत्यायन।

सुगमतापूर्वक संस्कृत भाषा को अधिकृत करने के लिये विद्वान् लेखक ने बालक-बालिकाओं के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए पाँच भागों में इस पुस्तक की रचना की है। इन्हें पढ़कर आप निश्चय ही संस्कृत भाषा और साहित्य का रस ले सकेंगे। कागज, टाइप, आवरण आदि सभी मनोरम।

प्रथम भाग ०–५० द्वितीय भाग ०–७५ तृतीय भाग ०–७५
चतुर्थ भाग ०–७५ पंचम भाग ०–९० १–५ भाग ३–६५

१११ **संस्कृत प्रकाश।** श्री कुबेरनाथ द्विवेदी।

प्रस्तुत पुस्तक इलाहाबाद बोर्ड द्वारा हाइस्कूल एवं इंटर परीक्षा में निर्धारित संस्कृत व्याकरण का अत्यन्त सरल, सुबोध एवं परीक्षोपयोगी पाठ्य ग्रंथ है। इसकी समझाने की शैली अत्यन्त सुलझी हुई और आधुनिक पाठ्यप्रणाली के अनुकूल है। परीक्षार्थियों के लिए तो यह अत्यन्त लाभप्रद है ही, अध्यापक वर्ग भी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। २–५०

११२ **संस्कृत-व्याकरणम्।** पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य। (दरभंगा कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रथमा परीक्षा में अनिवार्य द्वितीय पत्र के लिए परीक्षा पाठ्य स्वीकृत ग्रंथ)

इसमें (१) स्वरसन्धि (इको यणचि, आद्गुणः, वृद्धिरेचि, अकः सवर्णे दीर्घः, एचोऽयवायावः सूत्रों के आधार पर), (२) व्यञ्जन एवं विसर्ग सन्धि (स्तोश्चुनाश्चुः, ष्टुना ष्टुः, झलां जशोऽन्ते, यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा, शश्छोऽटि, खरि च, मोऽनुस्वारः, नश्चापदान्तस्य झलि, तोर्लि, झयो होऽन्यतरस्याम्, अतो रोरप्लुतादप्लुते, हशि च, इन सूत्रों के आधार पर) तथा (३) शब्दरूप, धातुरूप एवं कृदन्त, स्त्रीप्रत्यय, समास और कारक का कारिकाबद्ध विवेचन भी नियमावली के आधार पर संस्कृत हिन्दी दोनों में किया गया है। १-५०

११३ **संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका।** ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। घर बैठे सरल रूप में संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अद्वितीय है। १-२५

११४ **संस्कृत-व्याकरणकौमुदी।** (१-४ भाग) ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। सांगोपांग संस्कृत व्याकरण जानने वालों के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है। शीघ्र प्रकाशित होगी

११५ **संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः** (अनेक परीक्षाओं में पाठ्य-स्वीकृत)।

उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, पंजाब आदि की संस्कृत तथा हाईस्कूल की परीक्षाओं में पाठ्यस्वीकृत अनुवाद की सर्वश्रेष्ठ इस पुस्तक में छात्रों को अनुवाद करने के नियम अत्यन्त सरल रूपमें समझाए गये हैं और तदनुसार अनुवादार्थ अभ्यास भी दिए गये हैं। अभ्यासार्थ वाक्यों में आए हुए प्रत्येक कठिन शब्द का संस्कृत से हिन्दी तथा हिन्दी से संस्कृत अनुवाद करने के प्रबन्ध भी पुस्तक के अन्त में ९० प्रकरणों में दे दिये गए हैं और संधि आदि का ज्ञान कराने का सुगम पथ भी प्रदर्शित कर दिया गया है २-००

११६ **संस्कृत-स्वयं-शिक्षकप्रभा** (बालकोपयोगी अभिनव ग्रन्थ)

प्रारम्भिक हिन्दी स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की कठिनाई को दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। ०-७०

११७ **संस्कृत-रचना-प्रकाश** । प्रो० श्री रमाकान्त द्विवेदी एम. ए.

संस्कृत मध्यमा एवं अंग्रेजी हाई स्कूल की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत यह ग्रन्थ संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद के लिये आधुनिक सरल पद्धति का बहुत ही सुन्दर प्रकाशित हुआ है। इसमें प्रत्येक पाठ के अन्त में जो 'अभ्यास' दिये गये हैं वह इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता है। नवीन संस्कृत शिक्षापद्धति की योजनानुसार अनेक शिक्षा संस्थाओं के विद्वानों द्वारा अनुमोदित कराकर ही यह ग्रन्थ परीक्षा में स्वीकृत किया गया है १-९५

११८ **संस्कृत व्याकरणोदयः** । श्री जयमन्त मिश्र ।

बिहार के विश्वविद्यालयों की विभिन्न परीक्षाओं में स्वीकृत। परिष्कृत परिवर्द्धित नवीन संस्करण। ४-५०

११९ **संस्कृत-व्याकरण-प्रबोध** (१-२ भाग)

इसमें प्रथमा तथा मध्यमा के छात्रों को सरल रूपेण संस्कृत भाषा का ज्ञान कराया गया है। इस पुस्तक के अध्ययन से विद्यार्थियों को संस्कृत अनुवाद, निबन्ध-रचना, तथा पत्रादि लेखन-कलाओं का पूर्ण ज्ञान हो जायगा। प्रथम परीक्षोपयोगी प्र. भाग २-०० मध्यमं परीक्षोपयोगी द्वि. भाग ३-५०

*१२० **संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास** । युधिष्ठिरमीमांसक । १०-००

१२१ **सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुमः** । धर्माधिकारी कृष्णपण्डित विरचितः [चौ. ७०] १-५०

१२२ **संस्कृतालोकः** । पंडित रामबालक शास्त्री ।

पंडित रामबालक शास्त्री की रचना-शैली अनोखी है। बालकों का मानसिक स्तर, उनका पाठ्यक्रम आदि न जाने कितनी बातों का ध्यान रख कर आपने बालकों को संस्कृत भाषा का ज्ञान कराने के हेतु संस्कृतालोक की ३ किरणों को मूर्त रूप दिया है। प्रथम किरण ०-४०, द्वितीय किरण ०-५०, तृतीय किरण ०-६५, १-३ किरण १-५०

१२३ **सन्धि-चन्द्रिका** । पं० रामचन्द्र झा व्याकरणाचार्य ।

इस पुस्तक में सन्धि, कारक, समास, तिङन्त (धातु), कृदन्त, तद्धित आदि को अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दी भाषा में समझाया गया है और परिशिष्ट में वाक्यविन्यास का प्रकार भी संक्षेप में बतलाया गया है। अपने ढंग की हिन्दी में यह बिल्कुल नयी पुस्तक है। १–००

१२४ **समासचक्रम्** । ब्रह्मदत्तशुक्लकृत टिप्पणी सहितम् [चौ. पु.] ०–१५

१२५ **सादृश्यशास्त्रार्थकला तथा लः कर्मशास्त्रार्थकला** [ह. ७२] ०–२०

१२६ **सारस्वतव्याकरणम्** । बालबोधिनी-इन्दुमतिसहितम् ।

परीक्षोपयोगी 'बालबोधिनी' संस्कृत टीका के साथ 'इन्दुमती' हिन्दी टीका विभूषित होने से यह संस्करण अधिक उपादेय हो गया है। परीक्षोपयोगी बहुत से विषय हिन्दी नोट्स में भी दे दिये गये हैं जिनका अभ्यास करने से अल्पवयस्क विद्यार्थी भी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है। पूर्वार्द्ध १–००

१२७ **सारस्वतव्याकरणम्** । चन्द्रकीर्त्तिटीका-प्रसादटीका-परीक्षोपयोगी मनोरमा विवृति तथा सटीक लिंगानुशासन प्रकरण सहित [का. १११] (पूर्वार्द्ध यन्त्रस्थ) उत्तरार्द्ध ५–००

१२८ **सिद्धान्तकौमुदी** (मूल, जेबी गुटका तृतीय संस्करण)

पं० गोपालशास्त्रीनेने सम्पादित सूत्राङ्क-धात्वङ्क-सूच्यादि सहित २–००

१२९ **सिद्धान्तकौमुदी** । व्याकरणाचार्य श्रीगोपालशास्त्रीनेनेकृत परीक्षोपयोगी 'सरला'टीका, रूपलेखनप्रकार-पंक्तिलेखनप्रकार-आदि परीक्षोपयोगी विविध विषयों से विभूषित [का. ११९] स्त्री प्रत्ययान्त प्रथम भाग १–५०

१३० **सिद्धान्तकौमुदीपंक्तिपदार्थविवरणरूपा भावबोधिनी नाम्नी विस्तृतटीका** । [चौ. पु.] २–००

*१३१ **सिद्धान्तकौमुदी-परिशिष्टसंग्रहः** । ०–५०

१३२ **सिद्धान्तकौमुदी-बालमनोरमा।** परीक्षोपयोगी-रूपलेखन-प्रकार—पङ्क्तिलेखनप्रकार आदि परिशिष्टों से सुसज्जित।

'बालमनोरमा' टीका सहित सिद्धान्तकौमुदी के इस संस्करण में हमारे योग्य सम्पादक व्याकरणाचार्य पं० गोपालशास्त्री नेने ने तत्त्वबोधिन्यादि टीकाओं की समालोचना करके प्राच्य-नव्य मत से विवादग्रस्त परीक्षोपयोगी एवं जटिल अंश को प्रयोगसाधन-पंक्तिलेखनशैली के रूप में लिख दिया है जिससे 'एक पन्थ दो काज' अर्थात् परीक्षा की लेखनशैली को भी विद्यार्थी जान जाँयगे और केवल कण्ठस्थ करके भी परीक्षा-महार्णव को अनायास पार कर लेंगे। [का. १२६] कारकान्त प्रथम भाग ३-५०, समासादि द्विरुक्तान्त द्वितीय भाग ३-५०, भ्वाद्यादि चुराद्यन्त तृ० भाग ३-००, ण्यन्तादि समाप्त्यन्त चतुर्थ भाग ३-५०, पूर्वार्द्ध ७-००, उत्तरार्द्ध ६-५०, सम्पूर्ण १३-००

१३३ **सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्।** (छात्रोपयोगी संस्करण) इसमें काशिका के आधार पर सूत्रों की हिन्दी-व्याख्या, पदकृत्य, व्युत्पत्ति और प्रयोगों की साधनिका भी आधुनिक सरल सुबोध हिन्दी भाषा में दी गई है। १-५०

१३४ **सिद्धान्तकौमुदी-वैदिकीप्रक्रिया।** हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्या में समास-विग्रह, व्युत्पत्ति, प्रयोगों की साधनिका तथा परीक्षोपयोगी विवरण भी दिये गए हैं। यन्त्रस्थ

१३५ **सि० कौमुदीशैषिकादि द्विरुक्तान्त तद्धित प्रयोगसूची** ०-२०

१३६ **" भ्वाद्यादि चुरादिगणान्त प्रयोगसूची** [ह. ८१] ०-६५

१३७ **सिद्धान्तकौमुदी—सोत्तरा प्रयोगसूची।** पंक्तिलेखनप्रकारात्मक 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित (१) कारकान्त ०-६५ (२) कारकादि शैषिकान्त ०-७५ (३) विकारार्थकादि चुराद्यन्त १-१५ (४) ण्यन्तादि उत्तर कृदन्तान्त १-०० १-४ भाग ३-५५

१३८ **सिद्धान्तकौमुदी—सोत्तरा स्वरवैदिक-प्रयोग सूची।** उणादिकोश सहित लिङ्गानुशासन प्रकरणान्त' ०-९०

१३९ **सिद्धान्तकौमुदी—स्वरवैदिकप्रक्रिया—प्रश्नोत्तरी।** १-२५

१४० **सिद्धान्तचन्द्रिका।** सुबोधिनी-तत्त्वदीपिका टीका, बृहत् चक्रधरा टिप्पणी, अव्ययार्थमाला, लिंगानुशासन, उणादिकोष सहित [का. ६१] पूर्वार्द्ध ६-०० उत्तरार्द्ध ६-०० सम्पूर्ण १२-००

१४१ **सिद्धान्तचन्द्रिका।** 'बालबोधिनी' टीकासहित। [ह. १७] पूर्वार्द्ध १-५० उत्तरार्द्ध २-०० सम्पूर्ण ३-५०

१४२ **सोत्तरा-सिद्धान्तकौमुदीरूपलता** (३६७ शब्दों की बृहत्तम शब्दरूपावली) [ह. १५५] १-५०

*१४३ **स्फोटवादः।** नागेशकृतः। सटीक। नेट १०-००

मीमांसा-ग्रन्थाः

१ **अधिकरणकौमुदी।** श्रीदेवनाथठक्कुरकृता [का. ५०] १-००

२ **अर्थसंग्रहः।** 'दीपिका' हिन्दी टीका सहितः। इस टीका की प्रमुख विशेषता यह है कि टीकाकार ने छात्रों को सरल शब्दों में अनेक प्रकार से ग्रन्थ को समझाने का भगीरथ प्रयत्न किया है। शास्त्री के परीक्षार्थी इस सरल टीका के आधार पर अब स्वयं भी अर्थसंग्रह का अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। १-००

3 **Epistemology of The Bhatta School of Purva Mimansa:** By Dr. G. P. Bhatt. Shortly

* ४ **कल्पकलिका** (शावरभाष्यव्याख्या तर्कपादान्त) म० म० हरिहरकृपालु द्विवेदी विरचिता ४-००

५ **जैमिनीयन्यायमाला।** श्रीमन्माधवाचार्यविरचिता, तद्विरचितेन विस्तरेण विभूषिता [का. १२६] तृतीयाध्यायान्ता ४-००

+ ६ **जैमिनीयसूत्रवृत्ति-सुबोधिनी।** श्री शितिकण्ठभट्टकृता। भाषानुवाद सहिता। १-४ अध्याय ८-००

७ **टुपटीका।** श्रीमत्कुमारिलभट्टपाद विरचिता [ब. ४] समाप्त

८ **तन्त्रवार्त्तिकम्।** कुमारिलभट्टपाद विरचितम्। ११-१३ खण्ड ४-५०

* ९ **तन्त्रसिद्धान्तरत्नावली।** म० म० चिन्नस्वामि शास्त्रिविरचिता ४-००

१० **न्यायरत्नमाला।** श्रीमत्पार्थसारथिमिश्रविनिर्मिता [चौ. ७] ३-००

११ **न्यायसुधा।** (तन्त्रवार्तिकव्याख्या) श्रीमद्भट्टसोमेश्वरकृता ३२-००

१२ पूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी। रामकृष्णभट्टाचार्यविरचिता २–००

१३ प्रकरणपञ्जिका। महामहोपाध्याय श्रीशालिकनाथमिश्रविरचिता तथा मीमांसासारसंग्रहः–श्रीशङ्करभट्टकृतः सम्पूर्णः [चौ. १७] दुष्प्राप्य

१४ बृहती। प्रभाकरमिश्रविरचिता (शाबरभाष्यव्याख्या), म० म० मिश्रशालिकनाथकृत 'ऋजुविमला' व्याख्याद्वययुता [चौ. ६९] ४–५०

१५ भाट्टचिन्तामणिः। म० म० श्रीगागाभट्ट विरचितः। [चौ. ६] ६–००

*१६ भाट्टदीपिका। श्री वाञ्छेश्वर भट्टाचार्य प्रणीता। ८–००

१७ भाट्टभाषाप्रकाशः। श्रीनारायणतीर्थमुनिविरचितः [चौ. पु.] ०–६५

*१८ मीमांसाऽभ्युदयः। श्रीशैलताताचार्यशिरोमणि विरचितः। नेट १–२५

१९ मीमांसाकौस्तुभः। (मीमांसासूत्रोपरि काचन विस्तृत टीका) श्रीखण्डदेवविरचितः [चौ. ५८] २४–००

२० मीमांसादर्शन–शाबरभाष्यम्। यन्त्रस्थ

*२१ मीमांसादर्शन। (मीमांसाशास्त्र का इतिहास) हिन्दी ५–००

२२ मीमांसानुक्रमणिका। श्रीमण्डनमिश्रकृता। महामहोपाध्याय गङ्गानाथ झा रचित 'मीमांसामण्डन' मण्डिता [चौ. ६८] १०–००

२३ मीमांसान्यायप्रकाशः। मूलमात्रम् [चौ. पु.] ०–५०

२४ मीमांसान्यायप्रकाशः। श्री अनन्तदेवविरचित 'भाट्टालङ्कार' व्याख्यासहितः [चौ. ५३] ५–००

२५ मीमांसान्यायप्रकाशः। म० म० श्रीचिन्नस्वामि शास्त्रिविरचित 'सारविवेचिनी' व्याख्या सहितः। परिवर्द्धित द्वि० संस्करण [का. २५] ५–००

२६ मीमांसाबालप्रकाशः। श्रीभट्टशङ्करविरचितः [चौ. १६] ४–००

२७ मीमांसा परिभाषा। म० म० श्रीनित्यानन्दपन्त कृत टिप्पणीयुतः ०–२५

*२८ मीमांसार्थप्रकाशः। लौगाक्षिभास्करप्रणीतः। १–५०

२९ मीमांसाश्लोकवार्त्तिकम्। 'न्यायरत्नाकर' व्याख्यासहितम् ६–००

*३० यज्ञतत्त्वप्रकाशः। म० म० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः। नेट ४–००

*३१ वाक्यार्थरत्नम्। अहोबलसूरिविरचित 'सुवर्णमुद्रिका' व्याख्यासहितं १–२५

३२ विधिरसायनम्। श्रीमदप्पय्यदीक्षितविरचितम् [चौ. १२] ४–००

*३३ विधिरसायनदूषणम्। श्रीशङ्करभट्टप्रणीतम्। १–५०

३४ वेदप्रकाशः। श्रीसत्यज्ञानानन्दतीर्थेन विरचितः [चौ. ७७] २-००
३५ शास्त्रदीपिका। श्रीपार्थसारथिमिश्रप्रणीता। पण्डितप्रवर रामकृष्ण-विरचित 'युक्तिस्नेहप्रपूरणी' व्याख्या सहिता। तर्कपादः [चौ. ४३] ५-००

न्याय–ग्रन्थाः

१ आत्मतत्त्वविवेकः—(बौद्धन्यायखण्डनं) श्रीमदुदयनाचार्यविरचितः। श्रीरामतर्कालङ्कारभट्टाचार्यकृत टिप्पण्या, तार्किकशिरोमणि श्रीरघुनाथकृत दीधितिरिति प्रसिद्धया विवृत्या, श्रीशङ्करमिश्रविरचित आत्मतत्त्वविवेककल्पलतया च विभूषितः। १-६ खण्डाः। [चौ. ६३] १२-००
२ आत्मतत्त्वविवेकः—उदयनाचार्यविरचितः। श्रीनारायणाचार्यनिर्मित 'आत्मतत्त्व'व्याख्या (नारायणी) सहितः [चौ. ८४) १०-००
३ उभयाभावादिवारकपरिष्कारः। म० म० श्रीबालकृष्णमिश्र विरचित 'प्रकाशाख्य' विवरण समेतः। [नि.] १-००
4 Elements of Indian Logic: The Text and Hindi & English Translation of Tarkasangraha (Buddhi Khanda) by Dr. B. L. Atreya, D. Litt. Fourth Edition. 3-00
५ कारकचक्रम्। माधवी टीका–प्रदीपटिप्पणीसहितम् [ह. १५४] १-००
६ **कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्री सहिता**
इस संस्करण में पण्डितराज श्रीमान् राजेश्वरशास्त्री जी के तत्त्वावधान में अत्यन्त प्राचीन दुष्प्राप्य रामरुद्री के आधार पर समस्त रामरुद्री पुनः परिष्कृत की गयी है। संपूर्ण रामरुद्री के सहित 'कारिकावली–मुक्तावली-दिनकरी' का यही एक संस्करण आजतक प्राप्त होता है [का. ६] ९-००
७ कारिकावली-मुक्तावली–'न्यायचन्द्रिका' टीका सहिता। परीक्षोपयोगि टिप्पणी सहिता च [का. १६] १-२[illegible]
८ **कारिकावली मुक्तावली–'मयूख' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या** सहिता। व्याख्याकार–श्रीसूर्यनारायण शुक्ल। प्रत्यक्षखण्डान्ता १-[illegible]
९ **कारिकावली मुक्ता० दिन० रामरुद्री सहिता**। शब्दखण्डमात्र सम[illegible]

१० कारिकावली-मुक्तावली । श्रीसूर्यनारायणशुक्लविरचित 'मयूख' नाम्नी संस्कृत हिन्दीटीका सहिता [ह. १५] शब्दखण्डमात्र ०-५०

११ का० मुक्तावलीतत्त्वालोकः (मुक्तावली-प्रश्नोत्तरी) । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक श्री रुद्रधर झा जी ने पं० बच्चा झा जी के अमुद्रित 'तत्वालोक' के आधार पर १०० प्रश्नों के उत्तर इसमें लिखे हैं । [ह. २८०] ०-५०

१२ क्रोडपत्रसंग्रहः । श्री कालीशङ्करप्रणीतानि अनुमानजागदीशी-अनुमानगादाधरी-क्रोडपत्राणि । सम्पूर्णोऽयं ग्रन्थः । १-८ खण्डाः[चौ. २५] १६-००
जागदीशी-क्रोडपत्र १-४, ८-०० गादाधरी-क्रोडपत्र ५-८, ८-००

१३ गादाधरीः । अनुमानचिन्तामणिव्याख्या शिरोमणिकृतदीधित्या सहिता सुप्रसिद्धोऽयं ग्रन्थः [चौ. ४२] १-२१ खण्ड । संपूर्ण १००-००

१४ गादाधरी-सामान्यनिरुक्तिः-गूढार्थतत्त्वालोकः । श्री धर्मदत्त [श्रीबच्चा झा] शर्मविरचितः [का. ११२] २-००

१५ गादाधरी-सामान्यनिरुक्तिः-न्यायाचार्य श्रीशिवदत्तमिश्रविरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहिता [का. १३१] ६-००

*१६ चतुर्दशलक्षणी । गदाधरकृत । कृष्णभट्ट-रघुनाथ-पट्टाभिरामकृत व्याख्या सहित । प्रथम भाग । १०-००

१७ जागदीशी । अनुमानचिन्तामणिव्याख्या । शिरोमणिकृत दीधित्या सहितः १-१३ खण्डाः । संपूर्ण ग्रन्थ यन्त्रस्थ । प्रत्येक फुटकर खण्ड ३-००

१८ जा० व्यधिकरणम् । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहितम् [का. ८९] ६-००

*१९ जा० व्यधिकरणम् । स्वामि रामप्रपन्नाचार्य कृत दीपिका टीकोपेतम् ४-५०

२० जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पणी सहितः [का. ९४] २-५०

२१ जा० सिद्धान्तलक्षणम् । न्यायाचार्य पं० शिवदत्त मिश्र कृत परीक्षोपयोगी 'गंगा' व्याख्या टिप्पणी सहितम् [का. १०१] यन्त्रस्थ

२२ जा० पक्षता । न्यायाचार्य पं० शिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गा' व्याख्या टिप्पण सहित [का. ११३] ३-००

२३ जा० पञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणम् । गंगानिर्झरिणी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

२४ जा० पञ्चलक्षणीसिंहव्याघ्रलक्षणयोश्च क्रोडपत्रम् [चौ. पु.] ०-२०

२५ जा० सिद्धान्तलक्षणस्य क्रोडपत्रम् [चौ. पु.] ०-६५

२६ जा० व्यधिकरणधर्मावच्छिन्नाभावस्य कालीशङ्करी । ०-५०

+२७ जा० सामान्यलक्षणाप्रकरणम् । काशिकानन्दीव्याख्यासहितम् ४-५०

२८ तर्कभाषा । केशवमिश्र प्रणीता । मूलमात्रम् [ह. २२५] ०-६५

२९ **तर्कभाषा**–'तत्त्वालोक' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ।

'तत्त्वालोक' के सुप्रसिद्ध निर्माता पं० श्री वच्चा झा जी के शिष्योपशिष्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के न्यायाध्यापक पं० श्री रुद्रधर झा संपादित एवं परीक्षा बोर्ड के मनोनीत सदस्यों द्वारा मुक्त कंठ से प्रशंसित इसकी संस्कृत हिन्दी टीका में मूल ग्रन्थ के प्रतिपद की व्याख्या करके ग्रन्थ के दुरूहांशों का प्रश्नोत्तर के रूप में विशद विवेचन किया गया है। मूल्य सुलभ संस्करण १-५०

उत्तम संस्करण २-००

३० **हिन्दी तर्कभाषा**–'तर्करहस्यदीपिका' हिन्दी व्याख्यासहित ।

पं० केशवमिश्र प्रणीत यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी बड़ा सारगर्भित और दुरूह है। इसलिए इसके रहस्य को हृदयंगम कराने के लिए आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि ने २६४ पृष्ठों में इसकी व्याख्या पूरी की है। इसके साथ ही ४६ पृष्ठ की विस्तृत भूमिका है जिसमें न्यायशास्त्र की, प्राचीन न्याय, मध्य न्याय, बौद्ध न्याय, जैन न्याय और नव्यन्याय आदि सभी शाखाओं का सुन्दर ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। सरकार द्वारा पुरस्कृत होकर यह संस्करण अधिक लोकप्रिय हो चुका है। ४-५०

३१ **तर्कभाषारहस्यम्**–(परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी) ।

परीक्षा में आने वाले सभी प्रश्नों के उत्तर बहुत ही विस्तार से इसमें लिखे गएं हैं। ऐसा कोई भी स्थल नहीं छूटा है जिसकी व्याख्या और प्रश्नोत्तर इसमें न हो। ०-४०

३२ तर्कसंग्रहः । लक्षण-टिप्पणी सहितः [ह. ४७] ०-१२

३३ **तर्कसंग्रहः** । 'दीपिका' टीका 'इन्दुमती' भाषानुवाद सहित ।

साहित्य उत्तर मध्यमा परीक्षा निर्धारित 'दीपिका' टीका के साथ 'इन्दुमती' नामक हिन्दी अनुवाद हो जाने से यह संस्करण परीक्षार्थी छात्रों के लिये अधिक उपादेय हो गया है। पुस्तक के अन्त में अनेक वर्षों के प्रश्नपत्र भी दे दिये गये हैं। ०-५०

३४ **तर्कसंग्रहः** । पूर्व मध्यमा द्वितीय वर्ष अनिवार्य प्रथम पत्र निर्धारित–'पदकृत्य' (लक्षण-टिप्पणी इन्दुमती हिन्दी टीका) सहित । परीक्षोपयोगी संस्करण । ०-५०

३५ **तर्कसंग्रहः** । न्यायबोधिनी-पदकृत्य-विरला-इन्दुमति हिन्दी टीका चतुष्टय सहितः । परिष्कृत षष्ठ संस्करण ।

न्यायबोधिनी के बिना जैसे मूल तर्कसंग्रह का परिपक्व ज्ञान नहीं हो सकता उसी प्रकार 'विरला' टीका के विना न्यायबोधिनी का ज्ञान भी विद्यार्थी को नहीं हो सकता। इसी लिए 'न्यायबोधिनी' के साथ 'विरला' तथा 'इन्दुमती' नाम की आधुनिक सुविस्तृत प्रांजल हिन्दी टीका होने से परीक्षार्थी छात्रों के लिये यह संस्करण सबसे अधिक उपादेय हो गया है। १-००

३६ **तर्कमकरन्दः**–(दीपिका-प्रश्नोत्तरी) परीक्षोपयोगी संस्करण [ह. ६२] यन्त्रस्थ

३७ **तर्कामृतम्**–शास्त्री परीक्षा द्वितीय वर्ष अनिवार्य प्रथम पत्र निर्धारित । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।

न्यायाचार्य प्रो० रामचन्द्र मिश्र जी ने शास्त्री के परीक्षार्थी छात्रों के लिये इस पुस्तक की ऐसी सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी है कि छात्र स्वयं इसका अध्ययन कर परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे। हिन्दी में नोट्स और 'परिक्षासेतु' नामक परिशिष्ट हो जाने से तो इसकी उपादेयता और भी बढ़ गयी है। ०-६५

३८ **न्यायकुसुमाञ्जलिः**। श्रीमद् उदयनाचार्यप्रणीतः। मेघठकुर विरचित 'प्रकाशिका (जलद)' रुचिदत्तोपाध्यायकृत 'मकरन्द' वर्द्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाश' वरदराजकृत 'बोधिनी' व्याख्या चतुष्टयोपेतः। सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पं० बच्चा झा निर्मित टिप्पणी विभूषितश्च। १८-००

३९ **हिन्दी न्यायकुसुमाञ्जलि**। हरिदासी टीका सहित। व्याख्याकारः—आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि।

उदयनाचार्य की न्यायकुसुमांजलि और उसकी हरिदासी टीका जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पर यह हिन्दी व्याख्या अपनी निजी विशेषताएँ रखती है। विद्वान् व्याख्याकारने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श में इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या न्यायकुसुमांजलि की हिन्दी में एक स्वतन्त्र मौलिक रचना बन गई है। शीघ्र प्राप्त होगी

४० **न्याय (सूत्रपाठः) दर्शनम्**। श्री गौतममहामुनिप्रणीतः [चौ. पु.] ०-३०

४१ **न्यायदर्शनम्**। वात्स्यायनभाष्य सहितम् [का. ४२] ३-००

४२ **न्यायदर्शनम्**—वात्स्यायनभाष्यसहितम्। म० म० गङ्गानाथ झा प्रणीतेन खद्योतेन, नैयायिकचूडामणिरघूत्तमविरचितेन भाष्यचन्द्रेण च समन्वितम्। म० म० श्रीमदम्बादासशास्त्रि कृतया भाष्यचन्द्रानुगामिन्या टिप्पण्या च समेतम्। [चौ. ५५] १५-००

४३ **न्यायबिन्दुः**। बौद्धाचार्यश्रीधर्मकीर्तिप्रणीतः। संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद विस्तृत भूमिकादि सहित [का. २२] ५-००

४४ **न्यायमञ्जरी**। जयन्तभट्टकृत टिप्पण्या समेता [का. १०६] १०-००

*४५ **न्यायरत्नम्**। मणिकण्ठमिश्रकृतम्। नृसिंहयज्वकृताद्युतिमालिकाटीका १०-००

४६ **न्यायलीलावती**। मूलमात्रम् १-००

४७ **न्यायलीलावती**। श्रीभगीरथठक्कुरकृत 'विवृति' सनाथेन श्रीवर्धमानोपाध्यायकृत 'प्रकाशेन' समुद्भासिता, श्रीशङ्करमिश्ररचित 'कण्ठाभरणेन' च समन्विता [चौ. ६४] १८-००

४८ **न्यायवार्त्तिकम्**। भारद्वाजोद्योतकरकृतम् [का. ३३] यन्त्रस्थ

४९ **न्यायवार्त्तिकतात्पर्यटीका** । श्रीवाचस्पतिमिश्रविरचिता [का. २४] ८-००
*५० **न्यायसिद्धान्त मुक्तावली** (कुञ्जिका) देवदत्त शास्त्रीकृत ०-७५
५१ **न्यायसिद्धान्तमञ्जरी** । भट्टाचार्यचूडामणिजानकीनाथ विरचिता श्रीनीलकण्ठदीक्षित प्रणीत 'बृहत्तर्कप्रकाश' व्याख्या समेता [चौ.पु.] १-५०
*५२ **पदार्थशास्त्र** (हिन्दी) लेखक-श्री आनन्द झा न्यायाचार्य २-५०
*५३ **प्रमाणमंजरी** । सर्वदेवकृता ०-५०
५४ **माथुरीपञ्चलक्षणी**-सिंहव्याघ्रलक्षण सहिता । मूलमात्रम् ०-२५
५५ **मथुरानाथीयव्याप्तिपञ्चकटीकायाः क्रोडपत्रम्** [चौ.पु.] ०-२०
५६ **माथुरीव्याप्तिपञ्चकरहस्यं, सिंहव्याघ्रलक्षणरहस्यं** श्रीशिवदत्तमिश्र विरचित परीक्षोपयोगी 'गङ्गानिर्झरिणी'व्याख्यासहितम् [का. ६४] १-५०
५७ **माथुरीपञ्चलक्षणी**—श्रीउमानाथाज्र्यालकृतव्याख्यासहिता तथा **माथुरी सिंहव्याघ्रलक्षणम्** श्रीहरिरामशुक्ल विरचित व्याख्या संहित तथा हरिहर शास्त्री सङ्कलित **माथुरीपञ्चलक्षणीक्रोडपत्राणि** च [का. ७८] ०-५०
५८ **माथुरी तर्कप्रकरणम्** । न्यायाचार्य वामाचरण भट्टाचार्यविरचित 'विवृति' सहितम् [का. १४०] १-००
५९ **मुक्तिवादः** । चन्द्रिकाख्यविवृत्या समलंकृतः [चौ. पु.] ०-५०
६० **वादवारिधिः** । श्रीगदाधरभट्टाचार्यादिविपश्चिद्वरैर्विरचितः प्रत्यक्षानुमान-शब्दपरिशिष्टाख्यकल्लोलचतुष्टयात्मकः । १-३ खण्ड [चौ. ७५] ६-००
६१ **विषयतावादः** । श्रीढुण्ढिराजशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितः [का. १३४] ०-२५
६२ **व्युत्पत्तिवादः** । पण्डितराज श्रीवेणीमाधवशास्त्रिरचित (शास्त्रार्थोपयोगी परीक्षोपयोगी च) 'शास्त्रार्थकला' टीकासहितः [का. ११५] २-००
६३ **व्युत्पत्तिवादः** । सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीवच्चाझाशर्मप्रणीत गूढार्थतत्त्वालोकदुरूहांशप्रकाशिकया 'प्रकाश'व्याख्यया संवलितः ६-००
६४ **व्युत्पत्तिवादतरणिः** (व्युत्पत्तिवाद प्रश्नोत्तरी) श्रीउमानन्द झा कृत ०-८७
६५ **शक्तिवादः** । कृष्णभट्टकृतया 'मञ्जूषा'-माधवभट्टाचार्यनिर्मितया विवृत्या गोस्वामि दामोदरशास्त्रिरचितया 'विनोदिन्या' च समेतः ३-००
६६ **शक्तिवादः** । पण्डितप्रवर श्री हरिनाथतर्कसिद्धान्तभट्टाचार्यविरचित 'विवृत्ति' (हरिनाथीटीका) सहितः । [का. ७७] ३-००

६७ शब्दशक्तिप्रकाशिका। श्रीजगदीशतर्कालङ्कारविनिर्मिता। श्रीकृष्णकान्तविद्यावागीश कृत 'कृष्णकान्ति' टीकया श्रीमद्रामभद्रसिद्धान्तवागीशविरचितया 'रामभद्री' टीकया च समलङ्कृता। सटिप्पण [का. १०९] ८-००

वैशेषिक-ग्रन्थाः

*१ न्यायसिद्धान्ततत्त्वामृतम्। श्रीनिवासकृतम् २-५०

२ प्रशस्तपादभाष्यटीकासंग्रहः-'कणादरहस्यं' शङ्करमिश्रकृतं प्रशस्तपादभाष्यसमालोचनं कैलाशचन्द्रशिरोमणिकृता तर्कालङ्कारभाष्यपरीक्षा च [चौ. ४८] ४-००

३ वैशेषिकदर्शनम्। श्री ढुण्ढिराजशास्त्रिकृतविवरणोपेताभ्यां प्रशस्तपादभाष्योपस्काराभ्यां समन्वितम् [का. ३] यन्त्रस्थ

४ वैशेषिकदर्शन-प्रशस्तपादभाष्यम्। जगदीशतर्कालङ्कारविरचितया 'सूक्तिटीकया' म० म० पद्मनाभमिश्रकृतया 'सेतुव्याख्यया' विद्वच्चूडामणिव्योमशिवाचार्यनिर्मितया 'व्योमवत्या' च समन्वितम् [चौ. ६१] १४-००

+५ वैशेषिकदर्शनम्। 'किरणावली' टीका सहितम् [व. १०] २-५ खंड ६-००

*६ वैशेषिकदर्शनम्। दर्शनानन्द सरस्वतीकृत भाषाटीका सहित ४-००

सांख्य-ग्रन्थाः

१ सांख्यकारिका। माठराचार्यविरचित वृत्तिसहिता [चौ. ५६] ३-००

२ सांख्यकारिका। श्रीनारायणतीर्थकृतचन्द्रिकाटीका पं० ढुण्ढिराजशास्त्रिकृतटिप्पणी, 'हिन्दीभाषानुवाद' सहिता [ह. १३२] द्वितीय संस्करण १-००

३ सांख्यकारिका। श्रीगौडपादकृतभाष्य, पण्डित ढुण्ढिराजशास्त्रि विरचित टिप्पणी हिन्दी भाषानुवाद सहित [ह. १२०] द्वि० संस्करण १-२५

४ सांख्यतत्त्वकौमुदी। न्यायाचार्य श्रीहरिरामशुक्ल विरचितया सुषमाख्यकौमुदीव्याख्यया समलङ्कृता [का. १२३] २-००

५ सांख्यतत्त्वकौमुदी। षड्दर्शनकृद्वाचस्पतिमिश्रविरचिता। पण्डितराजवंशीधरमिश्रविरचित 'तत्त्वविभाकर' टीकासहिता [चौ. ५४] ५-००

*६ सांख्यतत्त्वकौमुदी। स्वामिबालरामोदासीन व्याख्या सहिता। ३-५०

*७ सांख्यतत्त्वकौमुदी। 'प्रभा' हिन्दीव्याख्या सहित ५-००

८ **सांख्यदर्शनम्** । विज्ञानभिक्षुकृतसांख्यप्रवचनभाष्यम् [का. ६७] यन्त्रस्थ

*९ **सांख्यदर्शनम्** । दर्शनानन्दकृत हिन्दी व्याख्या सहितम् २-००

*१० **सांख्यदर्शन का इतिहास** । लेखक-उदयवीर शास्त्री । नेट ३०-००

११ **सांख्यसंग्रहः** । अत्र १ क्षिमानन्द [क्षेमेन्द्र] विरचितं 'सांख्यतत्त्वविवेचनम्' । २ भावागणेशकृतं तत्त्वयाथार्थ्यदीपनम् । ३ संक्षिप्तकपिलसूत्रवृत्तिः सर्वोपकारिणी । ४ सांख्यसूत्रविवरणम् । ५ तत्त्वसमाससूत्रवृत्तिः । ६ भट्टकेशवविरचिता-सांख्यतत्त्वप्रदीपिका । ७ वैकुण्ठयतिशिष्यकविराजयतिविरचितः 'सांख्यतत्त्वप्रदीपः' । ८ कृष्णमित्रमिश्रविरचिता सांख्यमीमांसा । ९ सांख्यपरिभाषा इत्यादयो ग्रन्थाः संगृहीता वर्तन्त इति सर्वे एते समाससूत्रानुसारिणा निबन्धाः [चौ. ५०] ४-००

योग-ग्रन्थाः

* १ **पातञ्जलयोगसूत्रभाष्यविवरणम्** । शङ्कर भगवत्पाद प्रणीतम् नेट १२-७५

*२ **पूर्णताप्रत्यभिज्ञा** । म० म० श्री गोपीनाथ कविराज द्वारा प्रशंसित । ले० सर्वतन्त्रस्वतन्त्र योगिराज श्री रामेश्वर झा । ५-००

३ **योगदर्शनम्** । नारायणतीर्थकृतया विस्तृतया 'योगचन्द्रिका' व्याख्यया तत्कृतयैव संक्षिप्तया-'सूत्रार्थबोधिन्या' च सम्पूर्णया सहितम् [चौ. ३५] यन्त्रस्थ

४ **योगदर्शनम्** । टीकाषट्कसमेतम् । [का. ८३] यन्त्रस्थ

५ **योगसूत्रम्** । 'योगसूत्रप्रदीपिका' व्याख्या सहितं सटिप्पणं [का. ८५] १-००

६ **योगसारसंग्रहः** । श्रीविज्ञानभिक्षुविरचितः । [चौ. पु.] ०-५०

७ **योग(सूत्रपाठः)दर्शनम्** । श्रीपतञ्जलिमुनिविरचितम् । [चौ. पु.] ०-१०

८ **साङ्ख्ययोगदर्शनम् अर्थात् पातञ्जलदर्शनम्** । व्यासभाष्य-वाचस्पतिटीका (तत्त्ववैशारदीय) पातञ्जलरहस्य-योगवार्तिक भास्वतीवृत्ति सहितम् [का. ११०] यन्त्रस्थ

+९ **अभ्यासयोग** । लेखक-भूपेन्द्रनाथसान्याल । अजिल्द १-७५ सजिल्द २-२५

+१० **आश्रमचतुष्टय** । भूपेन्द्रनाथ सान्याल १-२५

+११ **दिनचर्या** । भूपेन्द्रनाथ सान्याल १-५६

+१२ दीक्षा और गुरुतत्त्व। भूपेन्द्रनाथ सान्याल ०-७५

+१३ भगवद्गीता। मूल श्लोक, अन्वय, 'श्रीधरी' संस्कृत टीका, उसका हिन्दी अनुवाद और योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी कृत 'आध्यात्मिक दीपिका' हिन्दीटीका एवं भूपेन्द्रनाथ सान्याल द्वारा उक्त आध्यात्मिक दीपिका की विशद हिन्दी व्याख्या। सम्पूर्ण। १-३ भाग २८-००

+१४ विल्वदल। भूपेन्द्रनाथ सान्याल। १-२ भाग ५-००

दर्शन-ग्रन्थाः

1 ABHINAVAGUPTA. An Historical and Philosophical Study by Dr. Kanti Chandra Pandeya (Chow. Sans. Studies. Vol. I.) Revised Edition. 30—00

2 INDIAN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry. (Chow. Sans. Studies. Vol. II.) Revised Edition. 25-00

3 WESTERN ÆSTHETICS by Dr. Kanti Chandra Pandeya M. A., Ph. D., M. O. L. Shastry (Chow. Sans. Studies Vol. IV.) 25—00

4. SARVA-DARŚANA SAMGRAHA or Review of the Defferent Systems of Hindu Philosophy by Madhava Acharya. Translated by E. B. Cowell, M. A., and A. Gough, M. A. 25-00

*5 Natural Theosophy by Prof. Ernest Wood. Nett. 4-00

६ षड्दर्शनसमुच्चयः। जैनश्रीहरिभद्रसूरिरचितः। मणिभद्रकृतलघुवृत्तिसमाख्यव्याख्यासहितः सम्पूर्णः। [चौ. २७] २-००

*७ षड्दर्शन रहस्य (हिन्दी) रङ्गनाथ पाठक ५-००

*८ मानमेयरहस्य श्लोकवार्त्तिकम्। सकलशास्त्रसारसंग्रहरूपम् नेट ६-००

*९ दर्शनोदयः। सकलदर्शनमूलसारसंग्रहरूपः नेट ५-००

*१० दर्शनसंग्रह (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-५०

*११ पश्चिमीदर्शन (हिन्दी) डा० दीवानचन्द ४-००

*१२ भारतीयदर्शन (हिन्दी) डा० उमेश मिश्र ८-००

*१३ भारतीयदर्शन (हिन्दी) पं० बलदेव उपाध्याय १०-००

*१४ यूरोपीयदर्शन (हिन्दी) पं० रामावतार शर्मा ३-२५

*१५ राजनीति और दर्शन (हिन्दी) विश्वनाथप्रसाद शर्मा १४-००

वेदान्त-उपनिषत्-पुराणेतिहास-ग्रन्थाः

1 LIGHTS ON VEDANTA. A Comparative Study of the Various Views of Post Sankarites, with Special Emphasis on Sures'wara's Doctrines by Dr. Veeramani Prasad Upadhyaya. 15—00

२ अद्वैतसिद्धिसिद्धान्तसारः। श्रीसदानन्दव्यासप्रणीतः। तत्कृतव्याख्यायुक्तश्च सम्पूर्णः। [चौ. १८] ६-००

३ **अमृत-मन्थन** अथवा **जीवनका दिव्य पक्ष।** डा० मङ्गलदेव शास्त्री, उपकुलपति, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय।

हिन्दी अनुवाद के साथ रोचक छंदों में निर्मित। छात्र, अध्यापक, गृहस्थ, साधु, सबके लिये उपयोगी। ४-५०

*४ **आर्षम् भारतम् वैयासिकम्** (दश-साहस्री संहिता) मूल वचनैः। श्री गोविन्दनाथ गुह एम० ए० प्रोक्तम् (पूर्व-उत्तरभागः) नेट ८-००

५ **काथबोधः**। साजनीकृतटीकोपेतः। दत्तात्रेयसम्प्रदायाऽनुगतः [का. ५२] ०-५०

*६ **काशीतिहासः**। स्व० पं० भाऊशास्त्री वझे कृतः। नेट १-५०

७ **खण्डनपरिशिष्टम्**। पण्डित श्रीताराचरणशर्मणा विरचितम् ०-५०

८ **खण्डनखण्डखाद्यम्**। आनन्दपूर्णरचितया खण्डन-फक्किका विभजनाख्यया 'विद्यासागरी' टीका समेतम्। [चौ. २१] यन्त्रस्थ

९ **खण्डनखण्डखाद्यम्**। चित्सुखाचार्यकृत 'खण्डनभावप्रकाशिका', शङ्करमिश्रकृत 'शाङ्करी,' रघुनाथभट्टाचार्य प्रणीत 'खण्डनभूषामणि,' प्रगल्भमिश्रकृत 'खण्डनदर्पण,' सूर्यनारायण शुक्लप्रणीत 'खण्डनरत्नमालिका' सहित व्याख्यापंचकोपेतम् [खण्ड १-२ चौ. ८२] ४-००

१० **जीवनदर्शन**। डा० मुंशीराम शर्मा।

जीवन क्या है? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। २-५०

११ जीवन्मुक्तिविवेकः। श्रीमद्विद्यारण्यस्वामिविरचितः। विस्तृत सरल भाषानुवादसमेतः। [का. ३९] दुष्प्राप्य

१२ तत्त्वदीपनम्। श्री अखण्डानन्दमुनिकृतं (पञ्चपादिकाविवरणस्य व्याख्यानम्) [व. १७] १२-००

*१३ तत्त्वप्रदीपिका-चित्सुखी। नयनप्रसादिनी संस्कृत व्याख्या हिन्दी अनुवाद सहित। १२-००

+१४ त्रिदण्डिमतविभेदिनी। श्रीशङ्कराश्रमस्वामिप्रणीता ३-००

१५ त्रिपुरारहस्यम्। (माहात्म्यखण्डम्) भूमिकाध्यायानुक्रमणिकाभ्यां च सहितम् [का. ९२] ८-००

१६ नैष्कर्म्यसिद्धिः। श्रीज्ञानोत्तममिश्रकृत 'चन्द्रिका' व्याख्यासहिता तथा ब्रह्मामृतम्। [व. १२] १-५०

१७ न्यायभास्करखण्डनम्-मध्वचन्द्रिकाखण्डनम्। म० म० श्रीरामसुब्रह्मण्यशास्त्रिविरचितम्। [चौ. पु.] १-५०

१८ न्यायमकरन्दः। आनन्दबोधभट्टारकाचार्यसंगृहीतः। आचार्यचित्सुखमुनिकृतव्याख्योपेतः तथा 'प्रमाणमाला' 'न्यायदीपावली' च [चौ. ११] ८-००

•19 The Philosophy of Bhedābheda by P. N. Srinivasacharya Nett. 9-00

*२० पंचदशी। पं० रामावतार शर्मकृत हिन्दीटीकासहित। नेट ६-००

*२१ पञ्चपादिका। व्याख्या द्वयोपेता तथा पञ्चपादिकविवरणं च व्याख्या द्वयोपेतम् २८-७५

*२२ पुराणतत्त्वमीमांसा। श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। विविध पुराणों में प्रतीयमान विरुद्धात्मक विषयों का अनुशीलनात्मक विवेचन १०-००

२३ पौराणिक कथाएँ। पुराणों में बिखरे हुए ७५ चरित्र नायकों का अपूर्व कथा-संग्रह। २-५०

२४ प्रणवकल्पः। (श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गतः) श्रीगङ्गाधरेन्द्रसरस्वतीप्रणीतप्रणवकल्पप्रकाशाख्यभाष्यसमलंकृतः। [चौ. ७४] २-००

२५ प्रज्ञानानन्दप्रकाशः। 'भावार्थकौमुदी'टीका-भाषानुवाद सहितः ३-००

२६ बोधसारः। श्रीनरहरिकृतस्तच्छिष्यपण्डितश्रीदिवाकर कृत टीकया सहितश्च। [ब. २३] २०-००

*२७ ब्रह्ममीमांसात्रिंशतिः । (ब्रह्मसूत्रार्थसंग्रहात्मिका) नेट १-२५

*२८ ब्रह्मसिद्धिः । मण्डनमिश्रकृतः । शङ्खपाणिकृत व्याख्या सहित । नेट ७-७५

२९ ब्रह्मसूत्रदीपिका । श्रीमच्छङ्करानन्दभगवद्विरचिता तथा-तत्त्वानुसंधानं-श्रीमहादेवानन्दसरस्वतीप्रणीतम् [ब. २४] ४-००

*३० ब्रह्मसूत्रवृत्ति-मिताक्षरा । अन्नंभट्टकृता नेट ७-००

*३१ ब्रह्मसूत्र-वैदिकभाष्यम् । स्वामी श्री भगवदाचार्य कृतम् नेट ५-००

३२ ब्रह्मसूत्रभास्करभाष्यम् । श्रीभास्कराचार्यकृतं सम्पूर्णम् [चौ. २०] यन्त्रस्थ

३३ ब्रह्मसूत्रविज्ञानभिक्षुभाष्यम्-वादरायणप्रणीतवेदान्तसूत्राणां यतीन्द्र-श्रीमद्विज्ञानभिक्षुविरचितं 'विज्ञानामृत व्याख्यानं' सम्पूर्णम् [चौ. ८] १२-००

३४ ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्यासहितया श्रीगोविन्दानन्दप्रणीतया 'रत्नप्रभया' च समन्वितं प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादपर्यन्तम् [का. ७१] ८-००

३५ ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् । चतुःसूत्र्यन्त 'पूर्णानन्दीय' व्याख्या, श्रीगोविन्दानन्दप्रणीत 'रत्नप्रभा' व्याख्यया, प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादपर्यन्तं। श्रीमद्वाचस्पतिमिश्र कृत 'भामती' व्याख्यया च सहितं सटिप्पणं ११-००

३६ ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् । हिन्दी व्याख्या सहित । यन्त्रस्थ

*३७ ब्रह्मसूत्रभाष्यसिद्धान्तसंग्रहः । ब्रह्मयोगी नेट २-५०

*३८ ब्रह्मसूत्रभाष्यम् । शिवार्कमणिदीपिका व्याख्यासहित ३०-००

३९ ब्रह्मामृतम् । श्रीमज्जयकृष्ण ब्रह्मतीर्थ विरचितम् । १-५०

४० बृहदारण्यकवार्तिकसारः । विद्यारण्यस्वामिविरचितः । महेश्वरतीर्थकृत 'लघुसंग्रह' व्याख्यासहितः । अयञ्च श्रीमच्छुद्धानन्दमुनिवरशिष्य श्री उत्तम-श्लोकयतिविरचित-'वेदान्तसूत्रलघुवार्तिक' श्लोकबद्धः [चौ. ४६] १५-००

+४१ भक्तिरत्नावली । विष्णुपुरीगोस्वामीरचित सान्वय भाषाटीकासहित १-७५

४२ भक्ति का विकास । डा० मुंशीराम शर्मा ।
परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा । २०-००

४३ **भक्ति-तरङ्गिणी** । डा० मुंशीराम शर्मा ।

भक्ति-भाव से ओत-प्रोत वेद मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद। भक्ति-तरङ्गिणी अध्यात्म-पथ के यात्रियों के लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी ३-००

४४ **श्रीमद्भगवद्गीता** । सानुवाद मधुसूदनीव्याख्या सहित ।

अनुवादक—स्वामी श्री सनातनदेव जी महाराज ।

गीता की सर्वमान्य सुप्रसिद्ध 'मधुसूदनी व्याख्या कठिन होने के कारण पण्डितजनों के लिए ही बोधगम्य थी अतः साधारण संस्कृत अथवा हिन्दी भाषा जानने वाले को भी गीतामृत सुलभ कराने की दृष्टि से मधुसदनी संस्कृत व्याख्या के साथ उसकी अक्षरशः हिन्दी व्याख्या भी प्रकाशित की गई है। हिन्दी व्याख्या अत्यन्त सरल, प्रवाहमय तथा मूल का प्रतिपद अनुवर्तन करने वाली है। सर्वत्र ही गूढ़ स्थलों को सुस्पष्ट करने के लिए मत-मतान्तर-निरासपूर्वक विषयवस्तु का यथार्थ बोध हो जाता है। वयोवृद्ध मुमुक्षुजनों के लाभार्थ बड़े टाइप में सुस्पष्ट मुद्रण किया गया है। पुरुषार्थचतुष्टय के साधन पथ का सम्बल यह एक मात्र संस्करण जिज्ञासु व्यक्तिमात्र के लिए परम उपादेय है। कागज, मुद्रण, आकार, सज्जा आदि सभी मनोरम हैं। १६-५०

*४५ **गीता-ज्ञानेश्वरी** । (हिन्दी पद्यानुवाद) रचयिता कविभूषण गणेशप्रसाद अग्रवाल ।

गीता पर प्रसिद्ध मराठी टीका 'ज्ञानेश्वरी' के इस पद्यानुवाद में ज्ञानेश्वरी के मूल विचारों एवं भावों में न तो कोई अन्तर ही आने पाया है और न कोई बात छूटने ही पाई है। ज्ञानेश्वरी का रहस्य इस पद्यानुवाद के रूप में मुखर प्रतीत होता है। इस एक पद्यानुवाद के पठन एवं मनन से आप धर्मपालन और हिन्दी साहित्य की सेवा दोनों लाभ एक साथ प्राप्त करेंगे। १५-००

४६ **भगवद्गीतासतसई** । पं० सुदर्शनाचार्य शास्त्री कृत ०-२५

*४७ **भगवद्गीतार्थप्रकाशिका** । ब्रह्मयोगीकृत नेट १५-००

४८ **भामती** (ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यव्याख्या) वाचस्पतिमिश्रविरचिता । श्री ढुण्ढिराजशास्त्रिसङ्कलितया विषमस्थलटिप्पण्या समलङ्कृता [का. ११६] ३-००

*४९ **भारतीय तत्त्वचिन्तन** । श्री व्रजभूषण पाण्डेय ।
इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने शास्त्रीय जटिलताओं से दूर रहकर अत्यन्त बोधगम्य भाषा एवं शैली में भारतीय मनिषियों के चिन्तनों को पल्लवित किया है दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों की सुन्दर एवं मार्मिक व्याख्या ही इस ग्रंथ की अपनी विशेषता है । ३-५०

५० **भेदधिकारः** । नृसिंहाश्रममुनिकृतः । श्रीनारायणशर्मकृतव्याख्यासहितः । तथा **'उपक्रमपराक्रम'** अप्पयदीक्षितकृतः । [व. २२] ४-००

*५१ **भेदरत्नम्** । १-००

*५२ **मध्वतन्त्रमुखमर्दनम्** । व्याख्यासहितम् । श्रीमदप्पयदीक्षितेन्द्रकृतं १-५०

+५३ **महाभारततात्पर्यप्रकाशः** । श्री सदानन्द व्यास प्रणीतः ५-००

*५४ **महाभारतम्** । नीलकण्ठीसंस्कृत व्याख्या सहितम् । ...

*५५ **मानमाला** । अच्युतकृष्णानन्दतीर्थकृत । रामानन्दकृत व्याख्या सहित २-००

*५६ **माध्वमुखभङ्गः** । श्रीसूर्यनारायण शुक्ल विरचितः ०-७५

५७ **मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन** । आचार्य बदरीनाथ शुक्ल प्राध्यापक : वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय ।
इस ग्रन्थ में अध्यायक्रम से मार्कण्डेय पुराण का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है; कथा की परम्परा में कहीं भी त्रुटि नहीं आने पाई है । कथावाचक और अनुसंधानकर्त्ता दोनों के लिए यह ग्रंथ समान उपयोगी है । ४-५०

५८ **मिताक्षरा** (श्रीगौडपादाचार्यकृतमाण्डूक्यकारिकाव्याख्या) श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य स्वयंप्रकाशानन्दसरस्वती स्वामिविरचिता । शङ्करानन्दकृत माण्डूक्योपनिषद्दीपिका च [क्रा. ४८] १-२५

*५९ **योगवाशिष्ठः** । तात्पर्यप्रकाश व्याख्यासहित । पत्रात्मकः २०-००

*६० **लघुरामायणम्** । वाल्मीकीयम् । श्री गोविन्दनाथ गुह प्रोक्तम् । रेशमी जिल्द राजसंस्करण नेट ६-५० सुलभ संस्करण नेट ३-२५

*61 **Vadavali of Jayatirtha with English translation by P. Nagaraja Rao.** Nett. 15-00

*62 Valmiki Ramayana. Abridged edition by M. A. Srinivasachariar. Nett. 3-0

*६३ **विचारचन्द्रोदय** । पीताम्बर जी कृत २-००

*६४ **विचारसागर** । साधु निश्चलदास प्रणीत । अनुवादक-निगमानंद परमहंस । संस्कृत पद्य तथा टिप्पणसहित नेट ३-५०

६५ **विवरणादिप्रस्थानविमर्शः** । पं० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय। इस ग्रन्थ में भगवान् शङ्कराचार्य के अद्वैतवाद के ऊपर अवान्तर मतभेद्स प्रतिविम्ववाद, आभासवाद तथा अवच्छेदवाद का एकत्र सुन्दर संक्ल किया गया है। १-००

६६ **विवरणोपन्यासः** । श्रीरामानन्दसरस्वती विरचितः विवरणतात्पर्यस्य व्याख्यानम् तथा-'**वाक्यसुधा**' श्रीशङ्कराचार्यविरचिता । श्रीब्रह्मानन्द-भारतीकृतव्याख्यासहितः । [व. १६] ४-००

६७ **वेदान्तदर्शनम्** । श्रीरामानन्दसरस्वतीकृता 'ब्रह्मामृतवर्षिणी'-नामक विस्तृतसूत्रार्थनिर्णायिकाटीकासहितम् । [चौ. ३६] ६-००

६८ **वेदान्तपरिभाषा**-सटिप्पण 'अर्थदीपिका' टीका सहित ।' महामनीषी श्री शिवदत्त कृत 'अर्थदीपिका' टीका के साथ साथ वेदान्ताच पं० त्र्यम्बकराम शास्त्री विरचित सुविस्तृत टिप्पणी हो जाने से इसका प्र तथा द्वितीय संस्करण भी हाथों हाथ विक गया। इस बार यह तृ संस्करण और भी अधिक सुन्दर छपा है। मूल्य २-०

*69 Vedanta Paribhasha. With English translation by S. Suryanarayan Sastri. Nett. Rs. 12-0

७० **वेदान्तसारः** । 'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित श्री रामशरण शास्त्री संपादित इस अभिनव संस्करण में व्याख्या के सर्वत्र टिप्पणी के रूप में ग्रन्थ के गूढ़ भावों का विवेचन करके तदनुकूल हिन्दी व्याख्या में उसका भी भाष्य कर दिया गया है तथा अज्ञान (माया अध्यारोप, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि स्थल इतने विस्तार एवं सरलता लिखे गये हैं कि साधारण से साधारण छात्र के लिये भी यह ग्रन्थ अत्य सुबोध हृदयंगम करने योग्य हो गया है। इसकी समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका भी अध्ययन करने योग्य है। ग्रन्थ के अन्त में अनेक विश्वविद्याल के प्रश्न पत्र भी दिये गये हैं। २-०

७१ वेदान्त(सूत्रपाठः)दर्शनम्। भगवद्व्यासमहामुनिकृतम् [चौ. पु.] ०-१०
७२ वैराग्यशतकम्। श्रीभर्तृहरिविरचितं। सरल, सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा हिन्दी पद्यानुवाद सहित। १-००
+७३ सर्वतंत्र सिद्धान्तपदार्थ[८९०१]लक्षणसंग्रहः। भिक्षुगौरीशंकरः ०-७५
+७४ सर्वसिद्धान्तसंग्रहः। श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितः ०-३७
*७५ सर्ववेदान्तसारसंग्रहः। पं० श्यामसुन्दरझारचित अभिनव ग्रन्थः २-००
७६ सिद्धान्तबिन्दुः—न्यायरत्नावली-नारायणीटीकोपेतः[का. ६५] ५-००
+७७ सिद्धान्ततत्त्वं नाम वेदान्तप्रकरणम्। श्रीमदनन्तदेव निरूपितम् १-५०
७८ संक्षेपशारीरकम्। रामतीर्थस्वामिकृत 'अन्वयार्थबोधिनी' टीका सहितम्। [का. २] ८-००
७९ संक्षेपशारीरकम्। 'मधुसूदनी' टीका सहितम्। [का. १८] ८-००
*८० सूत्रार्थामृतलहरी। (द्वैत) कृष्णावधूतपण्डितविरचिता नेट ३-२५
*८१ सौन्दर्यलहरी। सौभाग्यवर्धनी, लक्ष्मीधरी, अरुणामोदिनी व्याख्योपेता। आंग्लानुवाद नोट्स सहिता २५-००
*८२ सौन्दर्यलहरी। हिन्दी अनुवाद तथा विद्यातत्त्व-कुण्डलिनी-रहस्य सहित। ५-००
८३ स्वानुभवादर्शः। माधवाश्रमविरचितः। स्वकृतटीकाविभूषितश्च [चौ० ४०] ४-००
*८४ श्रीकरभाष्यम् (वीरशैवभाष्यम्)। श्रीपति पण्डिताचार्यकृतं नेट २०-००
८५ श्रीमत्सनत्सुजातीयम्। श्रीमच्छङ्करभगवत्पादविरचितभाष्येण 'नीलकण्ठी' व्याख्यया च संवलितम्। [का. १३] १-२५
+८६ श्रीमद्भागवतम्। मूल। गुटका ५-००
+८७ श्रीमद्भागवतम्। 'सरस्वती' भाषाटीका दृष्टान्त और 'प्रकाश' टिप्पणी से अलंकृत। श्रीकृष्णपूजन, भागवत हवन विधान, प्रत्येक अध्याय सार, प्रतिस्कन्धश्रवण माहात्म्य आदि विषयों से विभूषित। पृष्ठसंख्या १८५० नवीन पत्रात्मक संस्करण ३७-००
+८८ श्रीमद्भागवतम्। सामयिकी भाषा टीका पत्रात्मक ३२-००

*८९ श्रीमद्भागवतम् । 'बालबोधिनी' भा॰ टी॰ सहित सजिल्द १-२ भाग १५-०

+९० श्रीमद्भागवतम् । (दशमस्कन्ध) भाषा टीका सहित पत्रात्मक ८-००

+९१ श्रीमद्भागवतम् । श्रीधरी टीका ग्लेज कागज । काशी २४-००

९२ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् (विशुद्ध प्रामाणिक संस्करण) (रामायणपूजाक्रम, स्मार्त, वैष्णव तथा माध्व संप्रदायोंके रामायणपठनोपक्रम नवाह्नपारायणक्रम, कुशलवगीतक्रम, गायत्रीरामायण, वेदोक्त राममन्त्र, रामतारकषडक्षरमंत्र, श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न तथा आञ्जनेय मन्त्र, रामसाक्षात्कारप्रद मन्त्र, राम-हृदय, रामायण-माहात्म्य, रामदर्शनादि विविध परिशिष्टों से विभूषित)। शताधिक वर्ष पूर्व की हस्तलिखित प्रामाणिक प्रति से तथा आजतक के प्रकाशित सभी रामायणों से पाठ मिलाकर यह अत्यन्त शुद्ध और प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित किया गया है। ९-००

+ ९३ श्रीमद्वाल्मीकिरामायणम् । भाषाटीका । सजिल्द २४-००

+ ९४ श्रीमद्भगवद्गीता । 'श्रीधरी' व्याख्या सहित २-००

+ ९५ श्रीमद्देवीभागवतम् । मूलमात्रम् ६-००

* ९६ श्रीमद्देवीभागवतम् । हिन्दीभाषाटीका सहितम् । पत्रात्मक ४०-००

९७ हरिलीलामृतम् । विद्वच्छिरोमणिश्रीवोपदेवप्रणीतम् । श्रीमत्परमहंस-मधुसूदनसरस्वतीप्रणीत टीकासहितम् । तत्प्रणीत परमहंसप्रिया व्याख्या-युतं श्रीमद्भागवतस्याऽऽद्यपद्यं च । [चौ॰ ७१] २-००

* ९८ हरिवंशम् । हिन्दी टीकासहितं पत्रात्मकं सम्पूर्णम् ३२-००

* ९९ अप्रकाशित सामान्य उपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (७१ उपनिषत्) नेट २०-००

*१०० ईशादिनवोपनिषद् । ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-ऐतरेय-तैत्तिरीय छान्दोग्योपनिषद । शाङ्करभाष्य सहित । ८-००

*१०१ उपनिषद् प्रकाशः । हिन्दी अनुवाद सहित ३-५०

*१०२ छान्दोग्योपनिषद् । अन्वय, पदार्थ, हिन्दी भावार्थ सहित ३-००

*१०३ दशोपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृतव्याख्या सहित । १-२ भाग । नेट ३०-००

*१०४ याज्ञिक्युपनिषद्विवरणम् । पुरुषोत्तमतीर्थकृत नेट ४-००

*१०५ योगोपनिषदः । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (२०उपनिषत्) नेट २०-००

*106 Yoga Upanisads translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar. Nett. 16-00

*१०७ वैष्णवोपनिषदः। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (१४ उपनिषत्) २०-००

*१०८ शाक्तोपनिषदः। ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित(८ उपनिषत्) नेट ८-००

*१०९ शैवोपनिषदः " " (१५ उपनिषत्) नेट १२-००

*110 Saiva Upanisads translated into English by T. R. Srinivasa Aiyangar Nett. 9-00

*१११ सामान्यवेदान्तोपनिषदः। ब्रह्मयोगिकृत व्या. स. (२४ उपनिषत्) २०-००

*११२ संन्यासोपनिषदः। " " (१७ उपनिषत्) नेट १५-००

113 AGNI PURANA : A Study by Dr. S. D. Gyani. In the Press

*११४ अग्निपुराणम्। मूलमात्रम्। सजिल्द ९-००

*११५ आत्मपुराणम्। शङ्करानन्द विरचितम्। सटीकम्। पत्रात्मकम्। नेट ३०-००

*११६ पद्मपुराणम्। सृष्टि-भूमि-स्वर्ग-ब्रह्मखण्डात्मक भाग। १-२ भाग। मूलमात्र सजिल्द २४-००

*११७ ब्रह्मपुराणम्। मूलमात्रम्। सजिल्द। १-२ भाग १५-००

*११८ ब्रह्मवैवर्तपुराणम्। मूलमात्रम्। सजिल्द। १-२ भाग १८-००

*११९ मत्स्यपुराणम्। मूलमात्रम्। सजिल्द ९-००

१२० श्रीपुराणसंहिता—श्रीमद्वेदव्यासविरचिता।

(आळमन्दार-वृहत्सदाशिव-सनत्कुमारसंहितात्रय संवलिता)

तीन हजार श्लोकों का भगवान् श्रीवेदव्यास विरचित यह ग्रन्थ पुरातत्त्व का प्रथम पुष्प प्रकाशित हुआ है। म. म. श्री गोपीनाथ जी कविराज ऐसे महामनीषियों ने भी पुरातत्त्व से ओत-प्रोत इस ग्रंथ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसकी प्रस्तावना में सत्-चित्-आनन्द के रहस्यों का बहुत ही सरल और संक्षेप में सुन्दर प्रतिपादन किया गया है। ८-००

वेदान्त-शुद्धाद्वैत(वल्लभसम्प्रदाय)ग्रन्थाः

१ अष्टाक्षरटीका। [चौ. पु.] ०-२५

२ गूढार्थदीपिका। धनपतिसूरिकृता। श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्य-'रासपञ्चाध्यायी' व्याख्या एवं भ्रमरगीतव्याख्या तथा जगन्नाथसुधिविनिर्मिता 'रसव्याख्या' च [व. २९-३०] ८-००

३ पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः। यन्त्रस्थ

४ प्रस्थानरत्नाकरः। गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजीमहाराजविरचितः
[चौ. ३३] ४-०

५ ब्रह्मवादसंग्रहः। [गोस्वामि श्रीहरिरायजी विरचित 'ब्रह्मवाद'– गोपालकृष्णभट्ट विरचित विवरण सहितः। गोस्वामिश्रीव्रजनाथ विरचित ब्रह्मवादः। श्री रामकृष्णभट्टविरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारः—श्रीरघुनाथशास्त्रि विरचित शुद्धाद्वैतपरिष्कारतात्पर्यव्याख्यानसहितः] हिन्दीभाषानुवादसमेत
[का. ६२] १-५०

६ ब्रह्मसूत्रवृत्तिः–(मरीचिका) श्रीव्रजनाथभट्टकृता सम्पूर्णा [चौ. २४] ४-००

७ शुद्धाद्वैतमार्तण्डः। गोस्वामिश्रीगिरधरजीमहाराजविरचितः। श्रीराम-कृष्णभट्टविरचित 'प्रकाश' व्याख्यया संवलितः सम्पूर्णः। तथा—
प्रमेयरत्नार्णवः। श्रीबालकृष्णभट्टविरचितः सम्पूर्णः [चौ. २८] २-००

८ श्रीमदणुभाष्यम्। गोस्वामि श्रीपुरुषोत्तमजी महाराज विरचित 'प्रकाश' व्याख्यासमेतम् [व. २६] ३०-००

९ श्रीविद्वन्मण्डनम्। श्रीविठ्ठलनाथदीक्षितकृतम्। गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराजकृत 'सुवर्णसूत्र' व्याख्यया सहितम् [व. ३५] ४-५०

१० श्रीसुबोधिनी। श्रीवल्लभाचार्यविनिर्मिता। श्रीमद्भागवतस्य दशमस्कन्ध-जन्मप्रकरणे प्रथमाध्यायान्तं व्याख्या। गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथदीक्षित-विरचित 'टिप्पणी' सहिता तथा गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराज-विरचित–'प्रकाश' व्याख्या समेता [चौ. ३८] ४-५०

११ श्रीमदाचार्यचरितम्। भाषा [चौ. पु.] ०-१२

१२ श्रीवल्लभदिग्विजयः। व्रजभाषा। [चौ. पु.] १-००

१३ श्रीवल्लभविलासः तत्र प्रसङ्गप्रकाशः, भजनप्रकाशः, सेवाप्रकाशश्च ३-००

१४ श्रीवल्लभाष्टकटीका तथा चतुःश्लोकी टीका। भाषा [चौ. पु.] ०-२५

वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः

1 VEDĀNTADEŚIKA. A Study of His Life, Works and Philosophy by Dr. Satya Vrata Singh. M. A., Ph.D. 20-0

२ तत्त्वत्रयम् । श्रीमल्लोकाचार्यप्रणीतम् । श्रीमद्वरवरमुनिस्वामिनिबद्ध भाष्योपबृंहितम् । सम्पूर्णम् [चौ. ४] यन्त्रस्थ

३ तत्त्वशेखरः । श्री लोकाचार्य विरचितः तथा तत्त्वत्रयचुलुकसंग्रहः— श्रीकुमारवेदान्ताचार्य श्रीवरदगुरु विरचितः [ब. २७] यन्त्रस्थ

*४ तत्त्वसारः । रत्नसारिणी व्याख्या सहितः नेट ६-००

५ न्यायपरिशुद्धिः—सटीक । श्रीवेदान्ताचार्यप्रणीता [चौ. ५१] ७-५०

*6 Philosophy of Visiṣṭadvaita by P. N. Srinivasachari Nett. 25-00

७ वेदान्तदीपः । श्रीभगवद्रामानुजाचार्यविरचितः ब्रह्मसूत्रव्याख्या ६-००

*८ वेदान्तकारिकावली । बुची वेङ्कटाचार्य कृत । वी० कृष्णमाचार्य कृत संस्कृतव्याख्या आंग्लानुवाद सहिता नेट ८-००

*9 Vedantasara of Ramanuja with English translation by M. B. Narasimha Iyengar. Nett. 20-00

१० रामानुज वेदान्तसारः—श्रीसुदर्शनाचार्यकृत 'अधिकरणसारावली' सहितः

रामानुजवेदान्त के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य श्री रामदुलारे शास्त्री कृत पाद-टिप्पणी से परिष्कृत अभिनव विशुद्ध संस्करण २-५०

११ श्रीभाष्यवार्तिकं यतीन्द्रमतदीपिका च । श्रीनिवासाचार्यकृता तथा सकलाचार्यमतसंग्रहश्च [ब. २८] ४-००

*१२ सिद्धित्रयम् । श्री यामुनाचार्य विरचितं सिद्धाञ्जन व्याख्या सहितम् ३-५०

विशिष्टाद्वैत—श्रीरामानन्दसम्प्रदाय—ग्रन्थाः

१ श्रीब्रह्मसूत्रीयवेदान्तवृत्तिः । श्रीभगवद्रामानन्दमुनीन्द्रप्रसादित-श्रीमदानन्दभाष्यानुसारिणी, स्वामिरघुवराचार्यवेदान्तकेसरिणा कृता[ह. १५०]१-२५

*२ त्रिरत्नी ०-३७

*३ भक्तकल्पद्रुमः ०-२५

*४ रामानन्ददिग्विजयः ३-००

*५ श्री भगवत्पूजनपद्धतिः ०-३१

*६ यतिधर्मसमुच्चयः ०-५०

*७ श्रीमद्यतीन्द्रविंशतिः ०-१२

*८ दिव्यस्तोत्रकलापः १-५०

*९ श्री वैष्णवमताब्जभास्करः ०-७५

*१० श्रीदशरथमोक्षः ०-१६

वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः

१ क्रमदीपिका । जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्यप्रणीता । विद्याविनोदश्रीगोविन्द भट्टकृतविवरणोपेता । गुरुभक्तिमन्दाकिनीव्याख्या तथा लघुस्तवराजस्तोत्र सहिता [चौ. ४९] ६-००

२ ब्रह्ममीमांसाभाष्यम् । 'वेदान्तपारिजातसौरभ'नामकं व्याख्यानम् [चौ. ३४] २-००

३ ब्रह्मसूत्रम् । वेदान्तपारिजातसौरभभाष्यं-वेदान्तकौस्तुभभाष्यं च । यन्त्रस्थ

४ ब्रह्मसूत्रम् । श्रीदेवाचार्यप्रणीत 'सिद्धान्तजाह्नवी' श्रीसुन्दरभट्टविरचित 'सिद्धान्तसेतु' व्याख्यासहितं तथा श्रीगिरधरप्रपन्नरचित 'लघुमञ्जूषा' युत 'दशश्लोकी' च [चौ. २६] ६-००

५ वेदान्तरत्नमञ्जूषा । श्रीपुरुषोत्तमाचार्यविनिर्मिता सम्पूर्णा । तथा-'वेदान्ततत्त्वबोधः' । सम्पूर्णः [चौ. ३२] ४-००

६ वेदान्तसिद्धान्तसंग्रहः । श्रुतिसिद्धान्तापरनामकः श्रीवनमालिमिश्र ब्रह्मचारिकृतः स्वकृतस्यैव कारिकारूपमूलग्रन्थस्य व्याख्यात्मकः सम्पूर्णः । तथा वेदान्तकारिकावली । पण्डितपुरुषोत्तमप्रसादकृता । मूलकर्तैव कृत 'अध्यात्मसुधातरङ्गिणी' टीका सहिता । सम्पूर्णा [चौ० ३९] ६-००

७ श्रुत्यन्तकल्पवल्ली । श्रीमत्पुरुषोत्तमदासविरचिता सम्पूर्णा [चौ. ९५] ४-००

८ श्रुत्यन्तसुरद्रुमः । श्रीमत्पुरुषोत्तमप्रसादविरचितः तथा श्रीव्रजेश्वर-प्रसादकृता 'श्रुतिसिद्धान्तमञ्जरी' च । [व. ३३] ६-००

ज्यौतिष-ग्रन्थाः

* १ अखण्ड त्रिकालज्ञ ज्यौतिष । सहायक भृगुसंहिता पद्धति अर्थात् ज्यौतिषशास्त्र ४-००

* २ अखण्डभाग्योदयदर्पणः । (धनप्राप्ति के साधन, त्रिकाल ज्ञान, फलित ज्ञान तेजी-मंदी, लाभकारी रत्न और मणियाँ) ले० भगवानदास मीतल ३-००

* ३ अङ्गविज्जा । पुव्वायरियविरइया (मणुस्सविविहचेट्ठाइणिरिक्खणदारेण भविस्साइफल णाणविण्णाखवा) मुनिपुण्यविजय सम्पादित । २१-००

* ४ **अध्यात्म ज्योतिष विचार**। (वेदान्त और योगशास्त्र का ज्योतिषशास्त्र में समन्वय) लेखक—ह. ने. कारवे नेट १०-००

* ५ **अयनांशनिर्णयः**। केतकर रचित नेट ०-५०

६ **अहिबलचक्रम्**। सान्वय 'शिशुतोषिणी' हिन्दीटीका सहितम्
जिस चक्र के द्वारा भूमि में गड़े हुए धन तथा हड्डी आदि दूषित पदार्थों का ज्ञान हो उसी का नाम अहिबलचक्र है। ज्यो० आ० विन्ध्येश्वरीप्रसादजी रचित सुबोध हिन्दी टीका सहित। ०-२५

७ **करणप्रकाशः**। श्रीब्रह्मदेवविरचितः। [चौ. ५] २-००

८ **खेटकौतुकम्**। 'भावबोधिनी' भाषा टीकासहितम्। [ह. १६६] ०-२०

* ९ **गणकतरङ्गिणी**। श्रीसुधाकरद्विवेदिकृता १-७५

*१० **गणित का इतिहास**। सुधाकर द्विवेदी कृत २-५०

११ **गणितकौमुदी** (बालकोपयोगी प्रथम भाग)
गणित की स्कूली शिक्षा बिना प्राप्त किये ही जो छात्र संस्कृत की प्रथमा परीक्षा देना चाहते हैं उनके लिये तो यह पुस्तक सब से अधिक उपयोगी है। इससे जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि का ज्ञान बिना शिक्षक के ही विद्यार्थी स्वयं प्राप्त कर सकता है। १-००

१२ **गणितकौमुदी** (प्रथम परीक्षा स्वीकृत द्वितीय भाग)
(परिष्कृत परिवर्तित चतुर्थ संस्करण)
वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा विहार संस्कृत समिति के परीक्षा बोर्ड के सदस्यों ने परिवर्तित परिष्कृत इस द्वि० भाग को अल्पवयस्क संस्कृत छात्रों के लिये प्रथमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत कर लिया है। पं० श्री गणपतिदेव शास्त्री निर्मित इस पुस्तक से संस्कृत के छात्र गणित विषय को जितना शीघ्र और सरल रूपेण समझ सकेंगे उतना हिन्दी-अंग्रेजी की स्कूली पुस्तकों से कथमपि नहीं समझ पायेंगे यह लेखक का दावा है। आप भी इस अभिनव चतुर्थ संस्करण की एक प्रति अविलम्ब मंगाकर परीक्षा कर लें १-००

१३ **गणितकौमुदी**। १-२ भाग संपूर्ण २-००

१४ **गणितीय कोष** (गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली)
डा० ब्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पीएच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दूविश्वविद्यालय, काशी ९-००

*१५ **गुरुविचार** । ह० ने० कारवे । अनुवादक-वियाधर जोहरापुरकर २-५०

१६ **गोलपरिभाषा-शङ्कुज्याक्षेत्रविचारसहिता** । 'तत्त्वप्रकाशिका' विवृतिविभूषित । [ह. ११२] ०-२०

१७ **गोलीय रेखागणितम्** तथा **गोलबोध**-सटीक [नि.] दुष्प्राप्य

१८ **ग्रहगोचरः** । 'शिशुतोषिणी' भाषाटीका सहितः [ह. १०१] ०-२५

*१९ **ग्रहफलदर्पण** । वासुदेवशर्मा कृत हिन्दी टीका सहित १-५०

२० **ग्रहलाघवम्**-'माधुरी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ।

विश्वनाथकृत प्राचीन सोदाहरणव्याख्या तथा नूतन उदाहरण-उपपत्ति-सहित 'माधुरी' नामक संस्कृत हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में विश्वनाथी टीका के साथ इसकी माधुरी नामक परीक्षोपयुक्त संस्कृत हिन्दी टीका में ग्रन्थाशय को अत्यन्त सरल शब्दों में समझाया गया है एवं विश्वनाथी उदाहरण के अतिरिक्त नवीन उदाहरण तथा उपपत्ति भी यथास्थान दे दी गई है जिससे इस संस्करण का महत्त्व और भी बढ़ गया है । [का. १४२] ३-५०

*२१ **चन्द्रवाक्यानि** । वररुचि प्रणीत नेट ३-५०

*२२ **चन्द्रविचार** । ह० ने० कारवे अनुवादक-जोहरापुरकर २-००

२३ **चमत्कारचिन्तामणिः** । सान्वय-'भावबोधिनी' भा. टी. सहित[ह. ४५] ०-५०

२४ **चलनकलन-प्रश्नोत्तर-विवरणम्**-ज्योतिषाचार्य श्री अच्युतानन्द झा विरचितम् ।

विहार तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय की आचार्य परीक्षा में निर्धारित 'चलनकलन' के चारों अध्याय के प्रश्नों के उत्तर तथा अन्य प्रश्नों के उत्तर भी अति स्फुटता के साथ सरल संस्कृत में लिखे गये हैं [ह. ९४] ०-७५

२५ **चापीयत्रिकोणगणितम्**-विविध-वासना-समलंकृतम् ।

विहार तथा वाराणसी की शास्त्री परीक्षा में निर्धारित बीजगणित के टीकाकार हमारे योग्य संपादक पं० अच्युतानन्द झा जी ने 'विविध वासना' नामक टीका लिखकर इस ग्रन्थ को ऐसा सरल बना दिया है कि अल्प परिश्रम करने पर भी परीक्षा में आये हुए कठिन प्रश्नों का समाधान विद्यार्थी स्वयं कर सकेंगे । [का. १२९] १-५०

२६ **जन्मपत्रदीपकः**—सोदाहरण सटिप्पण-हिन्दीटीकासहितः

श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी ज्योतिषाचार्य रचित इस छोटी सी पुस्तक में जन्मपत्र बनाने की विधियां ऐसी सरलतापूर्वक नये ढङ्ग से लिखी गई हैं कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इसका आद्योपान्त मनन करके अच्छी से अच्छी कुण्डली (जन्म-पत्रिका) बना सकता है। सर्व साधारण के लिए सरल सुबोध हिन्दी भाषा में टीका और उदाहरण एवं जगह जगह पर आवश्यक टिप्पणी भी कर दी गई है। अभिनव परिवर्द्धित संस्करण १-२५

*२७ **जन्माङ्ग-नक्षत्र-दीपिका** । प्र० भाग । श्री लक्ष्मीनारायणत्रिपाठीकृत १-५०

२८ **जन्माङ्गपत्रावली**—(जन्म कुण्डली फार्म) आधुनिक आकर्षक कलामय रंगीन बार्डर तथा नवग्रहों के सर्वाङ्गपूर्ण वेदोक्त रंगीन चित्रों से सुसज्जित प्रत्येक पत्र ०-०६, सैकड़े ६-२५

*२९ **जातकदीपक** (Astrological Science) प्रथम भाग ।
बालमुकुन्द त्रिपाठी सङ्कलित १२-५०

३० **जातकपारिजातः**—(सचित्र) 'सुधाशालिनी' टीकोपेतः ।

सोपपत्तिक-'सुधाशालिनी' 'विमला' संस्कृत-हिन्दीटीका विभूषित इस संस्करण में परीक्षोपयोगी सभी विषयों को स्पष्ट करके अद्भुत कल्पना द्वारा नवीन उपपत्ति, संकेत तथा नाना प्रकार के चक्र एवं चित्र देकर सभी मार्मिक गूढ विषयों को स्पष्ट कर दिया गया है। अभिनव द्वितीय सुलभ संस्करण १०-००
उत्तम संस्करण १२-००

३१ **जातकाभरणम्**—सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित ।

इसकी 'विमला' टीका में संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, ग्रहयुति, नाभस योग, दृष्टिफल आदि की व्याख्या अत्यन्त सरल शब्दों में की गई है तथा परिशिष्ट में ग्रहों के परस्पर नैसर्गिक, तात्कालिक, संस्कृत अधिमित्रादि, राशियों के स्वामी, होडा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, त्रिंशांश, द्वादशांश, राहु के गृह-मित्र आदि का विचार, दशा-अन्तर्दशा के गणित, स्पष्ट आयु लाने का प्रकार, भावेश फल आदि के ज्ञान-प्रकार स्पष्ट रूप से दिये गये हैं—जो इस संस्करण की सबसे बड़ी विशेषता है। ४-००

३२ **जातकालङ्कारः**—दैवज्ञ श्री हरभानुकृत संस्कृत टीका तथा 'भावबोधिनी' हिन्दी टीका सहित। हिन्दी टीका में जातक (नवजातशिशु) संबन्धी प्रत्येक विषयों (प्रश्नों) का स्पष्टीकरण अत्यन्त सरल और सुबोध शब्दों में किया गया है। परिष्कृत द्वि० संस्करण १-००

३३ **जैमिनीयसूत्रम्**—'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीकासहित। यह फलितविषय का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। इसमें अनेक प्रकार से आयुर्दाय विचार वर्णित हैं। आज तक इस ग्रन्थ की कोई भी ऐसी सरल टीका नहीं थी जिससे विद्यार्थी सुगमतापूर्वक इस ग्रन्थ का आशय समझ सकें। इसलिये इस संस्करण में अन्य प्रकाशित संस्करणों में जो जो त्रुटियां और अधूरापन था उन सभी विषयों का सुधार कर सोदाहरण संस्कृत-हिन्दी व्याख्या की गई है। [ह. १५९] द्वितीय संस्करण २-००

+३४ **ज्योतिषसिद्धान्तसंग्रहः**। तत्र सोमसिद्धान्तः ब्रह्मसिद्धान्तः पितामह-सिद्धान्तः वृद्धवशिष्ठसिद्धान्तश्च [व. २९] ४-००

*३५ **ज्योतिस्तत्त्वम्**। मुकुन्ददैवज्ञवड़थ्वालविरचित। हिन्दी भाषाटीका उदाहरण सहित। १-२ भाग ५०-००

*३६ **ज्यौतिषचन्द्रिका**। पं० रेवतीरमणझाकृत भाषाटीका सहित २-७५

३७ **ताजिकनीलकण्ठी**—पं० गंगाधर मिश्रकृत 'जलदगर्जना' संस्कृतटीकया 'गूढग्रन्थिमोचनी' वासनया 'उदाहरणचन्द्रिका' हिन्दी भाषाटीकया च सहिता। [ह० १४३] ४-५०

३८ **तिथिचिन्तामणिः**। श्रीमद्गणेशदैवज्ञप्रणीतः। सोदाहरण 'विजयलक्ष्मी' भाषाटीका सहित [ह. ७६] ०-५०

*३९ **देवकेरलम्**। (चन्द्रकलानाडी) अच्युत प्रणीतम् १-२ भाग। नेट २३-७५

*४० **दैवज्ञकल्पद्रुमः**। पं० गङ्गारामराजज्योतिर्षीकृत भाषाटीका सहित ४-००

४१ **दैवज्ञकामधेनुः**। म० म० अनवमर्शीसंघराजचरेण सङ्कलिता [व. २५] ६-००

४२ **धराचक्रः**। 'सुबोधिनी' भाषाटीका सहित [ह. १६२] ०-३०

४३ **नाडिदत्तपञ्चविंशतिका**। ०-५

+४४ **पञ्चस्वराः** । 'सुबोधिनी' संस्कृत टीकासहित १–७५

४५ **पञ्चाङ्गविज्ञानम्**–हिन्दीटीकासहित ।

विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के लिए सरल हिन्दी टीका से सुशोभित यह पञ्चाङ्ग-ज्ञान-सम्बन्धी मौलिक ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है [ह.१०४] ०–५०

४६ **पञ्चकोशः**—'भावबोधिनी' सरल भाषा टीका विभूषितः ।

सूर्यादिनवग्रहों के भावफलों को जानने का सर्वोत्तम ग्रन्थ [ह. २१०] ०–४०

४७ **परवलयक्षेत्रम्** । श्रीमुरलीधरठक्कुरकृत । प्रश्नपत्रसहित [ह. १८] ०–५०

*४८ **पौर्वात्यपाश्चात्त्यसामुद्रिकज्ञान** । लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी ०–५०

४९ **प्रतिभाबोधकम्** । श्रीगङ्गाधरमिश्रकृतटीकासहित ०–५०

५० **प्रश्नवैष्णवः** । श्रीमन्नारायणदाससिद्धविरचितः । [चौ. पु.] ०–५०

५१ **प्रश्नभूषणम्**–'विमला' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् ।

इसमें फलित सम्बन्धी सभी प्रश्नों के उत्तर विस्तार से सरल रूप से दिये गये हैं। इसकी सरल संस्कृत-हिन्दी टीका में उदाहरण, प्रत्युदाहरण, चक्र आदि देकर जटिल प्रश्नोत्तरों को सुगम और सुबोध बना दिया गया है [ह० १३१] ०–७५

*५२ **प्रश्नमार्ग** । पूर्वार्द्ध नेट ३–५०

५३ **प्रश्नाङ्कचूडामणिः**–ध्वजादिप्रश्नगणनाश्च । [ह. २२] ०–१५

५४ **प्रस्तारचक्रम्** । श्रीशिवप्रणीतम् । 'कमला' भाषाटीकासहित [ह.१०३] ०–१५

५५ **बीजगणितम्**–'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी-टीकोपेतम् ।

दैवज्ञ श्रीजीवनाथ की अतिप्राचीन सुबोधिनी संस्कृत टीका की प्रशंसा भारत के सभी प्रकाण्ड विद्वान् मुक्त कण्ठ से कर रहे हैं। इसके विषय में प्रस्तुत संस्करण की विशेषता यह है कि जीवनाथी टीका में जो आधुनिकता का अभाव था उन सभी विषयों को इस संस्करण में विशद रूप से परिष्कृत कर सरल कर दिया गया है तथा मूल के साथ-साथ जीवनाथी टीका एवं श्री अच्युतानन्द झा कृत विस्तृत भाषा टीका तथा नवीन उदाहरण और नवीन उपपत्ति भी दी गयी है। [का० १४८] ८–००

५६ **बीजवासना (सोपपत्तिक बीजगणित)** । ज्यौतिषाचार्य पण्डित श्रीगङ्गाधरमिश्रेण संगृहीता [ह. १२४] ०–७५

*५७ बुधविचार । ह० ने० कारवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-००

५८ **बृहज्जातकम्**—'विमला' हिन्दीटीकोपेतम् ।
अनेक विश्वस्त प्रमाणों के सहित अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दीटीका तथा नवीन उपपत्ति और अनेक उदाहरणों से युक्त यह नवीन उपयोगी संस्करण छात्रों के लिए अत्यधिक उपयोगी है । [ह. १७१] ३-५०

५९ **बृहज्ज्योतिषसारः** । दैवज्ञवाचस्पति श्री वासुदेव गुप्त ।
यह पुस्तक फलित ज्योतिष के दृष्ट, अदृष्ट दोनों अङ्गों की पूर्ण और सम्यक् विवेचना एवं हिन्दी टीका से संयुक्त होने के कारण अत्यन्त ही उपादेय हैं । हर प्रकार के विषयों में विविध विवरणों द्वारा उन्हें अत्यन्त विस्तृत ढंग से समझाने एवं विविध प्रकार के चक्रों सारणियों आदि के दे देने से यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के सामान्य ज्ञान रखने वालों एवं प्रत्येक हिन्दू गृहस्थों के लिए भी संग्रह करने योग्य हो गयी है । प्रायः हिन्दू गृहस्थों के जितने भी सांस्कृतिक एवं धार्मिक कृत्य हैं उन सभी पर विचार करने और निर्णय दे देने से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। इसकी टीका अत्यन्त सुलझी हुई, स्पष्ट एवं बोधगम्य है जो मूल के भावों तक पहुँचाने में समर्थ है । [ह.] ४-५०

६० **बृहत्संहिता** । सोदाहरण—'विमला' हिन्दी व्याख्योपेता ।
अब तक इस ग्रंथ पर किए गए भाषानुवाद में जिस भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है वह ऐसी उलझन से भरी और अव्यवस्थित-सी पाई जाती है कि विषय स्पष्ट होने के बदले और जटिल-सा हो जाता है। इस दुरवस्था को दूर करने के उद्देश्य से ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् तथा बृहज्जातक, बीजगणितादि ग्रन्थों के सफल टीकाकार आचार्य अच्युतानन्द झा ज्योतिषाचार्यजी ने इस ग्रन्थ पर सर्वबोध सुगम हिन्दी व्याख्या की रचना की है। इस व्याख्या द्वारा ग्रन्थ की दुरूह ग्रंथियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ वराहमिहिराचार्य की उक्ति का ग्रन्थान्तर से समन्वय करने का भी भगीरथप्रयत्न किया गया है, जो इस संस्करण का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है । अन्यान्य ऋषिप्रणीत ग्रंथों के उदाहरण और मतों से पाठक सरलतापूर्वक विषय की व्यापकता का संग्रह कर सकते हैं। ९-००

६१ **बृहत्-होडाचक्रविवरणम्**—मुरलीधरठक्कुरेण सम्पादितम् ।
इसमें लोकोपयुक्त मौहूर्तिक संग्रह को एकत्र करके उन सब श्लोकों की हिन्दी टीका भी छाप दी गयी है। व्यवहार में जितने भी विषय आ सकते हैं, कोई भी विषय छूटने नहीं पाये हैं। शतपथचक्र, नक्षत्रचक्र, राशिचक्र, वरवधू मेलापकचक्र, घातकचक्र, लग्न वनाने की विधि आदि १० चक्र भी दिये गये हैं। [हृ. ८७] ०-५०

*६२ **भविष्य-वाणी-सञ्चय** । चन्द्रनाथ सैन्धव १-००

*६३ **भाभ्रमवोधः** । ०-५०

*६४ **भारतीयकुण्डलीविज्ञान** (हिन्दी). रफ ४-५० ग्लेज ५-५०

*६५ **भार्गवनाडिका** । नेट ६-००

*६६ **भावकुतूहलम्** । सान्वय-भाषाटीकासहित ३-००

+६७ **भावप्रकाशः** । जीवनाथझाप्रणीतः । भाषाटीका प्रश्नपत्रसहित १-२५

*६८ **भूमण्डलीयसूर्यग्रहगणितम्** । केतकररचितम् नेट ३-००

*६९ **भृगुसंहिता** । कुण्डलीखण्ड-फलितखण्ड-जातकप्रकरण-तात्कालिकभृगुप्रश्न-प्रत्यक्षसूकप्रश्न-नष्टजन्माङ्गदीपिका-सर्वारिष्टनिवारण-खण्ड-राजखण्ड-सन्तानउपायखण्ड-नरपतिजयचर्याखण्ड-स्त्री-फलितखण्ड । भाषाटीका । १-११ खंड नेट ५०-००

*७० **मङ्गलविचार** । हृ० ने० कारवे । अनुवादकः विद्याधरजोहरापुरकर २-५०

*७१ **मनुष्य का हाथ** । (सचित्र) ले०—वलदेवप्रसाद शुक्ल ३-२५

+७२ **महासिद्धान्तः** । श्री आर्यभट्टकृतः । श्रीसुधाकरद्विवेदिकृत टीकासहितः । ६-००

७३ **मानसागरी** । 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ।
यह संस्करण अत्यन्त प्राचीन पाण्डुलिपि के आधार पर आमूल संशोधित होकर प्रकाशित हुआ है। इसके व्याख्याकार आचार्य मधुकान्त झा जी काशी में फलित ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान् माने जाते हैं। अपनी व्याख्या में इन्होंने जातक का फलादेश तथा जन्मपत्र-निर्माणविधिका सांगोपांग सोदाहरण, सोपपत्तिक विवरण दे दिया है जिससे यह संस्करण साधारण विद्वान् के लिए भी सुगम और संग्रहणीय हो गया है। ८-००

७४ **मुहूर्तचिन्तामणिः।** 'पीयूषधारा' व्याख्यासहित।

पं० अनूपमिश्रकृत नवीनगणित विषयोपपत्ति 'युक्तिमञ्जरी' टिप्पणी सहित। (परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण) ५–००

७५ **मुहूर्तचिन्तामणिः**–सान्वय 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहितः।

इस संस्करण में ग्रंथ के प्रत्येक मर्मस्थल को शुद्ध हिन्दी भाषा में इस तरह व्यक्त किया गया है कि जिसे देखकर सर्वसाधारण भी ग्रंथ के अभिप्राय को भली-भाँति समझ सकेंगे। प्रत्येक श्लोकों के अन्वय के बाद शुद्ध हिन्दी में उनके अर्थ, उपपत्ति, उदाहरण तथा और भी विषयों का उल्लेख किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस संस्करण में 'पीयूषधारा' और 'प्रमिताक्षरा' के अपेक्षित आवश्यक अंशों का भी अनुवाद यथास्थान सन्निविष्ट कर दिया गया है [ह० १५८] ३–००

७६ **मुहूर्तमार्तण्डः**–सान्वय 'मार्तण्डप्रकाशिका' टीकासहित।

पण्डित कपिलेश्वर शास्त्रिकृत सान्वय सोदाहरण 'मार्तण्डप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपपत्ति-विभूषित। जिन विषयों को पढ़ लेने पर भी छात्र यथार्थ ज्ञान से विमुख रहते थे वे सभी स्थल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या उदाहरण उपपत्ति आदि से इस संस्करण में स्पष्ट कर दिये गए हैं [का. १४६] ३–००

७७ **मुहूर्तमार्तण्डः।** मार्तण्डवल्लभ संस्कृत व्याख्या सहितः [चौ. पु.] ०–५०

७८ **योगिनीजातकम्।** सोदाहरण 'विमला' भाषाटीका सहितं [ह. १४५] ०–३५

७९ **रत्नगर्भाचक्रम्।** 'हरिप्रिया' भाषाटीकोदाहरणसंवलितम् [ह. ८४] ०–३०

*८० **रत्नदीपिका रत्नशास्त्रं च।** चण्डेश्वर–बुधभट्टाभ्यां विनिर्मितम् नेट २–२५

८१ **रमलनवरत्नम्।** 'विमला' हिन्दीटीका सहित।

इस टीका में रमल सम्बन्धी सभी विषयों का महत्त्वपूर्ण विवेचन किया गया है। रमल-पाशा का निर्माण, प्रक्षेप, गुप्तरहस्य आदि, जिसे रमल शास्त्री छिपाया करते थे उन सभी का ज्ञान इस टीका में रेखा-चित्र द्वारा कराया गया है। अल्प पढ़े-लिखे व्यक्ति भी इस टीका से गूढ़ रहस्यों को समझकर रमलशास्त्रज्ञ ही नहीं अपितु रमलशास्त्र के आचार्य बन सकते हैं [ह.] २–००

*८२ **रविविचार।** ले० ह० ने० काटवे। अनुवादकः विद्याधरजोहरापुरकर १–५०

*८३ **राशिगोलस्फुटानीतिः।** अच्युतविरचिता २-००

८४ **रेखागणितम्।** (एकादश-द्वादशाध्यायौ) [नि.] ०-७५

८५ **रेखागणितषष्ठाध्यायः-परिभाषारूप-पञ्चमाध्यायसहितः।**
सम्पादक : ज्यौ० आ० पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर [ह. १२८] ०-४०

×८६ **लग्नचन्द्रिका।** हिन्दी टीका सहित २-००

८७ **लग्नरत्नाकरः (बृहल्लग्नजातकम्)।** सान्वय-'शिशुबोधिनी'
हिन्दी टीका सहित [ह. ५०] ०-४०

८८ **लग्नवाराही।** वराहमिहिराचार्यकृता। 'तत्त्वप्रकाशिका' भाषाटीका
सहित [ह. ६०] ०-२०

*८९ **लग्नसारणीसमुच्चयः।** चिमनलाल शर्मा ज्योतिषीकृत ३-००

९० **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी।** 'सुबोधिनी' टीकासहित।
सोदाहरण 'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकासहित यह संस्करण अन्वय, संस्कृत व्याख्या, हिन्दी भाषार्थ, स्पष्टार्थ तथा नाना चक्र देकर इतना सरल बना दिया गया है कि परीक्षार्थी स्वयं भी इसका अध्ययन करके परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। [ह. १३५] १-२५

९१ **लीलावती।** सोपपत्तिक सोदाहरण-'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता। परीक्षोपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्नपत्रादि सहित।
परीक्षार्थियों के हित की दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में सरल संस्कृत व्याख्या के साथ सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, उदाहरण आदि यथेष्ट सामग्री दी गई है। मूल पाठ का भी यथासंभव परिष्कार कर के प्रत्येक प्रकरण के अन्त में परिशिष्ट देकर नवीन गणित का भी तुलनात्मक विवेचन किया गया है तथा परीक्षा में आनेवाले प्रष्टव्य विषयों को तोड़-मरोड़ करके प्रश्नोत्तर के रूप में 'अभ्यासार्थ प्रश्न' के नाम से लिख दिया गया है। छात्रों के आधुनिक अध्ययन तथा अध्यापकों के अध्यापन सौकर्य की दृष्टि से यह अभिनव सर्वोत्तम संस्करण है। [ह०] ४-००

९२ **लीलावती।** श्रीमुरलीधरठक्कुरकृत 'नवीनवासना' सहित। यन्त्रस्थ

९३ **वनमाला।** दैवज्ञ श्रीजीवनाथझा विरचिता। सान्वय-'अमृतधारा'
हिन्दी टीका सहिता [ह. १४७] ०-२५

*९४ वरवधूनक्षत्र-मेलापक । पं० श्रीनिवास शास्त्री २-२५

*९५ वर्षभास्करम् । जन्मपत्र-वर्षपत्र बनाने का ग्रंथ । भाषाटीकासहित २-००

+९६ वसिष्ठसिद्धान्तः । ब्रह्मपुत्रमहर्षिवसिष्ठविरचितः । ०-१२

×९७ वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम् । संस्कृत टीका सहित १-२५

९८ वास्तुरत्नाकर—आचार्य श्रीविन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी ।

इस पुस्तक में भवन-निर्माण-सम्बन्धी प्रत्येक विषय पर दृष्टि देते हुए १२ प्रकरण रखे गये हैं । उनमें भूपरिग्रह प्रकरण में ग्राम-विचार, ग्राम की दिशा का विचार, भूमि की नाना प्रकार से परीक्षा इत्यादि; गृहोपकरण प्रकरण में किस वस्तु के रखने के लिये किधर और कैसा घर बनवाना चाहिये इत्यादि बातों का पूर्ण विचार, परिशिष्ट प्रकरण में राजा महाराज माण्डलिक, सामन्त इत्यादि के लक्षण तथा उनके मकान का प्रमाण इत्यादि का समस्त विवरण निविष्ट किया गया है अन्त में प्रत्येक नक्षत्र पर से एक ५६ पेजों की बड़ी गृहसारणी और सारणी पर से पिण्ड निश्चित करने की विधि भी दे दी गई है । साथ में सरल सुबोध हिन्दी टीका उदाहरण और जगह-जगह पर उपपत्ति एवं आवश्यक टिप्पणियाँ भी कर दी गई हैं । किंबहुना इस पुस्तक में ऐसा सिलसिलेवार प्रत्येक विषय का सुन्दर सन्निवेश किया गया है कि इस एक ही पुस्तक को आदि से अन्त तक मनन कर लेने से फिर भवन-निर्माण संबन्धी दूसरी पुस्तकें देखने की आवश्यकता ही नहीं होगी । द्वितीय संस्करण [हृ४६] ३-००

* ९९ वास्तवविचित्रप्रश्नास्सभङ्गाः । श्रीसुधाकरद्विवेदी-विरचिता ०-१२

१०० वास्तुरत्नावली । सोदाहरण 'सुबोधिनी' व्याख्यासहिता ।

यह संस्करण परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लाभ के हेतु सरल संस्कृत हिन्दी व्याख्या तथा उदाहरणों से सुशोभित कर प्रकाशित किया गया है । इस व्याख्या से विद्यार्थी परीक्षा में उत्तम श्रेणी प्राप्त कर सकते हैं २-५०

*१०१ वित्रिभलग्नभ्रमणम् । श्रीजगदीशशर्मविरचितम् ०-१२

*१०२ वित्रिभाङ्गायनविवेकः । श्रीबुद्धिनाथझा विरचितः ०-३१

+१०३ विवाहवृन्दावनम् । संस्कृत टीका भाषा टीका सहित । २-५०

*१०४ वैजयन्तिपंचांगगणितम् । केतकर रचितम् । नेट १-००

*१०५ **शनिविचार** । ह० ने० कारवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

*१०६ **शरीर सर्वाङ्ग लक्षण** (हस्त रेखा एवं आकृति विज्ञान) इसमें मनुष्य-शरीर के चोटी से एड़ी तक के संपूर्ण अङ्गों के प्रत्यक्ष रूप से सच्चे प्रमाणित होने वाले लक्षण लिखे गए हैं तथा हस्तरेखा-ज्ञान भी कराया गया है १-५०

१०७ **शिवजातकः** । अखिलब्रह्माण्डनायक श्रीशिवनिर्मितः । 'शिशुतोषिणी' भाषाटीकासहितः [ह. ६५] ०-२०

१०८ **शिशुबोधः** । सान्वय-'विमला' भाषाटीका बृहत् परिशिष्ट सहित [ह. ११४] ०-६५

१०९ **शीघ्रबोधः**-'सरला' हिन्दी टीका सहितः । प्रथम परीक्षार्थियों के लिये पं० श्री अनूपमिश्रजी रचित इस टीका के समान अत्यन्त सरल और सुवोध अन्य कोई भी टीका प्रकाशित नहीं हुई है १-००

*११० **शुक्रविचार** । ह० ने० कारवे । अनुवादक : विद्याधर जोहरापुरकर २-५०

१११ **श्रीनारदीयसंहिता** । नारदमुनिप्रोक्त ज्योतिषग्रन्थः [का. ४०] १-२५

११२ **षट्पञ्चाशिका** । श्रीमद्भट्टोत्पलकृत संस्कृतटीकायुत 'विभा' नामक भाषाटीका सहिता [ह. १४९] ०-४५

११३ **सरलत्रिकोणमितिः** । म० म० पण्डित श्रीबापूदेवशास्त्रिसङ्कलित म० म० पण्डित मुरलीधरशर्मकृत टिप्पणी संहित [नि.] ४-५०

११४ **सरलरेखागणितम्** । ज्योतिषाचार्य पं० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी विरचित [ह. ८२] १-२ अध्याय १-००

*११५ **सामुद्रिक-दीपिका** । (हिन्दी) पौर्वात्य पाश्चात्त्य पद्धतियों का तुलनात्मक विवेचन । लेखक-लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी। २-३ भाग सजिल्द नेट ८-६२

*११६ **सारावली** । भा. टी. सहित। कपड़े की जिल्द ९-०० सादी जिल्द ८-००

११७ **सिद्धान्ततत्त्वविवेकः** । श्रीकमलाकरभट्टविरचितः । म० म० श्रीसुधाकर-द्विवेदिकृत टिप्पणी तथा म० म० श्रीमुरलीधरशर्मकृत टिप्पणीसहित । सम्पूर्ण [ब. १] ७-५०

*११८ **सिद्धान्तदर्पणम्** । गार्ग्य केरल नीलकण्ठ विरचित २-५०

११९ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । भास्कराचार्यविरचितः । वासनाभाष्य सहितः म० म० श्रीबापूदेवशास्त्रिकृत टिप्पणी सहितश्च । सम्पूर्णः [का. ७२] ६-००

१२० **सिद्धान्तशिरोमणिः** । सोपपत्तिक 'प्रभा' व्याख्यासहित ।
अनेक ग्रन्थों के सम्पादक पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर ज्योतिषाचार्य की साभिमान घोषणा है कि नवीन वैज्ञानिक सर्वांगपूर्ण यह 'प्रभा' व्याख्या आधुनिक विकास युग में गणित सिद्धान्त प्रेमियों को भारतीय पुरातत्त्व के आलोक में लाकर गणित-विज्ञान के शिखर पर पहुँचा देगा । व्याख्याकार अंग्रेजी के भी धुरन्धर विद्वान् हैं इसलिये उन्होंने अपनी व्याख्या में पाश्चात्त्य मतों का भी प्राच्य सिद्धान्त के साथ सन्तुलन किया है । यह संस्करण प्रत्येक ज्योतिर्विद के रखने योग्य है । स्पष्टाधिकारान्त प्रथम भाग [का. १४९] ५–००

१२१ **सूर्यसिद्धान्तः**—'तत्त्वामृत' भाष्यसहित ।
पूर्वप्रकाशित सभी टीकाओं के गुण-दोषों की समालोचना करके ज्योतिषाचार्य श्री कपिलेश्वर शास्त्रीजी द्वारा तत्त्वामृतभाष्य तथा उपपत्ति-टिप्पणी सहित प्रस्तुत संस्करण प्रकाशित हुआ है । बड़े-बड़े विद्वानों ने उपर्युक्त तत्त्वामृतभाष्य का निरीक्षण करके मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है । [का. १४४] ४–००

*१२२ **सौरार्यब्राह्मतिथिगणितम्** । केतकररचितम् नेट १–००

*१२३ **स्त्रीजातक** । प्रभुदयालु शर्मा (भाषा) १–५०

*१२४ **हस्तरेखाविज्ञान पर नवीन अन्वेषण** । भीमसेन शर्मा ४–००

*१२५ **हस्तरेखाविज्ञान** (सचित्र २४२ चित्रों से युक्त) हरगोविन्द द्विवेदी ३–००

*१२६ **हस्तसामुद्रिक** । सचित्र भाषा ४–००

*१२७ **होराशास्त्रम्** । वराहमिहिरकृतम् । 'अपूर्वार्थप्रदर्शिका' संस्कृत व्याख्या सहितम् । नेट २५–००

धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः

१ **अग्निष्टोमपद्धतिः** । ग्रन्थरत्नेऽस्मिन् 'आध्वर्यवपद्धतिः' कर्कानुसारिणी, 'औद्गात्रपद्धतिः'–लाट्यायनद्राह्यायण सूत्रानुसारिणी, 'हौत्रपद्धतिः'–शाङ्ख्यायनश्रौतसूत्रानुसारिणी च सन्निविष्टास्ति [चौ. ८१] १–३ खण्ड ६–००

* २ **अङ्गिरसस्मृतिः** । नेट १२–००

३ **अन्त्यकर्मदीपकः**–आशौचकालनिर्णयसहितः, प्रेतकर्मब्रह्मीभूत यतिकर्मनिरूपणात्मकः । म. म. नित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचितः ३–००

* ४ अन्त्येष्टिकर्मपद्धतिः । आश्चर्यनाथ पाण्डेय संगृहीत ४-५०

५ आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् । श्रीहरदत्तप्रणीत-'अनाकुला' श्रीसुदर्शनाचार्य प्रणीत 'तात्पर्यदर्शन' व्याख्याद्वय समलङ्कृतम् [का ५९] यन्त्रस्थ

६ आपस्तम्बधर्मसूत्रम् । श्रीहरदत्तमिश्र विरचित-'उज्ज्वलावृत्ति' सहित [का. ९३] १२-००

* ७ आर्यविधानम् । म० म० पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचितम् । भाषाटीकोपेतम् । १-२ भाग २०-००

८ आशौचनिर्णयः । म. म. वाचस्पति मिश्र, म. म. रुद्रधरोपाध्याय प्रणीत युग्म संस्करण । 'मनोरमा' हिन्दीटीका ०-५०

* ९ आह्निकसूत्रावलिः (शुक्लयजुर्वेदीय) ६-००

१० उपनयनपद्धतिः । विस्तृत टिप्पणी-परिशिष्ट सहिता । रचयिता-म० म० विद्याधरजी गौड़ [वि. २] १-५०

*११ कर्मकलापः । स्वामी सहजानन्दकृत नेट १२-००

*१२ कर्मकाण्ड-प्रवेशिका । हिन्दीटीका सहित ०-७५

*१३ कर्ममीमांसादर्शनम् । महर्षिभारद्वाज कृत । स्वामी ज्ञानानन्दजी कृत भाषा टीका सहित । १-३ भाग ८-५०

१४ का० तर्पणपद्धतिः । वेदाचार्य पं० अनन्तरामडोगराशास्त्रिकृत हिन्दीटीका सहित [चौ. पु.] ०-१५

१५ कातियेष्टिदीपकः । (दर्शपौर्णमासपद्धतिः) म० म० पण्डित नित्यानन्दपन्त पर्वतीय विरचित [का. २०] १-५०

१६ कात्यायनश्रौतसूत्रम् । श्री कर्काचार्यविरचित 'कर्कभाष्य' सहित [चौ. १९] सम्पूर्ण १९-५०

१७ कुलदेवतास्थापनविधिः हनुमद्ध्वजदानविधिश्च [चौ. पु.] ०-५

१८ कृत्यसारसमुच्चयः । म० म० अमृतनाथ झा विरचितः । पं० गङ्गाधरमिश्रकृत बृहत् टिप्पणी परिशिष्ट विभूषित ४-५०

*१९ खादिरगृह्यसूत्रम् । रुद्रस्कन्धवृत्ति भाषाटीका सहित २-००

२० गायत्रीपूजापद्धतिः । श्रीविभाकराचार्यसंगृहीत [ह. ३१] ०-२५

२१ **गोदानपद्धतिः** । अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि. ५] ०-१५

*२२ **गोभिलगृह्यकर्मप्रकाशिका** । हिन्दी भाषा टीका सहित नेट २-००

२३ **गोभिलगृह्यसूत्रम्** । म० म० श्रीमुकुन्दशर्म विरचित 'मृदुला' व्याख्या समलङ्कृत [का. ११८] ४-००

*२४ **गौतमधर्मसूत्रपरिशिष्टम्** (द्वितीय प्रश्न) १२-००

*२५ **चतुर्दशरत्नविवाहपद्धतिः** । हिन्दी भाषा टीका सहित नेट ३-००

२६ **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः** । श्रीभट्टोजिदीक्षितकृतः [व. २४] ४-००

२७ **चूडाकरणपद्धतिः** । म० म० विद्याधरशास्त्रिकृत विस्तृतटिप्पणी परिशिष्ट सहित [वि. ४] ०-२५

*२८ **छान्दोग्यस्मार्तप्रायश्चित्तसंग्रहः** । ०-३७

२९ **तिथिनिर्णयः** । श्रीमद्भट्टोजिदीक्षितविरचितः, श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितश्च [चौ. ८६] २-००

३० **तुलसीपूजापद्धतिः** । [चौ. स्तो. ११] ०-१५

३१ **दानदीपिका** । भाषा टीका सहित [ह. ५५] ०-५०

३२ **दानमयूखः** । श्रीनीलकंठभट्टविरचित [का. ४४] २-५०

३३ **दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धतिः** । ०-७५

*३४ **द्वैतनिर्णयः** । म० म० पं० वाचस्पतिमिश्र प्रणीत १-२५

*३५ **द्राह्यायणगृह्यसूत्रम्** । रुद्रस्कन्दवृत्ति भाषा टीका सहित २-५०

*३६ **नित्यकर्मविधिः** । वालकृष्ण आचार्य संगृहीत । भाषा टीका १-१२

३७ **निर्णयसिन्धुः** । कमलाकरभट्टविरचितः । कृष्णभट्टकृत विस्तृत संस्कृत व्याख्यासहित [चौ. ५२] २२-००

३८ **पञ्चमङ्गलम्** । १. मण्डपस्थापनम् । २. हरिद्रालेपनं-कलशस्थापनम् ३. मातृकापूजा-सप्तघृतमाता ४. आयुष्यमन्त्रजपः ५. नान्दीमुखश्राद्धम् ०-४०

३९ **पञ्चाङ्गपद्धतिः** । वेदाचार्य अनन्तरामडोगरा शास्त्रिकृत टिप्पणी विभूषित । अभिनव विशुद्ध संस्करण [वि० ६] ०-४०

*४० **पञ्चपक्षात्मकरुद्रस्वाहाकारसमुच्चयः** । दुर्गाशङ्कर परिशोधितः ०-२५

*४१ **परिणयमीमांसा** । श्रीनटेशशास्त्रिणा विरचिता नेट १-००

४२ **पारस्करगृह्यसूत्रम्** । सटिप्पण [का. ११] ०-६५

४३ **पारस्करगृह्यसूत्रम्** । हरिहर-गदाधर-जयरामकृत भाष्यत्रयोपेतम् [का. १७] यन्त्रस्थ

*४४ **पारस्करगृह्यसूत्रम्** । भाष्यपञ्चकोपेतम् १०-००

*४५ **पाराशरस्मृतिः** । भाषाटीका सहित १-५०

४६ **पितृकर्मनिर्णयः** (संग्रह निवन्ध) श्रीत्रिलोकनाथ मिश्र विरचित ३-००

+४७ **पूजाविधिसहित षडंगरुद्री** । १-५०

४८ **पूतनाशान्तिः** । शिशुतोषिणी भाषाटीका सहित [ह. १०२] ०-२०

४९ **पौरोहित्यकर्मसारः** । परिवर्द्धित संस्करण । संपूर्ण [का. २६] १-५०

५० **बौधायनधर्मसूत्रम्** । श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेत [का. १०४] ८-००

*५१ **ब्रह्मकर्मसमुच्चयः** । सग्रहमखषोडशसंस्काराद्यनेक विषय सहितः । -शास्त्री दुर्गाशङ्कर कृत टिप्पणी सहित ५-२५

५२ **मनुस्मृतिः** । सटिप्पण-कुल्लूकभट्टप्रणीत'मन्वर्थमुक्तावली', संस्कृत व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

५३ **मनुस्मृतिः (द्वितीयोऽध्यायः)** परीक्षोपयोगी सान्वय 'प्रकाशिका' 'सुबोधिनी' संस्कृत हिन्दी टीका सहित [ह. ७१] ०-७५

५४ **मनुस्मृतिः** । 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका, 'विमर्श' सहित । कुल्लूकभट्ट की टीका के अनुरूप यह हिन्दी टीका है तथा दुरूह स्थलों में भावार्थ और भी स्पष्ट करने के उद्देश्य से 'विमर्श' नामक टिप्पणी भी की गई है । इसकी उपादेयता पर प्रसन्न होकर विहार प्रांत के माननीय शिक्षामंत्री महोदय ने अपनी अमूल्य प्रस्तावना भी लिखने की कृपा की है । संपूर्ण ५-००

५५ **मनुस्मृतिः**—'मणिप्रभा' हिन्दी टीका 'विमर्श' सहित । १-४ अध्याय २-००

*५६ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः** । म० म० पं० श्री चिन्नस्वामिशास्त्रिप्रणीतः ४-००

५७ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः** । श्रीमन्मित्रमिश्रविरचित 'वीरमित्रोदय' श्रीविज्ञानेश्वरकृत 'मिताक्षरा' टीकाद्वयसहित । संपूर्ण [चौ. ६२] १२-००

५८ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः** । 'बालम्भट्टी' व्याख्यासमलङ्कृत 'मिताक्षरा' टीका सहित । व्यवहाराध्याय सम्पूर्ण [चौ. ४१] १६-५०

•59 **Raja Dharma** by K. V. Rangaswamy Aiyangar Nett. 5-00

*६० **राज्याभिषेकपद्धतिः** । ३-००

+६१ **रुद्रयागपद्धतिः** । २-५०

62 **Religions of India** : By A. Barth Authorised Translation by Rev. Wood. Shortly

६३ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्** । अग्निष्टोमान्तम् । म० म० पं० श्री मुकुन्द झा कृत व्याख्या सहित [का. ९७] ३-००

६४ **वर्षकृत्यदीपकः** । म० म० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीय कृतः । [का. ६६] ७-००

*६५ **व्यवहारनिर्णयः** । वरदराजकृतः नेट ३०-००

६६ **वसन्तोत्सवनिर्णयः** । स्व० पं० सूर्यनारायणशुक्लकृत ०-१५

६७ **वाराहगृह्यसूत्रम्** । भाषाटीका सहित १-५०

६८ **वाशिष्ठीहवनपद्धतिः** । भाषाटीका सहिता ।

वेद-कर्मकाण्ड-धर्मशास्त्राचार्य पण्डित श्रीविश्वनाथशास्त्रि संपादित यह परिवर्द्धित संस्करण अति शुद्ध प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर छापा गया है। इसमें सम्पूर्ण हवनविधि, सप्रमाण ग्रहस्थापनविधि, नान्दीश्राद्ध, सर्वतोभद्र आदि कर्मकाण्ड की अनेक विधियां बहुत ही सरल रूप से दी गई हैं [ह.] ०-७५

६९ **वास्तुपूजापद्धतिः** गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति-गृहप्रवेशपद्धति सहिता [ह. १५३] ०-४०

+७० **विवाहपद्धतिः** । वेणीराम शर्मा गौड़ कृत हिन्दी टीका सहिता १-००

*७१ **विवाहपद्धतिप्रभा** । गौरीशंकर शास्त्री १-५०

+७२ **विष्णुयागपद्धतिः** । मूल २-५०

७३ **विष्णुस्मृतिः** । जे० जॉली सम्पादित । शोधपूर्ण शीघ्र प्रकाशित होगी

७४ **वीरमित्रोदयः** । महामहोपाध्याय श्री मित्रमिश्रविरचितः—

परिभाषाप्रकाशः संस्कारप्रकाशश्च २५-००

आह्निकप्रकाशः	१२-००	व्यवहारप्रकाशः	१२-००
पूजाप्रकाशः	८-००	श्राद्धप्रकाशः	८-००
लक्षणप्रकाशः	१४-००	समयप्रकाशः	६-००
राजनीतिप्रकाशः	१०-००	भक्तिप्रकाशः	४-००
तीर्थप्रकाशः	१२-००	शुद्धिप्रकाशः	६-००

१-१२ प्रकाशाः सम्पूर्ण [चौ. ३०] ११७-००

*७५ **वैदिक विवाहप्रयोगः** । चतुर्थीकर्म सहितः ०-३७

७६ **व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णयः**—(महान् लघुश्च) नागेशभट्टविरचितः । अत्र कलौ उपनयनयोग्याः क्षत्रिया नैव सन्तीति विवेचितम् । तथा—

व्रात्यताशुद्धिसंग्रहः [चौ. ६६] २-००

७७ **शिलान्यासपद्धतिः** । म० म० श्रीविद्याधरजी गौड सम्पादिता विस्तृत टिप्पणी परिशिष्ट सहिता [वि. ३] ०-२५

*७८ **शुक्लयजुः काण्वशाखीयजातकर्मादिसमावर्तनान्तसंस्कारप्रयोगः** ०-७५

*७९ **शुक्लयजुर्वेदीय-वैदिकवास्तुशान्तिप्रयोगः** । दुर्गाशङ्कर शास्त्री १-५०

८० **शुक्लयजुर्वेदीय-सन्ध्योपासनपद्धतिः** । वेदाचार्य पं० अनन्तराम-डोगराशास्त्रिकृत भाषाटीका सहिता [वि. ८] ०-१५

८१ **शुद्धिप्रदीपः प्रायश्चित्तप्रदीपः कृत्यप्रदीपश्च ।**

आचार्य कृष्णमित्रप्रणीत धर्मशास्त्र के ये तीनों अत्यन्त प्राचीन अनुपलब्ध दुष्प्राप्य ग्रन्थ बहुत ही खोज तथा अर्थव्यय से उपलब्ध हुए हैं । शुद्धिप्रदीप में जन्म-मरणाशौचों का, प्रायश्चित्तप्रदीप में विविध प्रकार के पातक तथा महापातकादि के प्रायश्चित्तों का और कृत्यप्रदीप में द्विजातियों के षोडश संस्कारों तथा यज्ञादिकों में कर्त्तव्याकर्तव्यों का प्रामाणिक विवेचन है २-००

८२ **श्राद्धकल्पलता** । श्रीनन्दपण्डितकृता । [चौ. ७३] ६-००

८३ **श्राद्धगणपतिः** । यन्त्रस्थ

८४ **श्राद्धचन्द्रिका** । भारद्वाज दिवाकरभट्टनिर्मिता [चौ. ७६] ४-००

८५ **श्राद्धपद्धतिः** । म० म० वाचस्पतिमिश्रकृता । परिष्कृत संस्करण [वि. ९] १-७५

८६ **श्राद्धप्रयोगदीपिका** । नेने गोपाल शास्त्री संपादिता ।
महामहोपाध्याय श्री पं० नित्यानन्दजी पन्त पर्वतीय रचित संस्कारदीपक १-२ भाग, परिशिष्टदीपक, अन्त्यकर्मदीपक, वर्षकृत्यदीपक आदि ग्रन्थों से सभी विद्वान् पूर्ण परिचित हैं। उन्हीं महामहोपाध्याय जी के प्रधान शिष्य श्री पं० नेने गोपालशास्त्रीजी द्वारा संशोधित एवं परिष्कृत उसी परिपाटी का यह श्राद्धविषयक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है [ह. २४०] १-२५

८७ **श्राद्धविवेकः** । म० म० रुद्रधर विरचितः । विषमस्थलटिप्पणी तथा 'पार्वणश्राद्धक्रियाबोधक चित्रपट' सहित [का. १२२] २-००

*८८ **श्राद्धविश्राम** । सम्पादक-रुद्रप्रसाद अवस्थी २-५०

*८९ **श्रीग्रहमखप्रयोगः** । ०-७५

९० **श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेवपूजाविधान-पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त भाषाटीका सहित [ह. १४८] १-००

९१ **श्रौतसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतं 'देवयाज्ञिकपद्धति' सहित । १-८ खण्ड [चौ. ७२] १६-००

९२ **षडशीतिः** । आदित्याचार्यप्रणीता । धर्माधिकारि नन्दपण्डित प्रणीत 'शुद्धिचन्द्रिका' व्याख्या समलङ्कृत [चौ. ६७] ३-००

*९३ **षोडशसंस्कारविधि** । (सनातन) हिन्दी टीका सहित ४-००, ५-००

*९४ **संकल्पसारप्रभा** । गौरीशंकर शास्त्री ०-६२

९५ **संक्षिप्तदीक्षापद्धतिः तुलादानपद्धति** सहित [ह. १७०] ०-२०

*९६ **संध्याभाष्यम्** । चतुर्वेद-संध्या-तर्पण-ब्रह्मयज्ञ-श्रुतिसूत्र व्याख्या-नोपबृंहित पद्धति समेतम् । म० म० श्यामनारायण चतुर्वेदकृत ४-००

९७ **संस्कारगणपतिः** । श्रीमद्याज्ञिकप्रवर श्रीमद्रामकृष्णप्रणीतः । पारस्करगृह्यसूत्रस्यातिविस्तृतव्याख्यानस्वरूपः [चौ. ८०] १५-००

९८ **संस्कारदीपकः** । म० म० श्री नित्यानन्दपन्तपर्वतीय विरचित [का. ९५] प्रथम ४-०० द्वितीय ५-५० तृतीय भाग ५-५० संपूर्ण १-३ भाग १५-००

९९ **संस्काररत्नमाला** । (गोपीनाथभट्टीया) १-२ खण्ड. [चौ. ९] ३-००

*१०० **सचित्र सतर्पण-सन्ध्यादर्पण** । हिन्दीभाषानुवादसहित २-००

*१०१ **सनातनधर्मदीपिका** । स्वा० दयानन्द विरचित ०-७५

१०२ **सब धर्मों की बुनियादी एकता** । डॉ० भगवानदास ।

इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मजहबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और अध्यात्मिक कल्याण पाना ही है १२-००

१०३ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः** । श्रीशुक्लविश्रामात्मज श्रीशिवराम-विरचित [चौ. ८७] ६-००

*१०४ **स्मार्तप्रभु** । प्रथम भाग १-२५ द्वितीय भाग (प्रतिष्ठाप्रभु) ४-००

*१०५ **स्मृतिसन्दर्भः** । (धर्मशास्त्र ग्रन्थ) १-६ भाग ३६-००

१०६ **स्मृतिसारोद्धारः** । विद्वद्वर श्रीविश्वम्भरत्रिपाठिसङ्कलितः [चौ. ३१] ८-००

*107 Hindu Samskara's by Rajabali Pandeya Rs. 25-00

१०८ **हिन्दू संस्कार** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)

डॉ० राजबली पाण्डेय विरचित यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है। गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है। हिन्दू जीवन के आदर्श, महत्त्वाकांक्षा, आशा और आशंका आदि सभी मानसिक प्रक्रियाओं पर यह पर्याप्त प्रकाश डालता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अंगों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते हैं। मानव-जीवन बराबर रहस्यपूर्ण रहा है। उसका प्रादुर्भाव, विकास और तिरोभाव मानव-मन को बराबर आन्दोलित करते आये हैं। संस्कारों ने इस रहस्य की गम्भीरता को बढ़ाने और प्रवहमान रखने में बराबर योग दिया है। हिन्दू जीवन को, एक प्रकार के मार्ग और पद्धति के रूप में, अक्षुण्ण रखने में संस्कारों का बड़ा हाथ है। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के अध्ययन के परिणाम इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं। १५-००

१०९ स्वस्तिवाचनप्रयोगः । चतुर्वेदोक्त तत्तन्मंत्र सहित [इ. ९६] यन्त्रस्थ

110 Socio Religious Condition of North India (700-1200 A. D.) Based on Archæological Sources : By Dr. Vasudeva Upadhyaya. Shortly

*१११ हवनात्मक महारुद्रप्रयोगः । अष्टधारुद्र स्वाहाकारसमुच्चयसहित । शास्त्री दुर्गाशङ्कर कृत टिप्पणी सहित । पत्रात्मक ४-५० सजिल्द ७-००

*११२ हिरण्यकेशीयगृह्यसूत्रम् । ०-५०

+११३ हेमाद्रिदानखण्डः । भाग १-२ १०-००

छन्दः-काव्य-अलङ्कार-चम्पू-ग्रन्थाः

१ **अभिनन्दनग्रन्थः सत्यनारायण शास्त्री ।** (सचित्र) न्याय, व्याकरण, वेदान्त, सांख्य, योग, मीमांसा, इतिहास, पुराण, आयुर्वेद आदि प्रत्येक विषय पर महामहामनीषियों के मर्मस्पर्शी विचार सामग्री से यह ग्रन्थरत्न भरा हुआ है । मूल्य लागत मात्र १५-००

*२ **अभिनवकाव्यप्रकाशः** । सटिप्पण (१-६ उल्लास) १-५०

*३ **अलङ्कारकौमुदी** । श्री सुरेन्द्रशास्त्रिविरचित नेट २-२५

४ **अलङ्कारप्रदीपः** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ८] १-००

५ **अलङ्कारमुक्तावली** । श्री विश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित [का. ५४] १-००

६ **अलङ्कारशेखरः** । केशवमिश्रकृतः । साहित्याचार्य अनन्तरामशास्त्रीकृत भूमिकादि सहितः [का. ५६] १-२५

७ **अलङ्कारसारमञ्जरी**—सर्वविध मध्यमपरीक्षा पाठ्यरूपा । इसमें चन्द्रालोक तथा साहित्यदर्पण से संगृहीत अलङ्कारों की मूलकारिकायें, उनकी स्वतन्त्र सरल विशद वृत्ति, चन्द्रालोकीय उदाहरण, रघुवंशादि अधीतग्रन्थों से उदाहरण तथा उनका समन्वय इत्यादि सभी विषय संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित दिए गए हैं ०-४५

*८ **अलङ्कारसंग्रहः** । अमृतानन्दयोगी कृत नेट १६-००

९ **अवदानकल्पलता** । (तृतीयपल्लव) श्री क्षेमेन्द्र विरचित ०-२५

१० **अवन्तिकुमारियाँ।** श्री देवदत्त शास्त्री।

इस पुस्तक में तीन अवन्ति कुमारियों (अवन्ति सुंदरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। यद्यपि तीनों कहानियाँ पृथक्-पृथक् हैं किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वह किसी उपन्यास के तीन परिच्छेद हैं। भाषा की प्राञ्जलता, सरसता और शब्दचयन की मधुरता से कहानियाँ अत्यन्त रसमयी एवं मुखर हो उठी हैं [चौ. वि.] २-००

*११ **अशोक के स्तम्भलेख।** अनुवादक—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

अशोक के सातो स्तम्भलेखों के मूल, संस्कृतच्छाया तथा हिन्दी अनुवाद, अंग्रेजी भूमिका। परिशिष्ट के रूप में यशोधर्मा का मन्दसोरस्तम्भलेख सानुवाद तथा समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख खण्डशः। ०-७५

१२ **आर्यासप्तशती।** पर्वतीयश्रीविश्वेश्वरपण्डितविरचिता। ग्रन्थकर्तृकृत व्याख्यासंवलित [चौ. ६०] ४-५०

*१३ **उषानिरुद्धम्।** रामपाणिवादकृत नेट ९-००

१४ **उपाख्यान-मञ्जरी।** (बोर्ड आफ हायर सेकेण्डरी एजुकेशन राजस्थान पाठ्य स्वीकृत)

'वेतालपञ्चविंशति' की कतिपय कथाओं का यह छोटा-सा संग्रह सुरभारती का अनुशीलन करने वाले छात्रों को संस्कृत भाषा एवं गद्य रचना से परिचित कराने के लिए प्रस्तुत किया गया है। १-२५

*१५ **ऐहोलशिलालेख।** व्याख्याकार—प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

ईसा की सातवीं सदी में दक्षिण भारत के प्रतापी सम्राट् चलुक्यवंशी पुलिकेशी द्वितीय की विजयों का वर्णन करने वाले इस लेख में पहले-पहल भारवि और कालिदास के नाम आये हैं। इसके रचयिता-रविकिर्ति जैन हैं। भूमिका, हिन्दी अनुवाद सहित। ०-६०

१६ **औचित्यविचारचर्चा-कविकण्ठाभरण-सुवृत्तितिलकम् ।**
क्षेमेन्द्रकृता । सटिप्पण [ह. २४-२५-२६] यन्त्रस्थ

१७ **औचित्यविचारचर्चा** : महाकवि क्षेमेन्द्रकृता । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहिता । सं० आचार्य व्रजमोहन शर्मा । यन्त्रस्थ

१८ **कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन**—डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ।

यह ग्रंथ सम्पूर्ण कादम्बरी का व्यवस्थित आलोचनात्मक हिन्दी रूपान्तर है। अविश्रृंखल कथासूत्र, विषयानुकूल भाषा-प्रवाह, गुप्तयुग की सांस्कृतिक सामग्री की तुलनात्मक व्याख्या, कठिन शब्दों की सुस्पष्ट व्याख्या, कवि के मूलप्रयोजन का स्पष्टीकरण, शूद्रक, अच्छोद सरोवर, महाश्वेता आदि नामों का रहस्य और प्रतीक-परिचय, ३५२ अनुच्छेदों की सूची एवं कुछ विशिष्ट शब्दों की अनुक्रमणिका आदि प्रस्तुत ग्रंथ की विशेषताएँ हैं। कादम्बरी के विषय में इस एक ग्रंथ को लेकर आप अन्य किसी ग्रंथ की अपेक्षा नहीं रखेंगे। साहित्यप्रेमियों को इस ग्रंथ का अवश्य संग्रह करना चाहिए १२-७५

१९ **कादम्बरी—'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या—**

इस संस्करण की सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रत्येक शब्द के पर्याय, समास, विग्रह, कोश, अलंकार आदि से मूल के पद-पद की ग्रन्थियाँ खोल दी गई हैं। इसकी हिन्दी व्याख्या मूल के अनुरूप ही पदविच्छेद पूर्वक सरल शब्दों में संशोधित करके की गयी है जिससे हिन्दी-अंगरेजी के छात्र भी कादम्बरी का अध्ययन बिना गुरु के स्वयं ही कर सकेंगे। इस संस्करण की आधुनिकता पर मुग्ध होकर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, हिन्दू विश्वविद्यालय तथा विहार-संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वानों ने जो उद्गार प्रकट किए हैं, वे पुस्तक में प्रकाशित कर दिए गए हैं। कादम्बरी-समीक्षा, कथासार आदि से सुसज्जित। [का. १५१] (शोधपूर्ण द्वि० संस्करण)

कथामुख पर्यन्त ३-७५, पूर्वार्द्ध १२-५०

२० **हिन्दी कादम्बरी : शुकनासोपदेश ।** व्याख्याकार—झावन्धु
इसमें समस्त शब्दों का विग्रह भी दे दिया गया है जो अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक होगा । मूल ग्रन्थ के वास्तविक अभिप्राय को समझने के लिए अत्यन्त सरल संस्कृत में उसकी व्याख्या की गयी है जिससे छात्रों को भी स्वयं सरल संस्कृत में व्याख्या करने की शक्ति और प्रवृत्ति उत्पन्न हो। प्राञ्जल तथा मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद किया गया है जिससे प्रवाह बना रहे और अनुवाद के पढ़ते समय मूल ग्रंथ का रसास्वादन भी होता रहे। इन सबों के अतिरिक्त इसकी टिप्पणी में ग्रन्थ में आये पारिभाषिक शब्दों की प्रामाणिक व्याख्या और उसका इतिहास भी लिखा गया है जो छात्रों के ज्ञान विस्तार में सहायक होगा । अलङ्कारों का भी यथास्थान निर्देश कर दिया गया है। इसकी सबसे खास विशेषता यह है कि मूल ग्रन्थ के गद्य को समुचित इसकी विस्तृत भूमिका में बाण सम्बन्धी समस्त आलोचमात्मक प्रश्नों के उत्तर बहुत ही प्रामाणिक रूप से दिये गये हैं। ३-००

२१ **हिन्दी कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त ।** प्रद्युम्न पाण्डेय ।
विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस पुस्तक में कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त भाग की अत्यन्त स्पष्ट, सरस एवं सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। अनुवाद करने में यह ध्यान रखा गया है कि छात्र उससे मूल के भावों तक पहुँच सके, साथ ही कथा की धारा भी न टूटने पाए। पुस्तक के आदि में महाकवि बाण और 'कादम्बरी' के एक विशिष्ट पार्श्वचरित महाश्वेता की विशेषताओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है जिसमें आधुनिक आलोचना के मापदण्डों का प्रयोग हुआ है। अन्त में क्लिष्ट शब्दों और वाक्यों की संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या तथा दो परिशिष्टों में बाण की अन्य विशेषताओं का उल्लेख कर दिया गया है। अनुसन्धित्सुओं के लिये भी संग्राह्य है ३-००

२२ **ऋतुसंहारम्—'प्रभा' हिन्दीटीकोपेतम् ।**
महाकवि कालिदास रचित इस लघु पुस्तक में शृङ्गाररसप्राधान्येन षट् ऋतुओं का सुन्दर वर्णन है। इसके अध्ययन से किन-किन ऋतुओं में किन-किन वस्तुओं का किस प्रकार उपभोग किया जाता है इसका ज्ञान हो जाता है [ह.] ०-४०

२३ **कलाविलासिनी वासवदत्ता ।** श्री देवदत्त शास्त्री ।

इस युग के भारतीय नागरक की दिनचर्या और रात्रिचर्या तक में कलाओं का प्रभाव और प्राधान्य था । महाराज उदयन और महारानी वासवदत्ता इस युग के ऐसे दो ध्रुव हैं जहाँ पर चौंसठ कलाओं का अस्तित्व और विकास निहित है । उनकी कलाविलासिताओं में भोग और योग का पूर्ण समन्वय है । इसी का विषद विवेचन इस पुस्तक की कलामयी रोचक कहानियों में किया गया है [चौ. वि.] २-५०

*२४ **कामायनी ।** (संस्कृत) । महाकवि जयशंकर प्रसाद । अनुवादक पं० भगवानदत्त शास्त्री । सर्ग १-३ नेट १-५०, संपूर्ण ५-००

*२५ **काव्य-कलिका ।** सम्पादक-प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषी'

१ बुद्धदेव की निर्वाण-प्राप्ति का वर्णन करने वाला 'निरंजना' नामक हिन्दी खण्ड काव्य, २ भारवि कृत किरातार्जुनीयम प्रथम सर्ग मूल के साथ हिन्दी-पद्यानुवाद तथा ३ नेहरु की रूस-यात्रा पर लिखे गये संस्कृत काव्य 'शान्ति विजयम्' का प्रथम सर्ग १-००

२६ **काव्यकल्पलतावृत्तिः ।** अमरचन्द्रयतिनिर्मिता । अरिसिंहकृतसूत्र सहित यन्त्रस्थ

२७ **काव्यदीपिका-'मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेता ।**

इस ग्रन्थ में काव्यप्रयोजन, लक्षण, अभिधा-लक्षण, व्यंजनानिरूपण, काव्य-भेद-रस-ध्वनिभेद-निरूपण, नाटकोपयोगि निरूपण, दोष, गुण, रीति, अलंकार और अर्थालंकार निरूपण आदि का सरल तथा सुबोध शब्दों में विवेचन किया गया है [ह. २११] २-००

२८ **काव्यदीपिका-अष्टमशिखा**-डा० भोला शंकर व्यास ।

आगरा यूनिवर्सिटी की बी. ए. कक्षा में निर्धारित इस अष्टम शिखा की डा० व्यासलिखित समालोचना के साथ आचार्य रामगोविन्दशुक्ल रचित सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या हो जाने से तो यह संस्करण और भी अधिक उपादेय हो गया है [ह. २११] १-२५

२९ **काव्यप्रकाशः ।** सुधासागरी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

३० **काव्यप्रकाशः** । म० म० श्रीगोकुलनाथोपाध्यायकृत व्याख्या सहित । प्रथम उल्लास [चौ.] १-००

३१ **काव्यप्रकाशः-'नागेश्वरी' संस्कृतव्याख्या सहित**

प्रदीप, उद्योत, संकेत, सुधासागरी, वामनी, आदि अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन टीकाओं की सारभूत यह सरल अभिनव 'नागेश्वरी' व्याख्या प्रकाशित की गयी है। इसमें ग्रन्थ के सभी दुरूहांशों को ननु-नच करके सरल तथा स्पष्ट कर दिया गया है [का. ४९] द्वितीय संस्करण ६-००

३२ **हिन्दी काव्यप्रकाश** । व्याख्याकार-डॉ० सत्यव्रत सिंह

अनेक विश्वविद्यालयों के अधिकारी वर्गने आधुनिक पद्धति की विशालकाय इस हिन्दी व्याख्या पर मुग्ध होकर इसी संस्करण को अपने पाठ्य-क्रमों में निर्धारित कर लिया है। संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी में समानरूप से इस ग्रन्थ की व्यापकता को देखकर तदनुकूल ही इसकी व्याख्या की गयी है। व्याख्या के साथ-साथ टिप्पणी (नोट्स) में वे सभी विषय दिये गये हैं जो वामनी, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक-लोचन आदि में बिखरे पड़े हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस प्रकार का सर्वांगपूर्ण सुसज्जित संस्करण प्रथम वार ही छपा है। परिष्कृत द्वि० संस्करण। संपूर्ण १०-००

३३ **हिन्दी काव्यप्रकाश : दशम उल्लास** । डा० सत्यव्रत सिंह

विश्वविद्यालयों की एम० ए० परीक्षा में पाठ्य-ग्रन्थ रूप में स्वीकृत 'काव्यप्रकाश का दशम उल्लास' अति क्लिष्ट माना जाता है। इसका विषय है अर्थालङ्कारों का विवेचन। प्राचीन पद्धति से लिखे हुए इस ग्रन्थ का आशय नयी पीढ़ी के छात्रों को समझना कठिन जानकर विज्ञ टीकाकार ने व्यवस्थित भाषा में मूल के नीचे भाषानुवाद अङ्कित करके अपनी टिप्पणी (विमर्श) द्वारा ग्रन्थ की रहस्यपूर्ण ग्रन्थियों का सम्यक् समुन्मोचन कर दिया है। आलोचनात्मक विषयों का ज्ञान सुविस्तृत भूमिका द्वारा हो जाता है [चौ. वि. १५] ५-००

३४ **हिन्दी काव्यप्रकाश : १–३ उल्लास ।** डा० सत्यव्रत सिं
संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी में समान रूप से व्यापक इस ग्रन्थ के १ से ३ उल्लास विभिन्न विश्वविद्यालयों की उच्च श्रेणियों के पाठ्यक्रमों में निधारित हैं। छात्रों को विवेच्य विषय सुलभ कराने के लिये मूल के साथ विषयानुरूप बोधगम्य भाषा में व्यवस्थित अनुवाद एवं विशद टिप्पणी (नोट्स) द्वारा विषय की गम्भीरता तथा व्यापकता को स्पष्ट करने का प्रयास एकमात्र इसी संस्करण की विशेषता है [चौ. वि. १५] ३-

३५ **काव्यप्रकाशरहस्यम्** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
काव्यप्रकाश का पठन-पाठन भारतवर्ष के सभी संस्कृत एवं अंग्रेजी-हिन्दी कालेजों में होता आ रहा है, अतः किसी भी प्रान्त की परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर बहुत ही सरल ढंग से इस पुस्तक में मिल जायँगे १-

३६ **काव्य-प्रवन्धः**–अनेक शिक्षासंस्थाओं द्वारा स्वीकृत प्रवन्धग्रंथ इस पुस्तक में काव्य, वाक्य, शब्दार्थ, तात्पर्यार्थ, शक्ति, संकेतग्रह, जातिवाद लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, रस, स्थायिभावभेद, गुणालंकार भेद तथा शब्दा- लंकारभेदों का निरूपण करके कवित्व का लक्षण तथा महाकवि कालिदास भवभूति, भारवि, शूद्रक, माघ, दण्डी, बाण आदि कवियों की परीक्षोपयोगी संक्षिप्त जीवनियों तथा उनकी कृतियों पर विशेष प्रकाश डाला गया है १-

३७ **काव्यमञ्जूषा नाम रत्नावलीगद्यकाव्य-कामकन्दलनाटक-श्रीकालिकामन्दाक्रान्ताशतकः, धर्माधिकारिवंशवर्णन, श्रीरेणुकास्तोत्रनाम्नां** ग्रन्थरत्नानां संग्रहः [चौ. ७८] २-

३८ **काव्यमीमांसा ।** श्रीमधुसूदनमिश्रकृत व्याख्या सहित । संपूर्ण ४-

३९ **काव्यमीमांसा ।** श्रीमधुसूदनमिश्रकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।
[ह. १४] [१–५ अध्याय] १-

४० **काव्याङ्गनिर्णय**–प्रोफेसर जंगबहादुर मिश्र ।
सन् १९५७ ई० से हाई स्कूल तथा इण्टरमीडियेट परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में अलंकार और छन्द स्वीकृत किये गये हैं। छात्रों को इन विषयों के ज्ञान की प्राप्ति में सहायता देकर सुलभता प्रदान करना ही इस पुस्तिका का लक्ष्य है। इस पुस्तिका से हाईस्कूल तथा विश्वविद्यालयों एवं सम्मेलन परीक्षाओं के छात्रों को समान रूप से लाभ होगा [चौ. वि. १३] १-

४१ **हिन्दी काव्यादर्शः ।** व्याख्याकार-आचार्य रामचन्द्र मिश्र । सरस शैली में अलंकार शास्त्र का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत ग्रंथ का विषय है। व्याख्याकार ने वर्त्तमान शिक्षास्तर के सर्वथा अनुकूल सारगर्भित सरल संस्कृत-हिन्दी भाष्य करके इसे सुबोध बना दिया है। इस अभिनव संस्करण की प्रस्तावना में लगभग ७० अलंकारशास्त्रियों का समय, रचनाएँ तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है। साथ ही अलंकारशास्त्र, अलंकारशब्दार्थ एवं अलंकारशास्त्र का क्रमविकास नामक प्रसंग भी प्रस्तावना में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। छात्रों, अध्यापकों एवं साहित्यानुरागियों के लिये यही उपयोगी संस्करण है [चौ. वि. ३७] ६-५०

४२ **किरातार्जुनीयम्**—मल्लिनाथी सुधा व्याख्या (सर्ग १-३) इसमें सर्वप्रथम पात्र-परिचय; संक्षिप्तकथा तथा क्रमशः मल्लिनाथकृत घण्टापथ व्याख्या, सुधा व्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, सरलार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, शिक्षासंग्रह, आदि परीक्षोपयोगी बहुत से विषय दिये गये हैं। [का. ७४] १-२ सर्ग १-२५
१-३ सर्ग २-००

४३ **किरातार्जुनीयम्** (तृतीय सर्ग) 'घण्टापथ' सुधा व्याख्या आगरा विश्वविद्यालय में पाठ्य स्वीकृत इस तृतीय सर्ग की संस्कृत व्याख्या में अन्वय समास-विग्रह, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, भावार्थ आदि परीक्षोपयोगी विषय देकर हिन्दी व्याख्या तथा भूमिका में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का तुलनात्मक विवेचन किया गया है १-००

४४ **किरातार्जुनीयम्**—मल्लिनाथी-प्रकाश संस्कृत-हिन्दीव्याख्या। घण्टापथ संस्कृत टीका के साथ साथ 'प्रकाश' नामक सरल हिन्दी व्याख्या होने से इस संस्करण की उपयोगिता बढ़ गयी है। हिन्दी व्याख्या में प्रायः सर्वत्र ही महाकवि भारवि की गूढ़ ग्रन्थियों को ननु-नच करके खोल दिया गया है तथा ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि की जीवनी एवं प्रत्येक सर्ग का संक्षिप्त कथासार भी दे दिया गया है [ह. १०५] संपूर्ण ४-००

४५ **किरातार्जुनीयम्** । उपर्युक्त व्याख्या सहित केवल १-५ सर्ग १-२५

४६ **काव्यालङ्कारः** । श्रीभामहाचार्येण विनिर्मितः [का. ६१] यन्त्रस्थ

४७ **काव्यालङ्कारसूत्राणि।** आचार्यवामनविरचितवृत्तिसमेत। श्री गोपेन्द्र त्रिपुरहरभूपाल-विरचित काव्यालङ्कारकामधेनुव्याख्यासहित। यन्त्रस्थ

४८ **कुमारसम्भवः**—'पुंसवनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः। इस टीका की विशेषता—प्रत्येक श्लोक का १ अवतरण सहित दण्डान्वय, २ परीक्षोपयोगी व्याख्या, ३ विग्रह, व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्द, प्रमाणप्रदर्शन, मल्लिनाथादि प्रदर्शित दोषोद्धार व्युत्पत्ति, ४ संस्कृत में भावार्थ, ५ भाषा के संक्षिप्त पदों के द्वारा श्लोकाभिप्राय, ६ हिन्दी में सरल भावार्थ, ७ प्रत्येक सर्ग की कथा का संक्षेप में संग्रह, ८ विशिष्ट भूमिका इत्यादि सहित [ह. ९०]
१-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-५० एवं १-७ सर्ग ५-००

४९ **कुमारसंभवः** (प्रथम और पंचम सर्ग) 'पुंसवनी' नामक संस्कृत-हिन्दी टीका तथा नोट्स सहित। विहार की मध्यमा परीक्षा तथा अंग्रेजी की आई० ए० और बी० ए० परीक्षा में निर्धारित होने के कारण इस संस्करण में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तैलंग एम० ए० विरचित नोट्स तथा विस्तृत प्रस्तावना भी दी गयी है। शास्त्री जी के 'नोट्स' मात्र के अध्ययन से भी विद्यार्थी परीक्षा में पूरी सफलता प्राप्त कर सकते हैं [ह. ९०] १-५०

५० **कुमारसंभवः**—(पंचम सर्ग) उपर्युक्त सभी विषयों से युक्त १-००

५१ **हिन्दी कुवलयानन्द।** व्याख्याकार, डॉ० भोलाशंकर व्यास। इसकी व्याख्या में शास्त्रार्थस्थलों को सुबोध बनाने की अथक चेष्टा की गई है। कुवलयानन्दकार की परिभाषाओं, भेदों तथा उदाहरणों की जहाँ जहाँ पण्डितराजने रसगंगाधर में आलोचना की है, उन-उन स्थलों पर पण्डितराजके आक्षेपों को उपन्यस्त कर ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बनाया गया है। ग्रन्थ के आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका है जिसमें प्रायः सभी प्राचीन अलंकारशास्त्रियों के मतों का समन्वय एवं समीक्षा आदि है। यह ग्रन्थ अलंकारों के अध्ययन के लिए एक महत्त्वपूर्ण सामग्री उपस्थित करता है। अलंकार शास्त्र के जिज्ञासुओं के लिए यह ग्रन्थ अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा [चौ. वि. २४] ६-५०

५२ **कौमुदी कथाकल्लोलिनी।** प्रो० रामशरण शास्त्री।

इसकी कथा का आधार कथासरित्सागर में आए हुए नरवाहनदत्त की कथा है। इसके पढ़ लेने पर संस्कृत साहित्य की विभिन्न कथा शैलियों का एक चित्रण उपस्थित हो जाता है ८-७५

*५३ **कृष्णचरितम्।** समुद्रगुप्त रचित १-००

५४ **हिन्दी गाथासप्तशती।** व्याख्याकार-श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

जो विद्वान् प्राचीन भारतीय समाज का चित्रण शास्त्रीय साहित्य में ही खोजते हैं, उनका ध्यान ऐसे साहित्य की ओर भी जाना चाहिये। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को लेकर इसमें नाना भावों के निदर्शन पाये जाते हैं। पारिवारिक जीवन की तीव्र अनुभूतियों की झाँकी के साथ-साथ नायक-नायिकादि की चेष्टाओं एवं मनोभावों की जानकारी प्राप्त करना भी, इस पुस्तक द्वारा बहुत कुछ सुलभ हो जाता है। दक्षिण भारत के ग्रामीण जीवन का तो इसमें सजीव चित्रण है ही, साथ ही साथ भारतीय संस्कृति के अध्ययन की भी यह एक महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करती है। ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी पाठकों के लिये सुलभ न होना चिंत्य रहा है। इसमें अनुवाद के साथ-साथ विस्तृत भूमिका एवं उपयोगी परिशिष्ट भी सुलभ हैं [च. वि. ५५] ५-००

५५ **गीतगोविन्दकाव्यम्।** महाकवि-जयदेव विरचितम्। 'इन्दु' नामक हिन्दी भाषाटीका विस्तृत भूमिका सहित [ह. १२९] १-००

*५६ **चउप्पन्न महापुरिसचरियं।** सिरि सीलंकायरिय विरइयं। अमृतलाल मोहनलाल भोजक संपादित २१-००

५७ **चन्द्रप्रभचरितम्।** परीक्षोपयोगी 'सुधा' हिन्दी टीका सहित। जैनदर्शन तथा साहित्य शास्त्र के आचार्य पं० अमृतलाल जी जैन ने पूर्व मध्यमा परीक्षा निर्धारित तृतीय सर्ग की सरल सुबोध सुविस्तृत हिन्दी टीका, टिप्पणी तथा परिशिष्ट में पारिभाषिक शब्दकोश आदि से सुसज्जित कर समालोचना में महाकवि वीरनन्दी का इतिवृत्त तथा कथासार भी लिख दिया है [ह. २०७] ०-४५

५८ **चन्द्रप्रभाचरितम् ।** म० म० श्री शङ्करलाल विरचितम्
यह अत्यन्त सरस हृदयग्राहिणी गद्यकथा है। इसका कथानक सविशेष रोचक है। इसकी शैली दण्डी एवं वाणभट्ट की कोटि की उत्कृष्ट है। अनेक परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत हो जाने के कारण विज्ञ लेखक ने इसका सर्वबोध्य सुगम छात्रोपयोगी नोट्स भी प्रस्तुत कर दिया है। जिससे यह संस्करण छात्रों, अध्यापकों तथा संस्कृत प्रेमी-जनों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है। शीघ्र प्रकाशित होगा

*५९ **चन्द्रापीडचरितम् ।** अनन्ताचार्य विरचितम् । नेट ०-७५

६० **चन्द्रालोकः ।** गागाभट्टकृत 'राकागम' टीका सहित [चौ. ८३] ३-००

६१ **चन्द्रालोकः (संपूर्ण) पौर्णमासी-कथाभट्टी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या।**
इस परिवर्धित तृतीय संस्करण में बहुत से परीक्षोपयोगी विषयों को सरल शब्दों में परिष्कृत कर दिया गया है। इस संस्करण की एक यह विशेषता है कि मूल ग्रन्थ की हिन्दी टीका के साथ-साथ संस्कृत टीका की भी हिन्दी टीका कर दी गयी है [ह. ५७]. संपूर्ण ३-००

६२ **चन्द्रालोकः । (पंचममयूख) पौर्णमासी-कथाभट्टी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ।** उपरोक्त सर्वालंकारो से विभूषित १-५०

६३ **चन्द्रालोक-रहस्यम् । (चन्द्रालोक-प्रश्नोत्तरी)**
इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रश्न के उत्तर में अधीत विषय को संक्षिप्त रूप में लिखने की शैली और विषय का ठोस ज्ञान एक साथ ही होता चलता है। इस दृष्टि से परीक्षार्थियों के लिए तो प्रस्तुत प्रकाशन को 'अल्पायासं महत्फलम्' ही समझना चाहिए [चौ. वि. ३०] १-२५

६४ **चम्पूभारतम् । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।**
संस्कृत साहित्य के रसिकजन आचार्य रामचन्द्र मिश्रजी की प्रतिभा से अपरिचित नहीं हैं। 'चम्पूभारतम्' भाषा-भावादि की दृष्टि से बड़ा गम्भीर है किन्तु आचार्यजी ने अपनी टीकाओं द्वारा उसे ऐसा सुबोध बना दिया है कि संस्कृत न जानने वाले भी समान रूप से इसका आनन्द ले सकते हैं। चंपू साहित्य के और भी प्रमुख ज्ञातव्य विषय इस प्रकार उपनिबद्ध कर दिये गये हैं कि चंपू का पूर्वापर देश, काल और उसकी प्रतिष्ठा अनायास ही हृदयंगम हो जाती है [चौ. वि. ३१] ८-००

६५ **चम्पूरामायणम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम् ।
आचार्य प्रो० रामचन्द्र मिश्र की लौह लेखनी से प्रसूत आधुनिक छात्रोपयोगी विस्तृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ यह अभिनव संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपादेय हो गया है। इसकी आधुनिक हिन्दी समालोचना तो परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिये सबसे अधिक उपादेय है [चौ. वि. २६] ६-००

६६ **चिन्तन के नये चरण** । श्री देवदत्त शास्त्री ।
भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, पुराण-उपनिषद्, नृत्य-नाटक-अभिनय-ये पाँच इस पुस्तक के विषय-स्तम्भ हैं। इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं। विद्यार्थियों को तो इन निबन्धों में नई दृष्टि, नई चेतना और अनुसन्धान के नये आयाम मिलेंगे। ६-००

६७ **छन्दोमञ्जरी** । 'प्रभा' 'रुचिरा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता ।
यह व्याख्या प्रतिशब्द, पर्याय, कोष, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि के साथ ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सुगमता से व्यक्त करने में समर्थ हुई है। इस पुस्तक से परीक्षार्थी विद्यार्थी परीक्षा में विशेष लाभ उठा सकेंगे। इसमें लक्षण-सूत्रों के साथ लक्ष्य-उदाहरण तथा श्लोकों का भी अर्थ सरल हिन्दी में दिया गया है। [ह. ११५] २-००

६८ **छन्दःकौमुदी** (प्रथमा परीक्षोपयोगी चतुर्थ संस्करण)
इस पुस्तक में प्रथम परीक्षा में निर्धारित छन्दों के उदाहरण सहित अश्लीलपद रहित लक्षणों के साथ-साथ गणस्वरूप, गुरुलघुनिरूपण, पादान्तस्थ विषयक मतभेद, वर्णों की गौरव-लाघवव्यवस्था, गुरु-लघु लेखन रीति, यति-नियमस्थान निरूपण आदि तथा छन्दःशास्त्र प्रणेताओं का संप्रदाय-क्रम, प्रश्नोत्तर और विशिष्ट भूमिका में छन्दःशास्त्र का इतिहास भी लिखा गया है। ०-४०

*६९ **छन्दः चन्द्रिका** । प्रथमा के विद्यार्थियों के लिए छन्द की उत्तम पुस्तक ०-१२

७० **छन्दस्सारः** । भाषा टीका प्रश्नपत्र उदाहरणसहित । [प्रथमा परीक्षा-पाठ्यनिर्धारितछन्दः संग्रहपुस्तकम्] [ह. १२] ०-१५

७१ **दशकुमारचरितम्।** बालबोधिनी-संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या। साहित्यरत्नाकर पं० ताराचरणभट्टाचार्य की लौह लेखनी से रचित बालबोधिनी संस्कृतहिन्दी व्याख्या विभूषित यह संस्करण सब संस्करणों में श्रेष्ठ परीक्षोपयोगी है। संपूर्ण ५-५०

पूर्वपीठिका १-२५ पूर्व पीठिका तथा प्रथम और अष्टम उच्छ्वास २-००

अपहारवर्मचरित पर्यन्त अभिनव भूमिका संयोजित संस्करण ३-००

७२ **दशकुमारचरितसारः।** डा० सत्यव्रत सिंह।

महाकवि दण्डि-विरचित सम्पूर्ण दशकुमारचरित में वर्णित दसों कुमारों का चरित अत्यन्त सरल रूप में इस प्रकार उपनिबद्ध किया गया है कि तनिक भी असम्बद्धता नहीं प्रतीत होती। पुस्तक अपने में पूर्ण मौलिक प्रतीत होती है। [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य स्वीकृत] ०-८०

*७३ **दशकुमारकथासार।** अप्पयामात्यकृत। नेट २-५०

७४ **हिन्दी दशरूपकम्।** व्याख्याकार, डा० भोलाशंकर व्यास। संस्कृत तथा हिन्दी दोनों व्याख्याएँ अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अत्यधिक उपयोग की हुई हैं। विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर इतना

सुविस्तृत और गम्भीर विवेचन किया है कि यह हिन्दी व्याख्या दशरूपक की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना के रूप में परिणत हो गई है। ग्रन्थ के आरम्भ में अति विस्तृत भूमिका देकर भारतीय नाटकों की उत्पत्ति, नाट्यशास्त्र का इतिहास तथा नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों को विस्तार से विश्लेषित किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस रचना से हिन्दी साहित्य की भी अवश्यमेव श्रीवृद्धि हुई है। संस्कृत तथा हिन्दी के अधिकारी विद्वानों और सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग), 'आज' (वाराणसी) तथा 'हिन्दी वाङ्मय' पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है [चौ. वि.७] ५-००

७५ **देववाणी-परिचायिका ।** श्री चक्रधर शर्मा ।
इस ग्रन्थ में वाल्मीकि रामायण, श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत, पञ्चतन्त्र, दूतवाक्य, भोजप्रबन्ध, मनुस्मृति, कुन्दमाला, बुद्धचरित, हितोपदेश, नागानन्द नाटक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरिशतक आदि सुप्रसिद्ध, सुरभारती के प्रतिनिधि ग्रन्थों के उद्धरणों का रसमाधुर्य ओत प्रोत है। (यू० पी० हाईस्कूल के लिए पाठ्य स्वीकृत) १-५०

७६ **धर्माधिकारिवंशवर्णनम् ।** श्रीवेणीरामपण्डितधर्माधिकारि विरचित ०-५०

+७७ **धार्मिकवर्णनलक्षणकाव्यम् ।** ०-४०

७८ **ध्वन्यालोकः ।** 'लोचन' 'बालप्रिया' 'दिव्याञ्जनादि'सहितः यन्त्रस्थ

७९ **ध्वन्यालोकः ।** 'दीधिति' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः ।
कविशेखर श्री पं० बदरीनाथ झा जी (प्रोफेसर, धर्मसमाज संस्कृत कालेज मुजफ्फरपुर) ने अपने ३०-३५ वर्षों के अध्यापनानुभव से 'दीधिति' टीका में ग्रन्थ की गूढ़ग्रन्थियों को नवीन शब्दावली में अभिनव शैली द्वारा अभिव्यक्त कर दिया है। नवीन शिक्षापद्धति के परीक्षार्थी छात्रों की योजनानुसार इस अभिनव संस्करण में 'दीधिति' टीका के अनुरूप सुविस्तृत सुबोध प्राञ्जल राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी प्रतिपद की सारगर्भित व्याख्या कर दी गई है। प्रस्तावना आदि से सुसज्जित अभिनव संस्करण ८-००

८० **ध्वन्यालोक-रहस्यम् ।** (परीक्षोपयोगी प्रश्नोत्तरी)
इस पुस्तक में काशी तथा बिहार आदि की परीक्षाओं में आये हुये प्रायः सभी प्रश्नों के उत्तर सरल, सुबोध तथा संक्षिप्त रूप से लिखे गये हैं। साथ ही प्रथम उद्द्योत से लेकर संपूर्ण ग्रन्थ की परीक्षा में आने योग्य पंक्तियों की परीक्षोपयोगी व्याख्या भी कर दी गयी है। १-५०

८१ **ध्वन्यालोकसारः ।** आचार्य श्रीपुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी ।
इस ग्रन्थ के योग्य विद्वान् रचयिता ने संपूर्ण ग्रन्थ के सभी स्थलों का सार इस प्रकार सरल भाषा में संगृहीत कर दिया है कि केवल इसी पुस्तक के अवलोकन मात्र से इस विस्तृत ग्रन्थ या इसकी सहायक अन्य टीकाओं को देखने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। १-२५

*82 The Number of Rasas by Dr. Raghavan Nett. 8–00

८३ नलचम्पूः। विषमपदप्रकाशव्याख्या-भावबोधिनी टिप्पणी सहित।
[का. ९८] ४–१०

८४ **नवसाहसांकचरित**। आचार्य परिमल पद्मगुप्त कृत।
हिन्दी व्याख्या तथा विस्तृत अध्ययन सहित।
इसकी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या में ग्रंथ के भाव, भाषा, छन्द, शैली, रस, अलंकार आदि का विशद विवेचन किया गया है।
आगरा विश्वविश्वविद्यालय की परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत प्रथम सर्ग ०–७५
सम्पूर्ण ग्रन्थ शीघ्र प्रकाशित होगा

८५ **नृसिंहचम्पूः**। विमर्शाख्य संस्कृत-हिन्दी टीका सहित।
डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री, प्रधानाचार्य, हिन्दू विश्वविद्यालय काशी
सरल एवं सरस संस्कृत-हिन्दी में पहली बार अनूदित इसकी विस्तृत भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विशद आलोचना तथा कवि का प्रामाणिक इतिवृत्त वर्णित है। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिये अधिक उपादेय है। २–५०

८६ **नैषधीयचरितम्**। 'जीवातु' 'मणिप्रभा' व्याख्योपेतम्।
म० म० मल्लिनाथ कृत दुष्प्राप्य अति प्राचीन विशुद्ध 'जीवातु' टीका के साथ-साथ नारायणी टीका की सारभूत इसकी 'मणिप्रभा' नामक विस्तृत हिन्दी टीका ने तो गागर में सागर भर दिया है। हिन्दी टीका में नारायणी टीका के अनुसार अनेकार्थक सभी श्लोकों के प्रत्येक अर्थ को भिन्न-भिन्न रूप से खोल दिया गया है। इस संस्करण को देखते ही आप प्रसन्न हो उठेंगे।
प्रथम सर्ग १–००, १-३ सर्ग १–७५, १-५ सर्ग ३–५०, १-९ सर्ग ६–००
संपूर्ण ग्रन्थ १३–००

•87 Padya Pushpanjali (A Nosegay of Sanskrit Poems.)
Text and Eng. Translation by V. Subrahmanya Iyer Nett. Rs. 2–00

८८ पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम्। (वैदिकच्छन्दःप्रकरणान्तम्) हलायुधवृत्तियुत-सटिप्पण-कादम्बिनी हिन्दी भाषा टीका सहित [ह. १८३] ०–७५

८९ **पौराणिक कथाएँ।** पुराणों में बिखरे हुए ७५ चरित्रनायकों का अपूर्व कथा-संग्रह २-५०

*90 **Priya-Pravas of Harioudha.** Translated from Hindi Verses into English Prose. Rs. 1—75

*91 **Psychological Studies in Rasa** by Dr. Rakesagupta. Rs. 10—00

*९२ **प्राकृतपैंगलम्।** संस्कृत व्याख्यात्रयोपेत। हिन्दी टीका सहित। संपादक-डॉ० भोलाशंकर व्यास। प्रथम भाग १६-००

९३ **प्राकृतपुष्करिणी।** हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ. जगदीशचन्द्र इस ग्रन्थ में ध्वन्यालोक, दशरूपक, सरस्वतीकण्ठाभरण, अलङ्कार-सर्वस्व, काव्यप्रकाश, काव्यानुशासन आदि अलङ्कार ग्रन्थों में उद्धृत प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ चुनी हुई ५०० गाथाओं का वर्णानुक्रम से सङ्कलन है। प्राकृत काव्यों की ये गाथायें शृङ्गारपरक मुक्तक काव्य की सर्वोत्कृष्ठ रचनायें हैं। हिन्दी अनुवाद के साथ प्राकृत का यह अनुपम संग्रह छात्रों के लिये अत्यन्त मनोरम और उपादेय है। २-००

९४ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** प्रो० जगदीशचन्द्र जैन। वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम अवतरित हुआ। २०-००

९५ **प्रेमरसायनम्।** श्री विश्वनाथपण्डित रचितम्। सटीकम् [का. ६३] १-००

*९६ **बुद्धचरितम्।** हिन्दी अनुवाद सहित। [१-२ भाग, सर्ग १-२८] ३-७५

९७ **भट्टिकाव्यम्।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्। परीक्षोपयोगी सम्पूर्ण विषयों से विभूषित 'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' संस्कृत हिन्दी व्याख्याओं से युक्त 'भट्टिकाव्य' का दूसरा कोई भी संस्करण नहीं छपा है। काशी के परीक्षा बोर्ड के माननीय विद्वानों ने मुक्तकंठ से इसी संस्करण की प्रशंसा की है। विद्यार्थियों के लिये यही संस्करण उत्तम है।

१-६ सर्ग ३-५०, पूर्वार्धं १ से ११ सर्ग ७-००

उत्तरार्द्ध १२ से २२ सर्ग ५-००, सम्पूर्ण १२-००

९८ **भर्तृहरिशतकत्रयम्** । नीतिशतक, शृङ्गारशतक, वैराग्यशतक सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित । ३-००

९९ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा** । डॉ० भोलाशंकर व्यास। भारतीय संस्कृति तथा साहित्य की परम्परा लगभग पाँच-छः हजार वर्षों से निरन्तर प्रवहमान रूप में उपलब्ध होती है। इस संस्कृति और साहित्य की अट्टालिका के निर्माण का इतिवृत्त प्रस्तुत करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। शीघ्र प्रकाशित होगी

१०० **भोजप्रवन्धः** (सटिप्पण) श्री वल्लालसेन विरचितः। [हृ. ४२] ०-७५

१०१ **भोज-प्रबन्धः** । 'राज्यश्री' हिन्दी व्याख्ये पेतः। उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित डॉ० भोलाशंकर व्यास सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका तथा पं० केदारनाथशास्त्रिकृत भावगर्भित 'राज्यश्री' नामक हिन्दी टीका से सुसज्जित इस अभिनव संस्करण ने राष्ट्रभाषा को विशेष गौरव प्रदान किया है। १-५०

102 **Manual of Sanskrit Prosody** : By Prof. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B. Shortly

१०३ **मन्दाकिनी** । डॉ० देवर्षि सनाढ्य ।

(वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय मध्यमा परीक्षा पाठ्य स्वीकृत) 'मन्दाकिनी' अपने नाम के अनुसार ही गुण रखने वाली पुस्तक है। इसमें संस्कृत-साहित्य से सम्बन्ध रखने वाली वार्ताओं का संग्रह है। वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, श्रीहर्ष, मयूर, जयदेव आदि संस्कृत-साहित्य के महान् मनीषियों की रचनाओं का हिन्दी-व्याख्यात्मक परिचय संस्कृत में रुचि रखने वाले पाठकों को न केवल मनोविनोद का कारण होगा, प्रत्युत भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा की भावना भी उत्पन्न करेगा। १-२५

*१०४ **मन्दारमञ्जरी** । विश्वेश्वरपाण्डेयविरचित। कुसुमाभिधव्याख्यासहित ४-५०

१०५ **महाकवि कालिदास** । आचार्य रमाशंकर तिवारी। इस ग्रंथ में कालिदास एवं उनकी कृतियों पर अत्यन्त प्रामाणिक, सर्वथा नवीन, सूक्ष्मग्राही, तथा विशद अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। उनकी प्रत्येक कृति का इस कोटि का समीक्षण प्रथम बार देखने को मिलेगा। विषयानुरूप भाषा की प्राञ्जलता वस्तुतः सराहने योग्य है। ७-५०

१०६ **मूलरामायण-महाभारतीयशीलनिरूपणाध्यायौ ।** 'सुधा' संस्कृत हिन्दी टीका, 'कथासार' सहित । प्रथम परीक्षार्थी अल्पवयस्क बालकों को सरल रूप से श्लोकों का अर्थ समझने के लिए इसमें प्रत्येक श्लोक का अन्वय, व्याख्या, समास और वाच्यपरिवर्तन करके हिन्दी भाषा में विस्तृत रूप से इस प्रकार सरल अनुवाद कर दिया गया है कि परीक्षार्थी छात्र स्वयं इसका अध्ययन कर लेंगे । ०-७५

१०७ **मूलरामायण ।** उपर्युक्त सब विषयों से युक्त । ०-४०

१०८ **महाभारतीयशीलनिरूपणाध्याय ।** उपर्युक्त सब विषयों से युक्त ०-४०

१०९ **मेघदूतम् ।** सञ्जीविनी-चारित्रवर्द्धिनी-भावबोधिनी-सौदामिनी नामक संस्कृत-हिन्दी टीकाचतुष्टयोपेतम् ।

कालिदास का मेघदूत निसर्गसुन्दर महाकाव्य है। उस पर साहित्य के दिग्गज विद्वानों की उपर्युक्त चार संस्कृत-हिन्दी टीकाएँ सचमुच चार चाँद ही लगती हैं। इन टीकाओं द्वारा जो विभिन्न प्रकार का भाव-प्रकाशन हुआ है उससे छात्रों, अध्यापकों एवं साहित्यानुरागियों को निश्चय ही समान रूप से ज्ञान-संवर्द्धन तथा मनोरञ्जन द्वारा सन्तुष्टि प्राप्त होगी। हिन्दी आलोचना में महाकवि और महाकाव्य पर जो प्रकाश डाला गया है, परीक्षा एवं ज्ञानार्जन की दृष्टि से वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है । १-२५

110 **MEGHA DUTA : English Translation by H. H. Wilson** Fourth Edition. 7-50

*१११ **यशस्तिलकचम्पूमहाकाव्यम् ।** विस्तृत भा. टी. सहितम्। पूर्वार्द्ध १६-००

११२ **रघुवंशमहाकाव्यम् ।** 'मल्लिनाथी' 'सुधा' व्याख्योपेतम् । प्रत्येक श्लोक में क्रमशः अवतरण-श्लोक, मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी टीका-अन्वय-'सुधाव्याख्या' कोश-समासादि-व्याकरण-वाच्यपरिवर्तन-तात्पर्यार्थ-हिन्दीभाषार्थ आदि विविध उपयुक्त विषयों से अलंकृत परीक्षोपयोगी टीका के साथ साथ मल्लिनाथ कृत सञ्जीविनी टीका सहित रघुवंश का यह संस्करण सर्वश्रेष्ठ है। १ सर्ग ०-७५, २ सर्ग ०-७५, १ व ५ सर्ग १-५० २-३ सर्ग १-५०, १-४ सर्ग २-५०, १-५ सर्ग ३-०० पृथक् पृथक् प्रत्येक सर्ग ०-७५

११३ **रघुवंशमहाकाव्यम् ।** 'सञ्जीविनी' 'मणिप्रभा' टीकोपेतम् ।
'सञ्जीविनी' टीका को आदर्श मानकर 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका में प्रायः सञ्जीविनी टीका की व्याख्या भी कर दी गयी है । किं बहुना, यत्र तत्र विमर्श भी देकर महाकवि कालिदास के भावों को विशदरूप से व्यक्त कर दिया गया है। ग्रन्थ के आदि में समालोचनात्मक विस्तृत हिन्दी भूमिका में महाकवि की जीवनी, समय, काल आदि का विस्तृत विवेचन कर प्रत्येक सर्ग का पृथक् पृथक् संक्षिप्त कथासार भी प्राञ्जल राष्ट्रभाषा में लिखा गया है । संपूर्ण ग्रंथ ५-००

११४ **रघुवंशमहाकाव्यम् ।** 'सञ्जीविनी' 'मणिप्रभा' संस्कृत हिन्दी टीका 'विमर्श' सहितम् । १-५ सर्ग १-२५, ६-१४ सर्ग २-२५
५-१४ सर्ग २-५०

११५ **हिन्दी रसमञ्जरी ।** 'सुरभि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
कविवर भानुदत्त विरचित यह रसग्रन्थ अपनी समता नहीं रखता । इसकी काव्यगत विशेषताओं—अछूती कल्पना, शब्द-चयन, उपमा एवं वर्णनशैली आदि—से संस्कृत जानने वाले व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई परिचित नहीं हो सकता था । अतः हिन्दी तथा संस्कृत जानने वालों के लिए आचार्य बदरीनाथ झा विरचित 'सुरभि' नामक संस्कृत टीका के साथ पण्डित जगन्नाथ पाठक रचित सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या से विभूषित यह संस्करण प्रकाशित किया गया है । ५-००

११६ **हिन्दी रसगङ्गाधर ।** 'चन्द्रिका' संस्कृत हिन्दी व्याख्या ।
ध्वन्यालोक के सफल टीकाकार जगत् प्रसिद्ध कविशेखर आचार्य बदरीनाथ झा जी की अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत व्याख्या से ही रसगंगाधर की दुरूहता सर्वतोभावेन दूर हो गयी है । साथ ही आचार्य मदनमोहन शास्त्री कृत आधुनिक सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या होने से तो सोने में सुगन्धि पैदा हो गयी है । यह हिन्दी व्याख्या केवल संस्कृत छात्रों के लिए ही नहीं प्रत्युत हिन्दी, अंगरेजी छात्रों की कठिनाइयों को विशेष ध्यान में रख कर प्रस्तुत की गयी है। इसकी समालोचनात्मक विशाल हिन्दी प्रस्तावना भी छात्रों के लिए अधिक उपादेय है। आचार्य जी की संस्कृत व्याख्या के साथ आधुनिक नवीन पद्धति की इस हिन्दी व्याख्या का भलीभाँति अवलोकन करने से छात्र स्वयं भी रसगंगाधर के मर्मज्ञ बन सकते हैं । उत्प्रेक्षालङ्कारान्त १८-००

११७ **रसगङ्गाधररहस्यम्** । (प्रश्नोत्तरी) ।

धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर के साहित्य प्रधानाध्यापक आचार्य श्रीमदनमोहन शास्त्री विरचित इस ग्रन्थ में रसगंगाधर की गूढ़ ग्रन्थियों की अति सरल व्याख्या की गई है। छात्रों के हितार्थ सभी प्रष्टव्य स्थलों पर प्रश्नोत्तर के रूप से सरल तथा सारगर्भित लेख लिखे गये हैं जिनके अभ्यास मात्र से छात्र परीक्षा में अनायास सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ०-७५

११८ **रसचन्द्रिका** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मिता । [का. ५३] १-००

११९ **रसराज** । कविवर मतिराम । आचार्य रामजी मिश्र रचित हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित

हिन्दी साहित्य का यह प्राचीन अथ च क्लिष्ट लक्षणग्रन्थ है जिस पर अत्यन्त सरस, सरल तथा प्रामाणिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है। समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका आदि के सहित यह संस्करण साहित्यानुरागियों तथा अध्येताओं के लिये परमोपादेय है। ७-५०

१२० **रसिकाष्टककाव्यम्** । [चौ. पु.] ०-०५

१२१ **राक्षसकाव्यम्** । 'नूतनकिशोरकेलि' व्याख्यासहितम् [ह. ७३] ०-२०

१२२ **रामवनगमनम्** । 'सुधा' संस्कृत टीका के साथ साथ 'इन्दुमती' विस्तृत हिन्दी टीका में श्लोकों के गूढ़ अभिप्रायों को इस तरह सरल शब्दों में अभिव्यक्त कर दिया गया है कि श्लोकार्थ समझने में शिक्षकों की आवश्यकता नहीं होगी। [ह. १८०] १-२५

*१२३ **रुक्मिणीकल्याणकाव्यम्** । राजचूड़ामणि दीक्षित कृतम् । नेट ५-००

१२४ **वाग्भटालङ्कारः** । सिंहदेवगणिविरचित संस्कृत-व्याख्या डॉ० सत्यव्रतसिंह कृत 'शशिकला' हिन्दीव्याख्या सहिता ।

इस ग्रंथ में काव्य के प्रत्येक आवश्यक अंग पर यथेष्ट विचार किया गया है। यह केवल अलंकारों का ही नहीं, अपितु काव्यशास्त्र का भी एक पूर्ण ग्रन्थ है। संस्कृत टीका के साथ विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या हो जाने से अब साहित्य शास्त्र के जिज्ञासुओं की साहित्यविषयक जिज्ञासा इस एक ही लघुकाय ग्रन्थ से पूर्ण हो सकती है। २-००

१२५ **विद्वद्विभूति ।** (विहार मध्यमा परीक्षापाठ्य ग्रन्थ)
इसमें संस्कृत के प्राचीन तथा नवीन प्रायः सभी उत्कृष्ट विद्वानों की जीवनियाँ सुललित राष्ट्रभाषा में लिखी गई हैं। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी स्कूल तथा कालेज के छात्र इस ग्रन्थ से विशेष लाभान्वित होंगे। १-२५

१२६ **वाग्वल्लभः ।** पं० दुःखभञ्जनकविकृतः । महामहोपाध्याय कविचक्रवर्ति पं० देवीप्रसादकृत 'वरवर्णिनी' नामक टीकायुतः [का. १००] ४-००

१२७ **वासवदत्ता ।** 'चपला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता ।
इस ग्रन्थ के पद-पद में अलङ्कार भरे पड़े हैं। कठिनता के कारण ही इस ग्रन्थ का प्रसार विशेष रूप से नहीं हो रहा था। अतएव नवीन शिक्षापद्धति के अनुकूल इसकी सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रति पद का पर्याय, कोश, अलंकार आदि देकर तदनुरूप हिन्दी टीका में भी पद पद का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसकी गवेषणात्मक हिन्दी प्रस्तावना भी अध्ययन करने योग्य है। ४-००

१२८ **विक्रमाङ्कदेवचरितम् ।** 'प्रबोधिनी' व्याख्योपेतम् ।
आधुनिक संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी छात्रों के लिए विविध विषयों से सुसज्जित सुललित राष्ट्रभाषा हिन्दी में छात्रोपयोगी यह अनुवाद प्रथम वार ही प्रकाशित हुआ है। इसकी सुविस्तृत प्रस्तावना में ग्रन्थ और ग्रन्थकार का इतिवृत्त पढ़कर तो आप और भी अधिक प्रफुल्लित हो उठेंगे। प्रथम सर्ग ०-६५

१२९ **विजयसेनप्रशस्तिः ।** (देवपाड़ा-शिलालेख) । अनुवादक-
प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ।
जयदेव के समकालिक कवि उमापतिधर के द्वारा लिखी गयी प्रशस्ति जिसमें राजा विजय सेन के मन्दिर निर्माण की घटना का उल्लेख है, प्रसंगतः सेन-वंश का वर्णन भी आ गया है। मूल श्लोक, संस्कृत टीका, हिन्दी-अनुवाद तथा भूमिका के साथ। ०-७५

१३० **विदुलोपाख्यानम् ।** 'लीला' 'विलास' संस्कृत हिन्दी टीका सहितम् ।
इसमें युद्धपराजित पुत्र को माता ने पुनः युद्ध के लिए अनेक प्रकार का वीर-भावपूर्ण प्रोत्साहन दिया है। यही महाभारतान्तर्गत इस पुस्तक का कथानक है। बालकों के लिये यह पुस्तक शिक्षाप्रद और उत्साहवर्धक है। ०-६५

१३१ **विश्रुतचरितम् ।** (परीक्षापाठ्य स्वीकृत नवीन ग्रन्थ)
आधुनिक नवीन पद्धति से संस्कृत तथा अंग्रेजी पढ़ने वाले छात्रों के लिए समालोचनात्मक भूमिका और हिन्दी व्याख्या ही पर्याप्त है। इसकी 'बालविबोधिनी' नामक व्याख्या में समास-विग्रह, कोश, व्याकरण आदि से ग्रन्थ के दुरूहांशों को विशेष स्पष्ट कर दिया गया है। संस्कृत का थोड़ा भी ज्ञान रखने वाले छात्र इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे १-००

१३२ **वृत्तरत्नाकरः ।** 'नारायणी' 'मणिमयी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः भट्टनारायणभट्टीव्याख्या सहित सुविस्तृत टिप्पणी, मणिमयी हिन्दी टीका विभूषित इस द्वितीय संस्करण से परीक्षार्थी विद्यार्थियों की सारी कठिनता दूर हो गई है। [का. ५५] ३-००

१३३ **वृत्तरत्नाकरः ।** मूल श्लोक तथा 'मणिमयी' हिन्दी टीका सहित [का. १४७] ०-५०

*१३४ **वृत्तरत्नावलि ।** वेङ्कटेशकृत । संस्कृतव्याख्या आंग्लानुवाद सहित नेट ४-००

१३५ **व्यक्तिविवेकः ।** राजानक महिमभट्ट प्रणीतः । श्रीराजानकरुय्यकेन विरचित व्याख्यया 'मधुसूदनी' विवृत्या च समेतः [का. १२१] यन्त्रस्थ

१३६ **हिन्दी व्यक्तिविवेक ।** विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक प्रस्तावना, परिशिष्ट सहित । व्याख्याकार—श्री रेवाप्रसाद द्विवेदी । यन्त्रस्थ

१३७ **शिशुपालवधम् ।** 'मल्लिनाथी' 'मणिप्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या आधुनिक नवीन इसकी 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका में मल्लिनाथी टीका का प्रायः अक्षरशः अनुवाद ही कर दिया गया है। साथ ही 'विमर्श' में वल्लभदेवी टीका की भी सुविस्तृत आलोचना की गयी है। इस ग्रन्थ में अनेकार्थक श्लोक अधिक हैं जो बहुधा परीक्षा में पूछे जाते हैं; हिन्दी टीका में विविध प्रकार से उनकी व्याख्या कर दी गयी है और विमर्श में उन ग्रन्थियों को और भी खोल दिया गया है। ग्रन्थ में आई हुई पौराणिक कथायें, प्रत्येक सर्ग के संक्षिप्त कथासार, महाकवि के इतिवृत्त तथा काव्य-महाकाव्यादि के लक्षण-भेद आदि से सुसज्जित यह संस्करण मौलिक संस्करण के रूप में हो गया है।
१-६ सर्ग २-०० संपूर्ण ८-००

१३८ **शिलालेखसंग्रहः** । व्याख्याकार—झाबन्धु ।

इस पुस्तक में रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख, समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख, कुमारगुप्त के मन्दसोर शिलालेख, स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख, पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल शिलालेख, महाराजचन्द्र के मिहरौली शिलालेख, महाराज यशोवर्मा के शिलालेख और वीसल देव के देहली-शिवालिक शिला लेख संगृहीत हैं। ये शिलालेख काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत और कल्चर की एम० ए० परीक्षा तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के साहित्य शास्त्री द्वितीय वर्ष की परीक्षा में निर्धारित हैं। इस पुस्तक में शिलालेखों के हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ उनके ऐतिहासिक महत्त्व और साहित्यिक वैशिष्ट्य का विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही ऐतिहासिक नामों और स्थानों के ऊपर विस्तृत टिप्पणी भी दे दी गयी है। शीघ्र प्रकाशित होगा

१३९ **शिशुपालवधम्** । परीक्षोपयोगि 'सुधा' व्याख्योपेतम् ।

परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिए इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक के क्रमशः अवतरण, श्लोकान्वय, नवीन सुधाव्याख्या, कोश, समासादि, व्याकरण, वाच्यपरिवर्तन, तात्पर्यार्थ, हिन्दीभाषार्थ, उपयुक्त टिप्पणियाँ, संस्कृत-हिन्दी कथासार, प्रश्नपत्र आदि विषय दिये गये हैं। १–२ सर्ग २-००

१४० **शिशुपालवधम्** । सान्वय-मल्लिनाथी व्याख्या सहितम् ।
[ह. ८०] १–३ सर्ग १-०० तथा १–२ सर्ग ०-७५

१४१ **शिशुपालवधम्** । (तृतीयसर्ग) मल्लिनाथी–वल्लभदेवीटीकाद्वयसहितम् ०-५०

*१४२ **श्रीरामानुजचम्पूः** । रामानुजाचार्यकृत । (सव्याख्यानम्) नेट ३-००

१४३ **श्रीलक्ष्मीसहस्रम्** । श्रीमद्वेङ्कटाध्वरिविरचितम् । श्रीनिवासपण्डित विरचित सुबोधिनीव्याख्यया अवतरणेन निःश्रेणिकया च सम्भूषितं सम्पूर्णम् ।
[चौ. २३] १६-००

१४४ **श्रुतबोधः** । श्रीसीतारामझाकृतया 'आशुबोधिनी' समाख्यव्याख्यया, संक्षिप्तछन्दोगणितादि सहितः [नि.] ०-७५

१४५ **श्रुतबोधः।** (अश्लीलांशवर्जितः) 'विमला' टीकोपेतः।
इस संस्करण में अल्पवयस्क बालकों को सरलता से झटिति छन्दों का ज्ञान कराने के लिये प्रति छन्द का अन्वय, व्याख्या, हिन्दी अनुवाद, समास, व्याकरण, उदाहरण, प्रत्युदाहरण तथा साथ ही साथ छन्दोमञ्जरी के भी लक्षण दे दिये गये हैं। ०-२५

१४६ **श्रुतबोधः।** पं० श्री कनकलाल ठक्कुर विरचित 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। ०-३५

*147 **Some Concepts of Alamkara Śāstra** by Dr. V. Raghavan Nett. 10-00

१४८ **शृङ्गारतिलकम्** (मूलमात्रम्) [चौ. पु.] ०-०५

१४९ **शृंगारशतकं।** भर्तृहरिकृत। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित १-००

१५० **संस्कृत-काव्य-कलिका।** डा० आद्याप्रसाद मिश्र एम० ए०
इस पुस्तक में प्रतिज्ञायौगन्धरायण के साथ-साथ महाराज रघु तथा राजकुमार अज के परम-पावन एवं उदात्त चरित वर्णित हैं। इसमें उनके अलौकिक तेज, पराक्रम तथा संस्कृतिमूलक आचार आदि के भी दिव्य दर्शन होते हैं। बालकों के सम्मुख रखने के लिये इससे बढ़कर दूसरा कोई उत्तम आदर्श नहीं है। [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य-स्वीकृत] ०-८७

१५१ **संस्कृत सूक्तिरत्नाकर।** डा० रामजी उपाध्याय कृत हिन्दी टीका सहित २-००

१५२ **समयोचितपद्यरत्नमालिका।** अकारादिक्रमेण सुभाषित पद्यों का अनुपम संग्रह [ह. १६५] ०-७५

१५३ **संस्कृत-गद्य-काव्यकैरवी।** प्रो० चारुदेव शास्त्री।
विश्वविद्यालय के छात्रों को संस्कृत गद्य का परिचय सुलभ कराने के उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है जिसमें सुबन्धु, दण्डी, बाणभट्ट आदि के आदर्शों के साथ कतिपय आधुनिक यशस्वी लेखकों की रचनाओं के अंश भी उपन्यस्त हैं। प्रारंभ में संस्कृत-कथासाहित्य का परिचय तथा अन्त में विस्तृत शब्दार्थ-संग्रह भी छात्रों की जानकारी के लिये दिया गया है १-७५

१५४ **संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः** (हिन्दी-व्याख्योपेत नवीन संस्करण) संपादक—श्री बृहस्पति शास्त्री।
नीति-ग्रन्थों के सारभूत समयोचित सुभाषितों के इस संग्रह की उपादेयता पर मुग्ध होकर बिहार संस्कृत विश्वविद्यालय ने इसको मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत कर लिया है। २-००

*१५५ **समस्यासमज्या**। (संस्कृत की १७२ दुरूह समस्याओं की लगभग ७५० श्लोकों में पूर्ति का अनुपम ग्रन्थ।) भागवताचार्यस्वामिकृत २-००

*१५६ **समीक्षाशास्त्र**। सीताराम चतुर्वेदी। विश्वसाहित्य में साहित्यसमीक्षा का सब से विशाल ग्रन्थ २१-००

१५७ **हिन्दी-साहित्यदर्पण**। 'शशिकला' हिन्दी व्याख्यासहित। व्याख्याकार, डॉ० सत्यव्रत सिंह, प्रो० लखनऊ विश्वविद्यालय
इस संस्करण की विशेषता—इस संस्करण में पहले सर्वबोध्य सुगम भाषा में मूल का व्यवस्थित अनुवाद अंकित किया गया है तत्पश्चात् विमर्शाख्य विशद व्याख्या प्रस्तुत की गई है जिसके द्वारा विषय की दुरूह ग्रन्थियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। इसमें कहीं भी मूल की उपेक्षा हुई प्रतीत नहीं होती। छोटे-छोटे वाक्योंवाली सरस, सरल एवं विषय के अनुरूप ललित भाषा का प्रयोग करके नाट्यशास्त्रकार, अभिनव भारतीकार, भावप्रकाशनकार, काव्यानुशासनकार तथा रसार्णवसुधाकर के रचयिता आदि अनेक साहित्यमर्मज्ञों के मतों की सहायता से भ्रामक मत-मतान्तरों के निरासपूर्वक इस कौशल से विषय का यथार्थ स्वरूप प्रतिपादित किया गया है कि एक बार पढ़ लेने मात्र से हृदयपटल पर विषय अंकित-सा हो जाता है। आरम्भ में एक सौ पृष्ठों की विस्तृत भूमिका है जिसमें कुछ अलङ्कारों पर वैज्ञानिक शोधसम्बन्धी दृष्टिकोण, स्वरूप तथा परस्पर वैषम्य सङ्केतित हैं। संपूर्ण १२-५०

१५८ **हिन्दी-साहित्यदर्पण** (षष्ठ परिच्छेद) शशिकला व्याख्या
विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस परिच्छेद की छात्रोपयोगी सर्वाङ्गपूर्ण व्याख्या कर दी गई है। व्याख्याकार—डॉ सत्यव्रत सिंह ४-५०

१५९ **साहित्यदर्पणम्** । सटिप्पण-'लक्ष्मी' टीकोपेतम् ।
काशी के सुप्रसिद्ध साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् साहित्यरत्नाकर श्रीमान् ताराचरण जी भट्टाचार्य के तत्त्वावधान में आचार्य श्री कृष्णमोहन शास्त्री साहित्याचार्य एम. ए. ने इस सुविस्तृत टीका की रचना की है। म० म० हरिहरकृपालु जी द्विवेदी, म० म० गोपीनाथ जी कविराज, म० म० नारायण शास्त्री जी खिस्ते, साहित्यरत्नाकर पं० महादेव शास्त्री जी, कविशेखर पं० बदरीनाथ झा जी, जयपुर के भट्ट मथुरानाथ शास्त्री जी प्रभृति भारत-विभूतियों ने प्रशंसापत्रों में मुक्तकंठ से इस टीका की प्रशंसा की है जो पुस्तक में प्रकाशित है। आधुनिक समालोचनात्मक सुविस्तृत प्रस्तावनादि से सुसज्जित सुसंस्कृत द्वितीय संस्करण। संपूर्ण १२-००

१६० **साहित्यदर्पणादर्शः** । (साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी)
इस प्रश्नोत्तरी में साहित्यदर्पण के सभी प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में परीक्षोपयोगी ढंग पर लिखे गये हैं तथा यथास्थान कोष्ठक देकर ग्रन्थाशय को सरल रूप में समझाया गया है जिससे अध्ययन के समय भी विद्यार्थियों को इस प्रश्नोत्तरी से अधिक सहायता प्राप्त होगी। १-२५

१६१ **साहित्य-निबन्धः** (अनेक शिक्षा संस्थाओं द्वारा स्वीकृत)
नवीन नियमावली के अनुरूप स्वशास्त्रविषयक निबन्ध लेख के लिये काशी के विद्वानों की सम्मति व निबन्ध के आधार पर इस अभिनव ग्रन्थ का निर्माण हुआ है। परीक्षा में पूछे जाने योग्य प्रायः सभी निबन्ध इस पुस्तक में लिखे गये हैं। साथ ही लक्षणा, व्यञ्जना, ध्वनि तथा रसनिरूपण पर विशेष प्रकाश डाला गया है। १-००

१६२ **सुवृत्ततिलकम्** । क्षेमेन्द्रकृतम [ह. २६] ०-२५

१६३ **सूक्तिसंग्रहः** । श्रीराक्षसकविकृतः । 'प्राज्ञविनोदिनी' व्याख्या संवलितः ०-२०

*१६४ **सौन्दरानन्दः** । अश्वघोषकृत । मूल संस्कृत और हिंदी अनुवाद संपूर्ण ३-००

*१६५ **हरिचरितम्** । परमेश्वरकृतम् । सटीक ७-५०

*१६६ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्** । कविचक्रवर्ती पं. श्री महादेव शास्त्री विरचित संस्कृत टीका हिन्दी व्याख्या सहित १-२५

१६७ **हर्षचरितम्** । (प्रथम उच्छ्वासः) जयश्री-कथाभट्टी संस्कृत हिन्दी टीका सहित । [ह. २९] १-२५

१६८ **हिन्दी हर्षचरित**—'सङ्केत' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहिता।

संस्कृत व्याख्या तथा विषयानुरूप सरल एवं सरस हिन्दी व्याख्या के साथ यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है। हिन्दी व्याख्या की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विद्यार्थियों को प्रत्येक संस्कृत पद का मूल के क्रम से व्यवस्थित अनुवाद प्राप्त होगा तथा साहित्यानुरागियों को कथावस्तु, काव्यसौष्ठव, पद-लालित्य आदि के साथ औपन्यासिक धारा का भी आनन्द प्राप्त होगा। यदि इस संस्करण की हिन्दी व्याख्या मात्र को आद्योपान्त पढ़ा जाय तो यह अपने आप में इतनी पूर्ण है कि स्वतंत्र मौलिक रचना प्रतीत होगी। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका भी महाकवि का वंशवर्णन, कवि की आत्मकथा, पात्रा-लोचन, कादम्बरी का परिचय और उससे तुलना, कथासार, आलोचना आदि विविध परीक्षोपयोगी ज्ञातव्य विषयों से विभूषित है। संस्कृत हिन्दी व्याख्या, विशद भूमिका एवं परिशिष्ट आदि से समन्वित यह ग्रन्थ अब हिन्दी तथा संस्कृत के छात्रों, अध्यापकों एवं साहित्यप्रेमियों के लिये समान रूप से पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय हो गया है। ६-००

१६९ **हितोपदेश मित्रलाभः** (प्रथम परीक्षा पाठ्य-स्वीकृतः)

सान्वय-किरणावली टीकासहित अश्लीलांश वर्जित यही ग्रन्थ प्रथम परीक्षा में पाठ्यरूप में स्वीकृत है। कोमलमति बालकों के लिए इसमें अन्वय, वाच्य-परिवर्तन, किरणावली व्याख्या, सरलभावार्थ तथा हिन्दीभाषार्थ आदि परीक्षोपयोगी सभी विषय दिये गये हैं। सबसे बड़ी विशेषता प्रस्तुत संस्करण की यह है कि अश्लीलांश का सर्वथा बहिष्कार करके इसे बालोपयोगी बना दिया गया है। [ह. ७७] षष्ठ संस्करण १-००

170 Historical and Literary Inscription : By Dr. Rajbali Pandeya. M. A., D. Litt. Shortly

नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः

१ **अभिनयदर्पण।** आचार्य नंदिकेश्वर रचित।

आलोचनात्मक परिचय तथा स्वतन्त्र हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

२ **अभिनव नाट्यशास्त्र** [हिन्दी] सीताराम चतुर्वेदी। प्रेस में

३ **अभिषेकनाटकम्।** महाकवि भास विरचित । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित। व्याख्याकार– आचार्य रामचन्द्र मिश्र । यन्त्रस्थ

४ **उत्तररामचरितम्।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्। प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तैलंग एम. ए. लिखित विशेष विवरण, 'नोट्स' समलंकृत इसकी सुविस्तृत सरल व्याख्या में प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन है जो किसी भी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है। यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी कालेज के छात्रों के लिए समानरूप से उपयोगी है। छपाई, कागज, रंगीन चित्र से सुसज्जित पक्की मनोहर जिल्द, गेटअप अत्यन्त सुन्दर। अभिनव द्वितीय संस्करण ४-५०

5 **Abhijnana Śakuntal : Text with Leteral English Translation and Notes By Monier Williams.** 15-00

६ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्।** 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रोफेसर कान्तानाथ शास्त्री तेलङ्ग सम्पादित। 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी टीका विस्तृत प्रस्तावना नोट्स सहित इस संस्करण में मूल के प्रत्येक पद का प्रतिशब्द—पर्याय, कोष, व्याकरण, समास, अलङ्कार, सरल हिन्दी भावार्थ आदि से ग्रन्थ के अभिप्राय को बड़ी सरलता से व्यक्त किया गया है। नवीन शिक्षापद्धति के अनुसार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तेलङ्ग शास्त्री जी ने नोट्स, महाकवि की जीवनी, समालोचनात्मक प्रस्तावना (शाकुन्तलसमीक्षा) आदि से इस संस्करण को अलंकृत कर पूर्ण परीक्षोपयोगी बना दिया है। हिन्दी में इस प्रकार का सुविस्तृत नोट्स, समालोचना और पात्रालोचन सहित कोई भी संस्करण नहीं है। अब संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी के छात्रों के लिए नवीन आकार-प्रकार का यह नवीन परिष्कृत संस्करण समान रूप से उपयोगी हो गया है। ६-००

७ **अविमारकम्।** महाकवि भास विरचित। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक भूमिका सहित। व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र। यन्त्रस्थ

८ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** (चतुर्थ अङ्क) श्री देवदत्त शास्त्री

विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुर्थ अङ्क की ऐसी अनुशीलनान्वयार्थ संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है कि परीक्षार्थी स्वयं इस ग्रन्थ का अनुशीलन कर सकेंगे। लगभग ४० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में महाकवि कालिदास और शाकुंतल का समीक्षात्मक विवेचन किया गया है। १-००

९ **अनर्घराघवम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। व्याख्याकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र।

संस्कृत नाटकों में प्रस्तुत नाटक अत्यन्त क्लिष्ट है अतः मिश्रजी विरचित 'प्रकाश' संस्कृत व्याख्या तथा हिन्दी व्याख्या के साथ यह नाटक प्रकाशित किया गया है। सरलता इस व्याख्या की प्रमुख विशेषता है। साथ ही साथ सर्वत्र छन्द एवं अलंकारों का भी निर्देश किया गया है। भूमिका में ग्रन्थकर्ता का विस्तृत जीवनवृत्त, उनके ग्रन्थ, उनका शास्त्र-पाण्डित्य, उनका कवित्व, फिर कथासार, कथा का आधार, पात्रालोचन आदि तथा परिशिष्ट में नोट्स, उपयोगी नाटकीय विषय, लक्षण सहित छन्द, सूक्तियाँ आदि उपयोगी विषय दिए गए हैं। ८-००

११ **कुन्दमाला।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित यन्त्रस्थ

५ **कृषकाणां नागपाशः** (रूपकम्)।

यदि आप मस्तिष्क पर विना जोर दिये धारावाहिक तथा फड़कती शैली में संस्कृत पढ़ना चाहते हों तो इस लघु पुस्तक को अपना साथी बनाइये। लेखक ने ग्रामीणपृष्ठभूमि पर आधृत रूपक के पात्रों में जान डाल दी है। सर्जन होते ही यह रूपक इलाहाबाद रेडियो स्टेशन के रंगमंच से पुरस्कृत हो चुका है। ०-५०

*१२ **उन्मत्तराघवम्।** विरूपाक्षकृतम्। नेट २-७५

१३ **ऊरुभङ्गम्।** महाकवि भास विरचित 'प्रकाश' नामक संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, आलोचना, कथासार सहित यन्त्रस्थ

१४ **कर्पूरमञ्जरी।** 'मकरन्द' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्या सहित।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी के उद्भट विद्वान् श्री रामकुमार आचार्य एम. ए. ने इस संस्करण में मूल (प्राकृत) के साथ ही साथ संस्कृत छाया को बैठाकर प्रतिपद की संस्कृत व्याख्या, व्युत्पत्ति, संस्कृत-हिन्दी टिप्पणी (नोट्स) आदि देकर हिन्दी में इस प्रकार की सरल व्याख्या कर दी है कि अंग्रेजी के छात्र भी इससे अधिक लाभान्वित होंगे। इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना, कथासार तथा विविध प्रकार के परिशिष्ट तो आधुनिक परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त ही उपादेय हैं। २-५०

*१५ **काश्मीरसन्धानसमुद्यमः** (रूपकम्) निपीजे भीमभट्ट कृतः। नेट १-००

१६ **कौमुदीमहोत्सवनाटकम्।** विज्जिका विरचित। हिन्दी व्याख्या विस्तृत भूमिकादि सहित। यन्त्रस्थ

१७ **चण्डकौशिक।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित यन्त्रस्थ

१८ **चारुदत्तम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।

महाकवि भास विरचित यह नाटक 'प्रकाश' नामक विस्तृत सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है। व्याख्या आधुनिक ढंग की है। इसकी आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका में पात्रालोचन, व्यवस्थित कथासार आदि के साथ अन्य उपादेय विषय भी हैं जिनसे छात्रों का अत्यधिक हित होगा। २-५०

*१९ **जीवानन्दम्।** आनन्दरायमखिकृत। संस्कृत व्याख्या सहित। नेट ३०-००

20 Dramas or A Complete Account of the Dramatic Literature of the Hindus : By H. H. Wilson. 4-00

२१ **दूताङ्गद-नाटकम्।** 'दूताङ्गद-चन्द्रिका' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्

ग्रन्थ के आरम्भ में महाकवि के ऐतिहासिक परिचय, संस्कृत-हिन्दी कथासार आदि भी दिये गये हैं। १-००

२२ **नाट्यशास्त्रम्।** (१-२ अध्याय सं. विश्वविद्यालय पाठ्य-स्वीकृत)

इस संस्करण की 'मयूख' नामक हिन्दी टीका में भरतमुनि के गूढ़ाशयों को बहुत ही सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है। ०-६५

२३ **नागानन्दनाटकम्।** 'भावार्थदीपिका' सं० हिन्दी व्याख्योपेतम्
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पं. बलदेव उपाध्याय जी ने आधुनिक सरल शिक्षा पद्धति के अनुकूल अपनी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिका एवं छात्रोपयोगी विविध विषयों से अलंकृत कर इस संस्करण को सर्वांगपूर्ण कर दिया है। यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के सभी छात्रों के लिये समान रूप से उपादेय है। ३-००

२४ **पञ्चरात्रम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।
व्याख्याकार आचार्य रामचन्द्र मिश्र की संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या ने मणि-काञ्चन संयोग कर दिया है। प्रवाह की दृष्टि से हिन्दी व्याख्या सर्वथा ही विषय के अनुकूल है। इसकी विस्तृत भूमिका में कथावस्तु से सम्बद्ध सभी पक्षों की विस्तृत विवेचना करके परिशिष्ट में नोट्स, नाटकीय विषयों पर पर्याप्त विवेचन, सुभाषित, शब्दार्थ एवं श्लोकानुक्रमणी आदि यथेष्ट सामग्री दी गई है। २-२५

*२५ **पृथ्वीराजरासो।** म. म. मथुराप्रसाद दीक्षितकृत हिन्दीटीका सहित १-००

२६ **प्रसन्नराघवम्।** 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।
मालतीमाधव, उत्तरराम-चरित आदि नाटकों के सफल टीकाकार आचार्य श्री शेषराज शर्मा जी ने प्रतिपद की व्याख्या, समास-विग्रह, कोश, अलंकार आदि देकर इस संस्करण को इतना सरल बना दिया है कि परीक्षार्थी स्वयं इसका अध्ययन कर परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकता है। इसकी समालोचनात्मक हिन्दी भूमिका, नोट्स तथा परीक्षोपयोगी आधुनिक विविध परिशिष्ट तो परीक्षार्थी छात्रों के लिये और भी अधिक उपादेय हैं। ४-००

२७ **प्रतिमानाटकम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्।
डा० सत्यव्रत सिंह एम. ए., पी-एच. डी., प्रो. लखनऊ विश्वविद्यालय कृत आधुनिक समालोचनात्मक परीक्षोपयोगी विशाल प्रस्तावना तथा नोट्स आदि से सुसज्जित आचार्य रामचन्द्र मिश्र कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या युक्त यह नवीन संस्करण संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी छात्रों के लिये समान रूप से उपादेय है। इस संस्करण में प्रतिशब्दपर्याय, कोश, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ, भाषार्थ तथा विविध प्रकार के आधुनिक परीक्षोपयोगी परिशिष्ट से ग्रन्थ के गूढ़ अभिप्राय को बड़ी सरलता से व्यक्त किया गया है। २-००

२८ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्** । 'प्रकाश' व्याख्योपेतम् ।

प्रकाश नामक संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ आलोचनात्मक टिप्पणी-नोट्स, हो जाने से यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है। आधुनिक परीक्षार्थियों के लिए तो इसकी आलोचनात्मक भूमिका ही पर्याप्त है। २-००

२९ **प्रबोधचन्द्रोदयनाटकम्** । 'प्रकाश' टीकोपेतम् ।

संस्कृत, हिन्दी तथा अंगरेजी छात्रों के लिये समान रूप से उपयोगी आधुनिक, सरल, सुबोध संस्कृत तथा सुललित राष्ट्रभाषा हिन्दी टीका एवं नाटक समीक्षा, नाटककार की जीवनी, इतिवृत्त, नोट्स, नाटकीय विषय आदि से सुसज्जित आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी के इस नवीन आविष्कार को देखकर आप भी चकित और प्रफुल्लित हो उठेंगे। २-५०

३० **प्रियदर्शिका** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता ।

आज-कल के आधुनिक सरल सुबोध संस्कृत-हिन्दी टीकाकारों में आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी का नाम सर्वोपरि है। इस नाटक को भी आपने व्याख्या, विग्रह, समास, अलङ्कार, हिन्दी अनुवाद, नोट्स, आदि से सर्वथा अलंकृत कर दिया है। २-००

३१ **बालचरितम्** । 'प्रकाश' नामक संस्कृत हिन्दी व्याख्या, समालोचना महाकवि भास का इतिवृत्त, कथासार आदि आधुनिक विविध विषयों से विभूषित । २-५०

३२ **महावीरचरितम्** । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

प्रतिपद का पर्याय, समास, कोश, अलङ्कार आदि देकर पदविन्यासों का आधुनिक प्रांजल राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। साथ ही परिशिष्ट में आधुनिक हिन्दी नोट्स, नाटकीय विषय आदि देकर तथा ग्रन्थ के आरम्भ में हिन्दी समालोचना, महाकवि की जीवनी, कथासार और गवेषणापूर्ण पात्रालोचन से सुसज्जित कर इस संस्करण को मौलिकता प्रदान की गयी है। ४-००

*३३ **भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप**-राय गोविन्दचन्द ५-००

३४ **मालविकाग्निमित्रम्।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम्।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने नाटकीय ढंग पर इसकी ऐसी सरल टीका लिखी है कि परीक्षार्थी स्वयं भी इस ग्रन्थ का अभ्यास कर सकते हैं ३-००

३५ **मुद्राराक्षस-नाटकम्।** 'शशिकला' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम्।
यों तो मुद्राराक्षस की संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी में कई टीकायें रहीं, किन्तु, नाटक की नाट्यशास्त्र, राजनीति आदि सम्बन्धी ग्रन्थियाँ उनके द्वारा सुलझ न सकीं अतः इस टीका में डा० सत्यव्रत सिंह विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्या तथा आधुनिक टिप्पणी द्वारा इस नाटक की विविध विशेषताओं की अभिव्यक्ति की गयी है। वस्तुतः यह टीका आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से लिखी हुई होने के कारण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी के छात्रों और साहित्यप्रेमियों के लिये समान रूप से उपयोगी है। ३-२५

३६ **मृच्छकटिकम्।** 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम्।
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के यशस्वी प्रोफेसर पं० कान्तानाथ शास्त्री तेलंग विरचित हिन्दी समालोचना, नोट्स आदि से सुसंस्कृत इसकी आधुनिक संस्कृत-हिन्दी टीका के सामने पूर्व प्रकाशित सभी टीकाएं व्यर्थ हो चुकी हैं। प्रत्येक विषय का इतना सुन्दर और सरल रीति से स्पष्ट प्रतिपादन किसी अन्य टीका में मिलना दुर्लभ है। परीक्षार्थी छात्रों को तो तेलंग शास्त्री विरचित हिन्दी रचना और नोट्स से ही पूर्ण संतोष हो जायगा। ६-००

*३७ **यज्ञफलम्।** महाकविभासप्रणीतम्। नेट ५-००

३८ **रत्नावली-नाटिका।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेता।
इस संस्करण की सब से अधिक विशेषता यह है कि मूल के प्रत्येक शब्द का पृथक् पृथक् पर्याय, कोश, व्याकरण, अलंकार, भावार्थ आदि देकर ग्रन्थ के अन्त में सरल राष्ट्रभाषा में विविध परिशिष्ट तथा आदि में समालोचनात्मक प्रस्तावना, कवि की जीवनी, संक्षिप्त कथासार आदि अनेकानेक विषयों से ग्रन्थ को पूर्ण सुसज्जित कर दिया गया है। व्याख्याकार आचार्य रामचन्द्र मिश्र। ३-००

३९ **मालतीमाधवं नाटकम् ।** 'चन्द्रकला' टीकोपेतम् ।

महाकवि भवभूति के सर्वश्रेष्ठ, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी सभी परीक्षाओं में पाठ्य स्वीकृत इस ग्रन्थ की यह सर्वांगपूर्ण संस्कृत-हिन्दी टीका तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी में ग्रन्थ की आधुनिक समालोचना, महाकवि की जीवनी, कथासार, नोट्स आदि अत्यन्त उपादेय है । ५–००

40 **Laws and Practice of Sanskrit Drama : By Dr. S. N. Shastri, M. A., D. Phil., LL. B. Vol. I.** 16–00

४१ **विक्रमोर्वशीयम् ।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकोपेतम् ।

महाकवि कालिदास तथा भवभूति के प्रायः सभी नाटकों पर आचार्य रामचन्द्र मिश्रजी की सरल सुवोध टीकायें प्रकाशित हो चुकी हैं जो छात्रों में विशेष सम्मानित हुई हैं । इस ग्रन्थ को भी आपने विस्तृत हिन्दी समालोचनादि से सुसज्जित कर ऐसा बना दिया है कि अंग्रेजी–हिन्दी के छात्रों को तो उसी से पूर्ण ज्ञान हो जायगा । ३–००

*४२ **वीरपृथ्वीराजविजयनाटकम् ।** म. म. मथुराप्रसाद दीक्षित १–२५

४३ **विश्वगुणादर्शचम्पुः ।** संस्कृत-हिन्दी व्याख्या भूमिकादि सहित । प्रेस में

४४ **वेणीसंहारनाटकम् ।** 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीकोपेतम् ।

इसमें टीका के साथ-साथ पात्र का लक्षण तथा नाटक, चम्पू, काव्य और महाकाव्य आदि के लक्षण भी जगह-जगह दे दिये गये हैं तथा विस्तृत 'भूमिका' में सम्पूर्ण ग्रन्थ की समालोचना एवं सभी अङ्कों का सुविस्तृत हिन्दी 'कथासार' भी लिख दिया गया है, जिससे हिन्दी, अंगरेजी के छात्रों को भी इस ग्रन्थ का कथानक समझने में बड़ी सुगमता हो गई है । परिष्कृत द्वितीय संस्करण [ह. १२१] ३–००

*४५ **संकल्पसूर्योदयनाटकम् ।** वेङ्कटनाथकृतम् । प्रभाविलास–प्रभावली व्याख्याद्वयसहितम् १–२ भाग नेट ४५–००

४६ **सत्यहरिश्चन्द्रनाटक ।** (छात्र-संस्करण) समालोचना, टिप्पणी सहित । शुभाशंसक–पं० बाबूराव विष्णुपराड़कर ०–६५

४७ **स्वप्नवासवदत्तम्।** 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतम्। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पं० कान्तानाथ शास्त्री तेलंग सम्पादित समालोचनात्मक हिन्दी प्रस्तावना से सुसज्जित संस्कृत-हिन्दी टीका का यह अभिनव संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी छात्रों के लिये अधिक उपादेय है। अंग्रेजी छात्रों के लिये तो शास्त्री जी की समालोचनात्मक भूमिका ही परीक्षा के लिये पर्याप्त है। महाकवि भास की जीवनी, पात्रालोचन, कथासार तथा ग्रन्थसम्बन्धी आलोचनात्मक परीक्षोपयोगी सभी विषय इस संस्करण में दिये गये हैं। २-५०

४८ **हनुमन्नाटक।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचनादि सहित यन्त्रस्थ

४९ **हिन्दी के पौराणिक नाटक।** डॉ० देवर्षि सनाढ्य-संस्कृत, हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परंपरा का इतिवृत्त इस शोध ग्रंथ में उपस्थित किया गया है। १०-००

❋संगीत-ग्रन्थाः

१ आवाज सुरीली कैसे करें। २—००

२ कत्थक नटवरीनृत्य। ३—५०

३ कथक नृत्य। ८—००

४ कथकलि नृत्यकला। २—५०

५ कुचेलोपाख्यान। अजामिलोपाख्यान। रामवर्मा कृत ०—३७

६ क्रमिकपुस्तकमालिका। १-६ भाग ४५—००

७ ताल अङ्क। ४—५०

८ तालमार्तण्ड। ५—००

९ **दत्तिलम्।** आचार्य दत्तिल विरचित। संगीतशास्त्र का यह प्राचीनतम ग्रन्थ अधिक श्रम से प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी व्याख्याकार श्रीदेवदत्त शास्त्री यन्त्रस्थ

१० ध्वनि और संगीत। ४—००

११ नलदवदन्तीरास। महीराजकृत। भोगीलाल जे० सांडेसरा संपादित ४—२५

१२ बाँसरी बजरही। रुद्र सहितना मुण्डा लोकगीत ८—००

१३ बेलाविज्ञान। ४—००

१४ बैंजोमास्टर। २—००

१५ भातखण्डे संगीतशास्त्र। १-४ भाग ३२—००

१६ भारतीय संगीत का इतिहास १२-५०
१७ महिला हारमोनियम गाइड। १—५०
१८ मृदङ्गसागर। ५—००
१९ मेलरागमालिका। महावैद्यनाथ शिव कृत ५—००
२० म्यूजिक मास्टर। २—००
२१ रविशंकर के आरकेस्ट्रा। ५—००
२२ राग अने रास। ओंकारनाथ ठाकुर (गुजराती) १—७५
२३ रागनिर्णय। २—५०
२४ रागपरिचय। १-३ भाग ७—००
२५ राग विज्ञान। १-६ भाग २४—००
२६ रागविबोधः। सोमनाथ कृत स्वकृत विवेक व्याख्या सहित १५—००
२७ वाद्यशास्त्र। १—५०
२८ वीणा लक्षण-वीणा प्रपथक। जे० एस पान्दे संपादित ३—५०
२९ संगीत कादम्बिनी। ५—००
३० संगीत किशोर। १—५०
३१ संगीत चूडामणि। जगदेक मल्ल कृत ६—५९
३२ संगीतदर्पणः। चतुरदामोदरप्रणीत ३-३७
३३ संगीतदर्पणः। हिन्दी टीका सहित २—००
३४ संगीतपारिजातः। हिन्दी टीका सहित ४—००
३५ संगीतफिल्म। २२, २४, २७ एवं २९ वां भाग १६—००
३६ संगीत निबन्धमाला। २—००
३७ संगीतमालिका। महम्मदशाहकृत। जे० बो० चोधरी सम्पादित ५—००
३८ संगीतरत्नाकरः। शार्ङ्गदेव कृत। चतुरकल्लिनाथ सिंह भूपालकृत व्याख्याद्वय सहित १-४ भाग ९०-००
३९ संगीत रहस्य। श्री पदवन्धोपाध्याय २—२१
४० संगीतराजः (पाठ्यरत्नप्रवेश)। कालसेन महारानाकुम्भ कृत। कुन्हनराजा सम्पादित प्रथम भाग ३—००
४१ संगीतलहरी। संग्रहकर्त्री—देवी मेहता १—००
४२ संगीतविशारद। ५—००
४३ संगीत शास्त्र। १—००
४४ संगीत शास्त्र। के० वासुदेव शास्त्री ६—५०
४५ संगीतशास्त्र दर्पण। १-२ भाग ४—५०
४६ संगीतशास्त्र परिचय। १-२ भाग १—२५
४७ संगीतसागर। ६—००
४८ संगीतसीकर। ५—००
४९ संगीत सुधा सागर। २—००
५० संगीतसोपान। ३—००
५१ संगीतोपनिषद्सारोद्धार। वचनाचार्य सुधाकलश विरचित १०—००
५२ संग्रहचूडामणि। गोविन्दाचार्यकृत १५—००
५३ सितार अङ्क। २—५०
५४ सितार मार्ग। १-३ भाग १५—००
५५ सितार मालिका। ५—००
५६ सूर संगीत। १-२ भाग ३—००
५७ स्वरमेलकलानिधिः। हिन्दी टीका सहित १—००
५८ हमारे संगीत रत्न। १५—००

59 Evolution of Song & Life of Great Musicians. Nett. 3—37

नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः

* १ अभिलषितार्थचिन्तामणिः । सोमेश्वरदेवकृत । नेट २–५०

• 2 Indian Cameralism by K. V. Rangaswamy Aiyangar Nett. 12—00

३ कौटिल्य अर्थशास्त्र (हिन्दी व्याख्या सहित)

व्याख्याकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला ।

प्रस्तुत अनुवाद में इस बात को पूरी तरह ध्यान में रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो । अर्थशास्त्र के अध्ययन की दिशा में एक बड़ी कमी यह दिखाई देती है कि सारे ग्रन्थ को समाप्त कर लेने के बाद भी छात्र प्रस्तुत विषय की गहनता एवं व्यापकता से अछूता ही रहता है; और आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र का क्या महत्त्व है, इस सम्बन्ध में तो उसका ज्ञान सर्वथा ही नहीं होता । इन कमियों को दूर करने के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्य संघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों और उनके बाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त का समीक्षण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन जैसे राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों की समीक्षा भी विस्तार से की गई है। इन बातों के अतिरिक्त ग्रन्थ के 'परिशिष्ट में अर्थसहित एक पारिभाषिक शब्दावली भी संलग्न की गई है। जिससे कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

१६–००

४ कौटिल्य का अर्थशास्त्र (शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर)

रूपान्तरकार—श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला ।

आलोचनात्मक मनोवैज्ञानिक विमर्श, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश ऐतिहासिक प्रस्तावनादि सभी विषयों से विभूषित । १०–००

५ **कथासंवर्तिका** (बालोपयोगी मनोरम कथानक संग्रह)

सन्धिविरहित अति सरल तथा सारगर्भित संस्कृत में लिखी कथाओं की यह पहली पुस्तक है, जो आपके मन को अनायास खींचे बिना न रहेगी। कहानियाँ अपने ढंग की निराली होती हुई भी नीति और शिक्षापूर्ण हैं। प्रत्येक कथा के आदि में नीतिवाक्य अथवा शिक्षा-वाक्य उद्धृत होने से पुस्तक और भी उपादेय बन गई है। ०-७५

६ **चाणक्यसूत्रम्** । (प्रथमोऽध्यायः)। 'बालबोधिनी'-'सरला-संस्कृत-हिन्दीटीकासहितम् [ह. ८५] ०-४५

७ **पञ्चतन्त्रम्** । 'सरला' हिन्दी व्याख्योपेतम् ।

व्याख्याकार—श्री गोकुलदास गुप्त बी० ए०

संपूर्ण विश्व पंचतंत्र की उपयोगिता से परिचित है यद्यपि यह ग्रन्थ सरल संस्कृत भाषा में है तथापि हिन्दी मात्र के ज्ञाता तो उसका आनन्द नहीं उठा सकते। इस ग्रन्थ की जो अन्यान्य हिन्दी टीकाएँ प्रकाशित हुई भी हैं वे इस कोटि की हैं कि संस्कृत के ज्ञाता ही उनसे लाभान्वित हो सकते हैं। अतः आधुनिक ढंग की यह व्यवस्थित सरल हिन्दी टीका प्रस्तुत की गई है। इस टीका की यह विशेषता है कि केवल हिन्दी जानने वाले भी पंचतंत्र की कथाओं में आए हुए उपदेशों तथा नीतितत्त्वों से भली भाँति अवगत हो जायँगे। यह संस्करण विद्यार्थियों अध्यापकों एवं साहित्य तथा नीतिप्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

मित्रभेद (प्रथमतन्त्र) २-५० मित्रसम्प्राप्ति (द्वितीयतन्त्र) १-००
काकोलूकीय (तृतीयतन्त्र) १-२५ लब्धप्रणाशम् (चतुर्थतन्त्र) ०-७५
अपरीक्षितकारक (पञ्चमतन्त्र) ०-७५ संपूर्ण अजिल्द ४-००
सजिल्द ५-००

८ **पञ्चतन्त्रम्** । अश्लील-अंश-वर्जितम् काशीस्थ राजकीय सर्वविध 'प्रथमा' तथा 'मध्यमा' परीक्षा निर्धारित विषमस्थलबोधिनीविवृति सहितम् [ह. १३]
पञ्चमतन्त्र ०-१५ सम्पूर्ण २-००

९ पञ्चतन्त्रं-मित्रभेदः (प्रथमतन्त्रम्) पूर्वमध्यमा परीक्षानिर्धारित अश्लील अंशवर्जित 'बोधिनी' नामक विवृति सहितः ०-७५

१० पञ्चतन्त्रम् (अपरीक्षितकारकम्) 'सुबोधिनी' व्याख्योपेतम्। अश्लीलांशवर्जित संस्कृत-हिन्दी टीका, टिप्पणी, संक्षिप्त-कथा, शिक्षासंग्रह, विस्तृतभूमिका आदि विषयों से विभूषित [ह. १३] ०-७५

*११ प्रियदर्शिप्रशस्तयः Edicts of Asoka with Sanskrit and English translation. Nett. 12—00

*१२ धर्मचौर्यरसायन। गोपालयोगीन्द्रकृत नेट २-२५

१३ नीतिशतकम्। 'ललिता' 'बाला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहितं। भर्तृहरि योगीन्द्र प्रणीत इस नीति शतक के १०० श्लोक बालक-बालिकाओं को अभ्यास करा देने से निश्चय ही उनका जीवनस्तर उन्नत हो जायगा १-००

*१४ नीतिमंजरी। श्री द्याद्विवेदविरचिता सभाष्या। भूमिका टिप्पणी परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता ४-५०

*१५ भारत राष्ट्र संघटना नेट २-००

१६ विदुरनीतिः। 'तत्त्वार्थदर्शिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहिता। स्वतन्त्र भारत के जनतन्त्र राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को साधारण व्यावहारिक नीति के साथ ही राजनीति जानना भी परमावश्यक हो गया है। यह ग्रन्थ महाभारत के उद्योगपर्व के अन्तर्गत प्रजागरपर्व में विदुरजी द्वारा राजा धृतराष्ट्र को समझाई गई नीति 'विदुरनीति' के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से प्रत्येक व्यक्ति नीति में निपुण होकर योग्य नागरिक तथा राष्ट्रनेता बन सकता है। २-००

*१७ वैशम्पायननीतिप्रकाशिका। सीतारामकृत तत्त्वविवृति सहिता ४-१२

१८ शुक्रनीति। हिन्दी व्याख्या सहित यन्त्रस्थ

*१९ हरिहरचतुरङ्गम्। गोदावरीमिश्रप्रणीतम्। नेट ६-५०

कोश-ग्रन्थाः

१ आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोशः। प्रो० रामसरूप शास्त्री।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हिन्दीज्ञाता और संस्कृतज्ञान के इच्छुक लोगों के लिए यह ऐसा प्रामाणिक कोश तैयार हुआ है कि जिसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति सहज ही संस्कृत सीख सकेगा। इस कोश में लगभग चालीस सहस्र हिन्दी-हिन्दुस्तानी शब्दों तथा मुहावरों के विश्वसनीय संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक शब्द का लिंगनिर्देश भी किया गया है। हिन्दी क्रिया पदों के संस्कृत धातुओं के गण, पद, सेट, अनिट्, वेट्, णिजन्त आदि के रूप भी दिये गये हैं। कोश की उपयोगिता पर डॉ० सूर्यकान्तशास्त्री, श्रीविश्वबंधु शास्त्री, महामहोपाध्याय श्री परमेश्वरानन्द शास्त्री, आदि-आदि विद्वानों ने अपनी-अपनी अमूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं। १२-५०

२ अमरकोशः। 'मणिप्रभा' हिन्दीव्याख्योपेतः।

हिन्दी व्याख्या में मूल श्लोकों के पर्याय, लिङ्ग, पाठान्तर और मतान्तर के पर्याय, अन्य ग्रन्थों या कोषों में मिलने वाले आंशिक सामनाकार बांहरी शब्द तथा हिन्दी में अर्थ दिये गये हैं और 'अमरकौमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणी में वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण और साहित्यादि अनेक ग्रन्थों से प्रमाण-वचन, पाठान्तर आदि, तथा अक्षौहिणी सेना, मन्वन्तर काल, द्रोण खारी आदि परिमाण (तौल) इत्यादि के अनेक चक्र भी दिये गये हैं।

प्रथम काण्ड ०-७५ द्वितीय काण्ड २-००, १-३ काण्ड सम्पूर्ण ६-००

३ अमरकोशः-मूल। प्रथम काण्ड मात्र ०-२०

४ अमरकोशः-मूल। द्वितीय काण्ड मात्र [नि.] ०-४०

५ अमरकोशः। तृतीय काण्ड मात्र। प्रभा टीका सहित. ०-५०

६ अमरकोशः। [गुटका सम्पूर्ण] परीक्षोपयोगी 'प्रभा' टीका सहित।

यह प्रामाणिक संस्कृत टीका यद्यपि परीक्षा की दृष्टि से संक्षिप्त है पर कोई विषय छूटा नहीं है। हिन्दी में भी निर्देश किया गया है कि ये इतने अमुक के नाम हैं। छात्रों के लिये विशेष उपयोगी संस्करण है १-५०

७ अनेकार्थध्वनिमञ्जरी। द्विरूपकोश-एकाक्षरकोश सहिता [नि.] ०-१५

८ आख्यातचन्द्रिका नाम क्रियाकोषः। श्रीभट्टमल्लविरचितः २-००

९ अनेकार्थसंग्रहः कोशः। हेमचन्द्रविरचितः ४-००

१० गणितीय कोश। (गणितीय परिभाषा तथा गणितीय शब्दावली)
लेखक डॉ० व्रजमोहन एम० ए०, एल० एल० बी०, पी-एच० डी०, प्राध्यापक, गणित विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ९-००

*११ प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश। रामचन्द्र वर्मा १२-५०

*१२ बंगला-हिन्दी-शब्दकोश। गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ७-००

*१३ मानस शब्दसागर। संकलनकार-बद्रीदास अग्रवाल २०-००

१४ मेदिनीकोशः। मेदनीकारविरचितः। नवीन संस्करण ३-००

*१५ विशेषामृतम्। त्र्यम्बकमिश्रकृत नेट १-००

१६ विश्वप्रकाशकोशः। हिन्दी टीका भूमिकादि सहितः यन्त्रस्थ

*१७ श्याम संक्षिप्त हिन्दी कोश ४-००

*१८ श्याम गुटका हिन्दी कोश २-५०

१९ श्रीकोश। (बालकोपयोगी हिन्दी से संस्कृत जेबी कोष)।
इसमें लिङ्ग, क्रियाविशेषण, संज्ञा, भाववाचक संज्ञा आदि का निर्देश समुचित रूप से दिया गया है। एक्सरे, कुर्सी, टेवुल, आलमारी, बेंच, म्युनिसिपैलिटी, कचहरी, जज, कोतवाल, थानेदार आदि वर्तमान चलते-फिरते शब्दों के प्रामाणिक संस्कृत शब्द (जिनके अनुवाद के समय संस्कृत बनाने में आप लोगों को कठिनाई पड़ती थी) अनेक संस्कृत कोश के सहारे सप्रमाण उद्धृत किए गये हैं। इस संस्करण में एक परिशिष्ट भी जोड़ा गया है १-२५

•20 Twentieth Centuary English Hindi Dictionary by Sukhsampattirai Bhandari. Vols. I–VII. 90-50

•21 Practical Sanskrit Eng. Dictionary by A. A. Macdonell Nett. 33-60

•22 Sanskrit-English Dictionary by V. S. Apte. Revised edition. Complete in 3 Vols. Nett. 125-00

•23 Sanskrit English Dictionary by. M. Monier Williams. Nett. 100-80

24 English Sanskrit Dictionary by M. Monier Williams 45-00
•25 Dictionary of Indian Birds. Nett. 15-00
•26 Great English-Indian Dictionary by Dr. Raghuvira Parts. 1-II. Nett. 20-00
*२७ संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ। पं० द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी १५-००
*२८ सर्वतन्त्रसिद्धान्तपदार्थलक्षणसंग्रहः। इस जेबी शब्दकोश में अकारादि क्रम से शास्त्रीय शब्दों के ८९०१ लक्षण संगृहीत हैं। ०-७५
*२९ हिन्दी बंगला-शब्दकोश। गोपालचन्द्र चक्रवर्ती ५-००

कामशास्त्र-ग्रन्थाः

१ अनङ्गरङ्गः। कल्याणमल विरचितः। हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ
२ कामकुंजलता। [चौ० सी०] यन्त्रस्थ
३ **हिन्दी कामसूत्र : (जयमंगला टीका सहित)**
व्याख्याकार: देवदत्तशास्त्री।

वात्स्यायन का कामसूत्र और उसकी 'जयमंगला' टीका जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ पर यह हिन्दी व्याख्या अपनी निजी विशेषताएँ रखती है। व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श लिख कर इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या कामसूत्र की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना ही बन गई है शीघ्र प्राप्त होगा

४ कामसूत्रम्। जयमङ्गल रचित संस्कृत व्याख्या सहितम्। १०-००
+५ कामकला। विजयबहादुर सिंह ४-५०
*६ केलिकुतूहलम्। म० म० मथुराप्रसाददीक्षित विरचितम् २-००
*७ केलिकुतूहलम्। हिन्दी टीका सहित ४-००
८ पञ्चसायकः-नर्मकेलिकौतुकसंवादश्च। कविशेखर श्री ज्योतिश्वराचार्य तथा कविराज मुकुटेन दण्डिना विरचितः [चौ. पु.] १-००
९ रतिमंजरी। महाकविजयदेवेन विरचिता। मूलमात्र [चौ. पु.] ०-१०
१० रतिमंजरी। हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद सहिता [चौ. पु.] ०-४०
११ रतिरत्नप्रदीपिका। श्रीप्रौढदेवराज विरचिता [चौ. पु.] १-००
*१२ रतिरहस्यम्। कांचीनाथ कृत दीपिका टीका टिप्पणी सहितम् ३-००

तन्त्रशास्त्र-ग्रन्थाः

1 Abhinava Gupta : An Historical & Philosophical Study by Dr. Kanti Chandra Pandeya (Chow. Sans. Studies. Vol. I.) Revised Edition. 30-00

•2 Introduction to the Ahirbudhnya Samhita Nett. 10-00

३ काथवोधः । साजनीकृत टीकोपेतः [का. ५२] ०-५०

*४ कौलावलीनिर्णयः । ज्ञानानन्द परमहंसकृत । नेट ४-००

*५ कौलावली निर्णय । रमादत्त शुक्ल । हिन्दी भाषा मात्र । ३-००

*६ कौलोपनिषद्-त्रिपुरोपनिषद्-भावोपनिषद् । सटीक नेट २-००

७ क्रमदीपिका । जगद्विजयिश्रीकेशवभट्टाचार्य प्रणीता । विद्याविनोद श्रीगोविन्दभट्टकृत विवरणोपेता । 'गुरुभक्तिमन्दाकिनी' व्याख्या सहिता 'लघुस्तवराजस्तोत्र' विभूषिता च [चौ. ४९] ६-००

८ गायत्रीतन्त्रम् । श्रीमच्छङ्करमुखविनिःसृतम् । गायत्री-शापोद्धार-गायत्रीकवच-दशमहाविद्यास्तोत्रैः संभूषितम् ०-७५

९ गायत्रीपूजापद्धतिः । श्री विभाकराचार्यसंगृहीता [ह. ३१] ०-२५

*१० चिद्गगनचन्द्रिका । श्री कालिदासकृत । नेट २-००

*११ ज्ञानसंकलनीतंत्र । ०-२०

१२ तन्त्रसारः । म० म० श्रीकृष्णानन्दवागीशभट्टाचार्य विरचितः । २-००

*१३ तन्त्रसारसंग्रहः (विषनारायणीयं) सटीकः । नारायणकृतः नेट १५-२५

*१४ तन्त्राभिधान-बीजनिघण्टु-मुद्रानिघण्टुः । नेट ३-५०

*१५ तान्त्रिक पञ्चाङ्ग । स्वामीजी महाराज दतिया । १-०९

१६ तारापारिजातः । यन्त्रस्थ

१७ त्रिपुरारहस्यम् । माहात्म्यखण्डम् । ८-००

१८ दुर्गापञ्चाङ्गम् । [ह. ११८] ०-७५

१९ दुर्गासप्तशती । स्थूलाक्षर । पत्रात्मक २-००

*२० पारमेश्वरसंहिता । (पाञ्चरात्रान्तर्गत) नेट १५-००

२१ पुराणसंहिता । श्रीमद्वेदव्यास विरचिता । आळमन्दार संहिता-बृहत्सदाशिवसंहिता-सनत्कुमारसंहिता संवलिता [चौ. सी.] ८-००

२२ **पूतनाशान्तिः** । शिशुतोषिणी हिन्दी टीका सहितः ०-२०

*२३ **पौष्करसंहिता** । नेट ७-५०

२४ **महामृत्युञ्जयपञ्चाङ्गम्** । [ह. ८९] समाप्त

२५ **माहेश्वरतन्त्रम्** । अस्य माहेश्वरतन्त्रस्य मुद्रणं न कुत्रापि सञ्जातमित्यालोच्य एतत्तन्त्रशास्त्रं पाठभेदादियोजनपुरःसरं परमपुरुषोत्तमपादसरोजानुरागिणां तन्त्रशास्त्रोपासकानामुपकाराय सम्मुद्रापितम् [चौ. ८५] ६-००

*२६ **रामार्चामाहात्म्यम्** (कथा-पूजा) नेट ०-७५

*२७ **वरिवस्यारहस्यम्** । भासुरानन्दनाथकृत व्याख्या सहितम् नेट १०-००

*२८ **शारदातिलकम्** । श्रीमद्राघवभट्टकृत 'पदार्थादर्शटीका' सहितम् । १८-००

२९ **सात्वततन्त्रम्** । (वैष्णवतन्त्रम्) एतत्तन्त्रं नारायणेन शिवायोपदिष्टं शिवेन नारदायेति ग्रन्थतो ज्ञायते [चौ. ७९] २-००

*३० **श्रीपाञ्चरात्ररक्षा** । श्रीवेदान्तदेशिककृत । नेट १५-००

*३१ **प्रपञ्चसारतन्त्रम्** । शङ्कराचार्यकृतं । पद्मपादाचार्यकृतव्याख्यासहितं १५-००

*३२ **ब्रह्मसंहिता** । श्रीजीवगोस्वामिकृत व्याख्या सहिता तथा विष्णुसहस्रनाम शाङ्करभाष्य सहिता नेट ३-००

33 YUGANADDHA by Dr. Herbert V. Guenthar. (Chow. Sans. Studies. Vol. III) Rs. 8-00

*३४ **षट्चक्रनिरूपणं-पादुकापञ्चकम्** । सव्याख्यानम् नेट ३-००

*३५ **षट्चक्रनिरूपणम्** । सचित्र । भाषा टीका १-५०

+३६ **साङ्गसप्तशतिः गुटिका** । १-२५

३७ **श्रीमहालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेव पूजा विधान पूजनमीमांसा, सम्पुटित श्रीसूक्त आदि विविध परिशिष्ट युक्त । हिन्दी टीका सहित १-००

*३८ **श्रीविद्यास्तवमञ्जरी** । २-५०

*३९ **श्रीश्यामासपर्यावासना** । प्रातःकृत्य से लेकर समस्त अर्चनविधान के एक-एक अङ्ग का दार्शनिक विवेचन । ३-००

*४० **श्री काली-नित्यार्चन** । अर्गला, कीलक, कवच आदि स्तोत्र सहित २-००

*४१ **श्री कालीस्तवमञ्जरी** । हिन्दी अनुवाद सहित २-५०

*४२ **श्री कालीस्वरूपतत्त्व** । भगवती आद्या के ध्यान का आध्यात्मिक रहस्य ०-३७

*४३ श्री तारास्तवमञ्जरी १-२५ | *४४ श्री भुवनेश्वरी-नित्यार्चन २-००
*४५ श्री तारास्वरूपतत्त्व १-०० | *४६ श्री वगला-नित्यार्चन १-००
*४७ श्री तारा-नित्यार्चन १-५० | *४८ श्री वगलापूजापद्धति १-००
*४९ श्री श्रीविद्या-नित्यार्चन। २-५०
*५० श्री बालास्तवमञ्जरी। भगवती बाला त्रिपुरसुन्दरी के त्रैलोक्यविजय कवच, हृदय, अष्टोत्तरशतनाम, खड्गमाला, मालातन्त्र, सहस्रनाम, कर्पूरादि स्तवराज, शान्ति-स्तोत्र जैसे अनूठे स्तोत्रों और श्रीबाला के सूक्त उपनिषद् आदि का अनूठा संग्रह। १-२५
*५१ हिन्दी शाक्तानन्दतरङ्गिणी। शाक्तधर्म के मूल सिद्धान्तों का परिचय देने में अति उपयोगी। २-००
*५२ मन्त्रसिद्धि का उपाय। मन्त्र-साधना की सभी गुत्थियों के सुलझाने में सद्गुरु-समान। १-२५
*५३ साधक का सम्वाद। एक शक्ति-साधक की आत्मकथा, जो शाक्तधर्म की जानकारी रोचक ढङ्ग से कराती है। ३-५०
*५४ मातृ-उपासना। सात्विक भावों से पूर्ण मातृ-उपासना का रूप एवं माहात्म्य १-५०
*५५ वन्दे मातरम्। महामन्त्र 'वन्दे मातरम्' का रहस्य १-००
*५६ वाममार्ग। परिचय नाम ही से प्रकट है २-००
*५७ आनन्दलहरी। हिन्दी टीका व विस्तृत व्याख्या सहित १-२५
*५८ सार्थ सौन्दर्यलहरी। प्रत्येक श्लोक की टीका और व्याख्या के साथ उसके यन्त्र-मन्त्रात्मक प्रयोग का हिन्दी में पहला और वेजोड़ प्रकाशन २-५०
*५९ सप्तशतीरहस्य। पहले खण्ड में दार्शनिक दृष्टिकोण से सप्तशती के आध्यात्मिक तत्त्व की विवेचना और उसकी उपासना की तान्त्रिक पद्धति, दूसरे खण्ड में मूल सप्तशती और उसके अङ्गों का संग्रह २-५०
*६० दुर्गा सप्तशती। शब्दशः पद्यानुवाद। संस्कृत न जाननेवालों द्वारा नित्यपाठ के उपयुक्त। ०-५०
*६१ शतचण्डी-विधान। मण्डप, कुण्ड, होमद्रव्य आदि से लेकर पूरी प्रयोग-विधि। १-७५

*६२ चक्रपूजा के स्तोत्र। निशापूजा में पठित गुरु, पात्रवन्दना, उल्लास, शान्ति, नीराजन आदि सभी स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह ०-३७

*६३ विनय सुधा। उक्त स्तोत्रों के आधारपररचित हिन्दी पद्यों का संग्रह १-००

*६४ हिन्दुओं की पोथी। जेवी पुरोहित २-००

*६५ श्री भगवती गीता। पद्यानुवाद व व्याख्या सहित ३-००

*६६ श्री भैरवोपदेश। गीता के समान महत्त्वपूर्ण पुस्तक २-५०

*६७ उपदेश मुक्तावली। रहस्य भरा भजन-संग्रह। १-४ भाग ७-००

*६८ मुमुक्षु-मार्ग। एक अनूठी कृति। १-३ भाग ६-००

*६९ गायत्री तत्व विमर्श। अपने विषय में बेजोड़ १-००

*७० पञ्चमकार तथा भावत्रय। " २-००

*71 Pratyabhijnahrdayam. Text and English translation by K. F. Leidecker. 10-00

Works By Sir John Woodroffe (Arthur Avalon)

*1 Introduction to Tantra Shastra (A Key to Tantrik Literature) 5-00

*2 Principles of Tantra (Tantra Tattva) 30-00

*3 Shakti & Shakta (Essays and Addresses) 25-00

*4 Saundarya Lahari with Sanskrit Commentaries and English translation. 25-00

*5 The Great Liberation (Mahanirvana Tantra) Text Translation and Commentary. 30-00

*6 Tantraraja Tantra. 6-00

*7 The Serpent Power (Kundalini Shakti) Text and Translation with Notes. 25-00

*8 Garland of Letters (Studies in Mantra Shastra) 15-00

*9 Wave of Bliss (Anandalahari) 3-00

*10 Greatness of Shiva (Mahimnastava of Pushpadanta) 3-00

*11 Hymn to Kali (Karpuradi Stotra) Text & Commentary with English translation and Notes. 6-00

*12 Hymns to the Goddess (From Tantras and Stotras of Shankaracharya) 6-00

*13 Is'opanisad Text and Commentary with English Translation. 3-00

*14 Mahāmāyā (The World as Power: Power as Consciousness) by Sir John Woodroffe & P. N. Mukhopadhyaya. 10-00

*15 The World as Power (Reality, Life, Mind, Matter, Causality & Continuity) 15-00

वैदिक-ग्रन्थाः

*१ **अथर्ववेदसंहिता** । सायणभाष्य-हिन्दी अनुवाद सहित २००-००

*२ **अथर्ववेद संहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । १-२ भाग । श्रीरामशर्मा आचार्य १२-००

३ **आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका** । भट्ट मञ्जनाचार्यविरचिता ४-००

४ **हिन्दी-ऋग्वेदभाष्य-भूमिका** ।

व्याख्याकार-श्री जगन्नाथ पाठक ।

सायणचार्य के 'ऋग्वेद्भाष्य भूमिका' की यह हिन्दी व्याख्या बहुत ही उपयोगी और ग्राह्य शैली में प्रस्तुत की गई है, जिससे विद्यार्थी और इस विषय के जिज्ञासु लाभान्वित होंगे। एम० ए० के विद्यार्थियों के लिये तो यह संस्करण विशेष उपयोगी बन गया है। पहले मूल ग्रन्थ को छाप करके बाद में उसके सारे तथ्यों को पूर्णरूप से हिन्दी में विवेचन करके समझाया गया है और साथ ही सायणाचार्य के जीवन तथा साहित्य पर भी विचार किया गया है। ३-००

५ **ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्** । उव्वटभाष्य सहितम् [ब. १४] समाप्त

*६ **ऋग्वेद संहिता** । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । १-३ भाग । श्रीरामशर्मा आचार्य । २१-००

*७ **ऋग्वेदसंहिता** । सायणभाष्य पदादिसूची सहिता १-५ भाग संपूर्ण नेट १३५-००

*८ **ऋग्वेदव्याख्या** । माधवकृत व्याख्या । द्वितीय भागमात्र । नेट २०-००

९ **चरणव्यूहः** । महर्षिशौनकप्रणीतः आचार्य महिदासकृतभाष्ययुक्तः ०-५०

१० **चतुर्वेदभाष्यभूमिकासंग्रहः।** (सायणाचार्यविरचितानां स्ववेदभाष्यभूमिकानां संग्रहः) सम्पादक पं० बलदेव उपाध्याय। सायणाचार्य कृत भाष्यभूमिका सहित तैत्तिरीय संहिता, ऋक्, साम, यजुः और अथर्व इन चतुर्वेदभाष्यभूमिका नामक इस संग्रह ग्रन्थ के इस द्वितीय संस्करण को उपाध्याय जी ने इस बार बहुत ही छान-बीन के साथ शुद्ध, सुन्दर और मनोरम सम्पादित किया है। [का. १०२] ५-००

११ **ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्।** सायणाचार्यविरचितभाष्य सहितम्। १-२ भाग सम्पूर्णम् २५-००

१२ **हिन्दी निरुक्त।** व्याख्याकार- प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' सभी विश्वविद्यालयों में १ से ४ और ७ वां अध्याय पाठ्य स्वीकृत है। अतः इस परीक्षोपयोगी संस्करण को इसी रूप में रखकर अनुवाद शब्दशः किया गया है तथा वैदिक मन्त्रों के अन्वय और शब्दार्थ के साथ अर्थ दिये गये हैं। यथा स्थल अनुसन्धानात्मक टिप्पणियाँ भी की गयी हैं। अन्त में वैदिक मन्त्रों का हिन्दी-अनुवाद तथा प्रारम्भ में १२५ पृष्ठों की सर्वांग पूर्ण समालोचनात्मक भूमिका भी दी गयी है जो छात्रों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ६-२५

१३ **निरुक्तम्।** (निघण्टुः) देवराजयज्व (दुर्गाचार्य) कृत टीका सहितम्। १-४ भाग १८-००

*१४ **नीतिमञ्जरी।** सभाष्या श्रीद्याद्विवेद विरचिता। भूमिका-टिप्पणी-परिशिष्टादिभिः संयोज्य सम्पादिता ४-५०

+१५ **पाणिन्यादि (द्वात्रिंशत्) शिक्षासंग्रहः।** दुष्प्राप्य ५०-००

*१६ **पादविधानम्।** शौनककृतम्। नेट १-५०

*१७ **पितृसंहिता-पितृकल्पः।** रामगीता सहित ०-७५

१८ **पुष्पसूत्रम्।** (सामप्रातिशाख्यं) पुष्पर्षिप्रणीतम्। श्रीमदजातशत्रुकृत-भाष्य सहितम् [चौ. ५७] ६-००

१९ **पुरुषसूक्तम्।** 'बालबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका तथा अनुष्ठान-विधान भी ग्रन्थारंभ में दिया गया है। ०-१५

२० **पुरुषसूक्तम्।** सायणभाष्य-महीधरभाष्य-मंगलभाष्य-निम्बार्कमतभाष्य चतुष्टय सहितम्। [का. १२] १-२५

२१ **मन्त्रार्थदीपिका।** म० म० श्रीशत्रुघ्नमिश्रविरचिता। सटीक। [का. १०८] परिष्कृत द्वि० संस्करण ५-००

+२२ **माध्यन्दिनीयपितृसूक्तम्।** (सस्वरम्) ०-५०

*२३ **यज्ञतत्त्वप्रकाशः।** म० म० श्री चिन्नस्वामि शास्त्रिकृतः। नेट ४-००

२४ **रुद्रस्वाहाकारपद्धतिः।** [ह. १६८] ०-१५

२५ **वैदिक इण्डेक्स।** मैकडोनेळ और कीथ (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक-डॉ० रामकुमार राय।

अनुवाद की सर्वाधिक विशेषता यह है कि इसमें सन्दर्भ संकेत संख्यायें तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है। इस व्यवस्था के कारण जो निःसन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है।
संपूर्ण ग्रन्थ दो भागों में प्रकाशित किया जायगा।

प्रथम भाग छपकर तैयार है। २०-००

[द्वितीय भाग शीघ्र प्रकाशित होगा]

*२६ **वैदिक माइथौलोजी** (वैदिक पुराकथाशास्त्र) प्रो. ए. ए. मैकडॉनल (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक-डॉ. रामकुमार राय।

यह ग्रन्थ वेद की आत्मा का भासमान प्रदीप है। वैदिक देवताओं का रहस्य जानना यदि अभीष्ट हो तो इस ग्रन्थरत्न को अवश्य पढ़कर लाभ उठाइये। १५-००

+२७ **वैदिक सेलेक्सन।** आचार्य रामकृष्ण शास्त्री।

इसमें बी० ए०, एम० ए० तथा शास्त्री परीक्षाओं में स्वीकृत वैदिक सूक्तों की सारगर्भित परीक्षोपयोगी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। यन्त्रस्थ

*२८ **हिन्दी वैदिक व्याकरण** । श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय ।
बी० ए० तथा एम० ए० परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नवनिर्मित इस पुस्तक में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रियारूपों का एक लघु कोश भी प्रकाशित किया गया है । १-५०

*२९ **वैदिकसंध्याभाष्य** । ०-५०

३० **शतपथब्राह्मणम्** । [सस्वरम्] सम्पादक-म० म० श्रीचिन्नस्वामीशास्त्री [का. १२७] १ से ७ काण्ड ६-००

३१ **शुक्लयजुर्वेदकाण्वसंहिता** । श्रीसायणाचार्यविरचितभाष्यसहिता १-२० अध्यायपर्यन्ता [का. ३५] ८-००

३२ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । रुद्राभिषेकमाहात्म्य, स्वस्ति-प्रार्थनामन्त्राध्याय, शान्त्यध्यायादि विविध परिशिष्ट सहित ०-४०

*३३ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । हिन्दी टीका सहित सजिल्द ३-००

३४ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । 'श्रीविद्या' हिन्दी टीका विभूषिता । यज्ञीय पात्रादि का लक्षण विधान आदि विविध विषयों से समलंकृत । ०-५०

*३५ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सायणभाष्यावलम्बो सरल हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीराम शर्मा आचार्य ६-००

*३६ **शुक्लयजु० माध्य० बृहद् मन्त्रसंहिता** । ५२३ मन्त्रेयुक्त ३-००

*३७ **शुक्लयजुर्विधानसूत्रम्** । ६-००

+३८ **शुक्लयजुस्सर्वानुक्रमसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीतम् । श्रीयाज्ञिकानन्तदेवविर-चितभाष्यसहितम् [ब. १३] ६-००

३९ **शुल्वसूत्रम्** । श्रीकर्कभाष्य-महीधरवृत्तिसहितम् [का. १२०] ०-५०

४० **श्रीसूक्तम्** । विद्यारण्य-पृथ्वीधर-श्रीकण्ठाचार्यकृतभाष्यत्रयेण टिप्पण्या च समलङ्कृतम् । [का. ४] ०-७५

*४१ सामवेदसंहिता। सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित। श्रीराम शर्मा आचार्य ५-००

*४२ सामवेद। स्वामि भगवदाचार्य कृत सामसंस्कार भाष्य नामक हिन्दी अनुवाद सहित। १-३ भाग संपूर्ण नेट १५-००

४३ सामवेदीयरुद्रजपविधिः-पञ्चवक्त्रपूजनम्, लघुरुद्रविधानयुतञ्च। १-५०

४४ सामवेदीय आह्निकं-उपाकर्मपद्धति (श्रावणी) सहितम्। सामवेदाचार्य पं० दुर्गादत्तत्रिपाठिसम्पादितम् १-७५

४५ सामवेदीयत्रिकालसन्ध्यातर्पणप्रयोग सटिप्पण ०-१५

४६ सांख्यायनगृह्यसंग्रहः। पं० वासुदेवकृतः तथा—कौषीतकिगृह्यसूत्राणि च [व. ३६] २-००

४७ स्वस्त्ययनकलशप्रतिष्ठापूजनविधिः। [चौ. पु.] ०-१०

48 Studies in Vedic Interpretation : By Sri A. B. Purani. Shortly

*49 Sama Veda Samhita (English Translation) Rev. J. Stevenson. D. D. 12-00

*50 Jaiminiya-Brahmana of the Samaveda. Complete Text. Edited by Dr. Raghuvira. 30-00

*51 Atharvaveda of the Pippaladas. Ed. by Dr. Raghuvira. 40-00

*52 Samaveda of Jaiminiya by Dr. Raghuvira. 10-00

पाकशास्त्रम्

१ नलपाकः (पाकदर्पण)। नलविरचितः। सम्पूर्णः [का. १] १-५०

*२ पाकचन्द्रिका ६-०० *३ पाकविज्ञान २-००

*४ वृहत् पाक संग्रह ४-०० *५ वृहत् पाकावली। हिन्दी टीका १-२५

*६ स्वादिष्ट अचार। श्रीमती आद्यादेवी। २-००

समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः

१ **अक्षर अमर रहें।** (निबन्ध-संग्रह) श्री वाचस्पति शास्त्री गैरोला।

यह निबन्ध-संग्रह संस्कृत हिन्दी के सामान्य विद्यार्थियों तथा शोधकार्य-रत स्नातकों के लिये पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, शोध और कला की दृष्टि से विशेष उपयोगी है। ५-००

२ **अवन्तिकुमारियाँ।** श्री देवदत्त शास्त्री।

इस पुस्तक में तीन अवन्ति कुमारियों (अवन्ति सुन्दरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है। यद्यपि तीनों कहानियाँ पृथक्-पृथक् हैं किन्तु ऐसा प्रतीत होता है, कि मानों वह किसी उपन्यास के तीन परिच्छेद हैं। भाषा की प्राञ्जलता, सरसता और शब्दचयन की मधुरता से कहानियाँ अत्यन्त रसमयी एवं मुखर उठी हैं २-००

३ **ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य।** बी० एम० चिन्तमणि। वाराणसी की शास्त्री परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।

लेखक ने इस नवीन कृति में हिन्दी के उपन्यासों, विशेषकर ऐतिहासिक उपन्यासों की बहुत सुन्दर समीक्षा प्रस्तुत की है। नयी सूझ-बूझ और गंभीर मन्थन की परिचायक यह रचना हिन्दी के आलोचना-क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन है। ३-००

+४ **कवि और काव्य।** पं० बलदेव उपाध्याय एम. ए. ३-००

५ **काव्यवल्लरी।** श्री व्यथित हृदय

प्रस्तुत पुस्तक में प्राचीन एवं अर्वाचीन हिन्दी कवियों के अलंकार युक्त उपदेशात्मक पद्य-रचनाओं का सुन्दर संकलन है, आरंभ में एक सौ पृष्ठों की विस्तृत समालोचनात्मक भूमिका है जिसमें हिन्दी-साहित्य के

इतिहास पर भी उत्तम प्रकाश डाला गया है। प्रत्येक कवि की रचना देने से पूर्व उस कवि का जन्म-जन्मस्थान, शिक्षा-दीक्षा, जीवनवृत्त, रचनाएं, भाषा-शैली आदि के विवेचन से युक्त समालोचनात्मक परिचय भी दिया गया है। हिन्दी पद्य-साहित्य के ज्ञान के लिए यह सर्व श्रेष्ठ पुस्तक है। ४-००

६ **कृष्ण भक्ति में सखी भाव।** (सचित्र) शरणविहारी गोस्वामी प्रेस में

७ **गोस्वामी तुलसीदास।** आचार्य श्री सीताराम चतुर्वेदी

तुलसीदासजी के जन्मकाल, जन्मस्थान, जीवन की अनेक घटनाओं और उनकी रचना के विषय में जो अनेक प्रकार के भ्रामक मत-मतान्तर प्रचलित हैं उन सबका युक्तियुक्त समन्वयात्मक निराकरण और तुलसी-साहित्य की उन प्रमुख विशेषताओं से परिचित होने के लिये यह ग्रन्थ है जिनकी ओर सामान्य समीक्षकों का ध्यान अबतक नहीं पहुच पाया था। ३-००

८ **चिन्तन के नये चरण।** श्री देवदत्त शास्त्री।

भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, पुराण-उपनिषद्, नृत्य-नाटक-अभिनय-ये पाँच इस पुस्तक के विषय-स्तम्भ हैं। इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं। विद्यार्थियों को तो इन निबन्धों में नई दृष्टि, नई चेतना और अनुसन्धान के नये आयाम मिलेंगे। ६-००

९ **जीवनदर्शन।** डॉ० मुंशीराम शर्मा। वाराणसी की उत्तर मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।

जीवन क्या है? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे। २-५०

१० **पाणिनिकालीन भारतवर्ष।** (पाणिनिकृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डा० वासुदेवशरण अग्रवाल।

इस ग्रन्थ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। ऐसे २००० शब्दों की अकारादि-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है। लेखक की मान्यता है प्राचीन भारतीय संस्कृति-विषयक प्रामाणिक जानकारी प्राप्त करने के लिये पाणिनीय सामग्री का अध्ययन आवश्यक है। १५-००

११ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** प्रो० जगदीशचन्द्र जैन।

वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम अवतरित हुआ है। २०-००

प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन। डॉ० रायगोविन्दचन्द

भारत के विभिन्न स्थलों पर खोदाई में जो मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं उनके कलात्मक आकार के आधार पर भारतीय सभ्यता के विकास का आरम्भ से लेकर गुप्तकाल तक इतिहास इस पुस्तक में वर्णित है। १२-००

+१३ **प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति।**

डॉ० राजबली पाण्डेय प्रेस में

१४ **भक्ति का विकास।** डा० मुंशीराम शर्मा

परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्मकल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा। २०-००

१५ **भारतस्य सांस्कृतिक निधिः।** डा० रामजी उपाध्याय १२-००

१६ **भारतीय इतिहासपरिचय।** डॉ० राजबली पाण्डेय। यन्त्रस्थ

१७ **भारतीय भाषा विज्ञान।** पं० किशोरीदास वाजपेयी।
भारतीय भाषाओं का मौलिक पद्धति पर विवेचन-विश्लेषण और वर्गीकरण इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है। ६-२५

१८ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा।** डॉ० भोलाशंकर व्यास। प्रेस में

१९ **मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद।** डॉ० कपिलदेव पाण्डेय।
वैदिक साहित्य से लेकर उत्तर मध्यकालीन साहित्य तक के अवतारवादी रूपों और प्रवृत्तियों का विशद विवेचन इस ग्रंथ का मुख्य विषय है। शीघ्र प्राप्त होगा

२० **मराठी का भक्ति साहित्य।** प्रो० भी० गो० देशपाण्डेय
मराठी के भक्ति-साहित्य के विभिन्न काव्यरूपों के मूल स्रोत और विकास का मनोवैज्ञानिक ढंग से हिन्दी में अत्यन्त प्रामाणिक एवं सटीक विवेचन किया गया है। साधारण संस्करण ८-०० राज संस्करण १०-००

२१ **महाकवि कालिदास।** आचार्य रामशंकर तिवारी।
अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण सामग्री का विवेक पूर्ण उपयोग कर कालिदास का देश-काल तथा उनकी सौन्दर्य भावना, प्रेम भावना, काव्यादर्श, लोकादर्श आदि विषयों को १८ अध्यायों में प्रामाणिक विवेचना की गई है। ७-५०

२२ **महाकवियों की अमर रचनायें।** श्री चक्रधर शर्मा।
वाराणसी की पूर्व मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।
इस पुस्तक में संस्कृत के विख्यात महाकवियों (बाणभट्ट, कालिदास, भवभूति, भारवी, माघ आदि) के जीवनवृत्त एवं उनकी प्रमुख उत्कृष्ट रचनाओं का हिन्दी में सुसम्बद्ध, संक्षिप्त कथानक औपन्यासिक, सरस एवं आकर्षक ढङ्ग से विन्यस्त किया गया है। इसे एक बार पढ़ लेने से ही उन महाकवियों एवं उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में सभी आवश्यक विषय भली प्रकार ज्ञात हो जायेंगे। २-००

२३ **लौकिक संस्कृत साहित्य।** (Classical Sanskrit Literature by A. B. Kieth) अनुवादक— श्री चारुचन्द्र शास्त्री।

अनुवाद में स्थान-स्थान पर मूल ग्रन्थों के उद्धरण देकर बड़े श्रम के साथ ग्रन्थ का सम्पादन हुआ है। शीघ्र प्राप्त होगा

२४ **विक्रमादित्य** [संवत्–प्रवर्तक]। डा० राजबली पाण्डेय

सम्राट् विक्रमादित्य को ऐतिहासिक सिद्ध करने वाला यह बहुत ही शोधपूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वह सभी संगत सामग्री एकत्रित की गई है जिससे पूर्वाग्रहरहित कोई भी पाठक अपने ढङ्ग से निष्कर्ष निकाल सकता है। १०—००

*२५ **विविधार्थ**—डा० भगवानदास। वाराणसी की उत्तर मध्यमा में पाठ्य स्वीकृत। ५–००

२६ **वैदिक साहित्यचरित्रम्।** नेट ३–००

२७ **संस्कृत-कवि-दर्शन।** डॉ० भोलाशङ्कर व्यास।

समाज-शास्त्र को वैज्ञानिक आधारभित्ति को लेकर कवियों पर निजी मौलिक उद्भावनाएं उपन्यस्त कर विद्वान् लेखक ने व्यावहारिक समीक्षा को दार्शनिक रूप दिया है। ग्रन्थ का नामकरण भी इसका सङ्केत करता है। कई कवियों के विषय में ऐसे मौलिक सङ्केत किये गये हैं, जो अनुसन्धान-कर्ताओं को मार्ग-दिशा दे सकते हैं। साहित्यिक समाज को बहुत दिनों से संस्कृत कवियों पर हिन्दी में सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और समाजशास्त्रीय आलोचना का अभाव खटकता था। डॉ० व्यास ने इस अभाव की पूर्तिकर दी है। शास्त्री, आचार्य तथा बी० ए०, एम० ए० और साहित्यरत्न की परीक्षाओं में निबन्ध और इतिहास के लिये यह पुस्तक अधिक उपादेय है ६–००

२८ **संस्कृतवाङ्मयपरिचय।** (संस्कृत ऐतिहासिक ग्रन्थ) पण्डित मधुसूदन प्रसाद मिश्र (शास्त्री परीक्षोपयोगी)

वेद से लेकर बीसवीं सदी तक के संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों का उद्गम-काल, इतिहास, रचयिताओं के संक्षिप्त इतिवृत्त इस ग्रन्थ में दिए गये हैं। संस्कृत साहित्य में इस ढङ्ग का यह श्रेष्ठ प्रथम ग्रन्थ है। १—५०

२९ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** आर्थर मैक्डॉनल (हिन्दी संस्करण) अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री

मैक्डॉनल-प्रणीत 'हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर' अपने विषय का सर्वमान्य तथा सर्वत्र पाठ्य स्वीकृत ग्रन्थ है। प्रस्तुत ग्रन्थ उसी का सरस अनुवाद है जो छात्रों तथा अध्यापकों के लिये नितान्त उपयोगी है। प्रथम भाग ७-५०

*३० **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (बृहत् संस्करण) वाचस्पति गैरोला।

आर्यों का आदि देश एवं आर्य-भाषाओं के उद्भव से लेकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत-साहित्य की जिन विभिन्न विचार वीथियों का निर्माण हुआ और राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा। २०-००

३१ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।** (छात्र संस्करण) श्री वाचस्पति गैरोला।

इस छात्रोपयोगी संस्करण में विभिन्न संस्कृत-हिन्दी विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहास विषयक ज्ञान के लिए वैज्ञानिक दृष्टि से संक्षिप्त रूप में इतिहास लिखा गया है और साथ ही संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का ऐतिहासिक संक्षिप्त अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है; जो अन्य किसी भी संस्करण में प्राप्त नहीं हो सकेगा। यही इस संस्करण की विशेषता है। ८-००

३२ **संस्कृत साहित्येतिहासः** (संस्कृत) आचार्य रामचन्द्रमिश्र

इसमें वेद-वेदांग आदि से लेकर यथाक्रम काव्यकाल तथा वैशिष्ट्य विवेचन आदि विषय हैं। अतिविस्तृत विषय को संक्षिप्त करना साधारण छात्रों के लिये कष्टकर होता है अतः संक्षेप में ही विषय का यथार्थ ज्ञान कराया गया है ४-००

३३ **सब धर्मों की बुनियादी एकता।** डॉ० भगवानदास।
इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मजहबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है १२-००

*३४ **समन्वय**—डा० भगवानदास। परिवर्धित संस्करण ५-००

३५ **सावित्री सत्यवान।** श्री राजनारायन शुक्ल। वाराणसी तथा विहार की मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।
इस पुस्तक में औपन्यासिक रूप से भावुकतापूर्ण कथा का सृजन करके विद्वान् लेखक ने महाभारतीय सावित्री उपाख्यान को सर्वथा नवीन एवं परमोपादेय रूप दिया है जो प्रत्येक बालक-बालिका तथा वयस्क के लिये भी अनिवार्य रूप से पठनीय है। २-००

३६ **साहित्य और सिद्धान्त।** प्रो० श्यामलाकान्त वर्मा।
वाराणसी की उत्तर मध्यमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।
हिन्दी साहित्य एवं काव्यशास्त्र के सम्पूर्ण ज्ञातव्य विषयों का सार-सङ्कलन स्वरूप यह ग्रन्थ छात्रों, अध्यापकों तथा अनुसन्धित्सुओं के लिए परम उपयोगी है। ३-००

३७ **हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ।**
श्री व्यथित हृदय। वाराणसी शास्त्री परीक्षा पाठ्य स्वीकृत।
इसमें सरल और सुबोध ढङ्ग से हिन्दी के उन सर्वमान्य कवियों और उनकी कविताओं की आलोचना की गई है, जो उच्च कक्षाओं में अध्ययन के लिये सर्वत्र स्वीकृत हैं। समीक्षा और विषय-विवेचन में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ही प्रमुख रूप से महत्व दिया गया है। ३-५०

३८ **हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त काव्य।**
डा० प्रभाकर माचवे।
इस ग्रन्थ में दक्षिण और उत्तर की भाषाओं के आरम्भिक भक्ति-साहित्य के साम्य और विभेद पर सामाजिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यशास्त्र-विषयक मान्यताओं के परिपार्श्व में प्रामाणिक अध्ययन तथा १२वीं से १५ वीं सदी के भारतीय वाङ्मय का एक रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। यह लेखक के १० वर्षों से अधिक के परिश्रम का निचोड़ है। १२-००

३९ **हिन्दी के पौराणिक नाटक।** डॉ० देवर्षि सनाढ्य, शास्त्री, एम० ए०, पी०-एच० डी०

भारतीय पुराणों ने किस प्रकार भारतीय जन मन को प्रभावित किया है और किस प्रकार पुराण की दिव्य कथाओं ने भारतीय मनीषा को प्रेरित किया है, इन सब का प्रामाणिक विवरण इस शोध-ग्रन्थ में उपस्थित किया गया है। संस्कृत, बंगला, मराठी, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, तेलगु, तमिल, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परम्परा का इतिवृत्त उपस्थित करते हुए लेखक ने हिन्दी के पौराणिक नाटकों का आलोचनात्मक इतिहास भी इस ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है और इस प्रकार यह सिद्ध कर दिया है कि भारतीय जनरुचि, संस्कृति तथा सभ्यता के मूल में एक ही प्रेरणा काम कर रही है। १०-००

४० **हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ।** लेखक—थि० गोल्डस्टकर। अनुवादक—श्री चारुचन्द्र शास्त्री।

वैदिक काल में आर्यों की संस्कृति और सभ्यता एवं उनके आचार, विचार कितने समुन्नत थे तथा किन उत्कृष्टतम ग्रन्थों से इसका प्रामाणिक विवरण प्राप्त होता है इसका विशुद्ध विवेचन राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम बार ही प्रकाशित किया गया है। ४—००

४१ **हिन्दू संस्कार।** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डा० राजबली पाण्डेय। वाराणसी की शास्त्री परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत।

यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण देन है। गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है। हिन्दू जीवन के आदर्श, महत्त्वाकांक्षा, आशा और आशंका आदि सभी मानसिक प्रक्रियाओं पर यह पर्याप्त प्रकाश डालता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अंगों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते

हैं। मानव-जीवन बराबर रहस्यपूर्ण रहा है। उसका प्रादुर्भाव, विकास और तिरोभाव मानव मन को बराबर आन्दोलित करते हैं। संस्कारों ने इस रहस्य की गम्भीरता को थहाने और प्रवहमान रखने में बराबर योग दिया है। हिन्दू जीवन को, एक प्रकार के मार्ग और पद्धति के रूप में, अक्षुण्ण रखने में संस्कारों का बड़ा हाथ है। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के अध्ययन के परिणाम इस गन्थ में समाविष्ट हैं। १५—००

*42 Abanindranath Tagore (His Life and Arts) Dr. Rai Gobind Chandra. 18-00

*43 Historical and Literary Inscription by Dr. Rajbali Pandeya, M. A., D. Litt. Shortly

†44 History of Indian Literature by Albercht Weber. Translated from the Second German Edition by John Mann, M. A., and Theodor Zachariale Ph. D. 25-00

45 Fall of Mogul Empire: By Sidney J. Owen. M. A., Second Edition. 8-00

46 History of Ancient Sanskrit Literature: By F. Max Muller. 25-00

47 Studies in the Development of Ornaments and Jewellery in Protohistoric India: By Dr. Rai Govind Chanda. Shortly

बौद्ध-ग्रन्थाः

१ सौगतसिद्धान्तसारसङ्ग्रह । डॉ० चन्द्रधर शर्मा ।

इस ग्रन्थ में भगवान् बुद्ध के उपदेशों से लेकर जब तक भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव रहा तब तक के आचार्यों के उपलब्ध दार्शनिक ग्रन्थों में से बौद्धदर्शन के सारभूत तत्त्वों का संग्रह किया गया है। ग्रन्थ के पाँच परिच्छेद हैं—(१) पालिवाङ्मय, (२) महायान सूत्र, (३) शून्यवाद, (४) विज्ञानवाद और (५) स्वतन्त्रविज्ञानवाद। साथ में हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है जिसमें पारिभाषिक शब्दों और भावार्थ को भी स्पष्ट किया गया है। ५-००

२ **बौद्धदर्शन मीमांसा ।** आचार्य बलदेव उपाध्याय ।

इसमें पांच खण्ड हैं । प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक संप्रदायों के गूढ़तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पंचम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है । इस ग्रंथ की उपादेयता पर प्रसन्न होकर उत्तर प्रदेश की सरकार ने विद्वान् लेखक को १०००) तथा डालमिया पुरस्कार २१००) से पुरस्कृत कर सम्मानित किया है । अभिनव द्वितीय संस्करण ६-००

३ **अवदानकल्पलता ।** श्रीक्षेमेन्द्रविरचिता [चौ. पु.] ०-२५

*४ **आर्यशालिस्तम्बसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादविभङ्गनिर्देशसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादगाथासूत्रम् ।** नेट ९-००

५ **न्यायबिन्दुः ।** संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेतः ।

इसमें तीन परिच्छेद हैं । प्रथम परिच्छेद में प्रत्यक्ष, द्वितीय में स्वार्थानुमान और तृतीय में परार्थानुमान का वर्णन है । इसकी हिन्दी टीका में मूल के साथ धर्मोत्तराचार्यकृत संस्कृत टीका का भी सांगोपांग अनुवाद करके भूमिका में गौतमन्याय, जैनन्याय तथा बौद्धन्यायों का क्रमिक उपचयापचय तथा विकास की समालोचना करते हुए बौद्धदर्शन का संपूर्ण संक्षिप्त इतिहास भी लिख दिया गया है । बौद्धदर्शन प्रेमी विद्वानों के लिये यह द्वितीय संस्करण अवश्य ही अवलोकन योग्य है । ५-००

*६ **जातकमाला ।** हिन्दी टीका सहित । १-२० जातक ३-००

*7 **Buddhist Esoterism by Dr. B. Bhattacharya.**

In this fascinating production the author has given a lucid account of the Psychological and Cultural currents that led to the development of Tantric Mysticism in India. It was mainly concerned with sound vibration of Mantras which reacted directly on Ether or the Akasha Tattva over which the Tantrics gained immense control. A perusal of the book will be both illuminating and profitable. Rs. 30-00

जैनदर्शनम्

*१ तत्त्वार्थसूत्रम् । उमास्वामिविरचितम् । भास्करानन्द विरचित सुखबोध-व्याख्या सहितम् । नेट २-७५

*२ प्रमेयरत्नालङ्कारः । अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य विरचितः । नेट ३-५०

३ स्याद्वादमञ्जरी । श्रीमल्लिषेणनिर्मिता । श्रीमदार्हतधुरन्धर श्रीसिद्धहेमचन्द्र-निर्मितवीतरागस्तुतिव्याख्या सम्पूर्णा [चौ. ९] ३-००

*४ सुत्तागमे । तत्थणं एक्कारसंगसजुओ पठमो अंसो । सम्पादगो-पुप्फभिक्खू १-२ भाग ६४-००

भारतीय ज्ञानपीठ की पुस्तकें

*१ कन्नडप्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थसूची । १३-००

*२ केवलज्ञानप्रश्नचूड़ामणि । हिन्दी टीका सहित ४-००

*३ जातकट्ठकथा । पठमो भाग । भिक्षुधर्मरक्षित सम्पादित । एककनिपात-वण्णता । ९-००

*४ जिनसहस्रनाम । आशाधर विरचित । श्रुतसागरसूरि प्रणीत व्याख्या हिन्दी टीका सहित । ४-००

*५ जीवन्धरचम्पू । ८-००

*६ जैनेन्द्र महावृत्तिः । आचार्य अभयनन्दि प्रणीत १५-००

*७ तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक) अकलङ्कदेवकृत । हिन्दी सार सहित । १-२ भाग २४-००

*८ तत्त्वार्थवृत्तिः । महेन्द्रकुमार सम्पादित १६-००

*९ नाममाला । धनञ्जय विरचित । अमरकीर्ति भाष्य सहित ३-५०

*१० न्यायविनिश्चयः । अकलङ्कदेव कृत । वादिराजकृत विवरण सहित । १-२ भाग ३०-००

*११ पञ्चसंग्रह । संस्कृत व्याख्या प्राकृत वृत्ति हिन्दी टीका सहित १५-००

*१२ पद्मपुराण (जैन) १-३ भाग । हिन्दी टीका सहित ३०-००

*१३ पउमचरिउ (पद्मचरित) स्वयंभूदेव विरचित । विद्याधर-अयोध्या-काण्ड । हिन्दी अनुवाद सहित १-३ भाग ९-००

*१४ **पुराण सार संग्रह** । दामनन्दी विरचित । १–२ भाग । हिन्दी टीकासहित । ४–००

*१५ **महापुराण** । (आदि पुराण) १–२ भाग हिन्दी टीकासहित २०–००

*१६ **महापुराण** । (उत्तर पुराण) हिन्दी टीका सहित १०–००

*१७ **महावन्धः** । भूतवलिभट्टारकविरचिता । हिन्दी टीका सहित । २–७ भाग ६६–००

*१८ **वसुनन्दिश्रावकाचारः** । आचार्य वसुनन्दिकृत । हिन्दी टीका सहित ५–००

*१९ **सर्वार्थसिद्धिः** । हिन्दी टीका सहित १२–००

*२० **मदनपराजयः** । नागदेव विरचित । हिन्दी टीका सहित ८–००

*२१ **भद्रवाहुसंहिता** । हिन्दी टीका सहित ८–००

*२२ **सभाष्यरत्नमञ्जूषा** । छन्दशास्त्र २–००

*२३ **सिद्धिविनिश्चयटीका** । अनन्तवीर्याचार्य विरचिता १–२ भाग ३०–००

स्तोत्र-माहात्म्य-व्रत-ग्रन्था:

१ **अपराजितास्तोत्रम्** ०–१५ | २ **अन्नपूर्णास्तोत्रम्** । ०–१५

३ **आदित्यहृदयस्तोत्र–नवग्रहसहित** ०–१०

४ **आलवंदारस्तोत्रम्** । ०–१०

५ **ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्** । ०–०५

६ **एकादशीमाहात्म्यम्** । 'सरला' हिन्दी टीकोपेतम् । धर्मप्राण जनता के प्राणभूत इन पौराणिक ग्रन्थों की भाषा आज प्रायः उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती है । श्लोकों के भाव भी परम्परा का अनुसरण करने के कारण यत्र-तत्र अव्यवस्थित से हैं । अतः सुयोग्य भाषाविद् विद्वानों से आमूल संस्कार कराकर व्यवस्थित एवं प्रवाहमय ललित हिन्दी अनुवाद के साथ यह संस्करण प्रकाशित किया गया है । ४–००

७ **कालीकवचम्** । काली ताराध्यान सहितम् ०–१०

८ **गणेशमहिम्नस्तोत्रम्** । पुष्पदन्त विरचितम् ०–१०

९ **गणेशसहस्रनामावली** । ०–५०

१० गङ्गालहरी। मूल ०–१५
११ गायत्रीरामायण ०–०५
१२ गङ्गालहरी। पीयूषलहरी व्याख्या सहिता ०–४५
१३ गङ्गालहरी। निर्मला नामक भाषा टीका सहिता ०–२०
१४ चर्पटपञ्जरी। इन्दुमती नामक भाषा टीका सहिता ०–१५
१५ तुलसीपूजापद्धति ०–१५
१६ देव्यापराधक्षमापनस्तोत्रम्। ०–१५
१७ दत्तात्रयस्तोत्रम् ०–२०
१८ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ०–१०
१९ दुर्गाकवचम्। अर्गला–कील सहितम् ०–१०
२० देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्र। शङ्कराचार्यकृत ०–०५
२१ देवीसहस्रनामावली। ०–५०
२२ धन्वन्तरिस्तोत्रम् ०–१०
२३ नर्मदाष्टकम्। ०–०५
२४ बगलामुखीस्तोत्रम् ०–१५
*२५ परशंभुमहिम्नस्तवः। ०–३७
*२६ पादुकासहस्रम्। वेदान्तदेशिककृतम्। नेट ३–५०
२७ प्रश्नोत्तरी। मणिरत्नमाला इन्दुमती भाषाटीका ०–१५
२८ बटुकभैरवस्तोत्रम्। अनुष्ठानविधिसहितम् ०–१५
२९ **बृहत्स्तोत्ररत्नाकर:**–संपादक, पं० श्री शिवराम शर्मा।

नाना पुराणोक्त तथा विभिन्न सम्प्रदायाचार्यों द्वारा प्रणीत गणपत्यादि स्तोत्रों का यह गुटका साइज का अभूत पूर्व अनुपम संग्रह है। ४–५०

*३० बृहत्स्तोत्रसरित्सागर। (पुष्टिमार्गीय) ६–००
३१ महाविद्यास्तोत्रम्। ०–१०
३२ महालक्ष्मीस्तोत्रम्। महालक्ष्म्यष्टक–अम्बाष्टकद्वयोपेतं ०–०५
३३ महिम्नस्तोत्रम्। शिवताण्डवस्तोत्रञ्च। मूल ०–१५
३४ महिम्नस्तोत्रम्। मधुसूदनी–संस्कृतटीका–सहितम् ०–५०
३५ महिम्नस्तोत्रम्। इन्दुनामकभाषाटीका सहितम् ०–१५

३६ मृतसञ्जीविनीजपविधि-महामृत्युञ्जयजपस्तोत्रादि युत ०-२०
३७ मृत्युञ्जयमानसिकपूजनम् । ०-१५
३८ रामरक्षास्तोत्रम् । ०-१०
३९ रामनामसहस्रनामस्तोत्रम् ०-१५
*४० ललितात्रिशतिस्तोत्रम् । शाङ्करभाष्य सहितम् नेट २-००
४१ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् । सचित्रम् ०-१५
४२ शनिस्तोत्रम् । शङ्कराचार्यकृत कृष्णाष्टकयुतम् ०-१०
४३ शिवताण्डवस्तोत्रम् । सर्वमङ्गला भाषाटीका सहितम् ०-१०
*44 Sivatandava Stotra with Eng. Tr. by E. Wood 2-25
४५ शिवस्तोत्रम् । शिवकवच-शिवमानसपूजा-शिवमहिम्न-शिवापराधक्षमापनस्तोत्र सहितम् ०-१५
४६ **शिवस्तोत्रावली** । उत्पलदेवाचार्यविरचिता । क्षेमराज कृत संस्कृत व्याख्या हिन्दी अनुवाद सहिता यन्त्रस्थ
४७ श्रीनटराजसहस्रनामावली ०-५०
*४८ श्रीनटराजसहस्रनामभाष्यम् ४-००
४९ श्रीलक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्र-श्यामलादण्डक-श्यामलानवरत्नमालिका श्रीवेङ्कटेश्वराष्टोत्तरशतनामस्तोत्रञ्च । ०-१५
५० शीतलाष्टकम् ०-५
५१ सन्तानगोपालस्तोत्रम् । ०-१०
५२ **सत्यनारायणव्रतकथा** । 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका सहिता ।

सत्यनारायणव्रतकथा की व्यापकता और उसके मूलपाठ की अशुद्धियों की आनुपातिक समानता पठित समाज का कलङ्क ही है । अतः प्रस्तुत संस्करण में मूलपाठ को विचारपूर्वक सर्वथा शुद्ध रखते हुए विद्वानों द्वारा परिशोधित प्रामाणिक 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका प्रकाशित की गई है । सत्यनारायण व्रत कारिका, पृथक्-पृथक् सविधि गणपति-नवग्रहादि-पूजन, कलशस्थापन-पूजन, षोडशोपचार-सत्यनारायणपूजन, अन्त में सत्यनारायणाष्टक तथा सांगोपांग हवन-विधि आदि प्रस्तुत संस्करण की उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं ।

रफ ०-६२ ग्लेज ०-७५

५३ **सिद्धसरस्वतीस्तोत्रम्।** (गणेशस्तवराजस्तोत्रम्, सरस्वतीस्तोत्रम्, सरस्वत्यष्टकम्, सरस्वतीकवचम्, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्, कालभैरवाष्टकम्) प्रत्यक्षफलोपयोगी। ०–१५

५४ **सूर्यादिद्वादशस्तवीस्तोत्रं–अन्नपूर्णादिस्तोत्र सहितम्।** ०–२०

५५ **भारतीय व्रतोत्सव।** आचार्य पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी।

भारतीय व्रतों व त्योहारों के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनसे इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें सभी व्रतोत्सवों का काल-विज्ञान एवं विधि-विज्ञान बुद्धिगम्य रूप में दिया गया है। लेखक ने अपने चालीस वर्ष के धर्मोपदेश के अनुभवों का इसमें पूर्ण रूप से समावेश किया है, जो कुछ लिखा गया है वह सप्रमाण और सयुक्तिक लिखा गया है। शास्त्र व लोक दोनों के अनुसार विधियों की युक्तियुक्तता सिद्ध की गई है। संक्षेप में उत्सवों का निर्णय भी आरम्भ में दे दिया गया है। थोड़े में कहा जा सकता है कि अभी तक किसी भी पुस्तक में ये बातें नहीं प्रकाशित हुई हैं जिनका इसमें निरूपण हुआ है। पुस्तक देखने पर ही आपको इसके महत्त्व का बोध हो सकेगा। ३–००

५६ **हमारे त्योहार।** डॉ० ब्रजमोहन।

इसमें हिन्दू त्योहारों पर वैज्ञानिक दृष्टि से विस्तृत विवेचन किया गया है। जिस प्रकार भारतीय दर्शन और हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की डॉ० राधाकृष्णन ने आधुनिक लोगों के लिये नवीन व्याख्या की है वैसा ही कार्य इस पुस्तक में त्योहारों की व्यावहारिक व्याख्या कर डा० ब्रजमोहन ने किया है। पुस्तक प्रत्येक भारतीय के पढ़ने योग्य है। १–५०

प्रकीर्ण-ग्रन्थाः

*१ **असामान्य मनोविज्ञान।** डॉ० रामकुमार राय।

इस अद्वितीय पुस्तक में सभी विश्वविद्यालयों के बी० ए० तथा एम० ए० के असामान्य मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित विषयों का समावेश है। सम्पूर्ण पुस्तक उपयुक्त रेखा-चित्रों से सुसज्जित है; जिससे इसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है। १०–००

२ **पथचिह्न** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ।
बिहार तथा वाराणसी की मध्यमा और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की इण्टर परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत ।
संस्कृति और कला के पक्ष में यथेष्ट प्रकाश डालने वाली आत्मचरितात्मक शैली में लिखी प्रस्तुत पुस्तक में भावुक मन और तत्पर-बुद्धि के समागम का मधुर परिपाक है । इसका रचनाप्रकार नवीन और रुचिर है । इसमें कृतिकार के निर्माण-संकल्प का क्रमिक विकास और उसका रूप-विन्यास अत्यन्त मनोहर और हृदयंगम हुआ है । इसकी शैली सम्पन्न, अनुरूप, भावप्रवण तथा व्यञ्जक है । प्रतिपृष्ठ पर ये विशेषताएँ लक्षित होती हैं । १-५०

३ **युगपरिवर्तन** । [कब, क्यों और कैसे ?]
सन् १९६२ में आठ ग्रहों के एक राशिगत होने की विश्व पर होने वाली भयंकर प्रतिक्रियाएँ युगान्तरकारी अनर्थों द्वारा कलियुग का अन्त एवं सतयुग के आगमन द्वारा विश्व-कल्याण की संभावना, शास्त्र सम्मत काल विभाग, तात्कालिकी कर्तव्यता आदि पर लोकोत्तर महापुरुषों की भविष्यवाणियों सहित विवेचन । १—५०

४ **काशी-दर्शन** । इसके पढ़ने से समस्त काशी के नवीन एवं प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों एवं घाट, मन्दिर, भवन, कला तथा शिवालयों आदि का संपूर्ण परिचय सहज में हो जाता है ०-३५

५ **सदाचार-सोपान** । पं० श्री रामबालक शास्त्री ।
स्वतन्त्र भारत के विद्यार्थियों को किस प्रकार का सदाचार पालन करना चाहिये यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है । विद्वान लेखक ने विद्यार्थी, अभिभावक और गुरु का कर्तव्य तथा शिक्षा में सदाचार की आवश्यकता का निरूपण करते हुये विद्यार्थियों की दिनचर्या और कर्तव्याकर्तव्य का चित्र ही खींच दिया है । ०-५०

६ **तुलसीकृत रामायण सुन्दरकाण्ड** । विजयश्री भाषा टीका 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित । बिहार मध्यमा परीक्षोपयोगी १-२५

*७ सरस्वतीसौरभ ०-६२
*८ हिन्दी पाठमाला ०-५०
*९ भारततीर्थ-यात्रा । निर्माता- स्वामी रामानन्द सरस्वती ६-५०

*१० श्रीभगवन्नाम संकीर्तनमंजरी २—००

*११ नाम महिमा, नाम कीर्तन, गुण कीर्तन ०—२५

*१२ रावर्ट क्लाईव—जीवन ०—५०

*१३ **महारास**—नरेशचन्द्र मिश्र 'भञ्जन'। प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीमद्भागवत पर आधृत कल्पना के अनुसार 'महारास' शब्द की शास्त्रीय विवेचना के माध्यम से प्राणियों के लिये आध्यात्मिक उपासना की आवश्यकता, इसका स्वरूप एवं उसका फल—विस्तार से, नौ सर्गों में, हिन्दी काव्य के रूप में उपनिबद्ध है। ५—००

*१४ **युरोप और वहाँ के संग्रहालय**—सतीशचन्द्र काला ५—००

१५ **राष्ट्रभारती**। श्री करुणापति त्रिपाठी। वाराणसी की प्रथमा परीक्षा में पाठ्य स्वीकृत। १—५०

*१६ द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग-यात्रा-स्वामी रामानन्द सरस्वती १—५०

*१७ **विहारीरत्नाकर**। विहारीसतसई पर रत्नाकरीटीका जगन्नाथदास रत्नाकर ९—००

*१८ **कविवर विहारी**। जगन्नाथदास रत्नाकर ६—००

*१९ **नीलम की अंगूठी**। विभूतिभूषण मुखोपाध्याय ४—००

श्री रामचन्द्र वर्मा की रचनाएँ—

*१ अच्छी हिन्दी—शुद्ध हिन्दी बोलने और लिखने की शिक्षा देने वाली पुस्तक ३—५०

*२ प्रामाणिक हिन्दी कोश-दूसरा संशोधित और परिवर्द्धित संस्करण १२—५०

३ मानक हिन्दी व्याकरण। नवीन रचना २—००

*४ हिन्दी प्रयोग—हिन्दी के शुद्ध प्रयोग बतलाने वाली सर्वश्रेष्ठ पुस्तक २—००

* हिन्दी समिति के प्रकाशन

1 Development of Buddhism in Uttar Pradesh. 8—00

२ भारतीय ज्योतिष का इतिहास। डा० गोरखप्रसाद ४—००

३ तत्त्व ज्ञान। डा० दीवानचन्द ४—००

४ हिन्दू गणित शास्त्र का इतिहास। डा० विभूतिभूषण दत्त ३—००

५ अरिस्तू की राजनीति। श्री भोलानाथ शर्मा ८—००

६ सामाजिक पोषण। डा० बूलचन्द ३—००

७ उत्तर प्रदेश में बौद्धधर्म का विकास। डा० नलिनाक्षदत्त तथा श्री कृष्णदत्त वाजपेयी ६-००
८ संस्कृति का दार्शनिक विवेचन। डा० देवराज ६-००
९ संस्कृत आलोचना। श्री बलदेव उपाध्याय ४-००
१० भारतीय ज्योतिष। श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित ८-००
११ भारतीय दर्शन। डा० उमेश मिश्र ८-००
१२ पश्चिमी दर्शन। डा० दीवानचन्द ४-००
१३ स्वतंत्र दिल्ली। डा० सै० अ० अ० रिजवी ४-००
१४ जीव जगत। श्री सुरेश सिंह १४-००
१५ हलायुध कोश। श्री हलायुध भट्ट २३-००
१६ राइफल। श्री रामचन्द्र वर्मा ४-००
१७ दर्शन संग्रह। डा० दीवानचन्द ४-५०
१८ कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ। श्री रामचन्द्र शुक्ल ३-५०
१९ कोयला। श्री फूलदेवसहाय वर्मा ८-००
२० संगीत शास्त्र। श्री के० वासुदेव शास्त्री ६-५०
२१ मृत्तिका उद्योग। श्री हीरेन्द्रनाथ बोस ८-००
२२ भारत का भाषा सर्वेक्षण। डा० उदयनारायण तिवारी ७-००
२३ जाति विज्ञान का आधार। श्री विनोदचन्द्र मिश्र ७-००
२४ उर्दू हिन्दी शब्दकोश। स्व० श्री मुहम्मद मुस्तफा खाँ १६-००
२५ संस्कृत नाटककार। श्री कान्ति किशोर भरतिया ४-००
२६ भौतिक विज्ञान में क्रान्ति। डा० निहालकरण सेठी ४-५०
२७ शक्ति : वर्तमान और भविष्य। श्री सत्यप्रकाश गोयल ४-००
२८ भरत का संगीत-सिद्धान्त। श्री कैलाशचन्द्र देव बृहस्पति ६-५०
२९ राजनय। श्री राघवेन्द्र सिंह ३-००
३० पतन की परिभाषा। श्री परिपूर्णानन्द वर्मा ७-००
३१ मलयालम साहित्य का इतिहास। डा० के० भास्करन नायर ४-००
३२ काँच विज्ञान। डा० आर० चरण ६-००
३३ अरस्तू। श्री शिवानन्द शर्मा ३-५०
३४ खाद और उर्वरक। डा० फूलदेव सहाय वर्मा १०-००
३५ इलेक्ट्रान विवर्तन। डा० दयाप्रसाद खंडेलवाल २-५०
३६ उद्योग रसायन। डा० गोरखप्रसाद ७-००
३७ अंग्रेजी भाषा और साहित्य। डा० राम अवध द्विवेदी ३-५०
३८ आयुर्वेद का बृहत् इतिहास। श्री अत्रिदेव विद्यालंकार ११-००

३९ सूक्तिसागर । श्री रमाशंकर गुप्त १०—००
४० विमान और वैमानिकी । श्री चमनलाल गुप्त ४—५०
४१ भारतीय संस्कृति । डा० देवराज ४—००
४२ आपेक्षिकता का अभिप्राय । डा० भुवालकर तथा सेठी ४—००
४३ शासन पर दो निबन्ध । श्रीमती सरला मोहनलाल ४—५०
४४ इस्पात का उत्पादन । डा० दयास्वरूप व धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया ५—००
४५ प्राचीन भारत में रसायन का विकास । डा० सत्यप्रकाश १४—००
४६ हरिवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन । श्री मती वीणापाणी पाण्डे ४—५०
४७ गहनखेती । डा० संत बहादुर सिंह व भानुप्रताप सिंह ५—००
४८ काष्ठ परिरक्षण । श्री जगन्नाथ पाण्डे १०—००
४९ इब्नेखल्दून का मुकदमा । डा० सै० अ० अब्बास रिजवी १०—००
५० सांख्यिकी के सिद्धान्त और उपयोग । श्री विनोदकरण सेठी ९—००
५१ भूमि रसायन । श्री शिवनाथ सहाय १०—००

❋ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के प्रकाशन

१ भारतीय अब्दकोश (शकाब्द १८८२) Indian year Book 1961–62 । सं० श्री गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ । ८—००
२ हिन्दी-साहित्य का आदिकाल । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी । ३—२५
३ यूरोपीय दर्शन । स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा । ३—२५
४ हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल । ९—५०
५ विश्वधर्म दर्शन । श्रीसाँवलियाविहारीलाल वर्मा । १३—५०
६ सार्थवाह । डॉ० मोतीचन्द्र । ११—००
७ वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा । डॉ० सत्यप्रकाश । ८—००
८ सन्त कवि दरिया : एक अनुशीलन । डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री । १४—००
९ काव्यमीमांसा (राजशेखर-कृत) । अनु० स्व० पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत । ९—५०
१० श्रीरामावतार शर्मा-निबन्धावली । स्व० महामहोपाध्याय रामावतार शर्मा । ८—७५
११ प्राग्मौर्य विहार । डॉ० देवसहाय त्रिवेद । ७—२५
१२ गुप्तकालीन मुद्राएँ । स्व० डॉ० अनन्त सदाशिव अलतेकर । ९—५०
१३ भोजपुरी भाषा और साहित्य । डॉ० उदयनारायण तिवारी । १३—५०
१४ राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त । श्रीगोरखनाथ सिंह । १—५०
१५ रबर । श्रीफूलदेवसहाय वर्मा । ७—५०
१६ ग्रह-नक्षत्र । श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिंह । ४—२५
१७ नीहारिकाएँ । डॉ० गोरखप्रसाद । ४—२५
१८ हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ । श्रीत्रिवेणीप्रसाद सिंह । ३—००

१९ ईख और चीनी। फूलदेवसहाय वर्मा। १३–५०
२० शैवमत। लेखक और अनुवादक। डॉ० यदुवंशी। ८–००
२१ मध्यदेश : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सिंहावलोकन। डॉ धीरेन्द्र वर्मा ७–००
२२ प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण। १–४ भाग। ७–२५
२३ शिवपूजन-रचनावली। आचार्य शिवपूजन सहाय। १–४ भाग ३६–२५
२४ राजनीति और दर्शन। डॉ० विश्वनाथप्रसाद वर्मा। १४–००
२५ बौद्धधर्म-दर्शन। स्व० आचार्य नरेन्द्रदेव। १७–००
२६ मध्य एशिया का इतिहास। महापंडित राहुल सांकृत्यायन। १–२ भाग २०–७५
२७ दोहाकोश। मूल कवि : बौद्धसिद्ध सरहपाद। छायानुवादक— महापंडित राहुल सांकृत्यायन। १३–२५
२८ हिन्दी को मराठी संतों की देन। डॉ० विनयमोहन शर्मा। ११–२५
२९ रामभक्ति-साहित्य में मधुर उपासना। डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' १०–२५
३० अध्यात्मयोग और चित्तविकलन। स्वर्गीय वेङ्कटेश्वर शर्मा। ७–५०
३१ प्राचीन भारत की सांग्रामिकता। पण्डित रामदीन पाण्डेय। ६–५०
३२ बाँसरी बज रही। श्रीजगदीश त्रिगुणायत। ८–००
३३ चतुर्दशभाषा-निबन्धावली। ४–२५
३४ भारतीय कला को बिहार की देन। डॉ० विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह। ७–५०
३५ भोजपुरी के कवि और काव्य। श्रीदुर्गाशंकरप्रसाद सिंह। संपादक— डॉ० विश्वनाथप्रसाद। ५–७५
३६ पेट्रोलियम। श्रीफूलदेवसहाय वर्मा। ५–५०
३७ नील-पंछी। मूल लेखक—मारिस मेटरलिंक। अनुवादक—डॉ० कामिल बुल्के। २–५०
३८ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ मानभूम एण्ड सिंहभूम। डॉ० विश्वनाथप्रसाद— डॉ० सुधाकर झा। ४–५०
३९ षड्दर्शन-रहस्य। पं० रंगनाथ पाठक। ५–००
४० जातक-कालीन भारतीय संस्कृति। श्रीमोहनलाल महतो 'वियोगी'। ६–५०
४१ प्राकृत भाषाओं का व्याकरण। मूल लेखक—रिचर्ड पिशल। अनु०—डॉ० हेमचन्द्र जोशी। २०–००
४२ दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा। श्री राहुल सांकृत्यायन। ६–००
४३ भारतीय प्रतीक-विद्या। डॉ० जनार्दन मिश्र। ११–००
४४ संतमत का सरभंग-सम्प्रदाय। डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री। ५–५०
४५ कृषिकोश (प्रथम खण्ड)। स० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद। ३–००

४६ कुँवरसिंह-अमरसिंह। मूल लेखक—डॉ० कालीकिंकर दत्त। अनु०—पं० छविनाथ पाण्डेय। ५-००
४७ मुद्रण-कला। पं० छविनाथ पाण्डेय। ७-२५
४८ लोक-साहित्य : आकर-साहित्य-सूची। श्रीनलिनविलोचन शर्मा। ०-५०
४९ लोककथा-कोश। श्रीनलिनविलोचन शर्मा। ०-३२
५० लोकगाथा-परिचय। श्रीनलिनविलोचन शर्मा। ०-२५
५१ बौद्धधर्म और विहार। पं० हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय। ८-००
५२ साहित्य का इतिहास-दर्शन। श्रीनलिनविलोचन शर्मा। ५-००
५३ मुहावरा-मीमांसा। डॉ० ओमप्रकाश गुप्त ६-५०
५४ वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति। म. म. पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ५-००
५५ पंचदश लोकभाषा निबन्धावली। ४-५०
५६ हिन्दी-साहित्य और विहार। सं० आचार्य शिवपूजन सहाय ५-५०
५७ कथा-सरित्सागर। मूल-लेखक सोमदेवभट्ट अनु०—स्व० पं० केदारनाथ शर्मा सारस्वत। प्रथम खण्ड १०-००
५८ अयोध्याप्रसाद खत्री-स्मारक ग्रंथ। सं० आचार्य शिवपूजन सहाय। ५-००
५९ सदलमिश्र-ग्रन्थावली। सं० श्री नलिनविलोचन शर्मा। ५-००
६० वेणु-शिल्प। शिल्पाचार्य श्रीउपेन्द्र महारथी। ११-००
६१ गोस्वामी तुलसीदास। स्वर्गीय श्रीशिवनन्दन सहाय। ५-५०
६२ रंगनाथ रामायण। अनु०—श्री ए० सा० कामाक्षि राव। ६-५०

※ हिन्दी साहित्य-कुटीर की पुस्तकें—

१ अभिनव शिक्षणशास्त्र। सीताराम चतुर्वेदी ६-२५
२ आदर्श राम नाटक। ब्रजरत्नदास १-२५
३ आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास। कृष्णशङ्कर शुक्ल ४-५०
४ इरावती। ब्रजरत्नदास २-५०
५ उपन्यास कला। विनोदशंकर व्यास १-७५
६ उर्दू साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास ३-७५
७ कहानी कला। विनोदशङ्कर व्यास १-५०
८ कामकला। विजयबहादुर सिंह ४-५०
९ खड़ी बोली हिन्दी साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास ३-००
१० चुभते चौपदे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' २-००
११ चोखे चौपदे। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' २-७५
१२ ठंडे छींटे। वियोगी हरि ०-७५

१३ ठेठ हिन्दी का ठाठ। 'हरिऔध' ०–९४
१४ दो पौराणिक नाटक। कन्हैयालाल मानिकलाल मुन्शी १–७५
१५ पारिजात। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ५–००
१६ पुष्प विज्ञान। हनुमानप्रसाद शर्मा १–२५
१७ प्रसाद और उनका साहित्य। विनोदशङ्कर व्यास ३–१२
१८ प्राणायाम मीमांसा। विजयबहादुर सिंह २–२५
१९ प्रामाणिक हिन्दी कोष। रामचन्द्र वर्मा १२–५०
२० प्रियप्रवास। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३–५०
२१ बाल-कवितावली। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' १–००
२२ बोलचाल। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ६–२५
२३ भारतीय और योरोपीय शिक्षा का इतिहास। सीताराम चतुर्वेदी ४–६९
२४ भाषा की शिक्षा। सीताराम चतुर्वेदी ४–५०
२५ भाषा भूषण। यशवन्त सिंह १–००
२६ भाषालोचन। सीताराम चतुर्वेदी ६–००
२७ मर्मकथा। विनोदशङ्कर व्यास २–००
२८ मानस शास्त्र और समाज। सीताराम चतुर्वेदी ३–००
२९ मीराँ माधुरी। ब्रजरत्नदास ५–६२
३० रसकलस। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ४–५०
३१ वाङ्मय विमर्श। विश्वनाथप्रसाद मिश्र ५–००
३२ वैदेही वनवास। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ३–५०
३३ शैली और कौशल। सीताराम चतुर्वेदी ६–००
३४ सफलता के मन्त्र। वेणीमाधव शर्मा १–५०
३५ हरिऔध सतसई। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' १–००
३६ हरिऔध और उनका साहित्य। मुकुन्ददेव शर्मा ७–००
३७ हिन्दी उपन्यास साहित्य। ब्रजरत्नदास ५–००
३८ हिन्दी ज्ञानेश्वरी। रामचन्द्र वर्मा ५–००
३९ हरिऔध जी के संस्मरण ०–७५
४० हिन्दी दासबोध। रामचन्द्र वर्मा ३–००
४१ हिन्दी नाट्य साहित्य। ब्रजरत्नदास ३–७५
४२ हिन्दी शिक्षण विधान। सीताराम चतुर्वेदी २–००
४३ हिन्दी साहित्य का इतिहास। ब्रजरत्नदास २–००
४४ हिन्दी साहित्य सर्वस्व। सीताराम चतुर्वेदी ११–००
४५ प्रसाद और उनके समकालीन। विनोदशंकर व्यास ४–००

वाराणसेय सं॰ विश्वविद्यालय परीक्षा पाठ्य पुस्तकें–

प्रथमा परीक्षा

लघुसिद्धान्तकौमुदी–['इन्दुमती' सं॰ हि॰ टीका २–००
सूत्ररामायण–['सुधा' सं॰ हि॰ टीका ०–३५
भारतीयशीलनिरूपणाध्याय–['सुधा' सं॰ हि॰ टीका ०–३५
रघुवंश-द्वितीय सर्ग–['सुधा' सं॰ हिन्दी व्याख्या ०–७५
छन्दोविंशतिका–[छन्दों के लिए ०–२५
हितोपदेश-मित्रलाभ–अश्लीलांश रहित ['किरणावली' सं॰ हि॰ व्याख्या १–००
पुरुषसूक्त–['बालबोधिनी' सं॰ हिन्दी व्याख्या ०–१५
संस्कृतरचनानुवाद शिक्षक [अनुवाद के लिये २–००
अमरकोश-प्रथम काण्ड–['मणिप्रभा' हि॰ टीका ०–७५
राष्ट्रभारती १–५०
आदर्श चरितावली १–२५
राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण १–२५
भारत वर्ष का इतिहास– [चौखम्बा प्रकाशन १–५०
भारत का भूगोल— " १–००
नागरिक शास्त्र— " ०–७५
गणितकौमुदी–गणपतिदेव शास्त्री १–००
ज्योतिष प्रबोध–गणेशदत्त पाठक ०–३७

पूर्वमध्यमा परीक्षा

प्रथम वर्ष अनिवार्य विषय—

रघुवंश, सर्ग १–५–['सुधा' सं॰ हिन्दी व्याख्या ३–००
संस्कृत रचना प्रकाश–[अनुवाद के लिए १–९५
शिवराजविजय–प्रथम विराम २–७५

द्वितीयवर्ष–अनिवार्य विषय—

मध्यकौमुदी–व्याकरणेतर छात्रों के लिए–['सुधा' सं॰ हि॰ टीका ५–००
भट्टिकाव्य, सर्ग १–११ (केवल व्याकरण के छात्रों के लिये) ७–००
तर्कसंग्रह पदकृत्य सहित–[लक्षण-टिप्पणी सहित 'इन्दुमती' टीका ०–५०
भारतीयव्रतोत्सव ३–००
महाकवियों की अमर रचनाएँ २–००

ऐच्छिक विषय वर्ग 'क'

नव्यव्याकरण–प्रथमवर्ष—

सिद्धान्तकौमुदी–स्त्रीप्रत्यान्त–['बालमनोरमा' टीका, प्रथम भाग ३–५०

नव्यव्याकरण–द्वितीयवर्ष—

सिद्धान्तकौमुदी-कारकादि चातुरर्थिकान्त–['बालमनोरमा' टीका द्वितीय भाग ३–५०

साहित्य–प्रथमवर्ष—

किरातार्जुनीय, सर्ग१–३–[मल्लिनाथी-सुधा सं॰ हि॰ व्याख्या २–००

साहित्य–द्वितीयवर्ष—

चन्द्रालोक–['पौर्णमासी'–कथाभट्टी सं॰ हिन्दी व्याख्या ३–००
कुमारसम्भव, सर्ग १–५–['पुंसवनी' सं॰ हिन्दी व्याख्या ३–५०

हिन्दी वर्ग 'ख'

प्रथमवर्ष—

कविताकाकली १-५०
जयद्रथवध १-००
काव्यांगनिर्णय १-००

द्वितीयवर्ष—

गद्यकाव्यसंकलन १-६५
सावित्रीसत्यवान २-००
अच्छी हिन्दी ३-५०

उत्तरमध्यमा परीक्षा

अनिवार्य विषय

प्रथमवर्ष—

अभिज्ञानशाकुन्तल-['किशोरकेलि' सं० हिन्दी व्याख्या ६-००
स्वप्नवासवदत्तम्-['प्रबोधिनी' सं० हिन्दी व्याख्या २-५०
अलंकारसारमंजरी-[अलंकारों के लिये ०-४५
प्राकृतप्रकाश-['मनोरमा-चन्द्रिका' सं० हिन्दी व्याख्या ५-००
भट्टिकाव्य, सर्ग १२-२२ व्याकरणेतर छात्रों के लिये-['चन्द्रकला' सं० हिन्दी व्याख्या ५-००
न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, प्रत्यक्ष-खण्ड-केवल व्याकरण के छात्रों के लिये-['मयूख' संस्कृत हिन्दी व्याख्या १-२५

द्वितीयवर्ष

व्युत्पत्तिप्रदर्शन-[व्युत्पत्तिप्रदर्शनं गूढाशुद्धिप्रदर्शनम् ०-५०
निबन्ध-[प्रबन्ध पारिजात १-५०
अनुवाद-[संस्कृत रचना प्रकाश १-९५
जीवनदर्शन २-५०
संस्कृतकविदर्शन ६-००

ऐच्छिक विषय वर्ग 'क'

नव्यव्याकरण प्रथमवर्ष—

सि० कौमुदी. शैषिकादि जुहोत्याद्यन्त-['बालमनोरमा' टीका,

नव्यव्याकरण-द्वितीयवर्ष—

सि० कौमुदी, दिवादिगणादि कृदन्तान्त-['बालमनोरमा' टीका

साहित्य प्रथमवर्ष—

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका तथा प्रथम, अष्टम उच्छ्वास-['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका २-००
तर्कसंग्रह, दीपिका सहित-['इन्दुमती' हिन्दी व्याख्या ०-५०

साहित्य द्वितीयवर्ष—

काव्यमीमांसा, अध्याय १-५-['मधुसूदनी' सं० हिन्दी व्याख्या १-००
छन्दोमञ्जरी-['प्रभा' सं० हि० व्याख्या २-००
किरातार्जुनीय, सर्ग ४-८-[मल्लिनाथी 'प्रकाश' सं० हि० व्याख्या ४-००

वर्ग 'ख' हिन्दी

प्रथमवर्ष—

कविताकुसुमाकर १-३५
धरती और अकाश १-५०
काव्यांगकौमुदी भाग २ १-७५

द्वितीयवर्ष—

गद्यनिकष २-००
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ ३-००
पथचिह्न १-५०
साहित्य और सिद्धान्त ३-००

कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की परीक्षा

पाठ्य पुस्तकें-

प्रथमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

हितोपदेश-मित्रलाभ (अश्लीलांश छोड़कर)-['किरणावली' सं० हि० टीका 1-00

अमरकोश (स्वर्ग वर्ग)-['मणिप्रभा' हि० टीका 0-75

संस्कृतव्याकरणम्-रामचन्द्र झा 1-50

संस्कृतरचनानुवादशिक्षक 2-00

अनुवादचन्द्रिका-लोकमणि जोशी 1-25

राष्ट्रीय साहित्य प्रमोद-भारतीय प्रकाशन, पटना

राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण 1-25

पाँच फूल (हिन्दी) 1-00

साहित्यबोध, भाग २ (मैथिली)

गणितकौमुदी भाग २-गणपतिदेव शास्त्री 1-00

नव भारत का इतिहास-फणीन्द्रनाथ ओझा 1-19

हमारे देश, हमारी दुनिया-सुरेश प्रसाद गुप्त

वर्ग 'क'

व्याकरण—

लघुकौमुदी-['इन्दुमती' सं० हि० टीका 2-00

साहित्य—

रघुवंश, द्वितीय सर्ग-['सुधा' सं० हि० टीका 0-75

पञ्चतन्त्र-अपरीक्षितकारक (अश्लीलांश छोड़कर)-['सुबोधनी' सं० हि० टीका 0-75

छन्दोविंशतिका-पं० रामचन्द्रझा 0-25

अलङ्कारसारमंजरी-नारायण शास्त्री खिस्ते 0-45

पूर्वमध्यमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः 2-00

भर्तृहरिनीतिशतकम्-['ललिता' वाला सं० हि० टीका 1-00

संस्कृत व्याकरण कौमुदी' भाग १-२ 1-37

मध्यकौमुदी-['सुधा' सं० हि० टीका 5-00

व्युत्पत्तिप्रदर्शन गूढाशुद्धिप्रदर्शन 0-50

संस्कृत रचना प्रकाश 1-95

हिन्दी गद्यपद्य संग्रह (बिहार टेक्स्ट बुक कमेटी) 1-25

मानक हिन्दी व्याकरण-रामचन्द्र वर्मा 2-00

सप्त सरोज (हिन्दी) 1-00

रामायण शिक्षा (मैथिली) 1-50

मुनिक मतिभ्रम-(मैथिली)

भारतवर्ष का नवीन इतिहास-ईश्वरीप्रसाद 5-50

भारतवर्ष का भूगोल-रामनारायण मिश्र 2-50

विद्वद्विभूति १-२५

हाईस्कूल नागरिक शास्त्र-के० एल० वर्मा २-००

मैट्रिकुलेशन सिविक्स (हिन्दी)-गोरखनाथ चौबे २-००

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सिद्धान्तकौमुदी, पूर्वार्द्धं-['बालमनोरमा' व्याख्या ७-००

साहित्य—

दशकुमारचरित, पूर्वपीठिका-['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका १-२५

प्रतिमानाटक-['प्रकाश' सं० हि० टीका २-००

छन्दोमञ्जरी-['प्रभा' सं० हि० टीका २-००

अलंकारसारमंजरी-नारायण शास्त्री खिस्ते ०-४५

उत्तरमध्यमा परीक्षा

अनिवार्य विषय—

संस्कृत-गद्य-पद्य-संग्रहः २-००

कुमारसम्भव, पंचम सर्ग-['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका १-५०

भोजप्रबन्ध-['राज्यश्री' हि० टीका १-५०

संस्कृत व्याकरणकौमुदी भाग ३-४

मध्यकौमुदी-['सुधा' सं० हि० टीका ५-००

हिन्दी गद्य-पद्य संग्रह (बिहार इन्टर मीडियट परीक्षा स्वीकृत

विजेतानाटक-बेनीपुरी १-७५

पथचिह्न-शान्तिप्रिय द्विवेदी १-५०

जयद्रथवध-मैथिलीशरण गुप्त १-००

गल्पाञ्जलि (मैथिली)-एलनगंज प्रयाग

झंकार (मैथिली) 'मधुप'

वर्ग 'क'

व्याकरण—

सिद्धान्त कौमुदी, उत्तरार्धं-['बालमनोरमा' टीका ६-५०

साहित्य—

रघुवंश, सर्ग ३-४-['सुधा' सं० हि० टीका १-५०

किरात, सर्ग १-२ १-२५

दशकुमारचरित, उत्तर पीठिका, अपहारवर्मचरितान्त-['बालविबोधिनी' सं० हि० टीका ३-००

'कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय की नियमावली; जो हमारे यहाँ छप कर तैयार है, मूल्य १ रु० तथा रजिस्ट्री डाकखर्च के लिये १ रु० कुल २ रु० मनियार्डर द्वारा भेजने पर तुरंत भेजी जा सकती है। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षा की पाठ्य पुस्तकें—

प्रथमा परीक्षा

काव्यसंग्रह। भाग १ १—७५
काव्यसंग्रह। भाग २ २—५०
काव्यांग कल्पद्रुम ०—७५
अलंकार प्रकाश ०—५०
साहित्य प्रवेश २—००
हिन्दीभाषासार १—७५
हिन्दी साहित्य परिचय २—००
संक्षिप्त हिन्दी साहित्य १—२५
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा ०—३७
सम्मेलन निबन्धमाला। भाग २ १—५०
रचना तथा व्याकरण १—७५
भारतवर्ष का इतिहास। अवध बिहारी पाण्डेय ३—५०
लघु इतिहास-प्रवेश ५—००
भारतवर्ष का भूगोल २—५०
सरल शरीर विज्ञान १—५०
तीमारदारी ०—७५
परिचर्या और गृह प्रबन्ध २—५०
सरस भोजन कैसे बनावें ३—७५
गार्हस्थ्य शास्त्र २—००
मातृकला १—२५
शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य २—५०
आरोग्य विधान ८—००
आदर्श भोजन १—२५
स्वास्थ्य प्रदीपिका १—५०
स्वास्थ्य विज्ञान। डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर। परिवर्द्धित सचित्र संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द ७—५०
चित्रकला। अवध उपाध्याय १—००
हितोपदेश मित्रलाभ। सान्वय-किरणावली टीका सहित १—००
नीतिशतक। 'ललिता' 'बाला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १—००
प्रारम्भिक संस्कृत व्याकरण १—००
व्याकरण नवनीतम् १—२५
जातक संग्रह १—२५
पालि प्रबोध २—२५
पालि व्याकरण २—२५
वनस्पति विज्ञान ३—००
जीव-विज्ञान की प्रारंभिक पुस्तक २—५०
प्रारंभिक जीव विज्ञान ४—५०
रसायन प्रवेशिका ३—००
प्रारंभिक रसायन। फूलदेव-सहाय वर्मा ४—५०
प्रारंभिक भौतिकी। निहालकरणसेठी ५—५०
श्रीमद्भागवत-संग्रह ०—९४
धर्मशिक्षा २—५०
मनुस्मृति। 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका विमर्श सहित १-४ अध्याय २—००
भारतीय संस्कृति। गोपालशास्त्री १—५०
हिन्दुओं की पोथी २—००
सदाचार और नीति २—००
अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त ३—००
नागरिक शिक्षा १—५०
हाईस्कूल नागरिक शास्त्र २—००
ग्रामीण ज्ञानोदय १—७५
कृषिप्रवेशिका १—२५
प्रारंभिक कृषि विज्ञान। १-३ भाग २—६९

मध्यमा परीक्षा

वीसलदेव रासो २—५०
तुलसी संग्रह १—२५
ब्रज-माधुरीसार ४—००
सुदामाचरित ०—७५
आधुनिक काव्यसंग्रह १—५०
संक्षिप्त अलंकार-मंजरी २—००
हिन्दी गद्य पारिजात १—७५
मृगनयनी ५—००
हिन्दी कहानी संग्रह १—५०

अभिज्ञान शाकुन्तल। लक्ष्मण सिंह १-५०
ध्रुवस्वामिनी ०-७५
चारुमित्रा २-५०
साहित्य का साथी १-५०
हिन्दी साहित्य समीक्षा २-५०
हिन्दी साहित्य का इतिहास। रामकुमार वर्मा ३-००
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास ३-५०
हिन्दी साहित्य का इतिहास। लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय १-५०
साहित्य प्रवाह ६-००
हिन्दी साहित्य और साहित्यकार ३-००
हिन्दी भाषा तथा साहित्य ३-२५
हिन्दी साहित्य की रूपरेखा २-२५
हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास २-५०
हिन्दी भाषा और लिपि १-००
ग्रामीण हिन्दी १-५०
नागरी अंक और अक्षर ०-३७
भट्ट निबन्धावली। भाग १ १-५०
जीवन यज्ञ २-००
प्रबन्ध प्रदीप २-५०
हिन्दी प्रयोग २-००
निबन्ध-कला ३-५०
ठोस ज्यामिति १-५०
बीजगणित। झम्मनलाल शर्मा ३-५०
बीजगणित। 'सुबोधिनी' संस्कृत टीका तथा नूतन उपपत्ति-उदाहरण परिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित ८-००
गति विज्ञान। पी० डी० शुक्ल ३-५०
चलराशिकलन। हरिश्चन्द्र गुप्त ४-००
इतिहास प्रवेश ११-००
भारतीय इतिहास की रूपरेखा २-५०
प्राचीन भारत का इतिहास। भगवतशरण उपाध्याय १०-००
अशोक ७-५०
मौर्यकालीन भारत २-५०
गुप्त साम्राज्य का इतिहास। १-२ भाग ९-५०
दिल्लीसल्तनत ८-००
अकबर की राज्य व्यवस्था २-५०
हमारा राजस्थान ६-००
विश्व इतिहास की झलक-संक्षिप्त ६-००
भारत में ब्रिटिश साम्राज्य ७-५०
आधुनिक यूरोप का इतिहास ७-००
सरल शरीर विज्ञान। बाजोरिया कृत १-५०
सरल शरीर विज्ञान। जानकीशरण वर्मा १-५०
शरीर विज्ञान और स्वास्थ्य २-५०
आरोग्य विधान ८-००
स्वास्थ्य विज्ञान। डा० भास्कर-गोविन्द घाणेकर परिवर्द्धित सचित्र संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द ७-५०
हम सौ वर्ष कैसे जीएं २-००
नैसर्गिक आरोग्य २-००
स्वास्थ्य और प्राणायाम २-००
परिभाषा प्रबन्ध। जगन्नाथप्रसाद २-५०
पथ्यापथ्य निरूपण ०-६२
अंग्रेजी साहित्य का इतिहास ३-००
पशुओं का इलाज ०-५०
फल संरक्षण २-५०
फल संरक्षण विज्ञान। डा० कविराज युगलकिशोर गुप्त १-००
भारत में कृषि सुधार २-५०
गाँवों की समस्या १-००
ग्राम्य अर्थशास्त्र २-२५
दर्शन का प्रयोजन ३-५०
दर्शन की रूपरेखा १-००
पाश्चात्य तत्त्व विज्ञान परिचय ३-००
तत्त्वज्ञान ४-००
आत्मविद्या ४-००
श्रीशंकराचार्य का आचार-दर्शन ५-००

तर्क संग्रह । पदकृत्य-लक्षण टिप्पणी-
इन्दुमती हिन्दी टीका सहित ०–५०
तर्कसंग्रह । दीपिका संस्कृत व्याख्या
इन्दुमती हिन्दी टीका सहित ०–५०
भारतीय तर्कशास्त्र की रूपरेखा १–००
जीवात्मा ४–००
भारतीय-दर्शन १०–००
मनुस्मृति । मणिप्रभा हिन्दी टीका
विमर्श विस्तृत प्रस्तावना आदि
सहित ५–००
उपनिषदों की कहानियाँ १ भाग २–५०
" " २ भाग २–५०
वैष्णवधर्म ३–५०
धर्म-शिक्षा २–५०
भगवद्गीता। हिन्दी अनुवाद सहित ०–१६
बाल मनोविकास ६–००
शिक्षा मनोविज्ञान। १-२ भाग ८–००
सरल मनोविज्ञान ६–००
पाक विज्ञान ३–००
हमारे बच्चे स्वस्थ और दीर्घजीवी
कैसे हों १–२५
मातृकला १–००
कुमार संभव । प्रथम व पंचम सर्ग ।
पुंसवनी संस्कृत हिन्दी व्याख्या
नोट्स आदि सहित १–५०
शिशुपालवध । १-२ सर्ग । सान्वय
परीक्षोपयोगी सुधा व्याख्या
तात्पर्यार्थ हिन्दी भाषार्थ सहित २–००
हर्षचरितसार ०–६२
संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका ५–००
संस्कृत प्रकाश १–५०
खुद्दक पाठ ०–२५
सच्चसंगहो १–२५
धम्मपद १–५०

पालिप्रबोध २–२५
भौतिक विज्ञान प्रवेशिका ८–००
साधारण रसायन ११–००
सामान्य रसायन शास्त्र १४–००
कार्बनिक रसायन ४–५०
हिन्दू राज्यशास्त्र ५–००
कौटिल्य की शासन पद्धति २–००
राजनीतिक भारत ४–५०
आधुनिक भारतीय शासन ५–००
भारतीय संविधान तथा नागरिकता ४–५०
बीसवीं सदी की राजनैतिक
विचारधारायें २–००
राजनीति विज्ञान ६–००
भारतीय अर्थशास्त्र । भगवानदास
केला ५–००
भारतीय अर्थशास्त्र । जथार-बेरी
प्रथम भाग ७–५०
अर्थशास्त्र की रूपरेखा ६–००
ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार २–५०
ग्रहलाघव । उदाहरण उपपत्ति
तथा माधुरी संस्कृत हिन्दी
टीका सहित ३–५०
लघुपाराशरी । सोदाहरण सुबोधिनी
संस्कृत हिन्दी टीका सहित १–२५
षट्पंचाशिका । संस्कृत टीका तथा
विभा हिन्दी टीका सहित ०–४५
प्रश्न शिरोमणि। हिन्दी टीका सहित ३–५०
भारतीय कुण्डली विज्ञान ४–५०, ५–५०
भारतीय ज्योतिष । नेमीचन्द्रशास्त्री ६–००
भारतीय ज्योतिष । शंकर बालकृष्ण
दीक्षित ८–००
मराठी साहित्य का इतिहास ३–००
हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति । क्रमिक
पुस्तक । १–६ भाग ४५–००
राग विज्ञान । १–६ भाग २४–००
सितार मार्ग । १–३ भाग १५–००

वैद्य-विशारद परीक्षा

आरोग्य विधान ८-००
स्वास्थ्य विज्ञान। (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर परिवर्द्धित नवीन संस्करण ग्लेज उत्तम कागज सजिल्द ७-५०
स्वास्थ्य विज्ञान। मुकुन्द स्वरूपवर्मा ७-००
रोगी परिचर्या २-२५
नैसर्गिक आरोग्य २-००
रसादि परिज्ञान। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-००
हरीतक्यादि निघण्टु। विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ९-००
फलाहार चिकित्सा २-७५
प्राणिज औषधि ०-५०
रोगी सुश्रूषा २-५०
तीमारदरी ०-७५
रसरत्न समुच्चय-मूल संस्कृत ३-००, ३-७५
रसरत्नसमुच्चय। वैज्ञानिक सुरत्नोज्ज्वला हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित १०-००
परिभाषा प्रबन्ध। जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २-५०
शारीर प्रदीपिका ५-००
प्रत्यक्ष शारीर। हिन्दी अनुवाद। प्रथमभाग समाप्त। द्वितीयभाग ८-७५
शरीर क्रिया विज्ञान सचित्र। वैद्य प्रियव्रत शर्मा ७-५०
काम विज्ञान १-२५
कम्पाउण्डरी शिक्षा, विषविज्ञान, रोगी परिचर्या तथा चिकित्सा प्रवेश ८-००
शरीर परिचय २-००
शरीर विज्ञान और तात्कालिक चिकित्सा १-२५
धातुरोग और उसका इलाज २-००
पथ्यापथ्य निरूपण ०-६२
माधवनिदान। मधुकोश संस्कृत व्याख्या, मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६-००
मूत्र परीक्षा १-५०
नाड़ी परीक्षा ०-३५
भाव प्रकाश। चिकित्सा खंड। नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित १५-००
पंचकर्म विधान समाप्त
ऊर्ध्वाङ्ग चिकित्सा। १-२ भाग ४-५०
शालाक्यतन्त्र (निमितन्त्र) डा० रमानाथ द्विवेदी ९-००
प्रसूति तन्त्र। रामदयाल कपूर ५-३५
प्रसूति विज्ञान। सचित्र। डा० रमानाथ द्विवेदी ९-००
कौमार भृत्य (नव्य बालरोग सहित) रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ८-००
बच्चों के रोग और उनका इलाज २-००
स्त्री विज्ञान। अन्तूभाई १०-००
स्त्रीरोग विज्ञान। सचित्र रमानाथ द्विवेदी ३-००
सौश्रुती। डा० रमानाथ द्विवेदी ८-५०
अष्टाङ्गहृदय। भागीरथी विस्तृत टिप्पणी सहित ४-००
अष्टाङ्गहृदय। विद्योतिनी हिन्दी-टीका वक्तव्य परिशिष्ट विस्तृत भूमिका सहित १५-००
व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगद-तन्त्र। डा० कविराज युगल-किशोर गुप्त, डा० रमानाथ द्विवेदी ४-५०
विष और महाविष विज्ञान २-००

मिथिला-ग्रन्थमाला

तथा मैथिलसाम्प्रदायिक-ग्रन्थाः

१	वाजसनेयिक तथा छन्दोगक—चुटिकाबन्धन-मातृकापूजापूर्वक आभ्युदयिकश्राद्धपद्धति।	मैथिली टीका	०-४०
२	वाजसनेयिक विवाहपद्धति।	"	१-००
३	छन्दोगक विवाहपद्धति।	"	१-२५
४	वाजसनेयिक उपनयनपद्धति।	"	१-००
५	छन्दोगक उपनयनपद्धति।	"	१-२५
६	वाजसनेयिक एकोद्दिष्टपद्धति।	"	०-२५
७	छन्दोगक एकोद्दिष्टपद्धति।	"	०-२५
८	वाजसनेयिक पार्वणपद्धति	"	०-४०
९	छन्दोगक पार्वणपद्धति।	"	०-४०
१०	वाजसनेयिक सन्ध्यातर्पणपद्धति।	"	०-१५
११	छन्दोगक सन्ध्यातर्पणपद्धति। वैतरणी सहित	"	०-१५
१२	वाजसनेयिक संक्षिप्त आह्निकपद्धति।	"	०-४०
१३	छन्दोगक संक्षिप्त आह्निकपद्धति।	"	०-४०
१४	सत्यनारायणपूजापद्धति। 'इन्दुमती' नामक	"	०-७५
१५	सत्यनारायणपूजापद्धति। टिप्पणी सहित मूल		०-२०
१६	आह्निकपञ्चदेवपूजापद्धति।		०-०५
१७	एकादशीव्रतोद्यापनपद्धति। सपरिष्कृत		०-३५
१८	कार्तिक-तुलसी-आकाशदीपव्रतोद्यापनपद्धति।		०-३५
१९	कूपोत्सर्गपद्धति।		०-१५
२०	गृहोत्सर्गपद्धति।		०-२०
२१	दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धति। (परिष्कृत द्वितीय संस्करण)		०-७५
२२	बृहत्सामान्योत्सर्गपद्धति-दशगात्रपिण्डदानपद्धति		०-४०
२३	संक्षिप्तदीक्षापद्धति-तुलादानसहित।		०-२०

२४ अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजाकथा । ०-२०

२५ जीमूतवाहनव्रतपूजाकथा । ०-२०

२६ प्रतिहारषष्ठी (विवस्वत्षष्ठी) व्रतकथा । ०-१५

२७ वहुलाचतुर्थीव्रतकथा । ०-२०

२८ भाद्रशुक्लचतुर्थीचन्द्रपूजा । चतुर्थीचन्द्रव्रतकथा सहित ०-१५

२९ रामनवमीव्रतपूजापद्धतिः । जानकी नवमी व्रतपूजा सहित ०-४०

३० श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतपूजाकथा । ०-३५

३१ सरस्वतीपूजापद्धतिः (मूर्ति पूजा विधान सहित) ०-२५

३२ सिद्धिविनायकचतुर्थीव्रतपूजाकथा । ०-२०

३३ हरितालिकाव्रतपूजाकथा । ०-१५

३४ अशौचनिर्णयः । म० म० वाचस्पति-रुद्रधरकृत युग्मसंस्करण ०-५०

३५ कृत्यसारसमुच्चयः । गङ्गाधरमिश्रकृत परिशिष्ट सहित ४-५०

३६ पौरोहित्यकर्मसारः । तृतीय संस्करण १-३ भाग १-५०

३७ वास्तुपूजापद्धति-गृहे गृध्रादिपतनशान्तिपद्धति, गृहप्रवेश-पद्धतित्रय संमिलित । ०-४०

३८ सूर्यादिद्वादशस्तवी-अन्नपूर्णादि स्तोत्रसहित । ०-२०

३९ रामार्चापद्धतिः (शिवपुराणोक्त) ०-४०

४० पितृकर्मनिर्णयः-(निबन्धसंग्रह) श्री त्रिलोकनाथ मिश्र ।

एहि ग्रन्थ में मुमूर्षु अवस्था सँ लके शवसंस्कार, अशौच, आद्यश्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध, पार्वण श्राद्ध, नान्दी श्राद्ध, कृत्रिम पुत्रादि निर्णय, गयाश्राद्धादि निर्णय आदिक संग्रह अनेकानेक श्रुति-स्मृतिक पर्यवेक्षण सँ कयलगेल अछि। आब कोनो पितृकर्म सम्बन्धी विषयक निर्णय करबाक समय में विद्वानकें पुस्तकान्तरक आवश्यकता नहिं पड़तैन्ह ३-००

४१ दुर्गासप्तशती-पं० श्रीकनकलाल ठक्कुर सम्पादित ।

एहि संस्करण क प्रशंसा प्रायः समस्त मिथिलावासी करैत छथि। मध्य में कागत क अभाव सँ बहुत दिन तक प्रथम संस्करण उपलब्ध नहिं भेला सँ मिथिला क ग्राहक रोष प्रकट करैत छलाह। अत एव हम मिथिला ग्रन्थमालाक आवश्यक कार्य रोकि कें पूर्ववत् बड़का मोट-मोट अक्षर तथा कागत में एहि द्वितीय संस्करण के परिष्कृत रूप में प्रकाशित कयल अछि २-००

४२ **श्राद्धपद्धतिः।** म० म० वाचस्पति मिश्र कृत।
एहि संस्करण में छन्दोगक तथा वाजसनेयिक पृथक्-पृथक् निर्दिष्ट श्राद्धविधिमें जाहि-जाहि ठाम संक्षिप्त रूपसँ मन्त्र निर्दिष्ट छलैक ताहि-ताहि ठाम पूरा मन्त्र देल गेलैक अछि तथा स्थान स्थान पर 'इन्दुमती' नामक टिप्पणो सेहो देल गेल छैक। परिष्कृत ई तृतीय संस्करण उज्जर कागत पर सुन्दर छपल अछि। १-७५

४३ **वर्षकृत्य-प्रथमभागः**—सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा।
म० म० रुद्रधरकृत वर्षकृत्य क एहि द्वितीय संस्करण में प्रतिमास क छोटको व्रत-पूजा-कथा आदि कें पौराणिक रूप में संशोधित-परिवर्द्धित कय श्री जानकी-नवमीव्रतपूजा, अक्षयनवमी दुर्गापूजा, नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतपूजा-कथा आदि अनेक व्रत-पूजा क पद्धति वढ़ाओल गेल अछि। सङ्गहि सङ्ग प्रत्येक व्रत-पूजाक टिप्पणी में शास्त्रार्थवर्जित तथा मिथिलाचारानुमोदित व्रतनिर्णय, माहात्म्य आदि लिखल गेल अछि, जाहि सँ एहि संस्करणक आकार द्विगुणित भय गेलैक अछि परन्तु कर्मकाण्डी विद्वान् कें आब कोनो व्रतपूजा क हेतु पुस्तकान्तरक आवश्यकता नहि पड़तैन्ह। ४-००

४४ **वर्षकृत्य-द्वितीयभागः**—सम्पादक, पं० रामचन्द्र झा।
प्रथम संस्करण क अपेक्षा ई द्वितीय संस्करण वहुत विशाल काय में प्रकाशित भेल अछि। उद्यापनादि क सङ्ग सङ्ग जातकर्म, अन्नप्राशन, नामकरण, सीता-रामप्रतिष्ठा, शिवप्रतिष्ठा आदि व्यवहारोपयोगी अनेकानेक आवश्यक पद्धति परिष्कृत रूप में वढ़ाओल गेल अछि। एहि द्वितीय भाग क संपादन में अनेक विद्वान् सहयोग प्रदान कयलैन्ह अछि। ५-००

*४५ **व्यवहारविज्ञान**—एहिमें मिथिलाक प्रत्येक व्यवहारक समीक्षा कथाक रूपमें नाना स्मृति-पुराणक उद्धरणक संग कयल गेल अछि। ३-००

*४६ **मिथिलाभाषामय इतिहास।** म० म० पं० मुकुन्दझा वख्शी ४-००

*४७ **श्रीमत्खण्डवलाकुलप्रशस्तिः।** मैथिलसच्छ्रोत्रियाणां खण्डकाव्यम् १-५०

*४८ **श्रीमत्करमहासुकुलकीर्तिकौमुदी।** खण्डकाव्यम्। ०-७५

चिकित्सा-ग्रन्थाः

[चिकित्सा (आयुर्वेदिक-एलोपैथिक इत्यादि) सभी स्थान की छपी पुस्तकों के लिए
'आयुर्वेदिक साहित्य' नामक विशाल सूचीपत्र
पृथक् छपा अमूल्य मंगवावें]

१ अभिनन्दन-ग्रन्थ । सत्यनारायण शास्त्री जी	१५–००
२ अगदतंत्र—डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस.	०–७५
३ अञ्जननिदानम्—सान्वय विद्योतनी हिन्दी टीका सहित	१–००
*४ अनुभूतयोग चर्चा । १-२ भाग । बंसरीलाल साहनी	६–००
५ अभिनव बूटी दर्पण (सचित्र)—लेखक—वनस्पति विशेषज्ञ सुविख्यात रूपनिघण्टुकार श्री रूपलाल वैश्य	१०-००
६ अभिनव विकृति विज्ञान (सचित्र)—आचार्य श्रीरघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए० एम० एस०	२२–००
७ अभिनव शरीर क्रिया विज्ञान (सचित्र) आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस.	९ ००
८ अष्टाङ्गसंग्रह—आयुर्वेद बृहस्पति श्रीगोवर्द्धनशर्मा छांगाणी कृत 'अर्थप्रकाशिका' हिन्दी टीका वक्तव्य सहित । सूत्रस्थान	८–००
९ अष्टांगहृदय (गुटका) भागीरथी बृहद् टिप्पणी सहित	४–००
१० अष्टाङ्गहृदय—विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श सहित । टीकाकार-श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालङ्कार । सम्पादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय बी. ए., ए. एम. एस. संशोधित, परिवर्द्धित, सपरिशिष्ट अभिनव द्वितीय संस्करण	१५–००
११ आयुर्वेदप्रकाश । आयुर्वेदाचार्य श्री गुलराज शर्मा कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्याद्वय सहित	प्रेस में
*१२ आयुर्वेद में मूत्रोत्पत्ति की कल्पना (अंग्रेजी)	०–१५
*१३ आहार और आहार रहस्य । वै० कि० मा० गुप्ता	२–५०
१४ आयुर्वेद विज्ञान—विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्टसहित	२–००

१५ आर्वेयुद प्रदीप (आयुर्वेदिक-एलोपैथिक गाइड)
ले० श्री राजकुमार द्विवेदी । सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य श्री गङ्गासहाय पाण्डेय । द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण १०-००

*१६ आयुर्वेदीय दन्तव्याधि विज्ञान । वै० कि० भा० गुप्ता २-७५

१७ आयुर्वेदीय परिभाषा—अभिनव प्रकाशिका हिन्दी टीका विस्तृत परिशिष्ट सहित । टीकाकार—आयुर्वेदाचार्य श्रीगिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. १-२५

१८ आयुर्वेदीय यन्त्रशस्त्र परिचय—सुरेन्द्र मोहन बी० ए० १-७५

*१९ आसवारिष्टसङ्ग्रह—हिन्दी अनुवाद सहित १-७५

२० इंजेक्शन (सचित्र) डा० शिवनाथ खन्ना १०-००

२१ एलोपैथिक मिक्श्चर्स—डा० राजकुमार द्विवेदी २-००

*२२ औपसर्गिक रोग—डा० घाणेकर । प्रथम भाग १०-००

*23 Comparative Survey of Ayurveda Nosology by Dr. Ghanekar. 1-00

*२४ औषध गुण धर्म विवेचन । अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०

*२५ कम्पाउण्डरी शिक्षा (रोगी परिचर्या, विषविज्ञान तथा चिकित्सा प्रवेश) डा० आर० सी० भट्टाचार्य । सचित्र । ८-००

२६ काकचण्डीश्वरकल्पतंत्रम्—हिन्दी टीका सहित यन्त्रस्थ

२७ कामसूत्रम् । 'जयमंगला' टीका सहित विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित । व्याख्याकार, देवदत्त शास्त्री यन्त्रस्थ

२८ कायचिकित्सा । कविराज रामरक्ष पाठक शीघ्र प्रकाशित होगी

२९ काय-चिकित्सा—आयुर्वेदाचार्य गङ्गासहाय पाण्डेय शीघ्र प्रकाशित होगी

३० काश्यपसंहिता—श्री सत्यपाल आयुर्वेदालंकार कृत विद्योतनी हिन्दी टीका एवं राजगुरु हेमराजजी कृत संस्कृत-हिन्दी विस्तृत उपोद्घात सहित १६-००

३१ क्वाथमणिमाला—हिन्दी टीका सहित १-५०

३२ क्लिनिकल पैथोलॉजी (वृहत् मल-मूत्र-कफ-रक्तादि परीक्षा)
[Clinical Pathology (including Laboratory Technique, Parasitology & Bacteriology.)]
डॉ० शिवनाथ खन्ना । सचित्र । १०-००

३३ कौमारभृत्य (नव्यबालरोग सहित)—लेखक-श्री रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस्। नवीन संशोधित परिवर्द्धित संस्करण ८-००

३४ गर्भरक्षा तथा शिशु-परिपालन—डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा ४-५०

*३५ गाँवों में औषध रत्न। प्रथम भाग रफ २-०० ग्लेज ३-००
द्वितीय भाग अजिल्द ३-५० सजिल्द ५-००
तृतीय भाग अजिल्द ४-५० सजिल्द ६-००

३६ गूलर गुण विकाशः—वैद्यभूषण श्री चन्द्रशेखरधर मिश्र १-००

३७ चरकसंहिता—मूल। भागीरथी टिप्पणीसहित। चिकित्सादि समाप्ति पर्यन्त। द्वितीय भाग ३-००

३८ चरकसंहिता। सविमर्श 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्योपेता। भूमिकालेखक-वैद्य सम्राट् श्री सत्यनारायण शास्त्री 'पद्मभूषण' व्याख्याकार:-पं० काशीनाथ शास्त्री, डॉ० गोरखनाथ चतुर्वेदी। सम्पादक:-पं० राजेश्वरदत्त शास्त्री, पं० यदुनन्दन उपाध्याय; डा० गंगासहाय पाण्डेय, पं० ब्रह्मशंकर मिश्र।
(सूत्रस्थानादि इन्द्रियस्थानपर्यन्तः) प्रथम भाग १६-००
(चिकित्सादि ग्रन्थ समाप्ति पर्यन्तः) द्वितीय भाग शीघ्र प्रकाशित होगा

*३९ चरकसंहिता (जामनगर प्रकाशित) हिन्दी-अंग्रेजी-गुजराती अनुवाद के साथ। १-६ भाग ७५-००

४० चरकसंहिता का निर्माण-काल (काश्यपसंहिता निर्माण काल सहित) वैद्य रघुवीरशरण शर्मा २-००

४१ चक्रदत्त—नवीन वैज्ञानिक भावार्थसन्दीपनी हिन्दीटीका एवं विविध परिशिष्ट सहित। टीकाकार—श्री जगदीश्वरप्रसाद त्रिपाठी ए. एम. एस.
अजिल्द १०-००, कपड़े की पक्की जिल्द १२-००

४२ चिकित्साकर्मसिद्धि। डा० रमानाथ द्विवेदी प्रेस में

४३ चिकित्सा तत्त्वप्रदीप। प्रथम भाग अजिल्द ९-०० सजिल्द ११-००
द्वितीय भाग अजिल्द ८-०० सजिल्द ९-५०

*४४ चिकित्सादर्श—वैद्य राजेश्वरदत्त शास्त्री। १-२ भाग १०-५०

४५ चिकित्सा शब्दकोश। (मेडिकल डिक्शनरी) प्रेस में

*४६ जीवाणु विज्ञान—ले० डा० घाणेकर १०-००

*४७ ज्वर विज्ञान। अजिल्द ३-०० सजिल्द ४-५०

*४८ ज्वरविवेचन (ज्वर निदान चिकित्सा) आयुर्वेदाचार्य लीलाधर शास्त्री १०-००

४९ तापमापन (थर्मामीटर)—ले० डा० राजकुमार द्विवेदी ०-२५

*५० तुरवक और चालमोग्रा। श्री रमेश वेदी। ०-५५

*५१ तुलसी। श्री रमेश वेदी। २-००

५२ तुलसीविज्ञान—विविध रोगों पर तुलसी के ४४३ सफल सुलभ प्रयोगों का संग्रह। ०-५०

*५३ त्रिदोषालोक—श्री विश्वनाथ द्विवेदी २-५०

*५४ त्रिफला। श्री रमेश वेदी। ३-२५

*५५ देहात की दवाएँ। श्री रमेश वेदी। ०-७५

*५६ देहाती इलाज। श्री रमेश वेदी। १-००

५७ दोष-कारणत्व-मीमांसा—हिन्दी टीका सहित। पं० प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. १-००

५८ द्रव्य-गुण-मंजूषा—ले० आचार्य शिवदत्त शुक्ल एम. ए., ए. एम. एस.। प्रथम भाग २-००

५९ द्रव्यगुण-विज्ञान (१-३ भाग) आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. १८-००

६० नव परिभाषा—कविराज श्री उपेन्द्रनाथदास कृत हिन्दी टीका सहित १-७५

६१ नव्यचिकित्सा विज्ञान। डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा प्रेस में

६२ नव्य रोग निदानम् (माधवनिदान-परिशिष्टम्) ०-७५

६३ नाड़ी परीक्षा—श्री ब्रह्मशंकरमिश्र कृत वैद्यप्रिया हिन्दी टीका सहित ०-३५

६४ नाड़ीविज्ञान—आयुर्वेदाचार्य प्रयागदत्त जोशी कृत विबोधिनी विस्तृत हिन्दी टीका सहित ०-३५

*६५ नेत्ररोगविज्ञान। जादव जी हंसराज १५-००

*६६ नेत्र रोग विज्ञान—(सचित्र) श्री विश्वनाथ द्विवेदी १०-००

*६७ नेत्र सुधार। सचित्र। डॉ० आर० एस० अग्रवाल ३-००

६८ पंचभूतविज्ञानम्। कविराज उपेन्द्रनाथ दास कृत हिन्दी टीका सहित ४–००
६९ पञ्चविध कषायकल्पना विज्ञान–डा० अवधविहारी अग्निहोत्री १–५०
*७० पदार्थविज्ञानम्—आचार्य श्री सत्यनारायण शास्त्री। संस्कृत ३–००
७१ प्लीहा के रोग और उनकी चिकित्सा—लेखक–कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी ०–३५
७२ परिभाषाप्रबन्ध—ले० आयुर्वेद बृहस्पति पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल २–५०
*७३ पाश्चात्य द्रव्यगुण विज्ञान (मेटेरिया मेडिका) आयुर्वेदाचार्य रामसुशील सिंह। प्रथम भाग १५–००
७४ पेटेण्ट प्रेस्काइबर या पेटेण्ट मेडिसिन्स—डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस० ७–००
*७५ पेठा–कद्दू। श्री रमेश वेदी। ०–७५
*७६ प्रत्यक्ष औषधि निर्माण—श्री विश्वनाथ द्विवेदी ३–००
७७ प्रसूति विज्ञान–ले०–डा० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, ए० एम० एस० १०–००
७८ प्रारम्भिक उद्भिद् शास्त्र—प्रो० बलवंत सिंह एम० एस–सी ४–५०
७९ प्रारम्भिक भौतिकी—लेखक–श्री निहालकरण सेठी ५–५०
८० प्रारम्भिक रसायन—प्रो० श्री फूलदेवसहाय वर्मा ४–५०
८१ फलसंरक्षण विज्ञान (Fruit Preservation)—डा० युगलकिशोर गुप्त आयुर्वेदाचार्य १–००
*८२ बरगद। श्री रमेश वेदी। १–००
८३ बस्तिशलाकाप्रवेश (एनीमा और कैथेटर) ०–४०
८४ बीसवीं शताब्दी की औषधियाँ—डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा प्रेस में
८५ भारतीय रसपद्धति—कविराज अत्रिदेव गुप्त १–५०
८६ भावप्रकाश–मूल। पूर्वार्द्ध ३–०० मध्यमोत्तर खण्ड ७–०० संपूर्ण १०–००
८७ भावप्रकाश—नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित पूर्वार्द्ध भाग १२–०० मध्यमोत्तर खण्ड १५–०० संपूर्ण २६–००
८८ भावप्रकाश–ज्वराधिकार—नवीन वैज्ञानिक विद्योतिनी हिन्दी टीका परिशिष्ट सहित ४–००

८९ **भावप्रकाशनिघण्टु**—संपादक-आयुर्वेदाचार्य गंगासहाय पाण्डेय ए. एम. एस. । विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या, वनौषधियों के सुविस्तृत परिचय, गुण-धर्म आदि से विभूषित आयुर्वेदिक कालेज के छात्रों व आधुनिक चिकित्सकों के लिए नवीन मौलिक संस्करण । परिशिष्ट सहित । ९-००

९० **भेलसंहिता** । सटिप्पण शोधपूर्ण सम्पादित नवीन संस्करण १०-००

*९१ **पेनिसिलिन व स्ट्रेप्टोमाइसीन विज्ञान तथा मूत्रपरीक्षा** १-२५

९२ **भैषज्य कल्पना विज्ञान** । डॉ० अवधविहारी अग्निहोत्री ५-००

९३ **भैषज्यरत्नावली**—विद्योतिनी हिन्दी टीका विमर्श टिप्पणी परिशिष्ट सहित । टीकाकार-कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. १६-००

*९४ **मदनपाल निघण्टु**—मूल टिप्पणी सहित १-००

९५ **मर्म-विज्ञान-सचित्र**—ले० श्री. रामरक्ष पाठक आयुर्वेदाचार्य ३-५०

९६ **माधवनिदानम्**—सुधालहरी संस्कृत टीका सहित यन्त्रस्थ

९७ **माधवनिदानम्**—संपादक-वैद्य यदुनन्दन उपाध्याय, बी० ए०, ए० एम० एस० । मधुकोष संस्कृत तथा विद्योतिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श परिशिष्ट सहित । टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य श्रीसुदर्शन शास्त्री ए. एम. एस. १४-००

९८ **माधवनिदानम्**—मधुकोष संस्कृत व्याख्या मनोरमा हिन्दी टीका सहित ६-००

९९ **माधव-निदानम्**—सर्वांगसुन्दरी हिन्दी टीका सहित ४-५०

*१०० **मिर्च** । श्री रमेश वेदी १-००

*१०१ **नीम : वकायन** । श्री रमेश वेदी । २-००

*१०२ **मूत्र के रोग**—ले० डा० घाणेकर । ६-००

१०३ **यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा**—लेखक—वैद्य श्री सभाकान्त झा २-००

१०४ **योग-चिकित्सा**—लेखक—अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार ३-५०

१०५ **योगरत्नाकर**—मूल गुटका संस्करण ६-००

*१०६ **योगरत्नाकर**—विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित १८-००

१०७ **रक्त के रोग**—ले० डा० घाणेकर। नवीन आवृत्ति १०-००
१०८ **रतिमञ्जरी** । गद्य-पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद सहित ०-४०
१०९ **रसचिकित्सा**—लेखक-कविराज प्रभाकर चट्टोपाध्याय ६-००
*११० **रसतन्त्रसार सिद्धप्रयोग संग्रह** । प्रथम भाग अजिल्द ९-००
सजिल्द ११-००
द्वितीय भाग अजिल्द ६-०० सजिल्द ७-५०
१११ **रसरत्नसमुच्चय**—मूल टिप्पणी सहित। सुलभ संस्करण / ३-००
उत्तम संस्करण ३-७५
११२ **रसरत्नसमुच्चय**—नवीन सुरत्नोज्ज्वला-विस्तृत हिन्दीटीका परिशिष्ट सहित। टीकाकार—आचार्य श्री अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस १०-००
*११३ **रसहृदयतंत्र** । संस्कृत हिन्दी टीका अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०
११४ **रसादि परिज्ञान**—ले०-आ० बृहस्पति पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल २-००
११५ **रसाध्याय**—संस्कृत टीका सहित १-००
११६ **रसायनखण्ड (रसरत्नाकर का चतुर्थ खण्ड)** ०-७५
११७ **रसार्णवं नाम रसतंत्रम्**—सविवरण भागीरथी टिप्पणी से युक्त ३-००
११८ **रसेन्द्रसार संग्रह**—बालबोधिनी-भागीरथी टिप्पणी सहित यन्त्रस्थ
११९ **रसेन्द्रसार संग्रह**—(सचित्र) गूढार्थसंदीपिका संस्कृत टीका सहित। टीकाकार-आयुर्वेदाचार्य अम्बिकादत्त शास्त्री ए. एम. एस. ५-००
१२० **रसेन्द्रसारसंग्रह**—(सचित्र) नवीन वैज्ञानिक रसचन्द्रिका हिन्दी टीका विमर्श परिशिष्ट सहित। टीकाकार—श्री गिरिजादयालु शुक्ल ए. एम. एस. ६-००
*१२१ **रसोपनिषद्** । हिन्दी टीका सहित। प्र. भाग अजिल्द ५-०० सजिल्द ६-५०
१२२ **राजकीय ओषधियोग संग्रह**—ले० आयुर्वेदाचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस ८-००
१२३ **राष्ट्रिय चिकित्सा सिद्ध योग संग्रह**—लेखक-आयुर्वेदाचार्य श्री रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी ए. एम. एस. १-५०
१२४ **रोगनामावलीकोष**—लेखक डा० दलजीतसिंह आयुर्वेद बृहस्पति २-५०
१२५ **रोगिपरीक्षाविधि**—(सचित्र) ले० आचार्य प्रियव्रत शर्मा एम. ए., ए. एम. एस. ६-००

१२६ रोगीपरीक्षा । डा० शिवनाथ खन्ना ६-००

१२७ रोग परिचय (Clinical Medicine) ले० डा० शिवनाथ खन्ना एम. बी. बी. एस. १२-७५

*१२८ रोग निवारण । डा० शिवनाथ खन्ना १४-००

१२९ रोगिरोग-विमर्शः । डा० रमानाथ द्विवेदी ए. एम. एस. २-००

*१३० लहसुन प्याज । श्री रमेश वेदी । २-५०

*१३१ वनौषधिदर्शिका—वनस्पतिविशेषज्ञ प्रोफेसर बलवन्त सिंह २-५०

१३२ वनौषधिचन्द्रोदय—विशाल निघण्टु ग्रन्थ । पृथक्-पृथक् प्रत्येक भाग का मूल्य ५-०० तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ १-१० भाग का ४०-००

*१३३ वैद्य सहचर—श्री विश्वनाथ द्विवेदी ३-००

*१३४ वैद्योद्बोधनः । गिरजादत्त पाठक वैद्य । ०-५०

१३५ व्यवहारायुर्वेद-विषविज्ञान-अगदतंत्र—लेखक—डा० युगल किशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी ४-५०

१३६ विषविज्ञान और अगदतंत्र—लेखक—डा० युगलकिशोर गुप्त एवं डा० रमानाथ द्विवेदी १-७५

१३७ वैद्यजीवन—अभिनव सुधा हिन्दी टीका टिप्पणी सहित । टीकाकार—श्री कालिकाचरणशास्त्री ए. एम. एस. १-२५

१३८ वैद्यक परिभाषा प्रदीप—प्रदीपिका हिन्दी टीका सहित । टीकाकार—श्री प्रयागदत्त जोषी आयुर्वेदाचार्य। द्वितीय संस्करण १-५०

१३९ वैद्यकीय सुभाषितावली—लेखक-डा० प्राणजीवन माणेकचन्द मेहता । मूल संस्कृत, अंग्रेजी अनुवाद सहित २-००

*१४० शल्यतन्त्र में रोगी परीक्षा—ले० डा० पी० जे० देशपांडे ७-००

*१४१ शल्यप्रदीपिका (सचित्र) डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा १२-५०

*१४२ शहद । श्री रमेश वेदी । ३-००

१४३ शार्ङ्गधरसंहिता—सुबोधिनी हिन्दी टीका, वैज्ञानिक विमर्श, लक्ष्मी नामक टिप्पणी तथा पथ्यापथ्यादि विविध परिशिष्ट सहित ५-००

१४४ शालाक्यतंत्र (निमितंत्र)—लेखक डा० रमानाथ द्विवेदी एम. ए., ए. एम. एस. ९-००

१४५ **शिलाजीत विज्ञान**—डा० जाह्नवी प्रसाद जोशी ०–७५

*१४६ **स्वस्थवृत्त समुच्चय**—श्री राजेश्वरदत्तशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ६–५०

१४७ **स्वास्थ्य संहिता**—हिन्दी टीका सहित। रचयिता–आयुर्वेदाचार्य कविराज नानकचन्द्र वैद्य शास्त्री २–५०

*१४८ **सन्निपातज्वरचिकित्सा**। कविराज चक्रपाणी शर्मा ६–००

*१४९ **सन्दिग्ध द्रव्यविज्ञान**। पं० राजितराम पाण्डेय १–५०

*१५० **सिद्ध परीक्षा पद्धति**। प्रथम भाग ८–००

१५१ **सिद्धभैषज्य संग्रह**—लेखक–आयुर्वेदाचार्य श्री युगलकिशोर गुप्त। मूल्य सुलभ संस्करण ७–०० उत्तम संस्करण ८–०० राज संस्करण ९–००

१५२ **सुश्रुतसंहिता**—'आयुर्वेद तत्त्वसंदीपिका' हिन्दी व्याख्या वैज्ञानिक विमर्श सहित। व्याख्याकार–डा० कविराज अम्बिकादत्त शास्त्री एम. ए., ए. एम. एस.। १–२ भाग। संपूर्ण २४–००
१ सूत्र–निदानस्थान ७–०० २ शारीरस्थान ३–५०
३ चिकित्सा–कल्पस्थान ६–०० ४ उत्तरतन्त्र १२–५०

१५३ **सुश्रुतसंहिता-शरीरस्थान**—नवीन वैज्ञानिक 'प्रभा'–'दर्पण' विस्तृत हिन्दी टीका सहित ३–५०

१५४ **सूचीवेध–विज्ञान (Injection Therapy)**—लेखक–डा० राजकुमार द्विवेदी १–५०

*१५५ **सोंठ**। श्री रमेश वेदी १–५०

१५६ **सौश्रुती**—लेखक–आयुर्वेद बृहस्पति डा० रमानाथ द्विवेदी ८–५०

१५७ **स्त्रीरोग विज्ञान** (सचित्र) डा० रमानाथ द्विवेदी ३–००

१५८ **स्टेथिस्कोप तथा नाड़ी परीक्षा**—डा० जाह्नवीप्रसाद जोशी ०–७५

१५९ **स्वास्थ्यविज्ञान** (सचित्र) डा० भास्कर गोविन्द घाणेकर ७–५०

१६० **स्वास्थ्यस्थान (स्वास्थ्य शिक्षा पाठावली)** डा० घाणेकर प्रेस में

*१६१ **हमारी आँखें**। सचित्र। डॉ० एम० एस० अग्रवाल अजिल्द ४–०० सजिल्द ५–००

१६२ **हैजा (विसूचिका) चिकित्सा**—डा० जाह्नवी प्रसाद ०–७५